मिथिला मन्दार मञ्जरी

डॉ. रंगनाथ दिवाकर

मिथिला मन्दार मञ्जरी

(मैथिली आलेख-संग्रह)

डॉ. रंगनाथ दिवाकर

अनुप्रास प्रकाशन
मधुबनी

जय-राम शोध संस्थान, सुलतानपुरक तत्वावधानमे मनोलिता प्रकाशन, दरभंगा/पटना प्रस्तुत करैत अछि...

अनुप्रास पेपरबैक्स
ISBN : 978-93-91371-40-1

प्रकाशक : अनुप्रास प्रकाशन
कार्यालय : इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
वेबसाइट : www.anuprasprakashan.com
ईमेल : info@anuprasprakashan.com
anuprasprakashan@gmail.com
मोबाइल : +91 8862977228

मिथिला मन्दार मञ्जरी
(मैथिली आलेख-संग्रह)

© डॉ. रंगनाथ दिवाकर

पहिल संस्करण : 2023
मूल्य : ₹ 300/-

पोथी प्राप्तिक स्थान :
• 102,अनंत विकास अपार्टमेंट,
वेदनगर, रुकनपुरा, पटना-800014

• श्री मनोज कुमार चौधरी
न्यू बलभद्रपुर, लहेरियासराय,
दरभंगा (मिथिला), बिहार- 846001
मोबाइल : +91 9155221944 /8709610336

आवरण : अनुप्रास इंडिजाइन
आवरण पेंटिंग : वन्दनाजी
थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

Mithila Mandar Manjari
by **Dr. Rangnath Divakar**
Published by ANUPRAS PRAKASHAN
First Edition : 2023
Price : ₹ 300/-

समर्पण

*सुनै छी जे धारक कात पीपरक गाछवला सतबिगहा कोलामे धान कटबैत काल हमर जन्मक समाचार सुनि सभटा पसही धान कटनिहार जोन-बोनिहारकेँ लुटा देने छलाह, जे नेनपनमे दलानपर अपन कोरामे बैसा संस्कृत श्लोक सभ रटा देने छलाह, जे अपन भैयारीमे माँझिल रहितो घरक यथार्थमे मालिक आ हमरा सभक वास्तविक अभिभावक छलाह, ओहि कर्मयोगी पू. ददा (**वासुदेव नारायण चौधरी,** जन्म 5 फरवरी 1927, महाप्रयाण 7 सितम्बर 2022)क श्रीचरणमे हमर ई*

मिथिला मन्दार मञ्जरी

पुष्प

सादर समर्पित

(रंगनाथ दिवाकर)

विषयानुक्रम

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
01.	मनोलय... : डॉ. रंगनाथ दिवाकर	09
02.	श्रीधर केर समय : एक नव दृष्टि	11
03.	मैथिल करण कायस्थक कर्णाटसँ आव्रजन : मिथक वा यथार्थ	26
04.	अथ प्रवासी मैथिल कथा	38
05.	साधारणमे असाधारण साधक कवि प्रदीप	56
06.	श्यामजीक महाप्रयाण : एक मेधासूर्यक अवसान	60
07.	महाकवि कालिदासक मैथिलत्व	67
08.	महाकवि पं. लालदासक जानकी रामायणक औचित्य	79
09.	सीताक चित्रणमे महाकवि लालदासक वैशिष्ट्य	90
10.	जानकी चरित्रक वैशिष्ट्य	99
11.	मैथिलीक भारतीय साहित्यपर प्रभाव	106
12.	मिथिला-मैथिली आन्दोलन : इतिहास आओर दशा-दिशा	129
13.	साहित्यक श्रीवृद्धिमे करण कायस्थक अवदान	144
14.	अंग्रेज सभक मिथ्याचार : भारत बनाम इंडिया	163

मनोलय...

पू. पिता सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरीक महाप्रयाण दिवस (24 अप्रैल)पर हमसब एक सारस्वत समारोहसँ स्मरण करैत हुनका श्रद्धासुमन समर्पित करैत छी। एहिमे शोध क्षेत्रमे उत्कृष्ट अवदानक लेल जय-राम शोध संस्थान, सुलतानपुर एक शोध विद्वान् कँ माला, मिथिला पेंटिंगसँ सुशोभित पाग-डोपटा, कन्दर्पीघाट अवस्थित मिथिला विजय स्तम्भक चित्रसँ सुसज्जित स्मृति चिह्न, चानीक कलम आ एगारह हजार नकद टाकासँ सम्मान करैत अछि। कमसँ कम एक पोथीक अनावरण अवश्य होइत अछि। गत वर्ष महाकविक महाप्रयाण पोथीक विमोचन भेल छल। डॉ. नरेश कुमार विकल, श्री भैरव लाल दास आ डॉ. महेन्द्र नारायण रामकँ सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान देल गेल अछि। एहि बेर अनेक हेराएल-भुतिआएल रचना सभकँ शोध केर सम्बलसँ सभक समक्ष आननिहार सुधी समालोचक डॉ. रमानन्द झा रमणजीकँ एहि सम्मानसँ अलंकृत कएल जा रहल अछि। सारस्वत समिधा रूपमे मिथिला मन्दार मञ्जरी पोथीक विमोचन भऽ रहल अछि।

ई मिथिला मन्दार मञ्जरी विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित हमर प्रकीर्ण निबन्ध सभक संग्रह थिक। एहि संग्रह केर आलेख सभक विषय भले अलग-अलग हो सभक मूल स्वर मिथिला-मैथिलीए अछि। शोध एक सतत प्रवहमान प्रक्रिया थिक। काल्हि जे सत्य रूपमे सर्वमान्य छल आवश्यक नहि जे आइ ओ सेहो सत्ये हो। शोध केर आलोकसँ बहुत रास पूर्वसँ प्रचलित प्रवाद निर्मूल प्रमाणित होइत अछि। हमर प्रयास यैह रहल अछि जे मिथिलाक इतिहास-संस्कृति विषयक विभिन्न विवादास्पद विन्दुपर वैज्ञानिक दृष्टिसँ विचार करी आ एहि सभमे नुकाएल सत्यकँ सुधी समाजक समक्ष राखि एक तार्किक निष्पत्ति, निष्कर्ष आ निर्णय धरि पहुँची। एहिमे कतेक सफलता भेटल ई निर्णय सुधी पाठक सभपर छोड़ैत छी।

हँ, एतबा अवश्य कहि सकैत छी जे एहि वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ विचार कएलापर पूर्वसँ प्रचलित प्रमुख प्रवाद विषयक अनेक अतार्किक मान्यता अवश्य खंडित भेल अछि। एहि कारणेँ किताबक किछु कथ्य किनको कठाइन लागि सकैत अछि। मुदा किनको भावनाकेँ आहत करबाक हमर कोनो मंशा नहि अछि। निवेदन जे ओकरा पूर्वाग्रहरहित उदार मोनसँ लेल जाए। शोध सत्यकेँ सभक समक्ष आनैत अछि। एहि मूल मनोभावसँ विचलित नहि भेल जा सकैछ। आलेख सभ अपना विषयमे अपने कहत। किछु आलेख सभमे यत्किंचित् परिमार्जन अवश्य भेल अछि। विषयानुकूल यथेष्ट सामग्री उपलब्ध करएबाक प्रयास एवं अद्यतन केर आग्रह एहि परिमार्जन केर मूलाधार रहल अछि। एहि संग्रहमे विभिन्न ठाम प्रकाशित आलेख एक ठाम संकलित भेल अछि तेँ एकहि प्रसंग एकाधिक बेर अभरि सकैत अछि। प्रत्येक आलेखकेँ स्वतंत्र रूपमे देखी से हमर विनम्र अनुरोध।

मुखपृष्ठक चित्र लेल वन्दनाजीकेँ नेहसिक्त साधुवाद व आभार! हम एक बेर फेर ओहि समस्त सारस्वत व्यक्तित्व सभक लेल कृतज्ञताक भाव प्रकट करैत छी जनिक लिखित-मौखिक सारस्वत भाव हमर एहि यात्राक पाथेय बनल। श्री दीप नारायणजीकेँ सेहो आशीर्वाद दैत छियनि जे कालक्रममे आलेख सभकेँ भुतिआ जयबाक बात कहि एक पोथी रूपमे संकलित करबाक लेल चरिआबैत रहलाह। एकरे प्रतिफल थिक ई संकलन!

कोनो कमी-दोष-अशुद्धि सभक लेल क्षमाप्रार्थी छी। सुझाओ केर स्वागत करब। इत्यलम्!

रंगनाथ दिवाकर

सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी महाप्रयाण दिवस, 2023 **(रंगनाथ दिवाकर)**

जय-राम, सुलतानपुर

24 अप्रैल 2023

श्रीधर केर समय : एक नव दृष्टि

कायस्थ कुल कमल श्रीधर विषयक सामान्य मान्यता यैह अछि जे कर्णाटक्षेत्रसँ नान्यदेव संग मिथिला आबि ओ 1097 ई.मे नान्यदेवकँ मिथिला राज्य स्थापनामे सहायक भेल छलाह। सिमराँवगढ़ शिलालेखमे अंकित अछि—

नन्देन्दुविन्दु विधु सम्मितशाकवर्षे
सच्छ्राविणे सितदले मुनिसिद्धितिथ्याम्।
स्वा(ती)तौ शनैश्चर दिने करिवैर लग्ने
श्रीनान्यदेव नृपतिर्व्यदधीत वास्तुम्॥

एहिमे नन्द 9, इन्दु 1, विन्दु 0 आ विधु 1सँ 9101 आ अंकस्य वामा गति:सँ 1019 शक (1097 ई.) अबैत अछि। श्रावण मास, स्वाती नक्षत्र, सिद्धियोग सप्तमी तिथि, शनि दिन, सिंह लग्न आदि केर गणनासँ 10 जुलाई 1097 ई.क भोर अबैत अछि। यैह तारीख सत्य अछि। 18 जुलाई 1097 ई.कँ रवि पड़ल छल। भातगाँव राजा जगज्योंतिमल्ल (मुदितकुवलयाश्व) सहित सब विद्वान् मे एहि तिथिपर प्राय: मतैक्य अछि। एहि आधारपर भ्रमवश तिथि रहित अँधराठाढ़ी शिलालेखक समय सेहो वैह 1097 ई. मानि लेल गेल जाहि कारणेँ अनेक विसंगति उत्पन्न भेल।

1097 ई.क सिमराँवगढ़ शिलालेखमे नान्यदेवक जीत वा वास्तुविन्यासमे श्रीधर केर कतहु कोनो चर्च नहि अछि। ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे नान्यदेव आ श्रीधर केर प्रथम चर्च अँधराठाढ़ी शिलालेखेमे भेल अछि। श्रीधर अपन ग्रंथ सदुक्तिकर्णामृत (रचना समाप्ति 1205 ई.)मे अपन पिता वटु दासकँ लक्ष्मणसेनक महामाण्डलिक कहि लक्ष्मणसेनक संग अपन पिता वटुदासक श्रद्धापूर्वक चर्च कएने छथि—

तस्यासीत्प्रतिराजतद्धतमहासामन्तचूडामणिर्नाम्ना
श्रीवटुदास इत्यनुपमप्रेमैक पात्रं सखा।
(श्रीधर : सदुक्तिकर्णामृत, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, श्लोक 2, पृष्ठ 10)

आब जँ 1097 ई.मे श्रीधरकेँ पचीसो वर्षक मानी तऽ 1205 ई.मे हुनक आयु 133 वर्ष प्रमाणित होएत, जे उपयुक्त नहि लगैत अछि। श्रीधर केर काल निर्धारण प्रसंगे निम्न किछु विन्दु विचारणीय अछि—

1. लक्ष्मणसेन केर जन्म 1119 ई. प्राय: मान्य अछि। कहल यैह जाइत अछि जे पिता वल्लालसेन आ पितामह विजयसेन विजय अभियानपर गेल छलाह। देवपाड़ा प्रशस्तिमे पश्चिम चक्र अभियानक चर्च अछि—

...पाश्चात्यचक्रजयकेलिषु यस्य यावद्गंगाप्रवाहमनुधावति नौविताने (21-22)।

एहिसँ ज्ञात होइछ जे भारी जलसेना संग गंगामे पश्चिमी अभियान शुरू भेल। मिथिला आ गौड़मे किछु सफलता भेटल। कलिंग आ कामरूपपर सेहो अभियान भेल। एहि अभियानक मध्य रानी पुत्रवती भेलीह। किछु समय बाद वल्लालसेनक मृत्यु केर प्रवाद राजधानी विक्रमपुर आएल आ पंडित सभक मंत्रणासँ नवजात शिशु लक्ष्मणसेनकेँ राजसिंहासनपर बैसा देल गेल। किछु दिन बाद जखन विजयसेन आ वल्लालसेन मिथिला विजय कऽ आपस अएला तखन प्रवाद समाप्त भेल। बालक लक्ष्मणसेनक जन्म (1119 ई.)सँ लक्ष्मण संवत् केर शुरूआत वा लक्ष्मणसेनक राज्यारोहण (1179 ई.)सँ ल. सं. केर शुरूआत संबंधी विवाद एहि स्थापनासँ निर्मूल कएल जा सकैछ। ओना बहुत विद्वान् लक्ष्मणसेनक जन्मसँ आ बहुत विद्वान् राज्यारोहणसँ लक्ष्मण संवत् केर शुरूआत स्वीकार करैत छथि।

2. नान्यदेव आ अन्य राजा सभपर विजयसेन/वल्लालसेनक ई विजय प्राय: 1119-20 ई.मे भेल छल। देवपाड़ाक पदुमशरमे प्रद्युम्नेश्वर हरिहर भगवान्‌क मन्दिरमे उमापतिधर विरचित इतिहास प्रसिद्ध देवपाड़ा प्रशस्ति लेख लागल छल। नान्यदेव विजयसेनसँ कतऽ पराजित भऽ हुनकर कैदमे छलाह एहिपर मतैक्य नहि अछि। चण्डेश्वर किला, गांडीवेश्वर स्थान, द्वालख, निशंकपुर आ मल्लडीहामे विवाद अछि। मुदा एहिपर मतैक्य अछि जे नान्यदेव पराजित भेल छलाह आ बादमे गंगदेव हिनका कारागारसँ मुक्ति दिएलनि।

3. बाँग्लादेशक जिला राजशाहीक देवपाड़ा ग्राममे 1865 ई.मे भेटल देवपाड़ा प्रशस्तिकेँ मेटकॉफ Journal of the Asiatic Society of Bengalक

vol xxxiv, part 1मे प्रथम बेर प्रकाशित करओलनि। फेर कीलहोर्न एकरा Epigraphia Indica, vol. 1मे प्रकाशित करओलनि।

पटना कॉलेजक संस्कृत विभागक लब्धस्वर्णपदक प्रो. उमा शंकर शर्मा 'ऋषि' 1960 ई.मे उमापतिधर कृता विजयसेनप्रशस्ति: (देवपाड़ा शिलालेख:) नामसँ एकरा सटीक अनुवाद सहित प्रकाशित करओने छलाह।

4. देवपाड़ा प्रशस्ति 0.97 m×0.6 m आकार केर पाथरपर 0.82 m× 0.45 m आकारमे उत्कीर्ण अछि। एकर रचयिता उमापतिधर छथि। भ्रमवश किछु गोटे धोयीकेँ एहि प्रशस्ति सर्जनाक सेहो श्रेय देने छथि। करियन ग्रामवासी आ उदयनाचार्यक गुरु गोवर्द्धनाचार्य, गीतगोविन्दकार जयदेव, पवनदूतकार धोयी आदि संग सेन साम्राज्यमे सुशोभित छलाह उमापतिधर।

एहि विजयसेन प्रशस्ति वा देवपाड़ा प्रशस्तिलेख केर पाँचम श्लोकमे उमापतिधर स्पष्ट रूपसँ कहैत छथि जे वीरसेन आदि महान् नरश्रेष्ठ सभकेँ जन्म देनिहार ओहि सेनवंशमे शताधिक विरोधी वीर सभक कीर्त्ति नाशक ब्रह्मवादी आ ब्रह्मक्षत्रिय कुलशिरोमणि सामन्तसेन भेलाह जनिकर युद्धकथा केर कीर्त्तिकलश समुद्रक शीतल चंचल उधिआइत जल जकाँ अछि आ सेतुबन्धक किनारपर जेकर गायन श्रीरामक स्पर्धामे अप्सरा सब कऽ रहल छथि—

तस्मिन्सेनान्यवाये प्रतिसुभटशतोत्सादनब्रह्मवादी
स ब्रह्मक्षत्रियाणामजनि कुलशिरोदाम सामन्तसेन।
उद्गीयन्ते यदिया: स्खलदुदधितलोल्लोलशीतेषु सेतो:
कच्छान्तेष्वप्सरोभिर्दशरथतनयस्पर्द्धया युद्धगाथा: ॥5॥

विलक्षण साहित्यिक सौन्दर्य अछैत मात्र ऐतिहासिक महत्त्वक गप्प एतऽ प्रासंगिक अछि। एहिमे स्पष्ट रूपसँ सेन राजवंशकेँ ब्रह्मक्षत्रिय कहल गेल अछि। सामाजिक माध्यम विश्वविद्यालयक किछु विद्वान् स्नातक सभ सेन राजवंशकेँ हजाम वा कायस्थ कहि कठिन कल्पनाक आश्रय लैत नान्यदेवकेँ सेहो कायस्थ कुलोद्भव मानि गर्वित होइत छथि, ई उचित नहि। सेन नामान्तधारी राजपूत अखनो मिथिलामे वास करैत छथि।

5. ई सत्य जे जनक वंश अवसानोत्तर प्रथम स्वतंत्र मिथिला नरेश नान्यदेवक तुमुल जयनादमे सेनवंशक शासनपर विमर्श किछु उपेक्षित रहि गेल

जखन कि श्रीधर केर समय, स्थान, अवदान आदिक निरूपण वा सम्यक् मूल्यांकन हेतु सेन राजवंशक पूर्ण परिचिति आवश्यक अछि।

अँधराठाढ़ी प्रखण्डक जलसैन (भारतीय जनगणना ग्राम कोड 220670) आ फूलपरास प्रखण्डक किछु गाम जेना सैनी (भारतीय जनगणना ग्राम कोड 220122), एराजी सैनी (भारतीय जनगणना ग्राम कोड 220123), सेनिक डीह, लषसेना (भारतीय जनगणना ग्राम कोड 220130) आदि गामक संबंध सेन साम्राज्यक शासनसँ रहए ई तथ्यात्मक लगैत अछि। लषसेना तऽ स्पष्ट रूपसँ लक्ष्मण सेनसँ जुड़ल अछि वा हुनके नामपर स्थापित अछि। एहि प्रक्षेत्रमे आ विशेष रूपसँ पैता गाममे सेन नामान्तधारी राजपूत अखनो वास करैत छथि।

6. महत्त्वपूर्ण गप्प इहो अछि जे सेन नामान्तधारी बहुत लोक पिपराही (लदनियाँ प्रखण्ड) गाममे एहनो छथि जे स्वयंकेँ कायस्थ कुलोद्भव कहैत छथि। श्री अरुण कुमार दास (नवानी)क सौजन्यसँ श्री दीपेन्द्र नाथ सेन (M- 8709230331) आ हुनक भ्राता श्री अशोक सेन (M- 9162423181)सँ गप्प कएला सन्ताँ ज्ञात भेल जे हिनका सभक पितामह केर पितामह बंगालक वर्धमानसँ लोटा-कम्बल नेने पिपराही (लदनियाँ प्रखण्ड) आएल छलाह। एहि परिवारक वंशवृक्ष अछि— अटल बिहारी सेन → तीन पुत्रमे दू भाय नाबल्द एक- गोष्टो बिहारी सेन → i) विजयपदो सेन ii) कालीपदो सेन iii) उमापदो सेन iv) अमल कुमार सेन v) भूपेन्द्र नाथ सेन। डा. कालीपदो सेन → i) निशापति सेन ii) निवारण चन्द्र सेन iii) सुनील कुमार सेन iv) श्यामल कुमार सेन v) सुभाष चन्द्र सेन vi) दीपेन्द्र नाथ सेन vii) अशोक कुमार सेन। वर्तमान समयमे अटल बिहारी सेनक पाँचम पीढ़ी पिपराहीमे छथि। ई सब अपनाकेँ बंगाली कायस्थ कहैत छथि। बियाह-दान, विधि-व्यवहार सब बंगाली संस्कृति जकाँ। परिवर्तन यैह जे आब ई सब मैथिल कायस्थ जकाँ चित्रगुप्त पूजा, चौरचन आ छठि पर्व सेहो मनबैत छथि जखन कि शुद्ध बंगाली कायस्थमे ई पर्व सब नहि अछि। हिनका सभक विवाह मैथिल कायस्थमे अखनो नहि होइत अछि। हिनका सभक पदवी पाल, सेन, दत्ता, सिन्हा आदि अछि। एकहि परम्परामे पाल आ सेन पदवी एक संग भेटब जिज्ञासा उत्पन्न करैत अछि।

7. इहो महत्त्वपूर्ण अछि जे फूलपरास आ झंझारपुर प्रक्षेत्रमे पैता, बैका, अमौजा आदि गाममे सेन राजपूत सभक वास अछि। बैका गामक श्री रणधीर सेन (मोबाइल नंबर 9934022951) एक कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता छथि। एक बातचीतक क्रममे ओ जनतब देलनि जे सेन सभक एक डीह सैनीसँ हुनक पुरुखा

सभमे एक भाए पैता आ एक भाए बैका जा बसि गेलाह। सेनवंशीय ई राजपूत सूर्यवंशक सन्तति छथि। हिनका सभक गोत्र धृतराष्ट्र मुनि अछि। हिनका सभक विवाह-दान मैथिल रीतिसँ आन राजपूतमे होइत अछि। पावनि-तिहार सब मैथिल परम्परानुसार होइत अछि। हिनक पाँच पीढ़ीक वर्णन अछि - भुटाइ सेन → भागवत सेन → महेन्द्र सेन → रणधीर सेन → अभिषेक कुमार सेन। महेन्द्र सेनक विवाह देवढ़ (घोघरडीहा)क स्व. जीबछ सिंहक कन्यासँ आ श्री रणधीर सेनक विवाह बेगूसरायक गहनी गामक शम्भू प्रसाद सिंहक सुपुत्रीसँ भेल अछि। एक प्रसंग जे हिनका सभक रक्त केर राजत्वक परिचय दैत अछि ओ अछि भागवत सेन केर दानशीलता। सैनी गामसँ अयलाक बहुत दिन बाद स्व. शंकर गिरि आबि अनुरोध कएलनि जे अहाँक छोड़ल जमीन हम सब देखभाल कऽ जीवन-यापन आ धर्म-कर्ममे लागल रहैत छी। भागवत सेन 1972 ई.मे नया सर्वे कालमे जमीन हुनका सभकेँ दऽ देलनि।

8. देवपाड़ा प्रशस्ति अनुसार चन्द्र कुलक वीरसेन एवं अन्य केर वंशमे कर्णाट क्षत्रिय वा ब्रह्म क्षत्रिय सभक कंठहार सामन्तसेन विलुप्त होइत कर्णाट कुललक्ष्मीक रक्षार्थ सेतुबन्ध रामेश्वर हेतु चललाह आ फेर गंगा किनार बंगाल आबि गेलाह। वल्लालसेनक नैहाटी ताम्रपत्र लेख यद्यपि सामन्तसेनक जन्मसँ पहिने राढ़मे सेनवंशक स्थापनाक बात कहैत अछि। रामपाल (1075-1120 ई.)क समय हेमन्तसेन रामपाल आ शूरपालकेँ भ्राता महिपालक कारागारसँ भागएमे सहायक भेल छलाह। कैवर्त्त विद्रोह (1075-82 ई.)क स्थितिसँ हेमन्तसेन आ विजयसेन लाभ लेलनि। अपन स्थिति सुदृढ़ कएलनि।

मछुआरा सभक खेतीक जमीन छीनबाक आ सामन्ती व्यवस्थाक प्रतिकार स्वरूप पाल साम्राज्यमे उच्च पदासीन पदाधिकारी कैवर्त्त दिवोक आ भीम केर नेतृत्वमे दीनहीन कैवर्त्त सब विद्रोह कएलनि। सन्ध्याकर नन्दी कृत रामचरितसँ एहि विद्रोहपर बहुत प्रकाश पड़ैत अछि। पोसुआ महींसपर चढ़ि वस्त्रहीन नंग-धड़ंग कैवर्त्त सभ अपनेसँ बनाओल तीर-धनुषसँ युद्ध कएलनि। ई सभ 1075 ई.मे पाल राजा महिपाल द्वितीयक वध कऽ देलनि। अराजकताक स्थिति छल। किछु कालक लेल कैवर्त्त सब अलग राज्य स्थापित करबामे समर्थ भऽ गेला। महिपालक बाद विपरीत परिस्थितिमे भेल पाल नरेश रामपाल 14 अन्य राजा/सामन्त सभक संघ बनओलनि। एहि संघमे शामिल निदरावलीक सामन्त विजयकेँ सेनवंशक विजयसेन रूपमे चीन्हल जा सकैछ। 14 राजा/सामन्त सभक सम्मिलित शक्तिसँ सम्बलित

रामपाल दिवोक आ भीमकेँ मारि वारेन्द्रकेँ पुनः स्वतंत्र करओलनि। बाँग्लादेशमे दिनाजपुरक दिवोर दीघीमे भीम द्वारा निर्मित कैवर्त्त स्तम्भ अखनो अछि। ई सत्य जे कैवर्त्त विद्रोह दबा देल गेल मुदा कथित निम्न जातिक लेल आत्मसातीकरण केर प्रक्रिया एकर बादे बंगालमे शुरू भेल। कैवर्त्त सभक सामाजिक स्थितिमे सुधार भेल। ओ सब अन्त्यजसँ सत् शूद्र श्रेणीमे अएलाह। अनेक अन्य अन्त्यजकेँ वल्लालसेन बादमे मुख्य धारामे आनलनि आ कुलीनताक सूत्रधार भेलाह। बौद्ध पाल राजा अनेक शिवमंदिर बनओलनि। कैवर्त्त सभक एक मुखिया महेशकेँ महामाण्डलिक केर विरुदसँ सम्मानित कएल गेल। *(मजूमदार, 1971, पृष्ठ 252)*

९. विजयसेनक बैरकपुर ताम्रपत्र लेखमे सामन्तसेनकेँ राजरक्षा सुदक्ष कहल गेल अछि—

> ...सामन्तसेनो रण- शिरसि जितारातिः सामन्तसेनः ॥4॥
> शाश्वत प्रोङ्हपद्मः प्रतिदिनमुदयी राजरक्षा सुदक्ष वक्षु
> चैतन्य- चिन्तामणिरनणुमहाः प्रार्थकैरथितार्थः ॥5॥

एहि ताम्रपत्र लेखमे हेमन्तसेनकेँ महाराजाधिराज सेहो कहल गेल अछि—

> महाराजाधिराज-श्रीहेमन्तसेनपादानुध्यात-परमेश्वर-परममाहेश्वर-
> परमभट्टारक-महाराजाधिराज-श्रीमद्विजयसेनदेवः कुशलो... ॥11॥

(Nani Gopal Majumdar : Inscription of Bengal,
Sanskrit Pustak Bhandar, Kolkata, 2003, p 62)

एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे सामन्तसेन पाल राजा सभक सुरक्षा प्रभारी छलाह। उचित अवसर पाबि ओ अपन स्थिति सुदृढ़ करैत सेन राजवंश स्थापित कएलनि आ पुत्र हेमन्तसेनमे राजत्व निहित भेल। पछाति विजयसेन वास्तविक रूपमे राजा भेलाह।

एहि ताम्रपत्र लेखमे विजयसेनक विवाह शूर शासक केर पुत्री विलासदेवीसँ होएबाक बात सेहो कहल गेल अछि—

> *अभवद्विलासदेवी शूरकुलाम्भोधि- कौमुदी तस्य*
> *नयन-युग-मञ्जखञ्जन-विहार केलिस्थली महिषी ॥7॥*

पाल नरेश रामपालक दरबारमे एक शूर सभासद केर उल्लेख वल्लालचरितमे सेहो अछि।

प्राय: ई आदिशूर रहल होएताह जिनकर शासन राढ़ क्षेत्रमे छल। एहि संबंधसँ विजयसेनकेँ राढ़ क्षेत्रपर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करबामे बहुत सहायता भेटल।

10. देवपाड़ा प्रशस्तिमे विजयसेनकेँ नान्यदेव, वीर, राघव आ वर्धनकेँ कैद कएनिहार आ गौड़, कामरूप आ कलिंगक विजेता कहल गेल अछि—

त्वं नान्य-वीर-विजयीति गिर: कवीनां श्रुत्वाऽन्यथामननरूढ़निगूढ़रोष:।
गौड़ेन्द्रमद्रवदपाक्वत कामरूपभूपं कलिंगमपि यस्तरसा जिगाय॥20॥

शूरंमन्य इवासि नान्य किमिह स्वं राघव श्लाघसे स्पर्धां
वर्द्धनमुञ्च वीर विरतो नाद्यापि दर्प्पस्तव।
इत्यन्यमहर्न्निशप्रणयिभि: कोलाहलै: क्ष्माभुजां
यत्कारागृहयामिकैर्न्नियमितो निद्रापनोदक्लम:॥21॥

एहिमे वर्धनकेँ बाँग्लादेशक राजशाही जिलाक कुसुम्बाक द्वारोपवर्धन रूपमे, वीरकेँ कोतात्वीक वीरगुण रूपमे, राघवकेँ कलिंगराज अनन्तवर्मन चोड़गंगक दोसर पुत्र रूपमे, नान्यदेवकेँ मिथिलाक राजा रूपमे आ गौड़ राजा रूपमे मदनपालकेँ चीन्हल गेल अछि। प्राय: विजयसेनकेँ उत्तरी गौड़, मिथिला, पूर्वी कामरूप आ दक्षिणी कलिंगमे सफलता भेटल छल। भारतमे विजयपुरी आ बाँग्लादेशमे विक्रमपुर दू राजधानी छल।

(शैलेन्द्र नाथ सेन : Ancient Indian History and Civilisation, ISBN 978-81-224-1198-0, पृष्ठ 287-88)

11. विजयसेन केर पुत्र वल्लालसेन सेहो सेन राजवंशक समृद्धिमे अपन योगदान देलनि। मिथिलापर सही मानेमे वल्लालसेने विजय प्राप्त कएने छलाह। वल्लाल चरित् (सम्पा. हरप्रसाद शास्त्री)मे उल्लेख अछि जे पिता विजयसेनक मिथिला अभियानमे एक बेर हड़बड़ीमे युवराज वल्लालसेनक घोड़ाक टापसँ योगक्रिया रत कोनो योगी घायल भेल छलाह। ओ योगी युवक वल्लालकेँ रानी

सहित अग्निमे भस्म होएबाक श्राप देलनि। बादमे म्लेच्छ वादुम्बासँ बजरल युद्ध लेल प्रयाण करैत काल अपन रनिवासक रानी सभ— विलासदेवी, पद्‌माक्षी, सुभगा, हेममलिका, सोनादेवी, चण्डेली आदिसँ दू पोसुआ पड़बा युद्धभूमि लऽ जएबाक कथा आ ओकरा सभकेँ दूत जकाँ आपस आबि गेलापर पराजय मानि अपन आन-वान-शान रक्षार्थ अग्निप्रवेश करबाक कथा कहि वल्लालसेन प्रस्थान कएलनि। ओ युद्धमे म्लेच्छ सभकेँ निर्मूल कएलनि मुदा दुर्योगसँ दुनू कबूतर उड़ि गेल। चिन्तित वल्लालसेन जखन राजधानी अएलाह तखन रानीसब अग्नि प्रवेश कऽ चुकल छलीह। रानी सभक अर्द्ध भस्म भेल शरीर देखि विचलित वल्लालसेन स्वयं अग्नि प्रवेश कएलनि। वल्लाल चरितमे शकाब्द 1028मे एहि घटनाकेँ घटित कहल गेल अछि। इहो उल्लिखित अछि जे तखन वल्लालसेन 65 वर्षक छलाह आ 40 वर्ष 2 मास शासन कऽ चुकल छलाह (आनन्द भट्ट कृत वल्लाल चरित्, सम्पा. म.म. हरप्रसाद शास्त्री, कलकत्ता, पृष्ठ 101)। मुदा ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ एकरा तथ्यपूर्ण नहि मानल जा सकैछ। 1106 ई.मे तऽ लक्ष्मणसेनक जन्मो नहि भेल छल। दानसागर आ अद्‌भुतसागर केर रचना काल संबंधी श्लोक—

> *निखिलभूपचक्र तिलकश्रीमद्वल्लालसेनदेवेन पूर्वे*
> *'शशिनवदशमित 1091 शकवर्षे दानसागरो रचित:'* सँ

दानसागर केर रचना 1169 ई. आ

> *'शाके नवाष्टखेन्द्रा 1089ख्य अरिभेऽद्‌भुतसागरम्'*सँ

1167 ई.मे अद्‌भुत सागर केर रचनाक शुरूआत स्पष्ट अछि। बादमे लक्ष्मणसेन एहि ग्रंथकेँ पूर्ण कएलनि।

अद्‌भुत सागरमे उल्लेख अछि जे वल्लालसेन अपन पिताक समयेमे मिथिला जीतलनि। लक्ष्मणसेन केर मधाईनगर ताम्रपत्र लेख (जिला पबना, बाँग्लादेश)सँ ज्ञात होइछ जे वल्लालसेन चालुक्य राजकुमारी रमादेवीसँ विवाह कएलनि। आनन्द कृत वल्लाल चरित् क अनुसार वंग, वारेन्द्र, राढ़, वगाडी आ मिथिला हुनक राज्यमे छल। परम्परासँ प्रसिद्ध अछि जे लक्ष्मणसेन अपन युवराजत्व कालक अधिक समय मिथिलेमे रहब पसीन करैत छलाह। संभवत: अँधराठाढ़ीमे

हुनक आवास छल। अँधराठाढ़ीसँ लगभग दू किलोमीटर दक्षिण एक गाम अछि जड़िसेन। गामक नामकरण सेन सभक जड़िसँ जुड़ल प्रतीत होइछ। एहि गाममे अवस्थित प्राचीन डीहकेँ सेन सभक मिथिलामे जड़ि मानि जड़िसेनकेँ पं. सहदेव झा (एक आदर्श नगर अँधराठाढ़ी, पृष्ठ 11 आ अँधराठाढ़ी प्रखण्ड की ऐतिहासिक महत्ता, पृष्ठ 5) सेनवंशीय राजा सभक स्थानीय राजधानी मानैत छथि। ओना कविकुल भूषण चन्दा झा द्वारा महाभारत कालीन मैथिल राजा जलसन्धकेँ एहि जलसैन (जड़िसैनि)सँ जोड़बाक बात म.म. परमेश्वर झा मिथिला तत्त्व विमर्श (पृष्ठ 55)मे कएने छथि। पूर्वमे एहि प्रक्षेत्रमे सैनी, सेनिकडीह, जड़िसेन, लषसेना आदि गामक चर्च भेल अछि। कहल यैह जाइत अछि जे पिता वल्लालसेनकेँ जखन पुत्र जन्मक सूचना भेटल तखन ओ एहि प्रक्षेत्रमे छलाह आ पुत्रक नामपर गामकेँ लक्ष्मणसेन नाम देलनि जे आइ लषसेना भेल अछि।

वल्लालसेन चरितक चारिम व पाँचम अध्यायमे वल्लालसेनकेँ चाण्डालकन्यापर आसक्ति, प्रणय निवेदन, गन्धर्व विवाह, कोपभवनक स्थिति आनि लक्ष्मणसेनपर लांछन, लक्ष्मणसेनकेँ पिता द्वारा मृत्युदंडक घोषणा, लक्ष्मणसेन द्वारा पत्नीसँ विमर्शोपरान्त राज्य छोड़ि निपत्ता होएब, निराश वल्लालसेन द्वारा एक दुर्गा मन्दिरमे पुतोहु हाथसँ लिखल श्लोक पढ़ब आ कैवर्त्त सब द्वारा दू दिनमे लक्ष्मणसेनकेँ आपस आनि देलापर प्रचुर धन-धान्यक पुरस्कारक संग जीवनयापन हेतु हऽर चलएबाक अनुमति देबाक कथा आएल अछि। एहि प्रसंगसँ एतेक तऽ स्पष्ट अछि जे पिता वल्लालसेन आ पुत्र लक्ष्मणसेनमे चाण्डालकन्यासँ विवाहक कारणेँ स्थिति असाधारण छल।

प्रायः एहि विवाह आ सतमायसँ अप्रसन्न रहबाक कारणेँ युवराज लक्ष्मणसेन बेसी काल मिथिलेमे रहैत छलाह। जतऽ श्रीधरसँ हुनक सम्पर्क सुदृढ़ भेल। एहि संबंधक आधार सामान्यतया सेन साम्राज्यक सेवामे संलग्न श्रीधरक पिता वटुदासकेँ मानल जाइछ मुदा एकर एक महत्त्वपूर्ण कारण अछि लक्ष्मणसेन आ श्रीधरकेँ सुच्चा वैष्णव होएब। ई उल्लेखनीय तथ्य अछि जे विजयसेन आ वल्लालसेनक लेख 'ऊँ नमः शिवाय'सँ शुरू होइत अछि मुदा लक्ष्मणसेनक अभिलेख 'ऊँ नमो नारायणाय'सँ शुरू भेल अछि। सामान्यतया सेन सब शैव सम्प्रदायसँ संबंधित छलाह मुदा श्रीधरक साहचर्यक कारणेँ लक्ष्मणसेन सुच्चा वैष्णव रूपमे विकसित भेल छलाह।

12. सदुक्तिकर्णामृतमे श्रीधर अपन पिता वटुदासकेँ लक्ष्मणसेनक महासामन्तचूडामणि कहने छथि (यथा पूर्वमे उद्धृत)। स्वाभाविक रूपसँ श्रीधर मिथिलाक एहि क्षेत्रकेँ सेन साम्राज्यक अधीन रखबामे महत्त्वपूर्ण कारक छलाह। अनेक प्रयासक बावजूद जखन नान्यदेवकेँ एहि क्षेत्रमे सफलता नहि भेटल तखन ओ कूटनीतिसँ श्रीधरकेँ अपना पक्षमे कएलनि। श्रीधरक पिता वटुदासकेँ प्रतिराज रूपमे स्तुति केर साञ्चाधर, राजवेताल, कविराज व्यास आ उमापतिधरक श्लोक सभ सदुक्तिकर्णामृतमे संकलित अछि। (सदुक्तिकर्णामृत, साहित्य अकादेमी, पृष्ठ 786-87)। ओ विक्रमपुरमे छलाह आ श्रीधर अपन आरम्भिक समयमे अपन गाम अँधराठाढ़ीमे रहि सेन साम्राज्यक एहि प्रक्षेत्रक राजपाट सभक देखरेख करैत छलाह।

पूर्वमे कएल नान्यक नेपाल विजय अपूर्ण आ अस्थायी रहल छल। डी आर रेग्मी *(Ancient and Medieval Nepal, Kathmandu, 1952, p 145-46)* कहैत छथि जे 1141 ई.मे फेरसँ नेपालक घाटी क्षेत्रमे नान्यक विजय अभियान भेल।

पूर्वमे कहल गेल अछि जे लक्ष्मणसेनक जन्मक समाद जखन वल्लालसेनकेँ भेटल छल तखन ओ मिथिलेमे छलाह आ ओहि गामक नामकरण लक्ष्मणसेनक नामपर भेल जे आइ लषसेना अछि। एहिसँ ई तऽ एकदम स्पष्ट अछि जे 1119-20 धरि सेन सभक सत्ता मिथिलाक किछु भागपर अवश्य छल 1097मे नान्यदेवक कर्णाट राजवंशक स्थापनाक बावजूद। जी एम सरकार (Journal of the Department of Letters,1927) सन विद्वानक एहि मान्यता (प्रो. राधाकृष्ण चौथरीक History of Bihar, पृष्ठ 99पर उद्धृत)सँ सहमत नहि भेल जा सकैछ जे सेन सभक आधिपत्य मिथिलापर नहि रहल। स्वयं नान्यदेव भरतमुनिक नाट्यशास्त्रक टीका सरस्वती हृदयालंकारहारक पुष्पिकामे अपनाकेँ महासामन्ताधिपति किएक कहैत छथि? एहि तथ्यपर ध्यान देब उचित अछि। निश्चित रूपसँ देवपारा शिलालेखमे उद्धृत 'मुञ्च' वीर सभमे नान्यदेव सेहो छथि आ फेर बादमे गंगदेवक प्रयास आ पौरुषसँ ओ कारागारसँ मुक्त भेलाह। अँधराठाढ़ीक कमलादित्य स्थानक 27टा दीर्घ पोखरिसँ आवृत्त ऊँचगर भूमि, कमलादित्य स्थानक चौकठिमे गंगा यमुनाक कमनीय मूर्त्ति, विशाल प्रस्तर स्तम्भ प्रभृति पुरातात्विक सामग्री सभक उपलब्धता एहि दिशि संकेत करैत अछि जे ई एक महत्त्वपूर्ण स्थल छल। पं. सहदेव झा एकरा अपर राजधानी ओहिना

नहि कहने छथि। (एक आदर्श नगर अँधराठाढ़ी, पृष्ठ 5 आ अँधराठाढ़ी प्रखण्ड की ऐतिहासिक महत्ता, पृष्ठ11)। सेन सभक तऽ ई निश्चित रूपसँ एक महत्त्वपूर्ण आउटपोस्ट छल जे अखन धरि नान्यदेवक हाथ नहि लागल छल।

1141ई.मे शुरू अपन नेपाल अभियानसँ घूरलाक बाद अँधराठाढ़ी प्रक्षेत्रमे सेन दबदबा वला गाम सभमे 1142 ई.क आसपास नान्यदेव अभियान शुरू कएलनि। पूर्व केर एहन अभियानकेँ श्रीधर फलीभूत नहि होमए दैत छलाह तेँ हुनका कूटनीतिसँ अपना पक्षमे मिलाओल गेल। सेन सभक संग भेल भीषण संग्राममे श्रीधरक सहयोगसँ नान्यदेवकेँ विजयश्री भेटल आ कमलादित्य स्थानक एक अन्य सार्थक नाम- कमलादानमे 'कमलादान' अर्थात् लक्ष्मीक आदान-प्रदान भेल छल। एकरे स्मृतिमे सुप्रसिद्ध अँधराठाढ़ी शिलालेख लक्ष्मी नारायणक मूर्त्तिक पादपीठपर उत्कीर्ण भेल छल—

ॐ श्रीमन्नान्यपतिर्जेता गुणरत्न महार्णव:
यत्कीर्त्या जनितो विश्व द्वितीय क्षीरसागर:।
मंत्रिणा तस्यन्नान्यस्य क्षत्रवंशाब्ज भानुना
देवोयं कारित: श्रीमान् श्रीधर: श्रीधरेण च॥

संभवत: श्रीधर केर मानसमे कोनो रचना बीज रूपमे आबि गेल छल तेँ बिनु नामोल्लेख कएने ओ अपन रचनाक संकेत मात्र अँधराठाढ़ी शिलालेखक दोसर भागमे करैत छथि—

यस्यायम्-
वाल्मीकेर्विजयीप्रबन्धो जलधौ व्यासस्य चात्यद्भुते
बाणाद्यैरनवद्यगद्यचतुरैरन्यैश्च विस्तारिते।
अस्माकम् क्व पुनर्गिरामवसर: को वा करोत्यादरम्
यद्बोबालवचोप्य...।

आगाँ केर पंक्ति अस्पष्ट आ अपठनीय भऽ गेल अछि। भाव यैह अछि जे वाल्मीकि, व्यास, बाण केर विशिष्ट रचना रहैत हमर कृति केर के आदर करत ? किन्तु जेना अबोध बालक केर वाणी लोककेँ नीक लगैत अछि तहिना लोक हमर रचनाक आदर करत।

एतऽ मिथिला तत्त्व विमर्शकार म. म. परमेश्वर झाक एक पाँती ध्यान आकृष्ट करैत अछि। ओ एहि शिलालेखमे गंगदेवक नाम प्रतिभासित होएबाक चर्च करैत छथि। (म. म. परमेश्वर झा : मिथिला तत्त्व विमर्श, मैथिली अकादमी, पटना, पृष्ठ 62)। एहिसँ ई तऽ सहज अनुमेय अछि जे सिमराँवगढ़ आ अँधराठाढ़ी शिलालेखक समयमे उल्लेखनीय समयान्तराल अछि। पुत्र मल्लदेव आ गंगदेवक जन्म आ वयस्क होइमे समय तऽ अवश्य लागल होयत। एक शिलालेख राज्य स्थापना कालक वा वास्तु विन्यास कालक अछि तऽ दोसर निर्णायक युद्धमे विजयी भेलापर वा कहू जे राज्य निष्कंटक भेलापर। एक केर समय 10 जुलाई 1097 ई. निर्धारित अछि दोसराक समय निर्धारित नहि अछि। एहि अँधराठाढ़ी शिलालेखमे नान्यदेवकेँ स्पष्ट रूपसँ 'जेता' कहल गेल अछि। इहो अंकित अछि जे हुनक गुण रूपी समुद्रसँ विश्वमे दोसर क्षीरसागर उत्पन्न भऽ गेल। स्पष्ट अछि जे एहिमे ओ विजेता आ गुणसागर रूपमे चित्रित छथि। सेन वंशसँ संबंधित गाम सभपर निष्कंटक अधिकार एकर बादे भेल छल। नेपालपर दोसर विजयक बाद ई अभियान भेल तेँ एकर समय 1142 ई. हम निर्धारित करैत छी।

13. हम कतेक बेर अँधराठाढ़ी शिलालेखकेँ देखने छी मुदा हमरा कहियो गंगदेवक कोनो भान नहि भेल छल। दोसर भाग प्राय: अपठनीय भऽ चुकल अछि। संभव अछि जे म.म. परमेश्वर झा जखन शताब्दी पूर्व शिलालेखक अवलोकन कएने होएताह तखन एहि शिलालेखक अक्षर किछु-किछु स्पष्ट आ पठनीय रहल हो। जल-फूल आ ठोप-चानन चढ़ा श्रद्धालुजन कतेक ऐतिहासिक धरोहरकेँ नष्ट कऽ देलनि वा कऽ रहल छथि, तेकर ठेकान नहि।

14. एकटा महत्त्वपूर्ण तथ्य इहो अछि जे विजयसेनक देवपाड़ा प्रशस्ति (1119-20) आ बैरकपुर ताम्रपत्र लेख (7 वैशाख 62 अर्थात् 1158 ई.मे निर्गत) वा पैकोर (वीरभूमि जिला)क ध्वस्त चित्रलेख हो वा वल्लालसेनक नैहाटी ताम्रपत्र लेख (1170 ई.) हो वा लक्ष्मण सेनक अनुलिया ताम्रपत्र लेख (9 भद्रा तृतीय वर्ष अर्थात् 1182 ई.मे निर्गत), गोविंदपुर ताम्रपत्र लेख, तर्पणदीघी ताम्रपत्र लेख (28 भादव तेसर वर्ष अर्थात् 1182 ई.मे निर्गत), सुन्दरवन ताम्रपत्र लेख (1182 ई.मे निर्गत), मधाईनगर ताम्रपत्र लेख, भोवल अभिलेख (27म वर्ष अर्थात् 1206 ई.मे निर्गत) वा ढाका चित्र लेख (शासन केर तेसर वर्ष अर्थात् 1182 ई.केँ निर्गत) हो कतहु महामाण्डलिक, महासन्धिविग्रहिक वा दूत रूपमे श्रीधर वा वटुदासक उल्लेख नहि अछि। अनुलिया, तर्पणदीघी आ गोविन्दपुर लेखमे महासन्धिविग्रहिक वा दूत (अभिलेख निर्गत करएबामे जनिकर महत्त्वपूर्ण भूमिका रहल हो) रूपमे नारायण दत्त केर उल्लेख अछि। सुन्दरवन ताम्रपत्र लेखमे सन्धिविग्रहिक नारायण

दत्त आ दूत रूपमे कृष्णधर केर उल्लेख अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे श्रीधर एहि समयक अन्तरालमे सेन साम्राज्यक संग नहि छथि। एहिसँ इहो निष्कर्ष बहराइत अछि जे कर्णाट राजवंशसँ आपस फेर सेन राजवंशक सेवामे श्रीधर अपन जीवनक उत्तरार्द्धेमे आएल छलाह। अनुमानत: प्राय: गंगदेवक मृत्यु 1187 ई.क बादे। अपन एहि पारीमे उम्र वार्द्धक्यक कारणें श्रीधर राजकीय सेवासँ बेसी साहित्य सेवा आ भगवत् सेवा दिशि प्रवृत्त भेल छलाह। अँधराठाढ़ी प्रक्षेत्रमे सेन राजवंशक अवस्थिति शेष भऽ गेल छल। एहि कारणेँ बादक ताम्रपत्र लेखमे हुनक चर्च नहि अछि। 1205 ई.मे सदुक्तिकर्णामृत पूर्ण भेल आ एहिमे वल्लालसेन, लक्ष्मण सेन प्रभृति राजा सभक रचना सहित नान्यदेवक रचनाक सेहो उद्धरण संकलित अछि।

उपर्युक्त तथ्य सभक आलोकमे श्रीधर केर काल निर्धारण 1120सँ 1208 ई.क बीच कएल जा सकैछ। एहिसँ श्रीधरकेँ नान्य संग कर्णाटसँ मिथिला अएबाक प्रवाद सहित बहुत रास प्रवादक समाप्ति भऽ जाइत अछि।

15. श्रीधर-नान्यदेव विषयक कर्णाटसँ आव्रजन संबंधी प्रवादपर विचार करब एतऽ हमर अभिप्रेत नहि अछि तथापि एतेक अवश्य कहल जा सकैछ जे मेजर विनोद बिहारी वर्माक शोधग्रंथ 'मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण' केर मनन, अँधराठाढ़ी शिलालेखक अध्ययन आ सेन कालीन देवपाड़ा प्रशस्ति, बैरकपुर, नैहाटी, अनुलिया, गोविंदपुर, तर्पणदीघी, मधाईनगर आदि ताम्रपत्र लेख आ तत्कालीन साहित्य सभक सूक्ष्म अनुशीलनसँ ई तऽ एकदम स्पष्ट अछि जे श्रीधर केर कोनो संबंध कर्णाट क्षेत्रसँ नहि अछि। गौरीपुर राज्य वंशावलीक मूलपुरुष मंग्यदाससँ मिथिलाक श्रीधर धरि 11 पीढ़ीक प्रत्यक्ष संबंध असम-बंगाल-मिथिलासँ प्रमाणित होइछ कर्णाटसँ किन्हु नहि। जखन श्रीधरसँ एगारहम पीढ़ी ऊपर मैथिल मंग्यदाससँ श्रीधर आ हुनक संतति केर क्रमिक विकास उपलब्ध अछि (मेजर विनोद बिहारी वर्मा, मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण, पृष्ठ 200-07) तखन श्रीधरकेँ कर्णाटी कोना कहल जा सकैछ ? नान्यदेव कतेक ठाम स्वयंकेँ कर्णाटी, कर्णाट कुलभूषण आदि कहने छथि मुदा श्रीधर कतहु अपनाकेँ कर्णाटी नहि कहने छथि। श्रीधरक कथा छोड़ल जाय हुनक स्वामी नान्यदेवक एक पीढ़ी ऊपर केर नामक पता किनको नहि अछि। मिथिला तत्त्व विमर्श (पृष्ठ 62)मे म. म. परमेश्वर झा नान्यदेवक भ्राता मान्यदेवक नाम आ मानेचौक गाढ़ामे हुनक स्थानक चर्च करैत छथि। The Political and Cultural heritage of Mithila (पृष्ठ 92)मे प्रो. राधा कृष्ण चौधरी हिनका नृपति वा कृतिराज नामसँ अभिहित् कएने छथि आ इहो कहैत छथि जे हिनका विषयमे बेसी जानकारी नहि अछि। पं. भवनाथ झा अपन एक आलेख नान्यदेव के भरत-भाष्यम् में आत्म प्रकाशमे नान्यदेवकेँ कीर्त्तिराजानुजो नृप:

(कीर्त्तिराजक अनुज) कहि नान्यदेवकैँ लाट (गुजरात) क्षेत्रक वासी कहने छथि। मुदा नान्यदेवकैँ अधिकांश विद्वान् कर्णाटीए मानैत छथि। जँ नान्यदेव कर्णाट क्षेत्रमे कोनो राजा रहितथि तखन ई संभव नहि छल जे हुनक पिता-पितामह आदि केर नाम नहि भेटैत। इहो महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे लिपि सभक विकासमे रूचि रखनिहार कोनो विद्वान् मिथिलाक्षर केर संबंध द्रविड़ समूहक कोनो भाषाक लिपि संग प्रमाणित नहि कऽ सकैत छथि मुदा तिरहुता आ बाँग्ला लिपि मध्य स्वाभाविक समानता साधारणो अवगतिक लोक समझि सकैत छथि। सहोदरा शिलालेख, विजयसेनक देवपाड़ा प्रशस्तिसँ विश्वरूपसेनक मदनपाड़ा आ केशवसेनक इदिलपुर ताम्रपत्र लेख तथा अँधराठाढ़ी शिलालेख धरिक यात्रामे तिरहुता आ बाँग्ला लिपि अपन मानक रूप ग्रहण कएलक, एहिमे कोनो संशय नहि। राढ़क कायस्थसँ संबंध अत्यन्त पुरान अछि आ राढ़ी कायस्थ अखनो रूढ़ अछि। इहो तथ्यात्मक अछि जे मिथिलाक्षरपर कर्णाटी लिपि सभक कोनो प्रभाव नहि अछि। मिथिलाक्षर आ बाँग्ला लिपिमे अद्भुत समताक स्वर देखला-सुनलाक बादो जँ एगारह पीढ़ीसँ मिथिला-बंगाल-असममे रचल-बसल श्रीधरकैँ कर्णाटी कही तखन ने इतिहास आ ने विज्ञानक कोनो शोध अहाँक कल्याण कऽ सकत! नान्यदेव कर्णाट क्षेत्रमे कोनो राजा नहि छलाह। एहि सभक बावजूद श्रीधरकैँ नान्यदेवक संग कर्णाट क्षेत्रसँ मिथिला अएबाक प्रवाद 'अपन उपाय नहि सूरदासक घटकैती' उक्तिकैँ साकार करैत अछि। सत्य यैह अछि जे द. भारतसँ मिथिला, बंगाल आदिपर आक्रमणक इतिहास चालुक्य राज मंगलेशक महाकूटेश्वर स्तम्भ लेख (कर्णाटक केर बागलकोट जिला, 601 ई.)सँ प्रारम्भ अछि। फेर चन्देलराज द्वारा मिथिलाकैँ शिथिला करब (खजुराहो शिलालेख), सोमेश्वर प्रथम केर पुत्र विक्रमादित्य षष्ठक विजय अभियान, राजेन्द्र चोलकैँ गंगाइकोंडक उपाधि आ वंग देशपर आक्रमण कऽ गोविन्द चन्द्रकैँ पलायन हेतु बाध्य करब (तिरुमलाइ शिलालेख), चोलराज कुलोत्तुंगक तमिल स्तवन कलिंगत्तुप्पर्णीमे अनेक राजा सभक उल्लेख, कर्णाटी सभसँ वारेन्द्रीक रक्षा लेल रामपाल द्वारा चोलसँ समझौता (रामचरित्), कर्णाट आ चेदिराज कर्ण गठजोड़ (उदयादित्यक नागपुर प्रशस्ति), कलचुरी राजा कर्ण द्वारा काशीराजकैँ पस्त करैत चम्पारण विजय (प्राकृत पैंगलम, पद 4 आ अल्हणदेवीक भेराघाट शिलालेख), सोमेश्वर प्रथम केर सेनानायक भोगरस द्वारा वंगकैँ जीतब (1053 ई.क केलाबाड़ी अभिलेख), चालुक्य सामन्त अच केर विक्रमादित्य षष्ठ संग आबि वंग अभियानकैँ संचालन करब आदिसँ स्पष्ट अछि जे दक्षिणसँ उत्तर अनेक अभियान भेल। एहने कोनो अभियानमे छोटमोट सरदार रूपमे नान्य एम्हर आएल छलाह आ अलर्कक खजाना एवं अपन बुद्धि-विवेक, सौभाग्य-शौर्य, पुरुषार्थ- प्रतापादि बलेँ जनक

वंश अवसानोत्तर प्रथम स्वतंत्र मिथिला नरेश भऽ मिथिलाक चंचला राजलक्ष्मीकेँ स्थिर कएलनि। एतऽ इहो उल्लेखनीय अछि जे ओहि संक्रान्ति कालमे सम्पूर्ण मिथिला (नेपाल सहित)पर ने तऽ निर्विवाद सत्ता सेन सभक छल ने पाल सभक आ ने कर्णाट सभक। सभ अपन-अपन जोगारमे लागल छल। दक्षिणात्य सेनकेँ बंगाल आ कर्णाटीकेँ मिथिलामे सफलता भेटल। एतेक निश्चित रूपसँ कहल जा सकैछ जे एहि कर्णाटी सभकेँ बंगाल वा मिथिलामे अबिते सफलता नहि भेटल छल। दुनू बंगाल आ मिथिलामे तात्कालिक शासक सभक सामन्त भेलाह आ अनुकूल परिस्थिति पाबि अपन विस्तार कएलनि। इहो महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे राजत्व प्राप्त करिते सम्पूर्ण क्षेत्रपर निर्विवाद आ निष्कंटक राज नहि रहल। कर्णाट राज रहैत भागलपुर जिलाक सनोखर गामसँ 1166 ई.क वल्लालसेनक शिलालेख भेटब, महिपाल प्रथम (1026 ई.) केर अभिलेख मुजफ्फरपुरक इमादपुरसँ प्राप्त होएब, नौलागढ आ वनगाँवसँ विग्रहपाल तृतीयक अभिलेख प्राप्त होएब, कंसुली दानपत्रसँ पाल नरेश रामपाल केर राजा जनकक भूमि धरि आधिपत्यक कथा, काशी आ प्रयागमे लक्ष्मणसेन द्वारा विजय स्तम्भ स्थापित करब, बिहारमे कर्णाट आ सेन सभक राज रहैत गहड़वाल राजा गोविन्दचन्द्र (1114-55 ई.)क 1124 ई. केर मनेर प्लेटसँ भूमि दान करब, हिनके लार प्लेटसँ ज्ञात होएब जे 1146 ई.मे ओ मुंगेरमे छथि, 1161 ई.क मदनपालक बालगुदर लेखसँ पटना-मुंगेरक मध्य क्रिमिला विषयपर हुनक अधिकार आदिसँ स्पष्ट होइत अछि जे एक राजाक क्षेत्रमे दोसर राजा केर अभिलेख, दानपत्र, ताम्रपत्र आदि भेटैत रहैत छल। संक्रान्ति कालमे सम्पूर्ण सम्प्रभुता संभव नहि रहैछ। ई बादमे अबैछ। ओहि समय एहन उपलब्धता प्रमाणित करैछ जे शासन हेतु सम्पूर्ण क्षेत्रपर निर्भ्रान्त सम्प्रभुता आवश्यक नहि छल। छोट-छोट क्षेत्रपर सेहो शासन संभव छल। कमसँ कम मिथिलाक सेन संबंधी गाम सभक सन्दर्भे एतेक तऽ निश्चित रूपसँ कहल जा सकैछ।

श्रीधर केर ई काल निर्धारण अनन्तिम अछि। एहिपर मंथन चलि रहल अछि। सुधी आ विद्वान् पाठक सभसँ निवेदन जे एहिपर नि:संकोच अपन सुझाओ देथि ताकि एकर अंतिमीकरण संभव हो आ निष्कर्ष केर अमृतसँ हमसभ आप्यायित भऽ सकी।

[कर्णप्रिय त्रैमासिक, अंक 5-6 (मार्च 2021) एवं 7-8 (सितम्बर 2021)]

मैथिल करण कायस्थक कर्णाटसँ आव्रजन : मिथक वा यथार्थ

वर्तमान मैथिल करण कायस्थक पूर्वज कर्णाटसँ मिथिला आएल छथि वा मूलतः मैथिल छथि, ई प्रश्न अत्यन्त जड़िआएल अछि। प्रवाद रूपमे सामान्यतः यैह प्रचलित छल जे राजा नान्यदेवक मंत्री श्रीधर हुनके संग कर्णाट क्षेत्रसँ मिथिला अएलाह आ चारि खेपमे हुनक सर-कुटुम्बक 142टा कायस्थ परिवारकेँ मिथिला अनलनि आ एतए ई सभगोटे तिरहुतिया कायस्थ नामसँ अभिहित भेलाह। ई प्रवाद ओहिना पसरल जेना शंकराचार्यसँ मिथिला मुकुटमणि मंडन मिश्रक शास्त्रार्थमे पराजय केर प्रवाद माधवाचार्य आदिक शंकर दिग्विजय ग्रंथसभसँ पसरल छल।

मैथिल करण कायस्थक कर्णाटसँ कथित आव्रजन केर समीक्षा हमर अभिप्रेत अछि। सर्वप्रथम एहि प्रश्नपर विचार करब उचित जे आखिर ई प्रवाद कोना आ किएक प्रचलित भेल अछि। ई सर्वथा सत्य जे बिनु आगिक धुआँ नहि होइछ मुदा ई धुआँ कृत्रिम अग्निसँ अछि वा प्राकृतिक, एकर मूल्यांकन शोधपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टि मात्रसँ संभव अछि। कोनो पूर्वाग्रह वा हेतुविद्या (Teleology)क अवधारणासँ नहि।

यथार्थमे एहि प्रवादक उत्स अछि मिथिलाक आरम्भिक गजेटियरकार मुंशी रासबिहारी लाल दासक मिथिला दर्पण। 1915 ई.मे प्रथम बेर प्रकाशित एहि महत्त्वपूर्ण ग्रंथमे उल्लेख अछि जे नान्यदेवक संग 12 बान्धव सभक संग श्रीधर मिथिला अएलाह आ दोसर बेर 20, तेसर बेर 30 आ चारिम बेर 80 (कुल 142 कायस्थ परिवार) मिथिला आबि बसलाह। कर्णाटक केर जाहि गामसँ जिनकर आव्रजन भेल ओ हिनका सभक मूल भेल। आदि आदि।[1]

एहि सिद्धान्तक समीक्षामे मुख्य रूपसँ दू नाम अभरैत अछि- नान्यदेव आ श्रीधर। तेसर रत्नदेवक नाम सेहो अबैत अछि मुदा ई पहिल दुनू समान महत्त्वपूर्ण नहि अछि।

नान्यदेव विषयक जे पहिल शिलालेखीय प्रमाण भेटैत अछि ओ थिक सिमराँवगढ शिलालेख। एहिमे उल्लेख अछि—

नन्देन्दुविन्दु विधु सम्मितशाकवर्षे
सच्छ्रावणे सितदले मुनि सिद्धतिथ्याम्
स्वाती नक्षत्रो शनैश्चर दिने करवैरि लग्ने
श्रीनान्यदेव नृपतिर्व्यदधीत वास्तुम्।

नन्द 9, इन्दु 1, विन्दु 0, विधु 1सँ 9101आ अंकस्य वामागति:सँ शक् 1019 अबैत अछि। स्वाती नक्षत्र, साओन मास, शनि दिन आदिक गणनासँ एकर समय 10 जुलाई 1097 ई. निर्धारित होइत अछि।

आब श्रीधर-नान्यदेव विषयक सुप्रसिद्ध अँधराठाढ़ी शिलालेख देखल जाय—

ॐ श्रीमन्नान्यपतिर्जेता गुणरत्न महार्णव:
यत्कीर्त्या जनितो विश्व द्वितीय क्षीरसागर:।
मंत्रिणा तस्यन्नान्यस्य क्षत्रवंशाब्ज भानुना
देवोयं कारित: श्रीमान् श्रीधर: श्रीधरेण च॥
यस्यायम्-
वाल्मीकेर्विजयीप्रबन्धो जलधौ व्यासस्य चात्यद्भुते
बाणाद्यैरनवद्यगद्यचतुरैरन्यैश्च विस्तारिते।
अस्माकम् क्व पुनर्गिरामवसर: को वा करोत्यादरम्
यद्वोबालवचोप्य...।

आगू केर पाँती अस्पष्ट अछि। भावसँ स्पष्ट होइछ जे ई श्रीधर महाशयक सदुक्तिकर्णामृत केर पूर्वपीठिका अछि जे वाल्मीकि, व्यास, बाण आदिक अद्भुत गद्य अछैत हमर एहि रचनाक आदर के करत? मुदा लोककेँ जेना नेना सभक तोतराइत अधबोलिया नीक लगैत अछि तहिना हमर रचना हुनका सभकेँ आनन्दित करत।

संभव अछि जे आगू एकर तिथि देल गेल हो मुदा आब ओकर मात्र अनुमान कएल जा सकैछ। दुर्योगसँ एहि शिलालेखक काल 1097 ई. मानि लेल

गेल जाहि कारणेँ अनेक विसंगति उत्पन्न भऽ गेल। सदुक्तिकर्णामृत ग्रंथक अंतमे एकर रचनाकाल देल गेल अछि—

शाकेत्र सप्तविंशत्यधिक शतोपेत दशशते शरदाम्
श्रीमल्लक्ष्मणसेन क्षितिपस्य रसैक विंशेब्दे।
सवितुर्गत्या फाल्गुनविंशेषु परार्थहेतवे कुतुकात्
श्रीधरदासेनेदं सदुक्तिकर्णामृत चक्रे।[2]

गणनासँ ई शकाब्द 1127 अर्थात् 1205-06 ई. अबैत अछि। जँ 1097 ई.मे श्रीधरकेँ पचीसो बरखक मानी तऽ 1205-06मे हुनकर आयु 133 बरख मानए पड़त, जे उचित नहि होएत।

एहि शिलालेखक समय निर्धारित करबाक क्रममे किछु नव तथ्यपर विचार करब उचित।

परम्पराया ई मान्य अछि जे 1119-20मे वल्लालसेन मिथिलामे छलाह। पुत्र लक्ष्मणसेनक जन्मक समाद जखन भेटल तखन ओ वर्तमान लखसेना गाममे छलाह आ एहि कारणेँ पुत्र लक्ष्मणसेनक नामपर एहि गामक नाम लक्ष्मणसेन राखल गेल छल जे आजुक लखसेना (भारतीय जनगणना ग्राम कोड 220130) थिक। फूलपरास प्रखण्डक पैता आ बैकामे सेन नामान्तधारी राजपूत अखनो बसैत छथि। एहि प्रक्षेत्रमे सेन साम्राज्यसँ जुड़ल आओर गाम अछि सैनी (भारतीय जनगणना ग्राम कोड 220122), एराजी सैनी (भारतीय जनगणना ग्राम कोड 220123)। अँधराठाढ़ीसँ 3 किमीपर जड़िसेन (भारतीय जनगणना कोड 220670)क डीहकेँ तऽ पं. सहदेव झा सेन सभक जड़िसँ जोड़ैत छथि आ लगक कमलादित्य स्थानकेँ स्थानीय राजधानी कहैत छथि (एक आदर्श नगर अँधराठाढ़ी, पृष्ठ 5 आ अँधराठाढ़ी प्रखण्ड की ऐतिहासिक महत्ता,पृष्ठ 11)। एहिसँ एतेक तऽ निश्चित अछि जे 1097 ई.मे नान्यदेवक मिथिला राज्यारोहण केर बादो एहि सम्पूर्ण क्षेत्रपर नान्यक सम्प्रभुता नहि छल। भरत केर नाट्यशास्त्रक टीका सरस्वती हृदयालंकारहारक पुष्पिकामे नान्यदेव स्वयंकेँ महासामन्ताधिपति कहैत छथि। निर्विवाद राजा रहलापर ओ स्वयंकेँ महासामन्त किएक कहितथि? ओ कोन राजाक महासामन्त छथि एहि प्रश्नक उत्तर देवपाड़ा प्रशस्ति दैत अछि। देवपाड़ा प्रशस्तिलेखमे नान्यदेवकेँ वल्लालसेन/ विजयसेनक कारागारमे रहबाक वर्णन आएल अछि जाहिमे नान्यदेव, राघव, वीर आ वर्द्धनकेँ 'मुञ्चवीर' कहल गेल अछि—

त्वं नान्य-वीर-विजयीति गिर: कवीनां
श्रुत्वाऽन्यथा मननरूढ़निगूढ़रोष:।
गौड़ेन्द्रमद्रवदपाक्वत कामरूप
भूपं कलिंगमपि यस्तरसा जिगाय॥20॥

शूरंमन्य इवासि नान्य किमिह स्वं राघव श्लाघसे
स्पर्धां वर्द्धन मुञ्च वीर विरतो नाद्यापि दर्प्पस्तव।
इत्योन्यमहर्निश प्रणयिभि: कोलाहलै: क्ष्माभुजां
यत्कारागृहयामिकैर्नियमितो निद्रापनोदक्लम्॥21॥[3]

स्पष्ट अछि जे ओ स्वयं सेन साम्राज्यक विजयसेन/वल्लालसेनक महासामन्त रहल छलाह। बादमे पुत्र गंगदेवक पौरुषसँ ओ कारागारसँ मुक्त भेल छलाह। अपन एक पृथक् आलेख 'श्रीधर केर काल निर्धारण : एक नवदृष्टि'[4]मे हम विस्तारपूर्वक श्रीधर महाशयक कालनिर्धारण 1120-1208 ई. करैत अँधराठाढ़ी शिलालेखक समय 1142 ई. निर्धारित कएने छी। एहिसँ श्रीधर महाशय विषयक अनेक प्रवाद सभक उन्मूलन भऽ जाइत अछि। जिज्ञासुजन 'कर्णप्रिय' त्रैमासिक केर अंक 5,6 आ आगामी अंक केर अवलोकन कऽ सकैत छथि।

इहो तथ्यात्मक अछि जे नान्यदेव कतेक ठाम स्वयंकेँ कर्णाट कुलभूषण कहने छथि मुदा श्रीधर कतहु अपनाकेँ कर्णाटी नहि कहने छथि।

आव्रजन आ प्रवास अनादि कालसँ होइत रहल अछि। मिथिलासँ उपटि 9 गोत्रक 75 मैथिल ब्राह्मण परिवार 1381-82मे मथुरा जिलाक बिशौली गाममे बसि गेल छलाह। अकबर केर समय 1556-57मे पटनामे भेल विद्वत् सम्मेलनक बाद रघुनन्दन झा, जीवनाथ झा आओर पं. शिवरामकेँ आगरा आनल गेल छल। अकबर आ टोडरमल 80 मैथिल ब्राह्मण परिवारकेँ आगरा आनि शहजादी मंडीमे बसओलनि। जहाँगीरक समय महाराज शुभंकर ठाकुरसँ मनोमालिन्यक बाद एक सयसँ अधिक मैथिल ब्राह्मण परिवार मिथिलासँ आगरा आबि गेलाह। दारा शिकोह बनारसमे 150 पंडित सभक सभा करओने छलाह जाहिमे 25 पंडित मैथिल ब्राह्मण छलाह। दारा शिकोह हुनका सभक सम्मान करैत कोल (अलीगढ़)मे बसओलनि।[5]

प्रवास विषयक Migration and Achievements of Maithila Panditas : The Migrant Scholars of Mithila (जे सी झा), हमारा प्रवास (पं. रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र'), ब्रजस्थ मैथिल कवि (डॉ. राधेबिहारी लाल

सक्सेना 'राकेश'), ब्रज के आधुनिक कवियों के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन (डॉ. प्रेमदत्त मिश्र 'मैथिल'), मिथिला के ब्रजस्थ ब्राह्मणों का ब्रजमें आगमन, कब? कहाँ? कैसे?(पं. रघुवीर सहाय शर्मा) आ प्रस्तुत लेखक केर हिन्दी भाषा और साहित्य के विकासमें मिथिला का योगदान आ सुलतानपुर सौरभ देखल जा सकैछ।

ई आश्चर्यजनक अवश्य अछि जे विभिन्न समयमे मिथिलासँ 280 मैथिल ब्राह्मण परिवार उत्तर प्रदेश गेलाह आ ओ सभ अखनो ओतऽ अपन मैथिलत्व सुरक्षित रखने छथि आ मिथिलामे अपन लोक सभक विकासपर मुदित छथि। ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण महासभा, आगरा द्वारा 27 दिसम्बर 1954ई.कैँ अजमेरमे मिथिलेश महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंहक सभापतित्वमे आयोजित अ.भा. मैथिल महासभाक 47म अधिवेशनमे हिनका सभकैँ मैथिल ब्राह्मण रूपमे मान्यता भेटि गेल मुदा कथित रूपसँ श्रीधर संग मात्र 142 टा कर्णाटी परिवार मिथिला अएलाह आ एतऽ अपन जाति, धर्म, संस्कार, रीति-रिवाज सभटा बिसरि गेलाह आ कर्णाटमे करण कायस्थ निर्वंश भऽ गेल। बंगलुरु आ बीदरक किछु गामक भ्रमण हम कएने छी। करण कायस्थक गप्प तऽ छोड़ल जाय जे ओ सभ चित्रगुप्त भगवान् केर नाम धरि नहि सुनने छथि। एकर बादो एहन कठिन कल्पना कएल गेल। ई कथमपि संभव नहि अछि जे कोनो क्षेत्रसँ 142 परिवार पलायन कऽ जाय आ ओहि क्षेत्रमे ओ जाति आ समाज निर्वंश भऽ जाय।

श्रीधरक कर्णाटसँ कथित आव्रजनसँ पूर्व मिथिलामे कायस्थ सभक अस्तित्व छल। पाल नरेश धर्मपाल (769-809 ई.)क समय 84 सिद्धमे प्रथम सिद्ध शबरपा शिष्य लुइपा कायस्थ छलाह।[6] एहिना 1045मे बौद्ध धर्मक प्रचारार्थ तिब्बत गेल तिब्बती ग्रंथ स्तन्-ग्युरमे संगृहीत ज्ञानोदयोपदेश केर लेखक बसाढ़ निवासी गयाधर कायस्थ कुलोद्भव छथि।[7] कलचुरी कर्णदेव(1040-1050 ई.)क दरबारमे उपस्थित आ रामायणक पांडुलिपि तैयार कएनिहार पं. गोपति कायस्थ छथि।[8] अपसढ़ पुरालेख (672ई.) केर लेखक गौड़ निवासी सूक्ष्म शिवा, एतहि केर चन्देल पुरालेख (954ई.) लेखक करणिक जद्धा आदि सेहो कायस्थ कुलोद्भव छथि। श्री अशोक कुमार वर्मा बादल स्तम्भ शिलालेख आ भट्ट भवदेवक शिलालेख सभक आधारपर सिद्ध कएने छथि जे बंगालमे 8म, 9म आ 10म शताब्दीमे कायस्थक अस्तित्व छल।[9] राढ़, गौड़, बसाढ़, भागलपुर, नेपाल आदिमे नान्यदेव कालसँ पूर्व कायस्थक उपलब्धता ई प्रमाणित करबा लेल यथेष्ट अछि जे कथित कर्णाटी सभ मैथिल करण कायस्थक आदिपुरुष नहि भऽ सकैछ।

आब हम श्रीधर केर उत्स मिथिला-बंगाल-असममे देखबाक प्रयास करैत छी। मेजर विनोद बिहारी वर्मा मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण नामक अपन शोधपूर्ण पोथीमे 8म शताब्दीमे गौड़ कायस्थ मंग्यदासकेँ शूर राजाक अधीन उत्तर राढ़ क्षेत्रमे निवास करैत सीमान्त देशक रक्षा करैत उद्धृत कएने छथि—

दास वंश मंग्य नाम राढ़ा भरि यशोगान।
तार पुत्र नाम टंकपाणि
ब्राह्मण चक्रान्ते परि पितृवास परिहरि
उपनीत पाताली राजधानी महाराज चक्रवर्ती,
ताहाका करिला भक्ति, दिला पद प्रधान लेख्य
उच्च भावे सबे परितोषे।
(बंगेर जातीय इतिहास, राजन्यकान्त)[10]

एहि मंग्यदासक वंशानुगत विवरणी एना उद्धृत अछि—

मंग्यदास → टंकपाणि → चक्रपाणि → i)शूरपाणि ii) धीरपाणि।
ii) धीरपाणि → ×

i) शूरपाणि → श्रीधर(1) → i)भूधर ii) गदाधर।

i) भूधर → ×

ii) गदाधर → राज्यधर → श्रीधर (2) प्र. लक्ष्मीकर → शूलपाणि प्र. वंशीदास →i) पिनाकपाणि ii) चक्रधर (चक्रपाणि) प्र. सर्वाकर।

i) पिनाकपाणि → टंकपाणि → रत्नपाणि → नरसिंह → i) वटु ii) पाटु → श्रीधर (3) आ iii) भुवन।

ii) चक्रधर (चक्रपाणि) प्र. सर्वाकर → देवधर प्र. श्रीधर (4) → बोधि दास वा बोधि राउ → आनन्दकर → चन्द्रकर → सूर्यकर → प्रीतिकर → अमृतकर।

उपर्युक्त वंशवृक्ष दैत मेजर विनोद बिहारी वर्मा चारिम श्रीधर (सर्वाकर पुत्र देवधर) कैँ नान्यदेवक मंत्री मानैत छथि। श्रीधर अपन सदुक्तिकर्णामृतमे वटुदासकैँ अपन पिता, प्रतिराज आ महासामन्त चूडामणि कहैत छथि—

तस्यासीत्प्रतिराजतद्धतमहासामन्तचूडामणिर्नाम्ना
श्रीवटुदास इत्यनुपमप्रेमैकपात्रं सखा।
तापं सन्तमसं हरन्नहरहः कीर्त्तिं दधत्कौमुदीं
साक्षादक्षयसूनृतामृतमयः पूर्णः कलानां निधिः॥[11]

एहि ग्रंथमे प्रतिराज स्तुतिमे उमापतिधर, राजवेताल, साञ्चाधर आ कविराज व्यासक रचना उद्धृत अछि जाहिमे वटुदासकैँ अद्‌भुत प्रशंसा अछि।[12] एहि तथ्यसँ आ एकहि पाथरमे श्रीधर केर शिलालेख आ सदुक्तिकर्णामृत केर प्रस्तावनासँ स्पष्ट होइछ जे यैह तेसर वटुपुत्र श्रीधर (जिनका लिपिकारक भ्रमसँ पाटुपुत्र कहि देल गेल अछि) नान्यदेवक मंत्री छलाह। पिता वटुदास लक्ष्मणसेनक संग विक्रमपुरमे छलाह आ श्रीधर अपन गाम अँधराठाढ़ीमे रहि सेन साम्राज्यक सेवामे रत छलाह आ एहि प्रक्षेत्रक राजकाज सम्हारैत छलाह। बादमे 1142 ई.क लगीच ओ नान्यदेवक मंत्री भेलाह आ एहि सम्पूर्ण क्षेत्रपर नान्यक अधिकार भेल आ कमला अर्थात् लक्ष्मीक आदान-प्रदान कमलादानमे भेल जेकर स्मृतिमे अँधराठाढ़ी शिलालेख स्थापित भेल।

मंग्यदाससँ वटुदास पुत्र श्रीधर धरि 11 पीढ़ीक वर्णन मिथिला-बंगालमे उपलब्ध अछि। इहो उल्लेखनीय अछि जे मिथिला आलोच्य कालसँ बहुत बाद धरि पंचगौड़मे गानल जाइत रहल। राजा शिवसिंह पंचगौड़ेश्वर रहल छथि। मिथिलाक लिपि, प्राणिजात आ वनस्पतिजात (fauna and flora), हरीतिमा, खेती-बाड़ी, रहन-सहन, बनावट, खान-पान, आचार-विचार, आदान-प्रदान आदि बंगालसँ मिलैत-जुलैत अछि कर्णाट क्षेत्रसँ कथमपि नहि। एम्हर जखन श्रीधर केर 11 पीढ़ीक क्रमिक वंशानुक्रम उपलब्ध अछि आ नान्यदेवक पिता-पितामहक नाम मिथिलाक कोन कथा जे कर्णाटको केर कोनो विद्वान् नहि कहि सकैत छथि तखन श्रीधरकैँ नान्यदेवक संग कर्णाट क्षेत्रसँ अएबाक बात कोनो विवेकी मनुक्ख मानि नहि सकैत अछि। एहन कोनो शिलालेख वा अभिलेख नहि अछि जे श्रीधर महाशयकैँ कर्णाटी प्रमाणित कऽ सकए। हुनकर सदुक्तिकर्णामृत प्रमाणित करैत अछि जे ओ सेन साम्राज्यक महत्त्वपूर्ण पदधारी छलाह।

एकटा आर महत्त्वपूर्ण प्रश्न ई सेहो ठाढ़ होइत अछि जे मैथिल करण कायस्थ जँ कर्णाटी छथि तखन मिथिलामे बसल श्रीवास्तव, अम्बष्ठ आदि कायस्थ सेहो कर्णाटी छथि की? मिथिलाक बाहर बिहार वा अन्य प्रदेशमे बसल करण कायस्थ सेहो कर्णाटी छथि की? गया जिलामे करण कायस्थक अस्तित्व सेहो अत्यन्त प्राचीन अछि। हुनको सभकेँ कर्णाटी कहल जा सकैत अछि की? उत्तर स्पष्ट अछि जे नहि। तखन मात्र कर्णाट आ कर्णमे साम्य देखि स्वयंकेँ बाहरसँ आएल कहि किछु अपन विशिष्टताक धाक जमएबाक ई प्रयास मात्र लगैछ।

आब हम भाषा विज्ञान, रीति-रिवाज, पावनि-तिहार, संस्कार, खान-पान, वेषभूषा, शरीर छाया (Body Silhouttee) आदि निकषपर श्रीधर महाशयक कर्णाट क्षेत्रसँ आव्रजन केर सिद्धान्तक मूल्यांकन करब।

1. भाषा विज्ञान— नान्य द्रविड़ भाषाक शब्द अछि जेकर अर्थ सुच्चा आ स्नेहास्पद होइत छैक। श्रीधर संस्कृतक शब्द थिक जेकर अर्थ विष्णु होइछ। कर्णाट क्षेत्रक भाषा कन्नड़ द्रविड़ मूलक भाषा थिक आ मैथिली मागधी मूलक। मैथिलीमे मूल कन्नड़क एकटा शब्द नहि अछि। ने दुनूक लिपिमे कोनो साम्य अछि। जँ कर्णाटसँ आव्रजन तथ्यात्मक रहैत तखन मैथिलीमे कन्नड़क शताधिक शब्द रहैत वा मैथिली-कन्नड़क मिश्रणसँ एक नव भाषाक सर्जना भेल रहैत। जेना करनालु भाषाक निर्माण उड़िया आ तेलुगु भाषाक मिश्रणसँ भेल जे करणम् सभमे प्रचलित अछि। मूलतः पुरी आ कटक केर वासी उड़ियाभाषी विजयनगर साम्राज्यमे रहि गेल करणम् सभक भाषा करनालु जकाँ मिथिला क्षेत्रमे कोनो कन्नड़-मैथिली मिश्रित भाषाक उद्‌भव नहि भेल। भाषा विज्ञानक कोनो निकषपर मैथिली आ कन्नड़क सम्बन्ध नहि दर्शाओल जा सकैछ।

2. रीति-रिवाज—

i) बियाह-दान : कर्णाट क्षेत्रमे काशी यात्रा एक विधि छैक जाहिमे वर अपन अभिभावक द्वारा बियाहक लेल कोनो सुरिसारि नहि देखि काशीयात्राक स्वाँग करैत अछि। माम ओकरा बौसबाक प्रयास करैत छथि जे अपन बेटीसँ तोहर बियाह करा देबौ। एहन कोनो विधि मैथिल करण कायस्थमे नहि अछि। ममिऔत-मसिऔत बहिन वा भगिनीसँ बियाहक कोनो बात एतऽ संभव नहि अछि मुदा कर्णाट क्षेत्रमे ई सामान्य बात अछि। भुसना सेनुरक प्रयोग आ चतुर्थी दिन दोबारा सिन्दुरदानक कोनो रीति कर्णाटमे नहि अछि। दुनू ठामक विधिमे कोनो साम्य नहि अछि।

ii) मुण्डन-चूड़ाकरण : कर्णाटकमे मात्र एक बेर मुण्डन आ मिथिलामे मुण्डन केर बाद फेर चूड़ाकरण सेहो होइत अछि।

iii) दाह-संस्कार : कर्णाटकमे वयस्ककेँ मृत्युक बाद गाड़ि दैत अछि आ नेनासभकेँ अग्नि संस्कार होइत अछि। मिथिलामे ठीक उन्टा।

iv) पावनि-तिहार : कर्णाटकमे कम्बाला महोत्सवमे महिँसक प्रतियोगिता लोकप्रिय अछि एम्हर गोवर्द्धन पूजामे सभ पशुकेँ नव रस्सी-पगहा भेटैछ। करगा महोत्सव ओम्हर द्रौपदीकेँ समर्पित अछि एम्हर एहन कोनो पावनि नहि। मकर संक्रान्ति, गौरीपूजा, गणेश चतुर्थी, रामनवमी, कृष्णाष्टमी, दशहरा, दीपावली, नागपंचमी दुनू ठाम प्रचलित अछि मुदा स्वरूप अलग छैक। कोजागरा, तुषारी, वटसावित्री, मधुश्रावणी, जुड़शीतल, चौरचन्, छठि, चित्रगुप्त पूजा आदि कर्णाटमे कत्तहु नहि। हनुमानी ध्वजा आ सिरागू घर मिथिलाक प्रत्येक आँगनमे भेटत कर्णाटकमे नहि।

v) खान-पान : दुनू क्षेत्रक खान-पान एकदम अलग अछि। डोसा आ रसम् मिथिलामे तथा दही-चूड़ा कर्णाटमे बिनु विशेष ओरिआओन कएने नहि भेटत।

vi) क्रीड़ा-नृत्य : मिथिलाक लोकनृत्य जेना जट-जटिन, झिझिया, सामाचकेबा एवं कर्णाटक केर डौलु कुनीथ, देवरे थत्ते आदिमे कोनो साम्य नहि अछि। ओम्हर केर प्रसिद्ध नृत्य नाटिका यक्षगान आ नृत्य महोत्सव पट्टा डाकल केर मिथिलामे केओ नाम धरि नहि सुनने होएत।

vii) गीत-संगीत : आ. भरत केर नाट्यशास्त्रपर नान्यदेवक भाष्य सरस्वती हृदयालंकारहार (अपर नाम भरत भाष्य आ भरत वार्त्तिक सेहो) भण्डारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूनाक हस्तलिखित ग्रंथ सभक सूची भाग 12, पृष्ठ 377-83, संख्या 111 रूपमे उपलब्ध अछि। एहिमे नान्यदेवक दोसर ग्रंथ ग्रंथ महार्णव केर चर्च सेहो अछि। नान्यदेव संगीतमे तीन ग्राम- षड्ज, मध्यम आ गान्धारमे तेसर गान्धार ग्राम आ तज्जन्य रागक वर्णनमे अनेक कर्णाटी राग सभक उल्लेख कएने छथि। ई सभ मिथिलामे लोकप्रिय नहि भेल। कर्णाट शैलीक वर्णम्-पल्लवी, अनुपल्लवी आ मुक्तीश्वर, जावाली आ तिल्लाना शैली मिथिलामे नहि अछि। कर्णाटक आ मिथिलाक रागक प्रकृतिमे आ संगीतमे मूलभूत पार्थक्य अछि।

3. मूलग्राम/डेरा— कल्पना ई भेल जे कर्णाटक केर जाहि गामसँ उपटि करण कायस्थ मिथिला प्रयाण कएलनि ओ हुनक मूलग्राम भेल आ मिथिलामे

जाहि गाममे बसलाह से हुनक डेरा भेल। कर्णाटक वा कोनो राज्यक ग्रामसूची भारत सरकारक जनगणना विभागक साइटपर उपलब्ध अछि। कर्णाटक केर 30 जिलाक 27397 ग्रामक सूचीमे अपवादस्वरूपे किछु नाम साम्य भेटत। कत्तहु कथित मूलग्राम नहि भेटत। हँऽ जँ अपने कर्णाट केर बीदर, मुघोल, कोप्पा, कोट्टनहल्ली/कित्तनहल्ली/ कोप्पल आ बल्लूर/बेलूरकेँ क्रमशः मिथिलाक बीअर, मेघौल, खोपा, कोटपाल आ बलौर मानबाक लेल प्रतिबद्ध होइ तखन किछु कहब-सुनब व्यर्थ अछि। एहन नाम साम्य कोनो राज्यमे भेटि सकैत अछि। भाषा वैज्ञानिक सभ केहनो कठिन कल्पना करथि एहि विन्दुपर ओ फलवती नहि भऽ सकैछ। मैथिल ब्राह्मणक मूलग्राम आ मैथिल करण कायस्थक मूलग्राम बहुलांशमे एकहि अछि। दुनूक पावनि-तिहार आ अन्य बहुत किछु समाने अछि। मैथिल करण कायस्थ ओतबे मूल मैथिल छथि जतेक एतऽ केर मैथिल ब्राह्मण। अखन धरि सिद्धान्तकाल पंजीकारगण पढ़ैत छथि— ओ ब्राह्मण-कर्णगोष्ठी लोकनि...।

4. शरीर छाया (Body Silhouttee)— मैथिल करण कायस्थ आ कर्णाटी सभक काया छाया (Body Silhouttee) पूर्णतः फराक् अछि। काया छाया विज्ञानमे रूचि रखनिहार एहि तथ्यसँ पूर्ण रूपेण परिचित छथि। ओना DNA जाँचसँ सेहो एहि प्रवादक निःसारता प्रमाणित भऽ सकैछ। ई पृथक् बात जे आइ धरि एहन जाँच नहि भेल अछि।

उपर्युक्त विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे मैथिल करण कायस्थक कर्णाटसँ कथित आव्रजन मात्र एक मिथक थिक। एकर कोनो वैज्ञानिक आधार नहि अछि। ई ओहिना प्रवाद रूपमे पसरल जेना मिथिला मुकुटमणि मंडन मिश्रक शंकराचार्यसँ शास्त्रार्थमे पराजय केर प्रवाद पसरल। पं. सहदेव झा (मंडन मिश्र और उनका अद्वैत वेदान्त, संपा. डॉ. तारानन्द वियोगी), पं. वैद्यनाथ झा (मंडन मिश्र श्रद्धा कुसुमांजलि पोथी आ मंडन सुरेश्वराचार्ययौः पार्थक्यम्), डॉ. तारानन्द वियोगी (मंडन मिश्र : मिथक आ यथार्थ), डॉ. रंगनाथ दिवाकर (सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृतिग्रंथ), डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक' (महिषी के मंडन), पं. इन्द्रनारायण झा (मिथिला अन्वेषण एवं दिग्दर्शन) प्रभृति विद्वत्र सभक आभामे जेना शंकर-मंडन विषयक प्रवाद निर्मूल भेल तहिना मैथिल करण कायस्थक कर्णाटसँ आव्रजनक ई कथित प्रवाद सेहो निर्मूल होएत। मैथिल करण कायस्थ मूलतः मैथिल छथि कर्णाटी किन्नहु नहि।

सन्दर्भ :-

1. मुंशी रासबिहारी लाल दास : मिथिला दर्पण, कामेश्वर कल्याणी फाउंडेशन संस्करण, 2005, पृष्ठ 225-42।

2. श्रीधर : सदुक्तिकर्णामृत, साहित्य अकादेमी, पृष्ठ 788।

3. उमापतिधरकृता: विजयसेनप्रशस्ति:, टीकाकार - प्रो. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', लब्धस्वर्णपदक:, संस्कृताध्यापक:, पटना कॉलेज:, प्रकाशक: - पं. षष्ठी प्रसाद शर्मा, ग्राम+ पत्रा. - पोन्डिल, गया, 1960, पृष्ठ 11-12।

4. कर्णप्रिय, प्रधान सम्पा.- श्री सुरेन्द्र शैल, अंक 5-6(मार्च 2021) एवं 7-8(सितम्बर 2021मे प्रकाशित आलेख।

5. पं. रघुवीर सहाय शर्मा : मिथिला के ब्रजस्थ ब्राह्मणों का ब्रज में आगमन, कब? कहाँ? कैसे?, मैथिल ब्राह्मण सन्देश, अलीगढ़।

6. डॉ. धर्मवीर भारती : सिद्ध साहित्य, पृष्ठ 51।

7. हिन्दी साहित्य और बिहार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, खंड 1, पृष्ठ 5-6।

8. सं. 1076 आषाढ़ वदी 4 महाराजाधिराज पुण्यालोक सोमवंशोद्भव गौड़ध्वज श्रीमद् गांगेयदेव भुज्यमान तीरभुक्तो कल्याण विजयराज्ये नेपालदेशीय श्री भक्षुशालिक श्री आनन्दास्य पाटकावस्थित कायस्थ पंडित श्रीकुरस्यात्मज गोपतिना लेखिदम्।

(उद्धृत- डॉ. मालती लाल : मिथिला आ मैथिलीक विकासमे कर्ण कायस्थक योगदान, पृष्ठ 156।)

9. अशोक कुमार वर्मा : कायस्थों की सामाजिक पृष्ठभूमि, पृष्ठ 188-89।

10. मेजर विनोद बिहारी वर्मा : मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण, पृष्ठ 202।

11. श्रीधर : सदुक्तिकर्णामृत, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, श्लोक 2, पृष्ठ 10।

12. अलमादिवराहेण वटुदासं परं स्तुम:।
जगदुद्धरता येन न वक्रीकृतमाननम्॥

— उमापतिधर

पयोधिपरिमानेषु धनेषु च रणेषु च
वन्दीन्द्राणां नरेन्द्राणां वटुदासस्तरण्डकः

— राजवेताल

यो हेलोक्तिभिराहितो धनवतामुद्विग्नकान्तावचो
गुम्फैर्लब्धगतिः क्षुधाकुलशिशुक्रेङ्कारसंवर्धितः।
पीत्वा जङ्गमकल्पभूरुहवर त्वद्वाचमेतां
सुधासध्रीचीं वटुदास शाम्यतु स मे प्रोद्यामकर्णज्वरः॥

— साञ्चाधर

तत्प्राङ्गणान्तमधिरोहति कल्पवल्ली
चिन्तामणिर्लुठति पादतले च तस्य।
येनेक्षितः सुकृतसागरपारदृश्वा
विश्वानुरञ्जनपटुर्वटुदासदेवः ॥

— कविराज व्यास

(सदुक्तिकर्णामृत, साहित्य अकादेमी, पृष्ठ 786-87)।

[देसिल बयना, हैदराबाद, 12म अर्घ्य, 2021]

अथ प्रवासी मैथिल कथा

प्रवास वा आव्रजन अनादि कालसँ मानव जीवन केर एक कटु यथार्थ रहल अछि। अध्ययन, आजीविका, युद्ध, विवाह, प्राकृतिक प्रकोप आदि कारणेँ ई होइत रहल अछि। मिथिलामे सेहो आव्रजन भेल अछि आ मैथिल सभक अन्यत्र प्रवास सेहो। जगदीश चन्द्र झाजी अपन ग्रंथ Migration and Achievements of Maithila Panditas : The Migrant Scholars of Mithila (जानकी प्रकाशन, पटना,1991)मे एहि विषयक सारगर्भित विश्लेषण प्रस्तुत कएने छथि।

मिथिलामे नान्यदेव (1097-1147 ई.) द्वारा कर्णाट राज्य स्थापनामे सहयोग कएनिहार श्रीधरकेँ किछु विद्वान् कर्णाटी कहैत छथि आ मैथिल करण कायस्थकेँ कर्णाटसँ तीन खेपमे आव्रजित 142 कर्णाटी सभक सन्तति मानैत छथि। ई प्रवाद मिथिलामे जड़िआएल छल। मुदा श्रीधर केर 11 पीढ़ी ऊपर मंग्यदासक वंशवृक्ष मिथिला-बंगालमे उपलब्ध अछि। कर्णाटकमे अखन करण कायस्थक अस्तित्व नहि अछि। मैथिलीमे कन्नड़ भाषाक एक शब्द नहि अछि। तिरहुता लिपि केर संबंध बाँग्ला लिपिसँ अछि कन्नड़ लिपिसँ नहि। मैथिल करण कायस्थक रीति-रिवाज, पावनि-तिहार, विधि-व्यवहार, खान-पान, पूजा-पाठ, विवाह, मुंडन, दाह संस्कारादि कर्णाटी क्षेत्रसँ एकदम अलग अछि। अनेक तथ्य सभक आधारपर मैथिल करण कायस्थक कर्णाटसँ कथित आव्रजन केर प्रवादक मूलोच्छेद भेल। जिज्ञासुजन प्रस्तुत लेखक केर पोथी 'सुलतानपुर सौरभ' देखि सकैत छथि।

मिथिलाक सामाजिक आ आर्थिक स्थिति एहन नहि छल जे एतऽ बाहरसँ आजीविका लेल समूह आव्रजन संभव हो। एहि ठामसँ जीवन-यापन लेल विस्थापन बेसी भेल। ई विस्थापन सभ जातिक लोकमे भेल।

राढ़ क्षेत्रक राजा आदिशूरक समय मिथिलासँ सेहो मैथिल सभक प्रवास बंगाल भेल छल। आदिशूरकेँ किछु विद्वान् (अशोक कुमार वर्मा : कायस्थों की सामाजिक पृष्ठभूमि, हिन्दी बूक सेन्टर, नयी दिल्ली, पृष्ठ 137) काल्पनिक शासक

मानैत छथि मुदा 'निजभुज वीर्यमास्थाय शूरान् आदिशूरो जयति' (न्यायकणिका) लिखि वाचस्पति महोदय हिनकर अस्तित्वकेँ वास्तविक मानबाक मार्ग प्रशस्त करैत छथि। अधिकांश विद्वान् (प्रो. राधाकृष्ण चौधरी : मिथिलाक इतिहास, श्रुति प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ 63 आदि) आदिशूरक अस्तित्व मानैत छथि। आदिशूर सेन साम्राज्यक आरम्भिक निर्माता छलाह। बंगालमे सुरक्षित कुलकारिका (मिथिलाक पंजी सदृश वंशवृक्ष विवरण)मे सेनवंशीय वल्लालसेनकेँ एहि आदिशूरक दौहित्र कहल गेल अछि— जातो वल्लालसेनो गुणी-गणितस्तस्य दौहित्र वंशे। दक्षिण राढ़ क्षेत्रक राजा रणशूरक वंशज आदिशूर छलाह। आदिशूरक समय सेहो पाँच ब्राह्मण- भट्ट नारायण, दक्ष, वेदगर्भ, छान्दड एवं श्रीहर्ष आ पाँच कायस्थ— मकरन्द, दशरथ, विराट, पुरुषोत्तम एवं कालिदासक आव्रजन गौड़मे भेल छल। बादमे तीनटा आओर कायस्थ- देवदत्त (नाग), चन्द्रचूड़ (दास) आओर चन्द्रभानु (नाथ) सेहो गौड़ क्षेत्र अएलाह। किछु अन्तरालक बाद 19 कायस्थ परिवारक आगमन कान्यकुब्जसँ गौड़ भेल। आदिशूर एहि पाँचू ब्राह्मण आ कायस्थ सभकेँ प्रभूत दान-दक्षिणा देलनि एवं पंचकोटि, कामकोटि, हरिकोटि, कंकग्राम आ बटग्राम उपहार दैत एतहि बसा नेने छलाह। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर एहि समूहमे कान्यकुब्जसँ गौड़ आएल भट्ट नारायण ('वेणीसंहार'क रचयिता)क वंशज छलाह। कान्यकुब्जसँ गौड़ आएल 5+3+19 = 27 परिवारकेँ 27टा गाम देल गेल जे बंगालमे गामी प्रथा रूपमे प्रसिद्ध भेल।

त्रिपुराक राजा आदि धर्मपा (अपर नाम दुर्गुरपा, दाँगरपा, धर्म माणिक्य प्रथम) केर राजत्व काल (1431-1461ई.)मे राजमहलपर गिद्ध बैसि गेल। आदि धर्मपा ज्योतिष्टोम यज्ञ करएबाक लेल सुयोग्य ब्राह्मण पठएबाक अनुरोध मिथिला नरेश बलभद्रसँ कएलनि। मिथिलेश बलभद्र मिथिलासँ वत्स, वात्स्य, भारद्वाज, कृष्णात्रेय आ पाराशर गोत्रीय यज्ञकर्म निष्णात वैदिक ब्राह्मण क्रमशः श्रीनन्द, आनन्द, गोविन्द, श्रीपति आ पुरुषोत्तमकेँ मिथिलासँ त्रिपुरा पठओलनि। ई लोकनि श्रीहट्टान्तर्गत भानुगाछ परगनाक मंगलपुर गाममे (सम्प्रति बाँग्लादेश) विधानपूर्वक ज्योतिष्टोम यज्ञ सम्पन्न करओलनि। यज्ञ समाप्तिक बाद आदि धर्मपा हिनका सभकेँ पर्याप्त मान-सम्मान, धन, ब्रह्मोत्तर जमीन आदि दऽ हिनका सभकेँ एतहि रहबाक लेल तैयार कएलनि। आदि धर्मपा द्वारा देल गेल दानपत्र 4 जून 1843 ई.केँ श्रीहट्ट केर एक अदालतमे चलि रहल वादमे महाराज कृष्ण कुमार माणिक्य प्रस्तुत कएने छलाह। एहिमे उल्लेख अछि—

त्रिपुरा पर्वताधीश: श्रीयुक्तादिधर्मपा:
समाज्ञं दत्त पत्रंच मैथिलेषु तपस्विषु।
वत्स-वात्स्य-भारद्वाज-कृष्णात्रेय-पराशरा:
श्रीनन्दानन्द गोविन्द श्रीपति पुरुषोत्तमा:।
प्रतीच्यानुत्तरस्यां च वक्र गा क्रोशिरा नदी
दक्षिणस्यं च पूर्वस्यां हाङ्कनाकोकिका पुरी।
एतन्मध्यो सशस्यां या टेङ्गकरीकूकिकर्षताम्
प्रगल्भदत्तो तद्भूमिं तेषु पंचतपस्विषु।
मकरस्थे रवौ शुक्ले पंचदशीतिथौ
त्रिपुराचन्द्र बाणाब्दे प्रदत्ता दत्त पत्रिका।

मिथिलासँ ब्रज पलायन केर पृथक् इतिहास अछि। कर्णाट राजा हरिसिंह देवक पराभव केर बाद यवन अत्याचारसँ पीड़ित 9 गोत्रक 75 मैथिल ब्राह्मण परिवार मिथिलासँ ब्रज दिशि चलि गेल। पं. जयराम मिश्र एहि पलायन केर समय अंकित कएने छथि—

वैशाख शुक्ल एकादशी और दिना रविवार
संवत् 1382 विक्रमी आए देश बिसार

(पं. जयराम मिश्र : मैथिल ब्राह्मण ग्रंथ, पृष्ठ 25)

बैशाख शुक्ल एकादशीकेँ मोहिनी एकादशी कहल जाइत अछि। एहि प्रवासी मैथिल सभक आश्रयस्थल मथुरा जिलाक विशौली (विश्वावली) गाम भेल। फेर ई सभ विभिन्न खेडामे वास कएलनि।

15म शताब्दीमे कूचबिहारक राजा विष्णुसिंहक समय बहुत रास मैथिल ओतऽ गेल छलाह। एहि कामता (कूचबिहार) राज्यक प्रधानमंत्री मैथिल करण कायस्थ नरहरिदास छलाह। हिनकर बाद हिनक पुत्र पयोनिधि एहि पदकेँ सुशोभित कएने छलाह। हिनकर पुत्र कवीन्द्र दास असमिया कायस्थमे कुलीन प्रथा शुरू कएने छलाह। त्रिपुरामे अनेक मैथिल सभक वास छल (प्रो. राधाकृष्ण चौधरी : पूर्वांचल भाषा साहित्य एवं संस्कृति, पृष्ठ 7, पं. राजेश्वर झाक पोथी मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य, मैथिली अकादमी, पटना,1977, पृष्ठ 134 पर उद्धृत),

पं. रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र' कृत 'हमारा प्रवास' मिथिलासँ ब्रज प्रवास केर क्रमिक कथा कहैत अछि।

अकबर केर समय 1556 ई. मे पटनामे भेल विद्वत् बैसारमे पं. रघुनन्दन झा, पं.जीवनाथ झा, पं. शिवराम झा प्रभृति विद्वान् सभकेँ सम्मानित करैत अकबर (1556-1605 ई.) अपना संगे आगरा आनि लेलनि। बादमे टोडरमल संग 80 गोटे आर आगरा आबि गेलाह। एहिमे सुखपाणि झा, जीवन नाथ मिश्र, शिवराम झा, श्रीकान्त मिश्र, उमापति मिश्र, ग्रहपाणि झा, दुर्गादत्त झा, वाचस्पति झा, पृथ्वीधर झा, पं. पुरुषोत्तम झा आदि सम्मिलित छलाह। हिनका सभकेँ आगराक शहजाद मंडीमे बसाओल गेल छल।

जहाँगीर (1605-1627 ई.)क समय फत्तन मिश्र आ विद्याधर मिश्र सेहो मिथिलाकेँ अलविदा कहि आगरा आबि गेल छलाह। एहि समय 1623 ई. मे मिथिलेश शुभंकर ठाकुरसँ मनोमालिन्यक बाद श्याम झाक संगे शताधिक मैथिल ब्राह्मण आगरा आबि बसि गेलाह।

शाहजहाँ (1627-1658 ई.)क शासनकाल धरि एहि प्रवासी मैथिल सभक स्थिति ठीक-ठाक रहल। दारा शिकोह जखन कोल (अलीगढ़) केर फौजदार छलाह तखन ओ बनारसमे 150 पंडित सभक धार्मिक सभा करओने छलाह। एहि धर्मसभामे 25 टा पंडित मिथिलासँ गेल छलाह। दारा शिकोह एहि पंडित सभकेँ प्रचुर धन आ सम्मान दैत अलीगढ़मे बसा देलनि। दारा शिकोह गीता, योगवाशिष्ठ, उपनिषद् सभक फारसी अनुवाद करओलनि, वेद सभक संग्रह कएलनि, फारसी ग्रंथ सारीनतुल् औलिया, सकीनतुल् औलिया, हसनातुल् आरफीन रचलनि। हिनकर मज्म-उल-बहरीन (दू समुद्रक संगम) विलक्षण रचना अछि।

बी जे हसरत आ के आर कानूनगोक लब्धप्रतिष्ठ कृति 'दारा शिकोह' सँ ज्ञात होइछ जे दारा शिकोह मैथिल विद्वान् वंशीधर मिश्र आ पं. विश्वेश्वर आदिकेँ सम्मानित कएने छलाह। ई भारतवर्षक दुर्भाग्य रहल जे शाहजहाँक बाद सत्ता संघर्षमे दारा शिकोह सन सहिष्णु आ समन्वयवादी साधककेँ सफलता नहि भेटल अन्यथा भारतवर्षक इतिहास आ भविष्य दोसर रहैत। वर्तमान कालक अनेक समस्या समाप्त भऽ गेल रहैत।

औरंगजेब (शासन काल 1658-1707 ई.)क समयसँ एहि प्रवासी मैथिल सभक समक्ष समस्या उत्पन्न भेल। 1667 ई.मे मुगल शासन द्वारा लगाओल गेल तीर्थयात्रा-कर केर विरोधमे काशीमे कवीन्द्राचार्यक नेतृत्वमे आन्दोलन भेल छल।

आन्दोलनक सफलताक बाद विश्वम्भर मैथिलोपाध्याय, जयकृष्ण उपाध्याय, दामोदर उपाध्याय, महीपति उपाध्याय, रघुनाथ उपाध्याय आदि मैथिल सम्मानित भेल छलाह। (जगदीश चन्द्र झा : Migration and Achievements of Maithila Panditas, पृष्ठ 249-50, पृष्ठ 266)

प्रवासी मैथिल सभ अपन उत्कर्ष देखलनि तऽ अवनति केर गर्त सेहो। आगरा, मथुरा, हाथरस, अलीगढ़ आदि स्थानपर बसल एहि प्रवासी मैथिल सभकेँ दारा शिकोहक प्रियपात्र मानि औरंगजेब बहुत तंग कएलनि। आगरासँ भागि ई सभ वनक्षेत्रमे शरण लेलनि। काष्ठ व्यापारसँ जुड़ल रहबाक आ स्थानीय विश्वकर्मा सभक समान आस्पद शर्मा होएबाक कारणेँ बहुत गोटेकेँ अपन जातीय संस्कारक रक्षा करब कठिन भऽ गेल। एतबा धरि जे बहुत लोक विश्वकर्मा सेहो बनलाह। जीवन, धर्म आ जातिक रक्षा करब मोश्किल भऽ गेल तथापि ई सभ स्वधर्मो निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह: केर सिद्धान्त मानि अनेक कष्ट सहैत कहुना अपन संस्कारक रक्षा कएलनि। ई सभ ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण कहाइत छथि।

ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण सभक जीवनकथा आ रचना सभकेँ प्रकाशमे आनबाक दृष्टिसँ डॉ. राधेबिहारी लाल सक्सेना 'राकेश'क 'ब्रजस्थ मैथिल कवि' (मथुरा,1988 ई.), डॉ. प्रेमदत्त मिश्र 'मैथिल'क 'ब्रज के आधुनिक कवियों के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन', पं. रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र'क 'हमारा प्रवास' आ 'चन्द्राभरण', पं. कोमल प्रसाद शर्माक 'ब्रह्मवंश दर्पण', पं. रघुवीर सहाय शर्माक 'ब्रज में मैथिल ब्राह्मण', डॉ. फूलबिहारी शर्माक 'हमारे प्रवास का इतिहास' प्रभृति पोथी सभक अमूल्य योगदान अछि।

'ब्रजस्थ मैथिल कवि'मे पं. मानिक ठाकुर (1793 - 1870 ई., हाथरस), पं. नवल किशोर 'नील' (1827-1897 ई.), पं. ब्रजबल्लभ श्रोत्रिय 'वल्लभ सखा' (1860-1935 ई., हिनका वियोगी हरि 'ब्रज केर धूल भरल हीरा' कहने छलाह), पं. टोडाराम मिश्र 'टोडाराम', प्रज्ञाचक्षु पं. देवीराम मिश्र 'देवीसूर' (1870-1913 ई.), पं. झम्मन लाल मिश्र (1883-1953 ई.) आ सुपुत्र पं. रामगोपाल शर्मा 'गुपालकवि' (1889-1973 ई.), पं घूरेलाल झा 'सूरकवि' (1890 -1948 ई.) आ अनुज पं. मोहन लाल झा 'मोहन' (1896-1970 ई.), पं. प्रकाश चन्द्र 'प्रकाश' (1903 -1977 ई.), पं. झम्मक लाल झा 'छम्मक' (1913-1972 ई.), लोककवि पं. छेदालाल शर्मा (1913-1975 ई.), पं. ताराचन्द्र मिश्र 'पुत्र चन्द्र कवि' (1915-1987 ई.), श्रीकृष्ण शर्मा, डॉ. तारा चन्द्र शर्मा, पं. पन्नालाल शर्मा

'चातक', पं. ओंकार चन्द 'प्रणव', नत्थीलाल शर्मा 'मैथिल' आदिक उल्लेख भेल अछि। पं. रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र' (1873-1937 ई.) मैथिली, हिन्दी आ ब्रजी केर अप्रतिम हस्ताक्षर छलाह। सिद्ध कवि, कुशल निबंधकार आ सफल सम्पादक पं. चन्द्र 'चन्द्राभरण'मे प्रवास विषयक लिखने छथि—

अछि फुलबरिया ग्राम प्रान्त दरभंगामे छल।
ततय सुमैथिल विप्र मिश्र श्रीकान्त रहै छल।
बलियासे नरसाम मूल काश्यप गोत्री से।
विद्या बुद्धि निधान वंश पावन श्रोत्री से।

(ब्रजस्थ मैथिल कवि, पृष्ठ 23)

हिनक अनेक पोथी प्रकाशित अछि। 'मैथिल प्रभा' पत्र (अजमेर)क सम्पादक सेहो रहल छलाह। पं. शिवचरण लाल शर्मा 'मैथिलेन्दु', पं. भूदेव झा 'अमर', पं. जगदीश झा 'जगदीश' प्रभृति ब्रजस्थ मैथिल कवि मैथिलीक संग हिन्दी आ ब्रजीमे सृजनशील छथि। सृजनशील कविमे डॉ. प्रेमदत्त मिश्र 'मैथिल' केर नाम अग्रगण्य अछि। हिनकर पूर्वज पं. मणि मिश्र मिथिलाक राजनपुर मिठावली गामसँ तीर्थाटन करैत 14म शताब्दीमे मथुरा आएल छलाह। मथुरा जनपद केर रसगवाँ (ऋषिग्राम)मे 19 जनवरी 1939 कैँ हिनक जन्म भेल। संस्कृत, पालि, मैथिली, ब्रजी, हिन्दी आ अंग्रेजीक निष्णात विद्वान् मैथिलजीक 'मैथिल काव्यायनी' आ 'ब्रज के आधुनिक कवियों के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन' कालजयी कृति अछि। पं. डोरीलाल शर्मा 'श्रोत्रिय' (जन्म 12 फरवरी 1935) केर पूर्वज वामदेवजी (बीजीपुरुष महिधर झा) मिथिलाक ग्राम पौना (सौराठ)सँ अलीगढ़ आबि बसि गेल छलाह। डोरीलालजीक कालजयी कृति अछि 'मिथिला की पाण्डित्य परम्परा'। एहि ग्रंथ (2004)मे मिथिलाक पाण्डित्य परम्पराक विलक्षण दिग्दर्शन भेल अछि। अन्य पोथीमे 'ब्राह्मण वंशों का इतिहास' (1994) आ 'ब्राह्मण परिचायिका' प्रवासी साहित्यमे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। सम्प्रति पंडित डोरीलालजी अखिल भारतीय विप्र एकता मंच केर राष्ट्रीय अध्यक्ष छथि।

प्रवासी मैथिल स्थानीय समाजमे नीकसँ घुलि-मिलि गेलाह। बहुत लोक तऽ अपन मूल बिसरि गेलाह। अर्थक अभावमे अनर्थ होमऽ लागल। मुदा साकांक्ष आ विभवशाली वर्ग अपन मैथिलत्वकैँ जोगाकैँ रखलनि। बहुत समय धरि मिथिलासँ

हिनका सभक सम्पर्क-सूत्र समाप्ते जकाँ रहल। कालान्तरमे जखन हिनका सभक स्थिति नीक भेल तखन अपन उत्स केर खोज कएलनि। यातायात आ संचार व्यवस्था सुलभ भेल तखन एहिमे तेजी आएल। संयुक्त प्रांतीय मैथिल ब्राह्मण सभा, जबलपुर (1908) आ इटावा (1925), मैथिल हित साधन समिति, जयपुर (1905), मैथिल विद्वज्जन समिति, काशी (1905), अखिल भारतीय मिथिला संघ, नयी दिल्ली, मैथिल संघ, कलकत्ता आदि संस्था सभक उदय भेल। मैथिली पत्र-पत्रिका सभक प्रकाशन शुरू भेल। 'मैथिल हित साधन' जयपुरसँ आ 'मिथिला मोद' काशीसँ 1905 ई.मे शुरू भेल। प्रवासी मैथिल केर समस्त संस्था सभक उद्‌देश्य प्रवासी मैथिल आ मूल मैथिल मध्य सम्पर्क सेतु विकसित करब सेहो छल। अनेक सार्थक प्रयास सभक बाद अजमेरमे ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मण महासम्मेलन, आगराक तत्वावधानमे आयोजित अखिल भारतीय मैथिल महासभाक 47म अधिवेशनमे मिथिलाक ब्राह्मण आ कायस्थ लोकनि ब्रजस्थ मैथिल ब्राह्मणकेँ मैथिल मानि लेलनि। 27 दिसम्बर 1954 ई. केँ आयोजित एहि महत्त्वपूर्ण अधिवेशनक सभापतित्व महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह कएने छलाह। एकर कार्यवाही रमाशंकर शास्त्रीक सम्पादनमे प्रकाशित भेल छल।

संचार व्यवस्था नीक भेलापर प्रवासी मैथिल आ मूल मैथिलमे सम्पर्क सेतु आओर दृढ़ भेल। ओ सभ एम्हर आबि अपन मूल केर तलाश कएलनि तऽ एम्हरोसँ 2002 ई.मे मिथिलाक दू विद्वान् पं. देवचन्द्र मिश्र आ पं. गोविन्द मिश्र ब्रजस्थ मैथिल सभक खोज-पुछारि कएलनि। मिथिला कुञ्ज आश्रम, वृन्दावन केर सन्त राधेश्याम शरण देवाचार्यक एहि सम्पर्क सेतु निर्माणमे महत्त्वपूर्ण अवदान अछि।

भारतवर्ष आओर नेपालक सन्दर्भमे आव्रजन-प्रवासपर विचार करब एक विरल अनुभवसँ साक्षात्कार करब थिक। ब्रज क्षेत्रमे प्रवासक सन्दर्भ मैथिल ब्राह्मण केन्द्रित छल। आब नेपालक सन्दर्भमे मैथिल करण कायस्थ केन्द्रित प्रवास सभक अध्ययन प्रस्तुत करब।

भारत-नेपालमे अनादि कालसँ बेटी-रोटीक संबंध रहल अछि। आजुक स्थितिमे भारत-नेपालमे आव्रजन/प्रवासक गोमुखी केर तलाश करब अत्यन्त दुष्कर अछि। ई तथ्यात्मक अछि जे आइ नेपालमे मैथिल केर विपुल संख्या अछि। एहिमे भारतवर्षक विभिन्न जाति-धर्मक लोक सम्मिलित छथि। आजुक स्थितिमे पता करब जे पहिल आव्रजन कहिया भेल, ई संभव नहि अछि। नेपालक एक इतिहासकार डी आर रेग्मी अपन ग्रंथ Ancient Nepal (Rupa and Co, New Delhi, 2007, पृष्ठ 36)मे अनुमान करैत छथि जे नेपालमे गंगा क्षेत्रक उच्चतर सांस्कृतिक

स्तर केर लोक नेपालमे प्राचीनतम प्रवेश कएनिहार छथि। नेपालमे किरात सभक शासन छल। रेग्मी नैमिशा वा नैविसितिकेँ किरात सभकेँ पस्त करैत लिच्छवी राज केर संस्थापक मानैत छथि (पृष्ठ 74)। अजातशत्रु जखन वैशालीकेँ छिन्न-भिन्न कएलनि तखन बहुत रास लोक संभवत: काठमाण्डूक उपत्यका दिशि बढ़ि गेल छलाह। नेपालमे लिच्छवी सभक संग बिहारसँ बहुत रास लोक नेपाल गेल होयत। एहि समय कायस्थक स्पष्ट उल्लेख केर संकेत नहि भेटैछ मुदा विभिन्न अधिकरण केर प्रमुख रूपमे करण केर उल्लेख यत्र-तत्र अवश्य भेल अछि। नेपालक इतिहास केर विद्वान् प्रा. हीरा लाल दास ओमप्रसाद घौभरैलक एक आलेख 'भारसिंह कायस्थ : एक सफल भारदार' केर आधारपर जनतब दैत छथि जे भक्तपुरक गाम-गाम केर कायस्थकेँ अलग-अलग नाम छल जेना इनाचो आ गोल्मढ़ीक कायस्थकेँ डाबू कायस्थ, खौमाक कायस्थकेँ साँयजु कायस्थ, नासमनक कायस्थकेँ भँपु कायस्थ आ चोछेक कायस्थकेँ चिल कायस्थ कहिकेँ सम्बोधित कएल जाइत छल। संभव जे जयस्थितिमल्ल कालमे कायस्थ नेवारी कायस्थमे परिगणित भेल होथि।

रेग्मी संवत् 386 केर मानदेवक चंगू नारायण स्तम्भ लेख, मानदेवक पत्नी विजयस्वामिनीक संवत् 425क माघ शुक्ल पूर्णिमा अंकित शिलालेख, संवत् 413 केर श्री मानदेव नृपते प्रसादात अंकित जयवर्मनक शिलालेख एवं जयदेव द्वितीय केर शिलालेख आदिसँ मानदेव प्रथमकेँ ओ प्रथम ऐतिहासिक राजा, जिनकर शिलालेख उपलब्ध अछि, मानैत छथि (पृष्ठ 121)। मानदेव प्रथम केर चंगू नारायण स्तम्भ लेख केर 19 श्लोकमे एहि कुलक 12म राजा वृषदेवकेँ 'लिच्छवि कुल गौरव बढ़ओनिहार' कहल गेल अछि। जयदेव द्वितीय केर शिलालेखमे जयदेव केर पूर्वज सभक चर्च अछि। एहिमे उल्लेख अछि जे जयदेवसँ 23 पीढ़ी पहिने पाटलिपुत्रक सुपुष्प नेपाल गेल छलाह। एहि स्तम्भ लेखमे वृषदेव, शंकरदेव, धर्मदेव, मानदेव, महिदेव, वसन्तदेव केर क्रमिक अवस्थितिक सूचना भेटैछ (पृष्ठ 121-22)। एहिसँ एतबा धरि स्पष्ट अछि जे अखन धरि उपलब्ध प्रमाण अनुसार बिहारसँ नेपाल गेनिहार सुपुष्पकेँ प्रथम लिच्छवी मानि सकैत छी।

ई तथ्यात्मक अछि जे प्रयाग प्रशस्तिमे हरिषेण समुद्रगुप्त (महाराजाधिराज श्रीचन्द्रगुप्त पुत्रस्य लिच्छवि-दौहित्रस्य...)केँ लिच्छवी दौहित्र कहैत गर्वित छथि। गुप्त कालमे लिच्छवी सभक संग विभिन्न अधिकरण सभक प्रमुख रूपमे काठमाण्डूक यात्रा आ ओतहि रहि गेनिहार मैथिल सभकेँ सेहो आरम्भिक आव्रजनी कहल जा सकैछ। ओहि काल केर कोनो निर्विवाद इतिहास वा आँकड़ा उपलब्ध

नहि अछि। बहुत बादमे छिटफुट रूपसँ किछु कायस्थ विद्वान् जेना महादेव कायस्थ, पं. जीवधर सिंह, श्रीकर, पं. गोपति, कायस्थ पंडित रत्नपाल आदिकेँ विभिन्न ग्रंथ सभक प्रतिलिपिकार रूपमे चर्च अवश्य भेटैत अछि। नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित सिमराँवगढ़ विषयक संगोष्ठी सं. 2057 केर सम्पादित विवरणीमे 1050ई.सँ पूर्व केर श्रीकरकेँ स्मृति निबन्ध सभक सम्पादक कहल गेल अछि।

पं. गोपति कलचूरी कर्णदेव(1040-50 ई.)क कालमे रामायणक प्रतिलिपि तैयार करैत दृष्टिगोचर होइत छथि। राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डूमे संरक्षित रामायणक प्रतिलिपिमे उल्लेख अछि—

> सं. 1076 आषाढ़ वदी 4 महाराजाधिराज पुण्यालोक सोमवंशोद्भव गौड़ध्वज श्रीमद् गांगेयदेव भुज्यमान तीरभुक्तो कल्याण विजयराज्ये नेपालदेशीय श्री भक्षुशालिक श्री आनन्दास्य पाटकावस्थित कायस्थ पंडित श्रीकुरस्यात्मज गोपतिना लेखिदम्।
>
> *(उद्धृत- डॉ. मालती लाल : मिथिला आ मैथिलीक विकासमे कर्ण कायस्थक योगदान, पृष्ठ 156)*

> काठमाण्डूक दरबार पुस्तकालय (Cat. I, 1648)मे संरक्षित चरक संहिताक नेपाली संवत् 303 (चैत सुदी पंचमी सोम दिना...) अर्थात् 1183ई.क पाण्डुलिपिमे जेजाभुक्तिक कायस्थ पंडित रत्नपालकेँ प्रतिलिपिकार कहल गेल अछि। एहिना Cat. I, 1365मे अरिमल्ल कालीन नेपाली संवत् 336 (1216 ई.) केर अमृतेश्वरपूजा पोथीक पाण्डुलिपिमे प्रतिलिपिकार गुर्जरदेशक चमत्कारपुरसँ आएल (गुर्जर देशीय चमत्कारपुरादागता) ब्राह्मण पंडिताचार्य केर चर्च सेहो उपलब्ध अछि।
>
> *[D R Regmi, Medieval Nepal, vol 1, p 640)]*

धनवज्र वज्राचार्य पाटन क्षेत्रक क्वालखू देवताक शिलालेख केर मूल पाठमे 1143ई.मे कायस्थ कुल संजातो विष्णुसिंह केर उल्लेख कएने छथि। विद्वान् प्राध्यापक हीरा लाल दास जनतब दैत छथि जे कायस्थ पंडित जीवधर सिंह राजा हर्षदेव केर समयमे नेपाली संवत् 213 अर्थात् 1093 ई.मे प्रज्ञापारमिता ग्रंथ लिखने रहथि जे शाक्य गुम्बामे भेटल छल। महादेव कायस्थ राजा रणशूर देवक समय सं. 1279मे वंटेश्वर (?) लेल पुस्तक केर प्रतिलिपि कएने छलाह। आगू प्रा. हीरालाल दासजी सेसिल बैंडालक

मादे कहैत छथि जे ई पाण्डुलिपि ब्रिटिश म्यूजियममे राखल अछि। (दोसर कर्णकुम्भ, काठमाण्डूमे पठित आलेखमे उल्लेख)।

भक्तपुर केर मल्ल राजा भूपतीन्द्रमल्ल (1696-1722 ई.) द्वारा मंत्री भाजु रामकसुजु (कायस्थ)कैँ एक षड्यंत्र बाद मृत्युदंड केर उल्लेख चन्द्र किशोर मल्लिकजी दोसर कर्णकुम्भ (9-10 दिसम्बर 2022)मे पठित अपन आलेखमे कएने छथि। ओहि सभ समय केर मैथिल कायस्थ सभक किछु उपलब्ध नाम सभक उल्लेख करैत कहि सकैत छी जे भारतवर्षसँ नेपाल आव्रजन निश्चित रूपसँ होइत रहल अछि।

एहि प्रकारे भारतवर्षसँ नेपाल भेल किछु प्रमाणित आव्रजनी सभक संकेत उपस्थापित कएल गेल अछि। मुदा एहि आव्रजन सभकैँ कोनो क्षेत्र विशेषसँ सामूहिक आव्रजन नहि कहि सकैत छी। छिटफुट आव्रजन होइत रहल। एहि विषयक आगू बढ़ी ओहिसँ पूर्व कर्णाट राजा हरिसिंह देव संग नेपाल पलायन कएनिहार मंत्री एवं सामन्त सभक नेपाल आव्रजनपर विचार करब उचित अछि किएक तऽ नेपाल आ भारतमे एहि विषयक अनेक भ्रान्ति अछि। बहुत रास प्रवाद पसरि गेल अछि। नेपाली इतिहासकार दिली रमण रेग्मी (1913-2001 ई.) हरिसिंह देव केर नेपालमे कोनो शासन होएबाक बात केर दृढ़तापूर्वक खंडन करैत छथि। उल्लेखनीय अछि जे मैथिल परम्परानुसार मान्य अछि जे तुंगमल्ल केर पुत्री देवलदेवी (देवलक्ष्मी)सँ हरिसिंहदेव केर बियाह भेल छल आ तुगलकसँ भेटल पराभवक बाद ओ अपन सासुर पलायन कएने छलाह। रेग्मी मानैत छथि जे नेपाल पलायन केर बाद काठमाण्डूसँ लगभग 66 माइल पूब दोल्खा जएबाक बाटमे हिनक मृत्यु सिन्धु प्रदेशक दक्षिण-पश्चिममे अवस्थित तीन पाटन गाममे भऽ गेलनि आ दोल्खामे हिनक पुत्र जगत सिंह, मंत्री आ परिवार सभकैँ राजग्रामक माँझीभरो कैद कएलक आ सम्पत्ति छीनि लेने छल (Medieval Nepal, Vol I, p 277)। जखन कि भारतीय मैथिल विद्वान् सभक मान्यता अछि जे हरिसिंह देव पलायन कऽ अपन सासुर नेपाल पहुँचि गेलाह। पत्नी देवल देवीक भ्राता जयरुद्रमल्ल देव एवं माता पदुमलदेवी द्वारा हिनका सभकैँ बहुत सम्मानपूर्वक राखल गेल। जयरुद्रमल्ल केर निधन 30 वर्षक आयुमे 1326 ई.मे भेलनि। हुनकर रानी सती भऽ गेलीह। हुनक पुत्री नायक देवीक विवाह काशी राजपरिवारक हरिश्चन्द्रसँ भेल। विष खुआ हरिश्चन्द्र केर हत्या भेल तखन नायक देवीक दोसर विवाह हरिसिंह देव सुत जगत सिंहसँ भेल। एहि कारणेँ हरिश्चन्द्र केर भ्राता गोपाल चन्द्र आ तिरहुत केर विस्थापित राजकुमार जगत सिंहक मध्य संघर्ष शुरू भेल। नायक देवी आ जगत सिंहक एकमात्र संतान राजल्ल देवीक जन्म 7 जनवरी 1347ई. कैँ भेल आ दस दिन बाद 17 जनवरीकैँ नायक देवीक मृत्यु भेल। हरिसिंह देवक स्त्री देवल देवी

एकर पालन-पोषण कएलनि। राजल्ल देवीक विवाह जयस्थितिमल्लसँ 8 वर्षक आयुमे 1355 ई.मे भेल (पीताम्बर लाल यादव : नेपालको राजनैतिक इतिहास, सं. 2053, पृष्ठ 11-12)। आगू अपन शोधपूर्ण पोथीमे पीताम्बरजी शाह राजघराना केर वंशावली देने छथि जे चित्तौड़ (भारतवर्ष)क भट्टार्क ऋषिराज राणाजीसँ शुरू भेल अछि। ऋषिराजक 63म पीढ़ीमे ई वंशवृक्ष श्री 5 वीरेन्द्र वीर विक्रम शाहदेवक युवराज दीपेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव धरि आएल अछि। एहिसँ एतबा धरि स्पष्ट अछि जे भारतीय मिथिलाक कर्णाट वंश आ नेपालक मल्ल वंश एवं चित्तौडगढ़ केर इतिहासप्रसिद्ध राणा वंश आ नेपालक शाह वंशमे रक्त संबंध तऽ अवश्य छल। नेपालक मल्ल सभ मिथिलामे कर्णाट वंश केर संस्थापक नान्यदेवकेँ अपन पूर्व पुरुष मानलनि। विडम्बना छल जे शुरूमे नान्यदेवकेँ डोय (नान्यदेव हरूलाई डोय शासक भनिन्छ) अर्थात् डोम शासक सेहो मानल गेल छल।

ओना किछु इतिहासकार अखनो मानैत छथि जे नेपालमे हरिसिंह देव अपन दोसर पारी शुरू कएलनि। मुदा ई इतिहासमे निर्विवाद नहि अछि।

Kirkpatrich अपन ग्रंथ An Account of the Kingdom of Nepal (London, 1811, p 258)मे मानैत छथि जे नेपाली संवत् 408 अर्थात् 1288 ई.मे बहुत रास खस परिवार नेपाल आएल आ तीन वर्ष केर अन्तरालमे तिरहुतसँ भारी मात्रामे आव्रजन नेपालमे भेल।

श्री चन्द्र किशोर मल्लिक (सीके मल्लिक) अपन एक आलेख (दोसर कर्णकुम्भ, राष्ट्रीय नाचघर, काठमाण्डूमे दि. 9 दिसम्बर 2022कैँ पठित)मे नेपाली विद्वान् विजुरी प्रसाद कायस्थकेँ उद्धृत करैत कहैत छथि जे हरिसिंह देव केर मंत्री चण्डेश्वर ठक्कुर कायस्थ छलाह आ नेवारी कायस्थ हुनका अपन पूर्व पुरुष मानैत छथि (विजुरी प्रसाद कायस्थ : वंशजका बाजे चक्रधर लाई चिट्ठी, पृष्ठ 28)। ई आश्चर्यजनक अछि जे विजुरी प्रसादजी एहन अनर्थ कोना कएलनि। हमसभ अवगत छी आ पंजी प्रबंधसँ ई स्थापित अछि जे सप्त रत्नाकरकार चण्डेश्वर महाकवि विद्यापतिक पितामह भ्राता छलाह। महाकवि विद्यापतिक वंशवृक्ष अछि—
विष्णु ठाकुर → हरादित्य ठाकुर → कर्मादित्य ठाकुर → देवादित्य ठाकुर →

i) वीरेश्वर ठाकुर ii) धीरेश्वर ठाकुर एवं अन्य।
वीरेश्वर ठाकुर → चण्डेश्वर ठाकुर एवं गणेश्वर ठाकुर।
ii) धीरेश्वर ठाकुर → कीर्त्ति ठाकुर एवं जयदत्त ठाकुर।
जयदत्त ठाकुर → गौरीपति ठाकुर, गणपति ठाकुर एवं कान्या।
गणपति ठाकुर → विद्यापति।

स्पष्ट अछि जे वीरेश्वर ठाकुर केर पुत्र छथि चण्डेश्वर ठाकुर आ वीरेश्वर केर सहोदर भाए धीरेश्वर केर पुत्र जयदत्त (चण्डेश्वर केर पितिऔत भाए) केर पौत्र छथि विद्यापति।

तखन ई केहन कल्पना भेल जे पितामह चण्डेश्वर कायस्थ (?) आ पौत्र महाकवि विद्यापति ब्राह्मण। एहन अनर्थकारी कल्पना सर्वथा अनुचित! ओना की कहल जाय! सामाजिक माध्यम केर एहि समयमे सब पण्डिते छथि। के ककरासँ कम? एहि सामाजिक माध्यम विश्वविद्यालय केर स्नातक सभक कोन ठेकान! नेटपर जेहने ताकब ओहने भेटत। आब अपना रुचि अनुसार ओकर जेहन उपयोग करी। नेपालक मल्ल राजा अपनाकेँ क्षत्रिय कहैत नान्यदेवकेँ अपन पूर्व पुरुष मानैत छथि। नान्य स्वयंकेँ अपन पोथी सरस्वती हृदयालंकारहारमे कर्णाट कुलभूषण, कर्णाट चूडामणि आदि कहने छथि। हुनक बादक संतति सब सेहो अपनाकेँ कर्णाटी क्षत्रिय कहने छथि। सेन वंशीय अपनाकेँ स्पष्ट रूपसँ कर्णाट क्षत्रिय आ ब्रह्म क्षत्रिय कहैत छथि। कर्णाट वंश आ सेनवंशमे खटपट रहितो अनेक वैवाहिक संबंध भेल अछि। तथापि एहि सामाजिक माध्यम केर विद्वान् सभ नान्यदेव सभकेँ डोय (डोम), हजाम, कायस्थ की-की नहि कहैत छथि! जे से।

Global Network of Climate Justice and Environment संस्थामे एशियाक उप निदेशक आ बिहारक वसन्तपुर मूलक श्री पंकज कर्ण केर 15म पीढ़ी अखन महोत्तरी जिलाक मरईमे वास करैत छथि। निश्चित रूपसँ 300-400 वर्ष पूर्व बिहारसँ हुनक पूर्वज नेपाल गेल होएताह। एहन कतेक गामक लोक नेपालमे आव्रजित भेलाह। एहि ठाम ई उल्लेखनीय अछि जे बिहारक आन गामसँ नेपाल गेल लोक सभक आव्रजन एक नव प्रकारक छल। प्राय: लोक केर मूल गाममे घर-द्वार, जमीन-जाल, सम्पत्ति आदि रहिते छल। कुलदेवी-देवता वा सिरागू मूल गामेमे रहैत छल। बियाह-दान सेहो मूल गामेसँ होइत छल। मात्र अपने वा परिवार नेपालमे रहैत छल। द्वैत नागरिकता केर स्थिति रहैत छल। कालान्तरमे एहिमे क्षरण आएल आ बियाह-दान सेहो ओम्हरे शुरू भेल। तथापि अखनो बहुत एहन परिवार अछि जे अपन मूल ग्रामसँ जुड़ल छथि

बहादुरपुर (दरभंगा)क मंगल सिंह दासक नेपालमे किछु जमीन छल। राजा रण बहादुर शाह (1775-1799 ई.)क दृढ़ निश्चयक कारणेँ विधवा ब्राह्मणीसँ भेल बियाहक बाद ओहि रानीसँ उत्पन्न गिर्वान युद्ध विक्रम शाह (1798-1816 ई.) राजा भेलाह मुदा ओ अल्पजीवी भेलाह। हिनक पुत्र महाराज गिर्वान राजेन्द्र विक्रम शाह (1813-1881 ई.)क समय मंगल सिंह दास एक मान्य व्यक्ति छलाह। किछु सनकी राजा राजेन्द्र विक्रमशाह आ हुनकोसँ एक डेग आगू बेटा सुरेन्द्र विक्रमशाह

केर शासनकालमे विभागीय प्रमुख (सुब्बा) मैथिल ब्राह्मण कुलानन्द झा धार्मिक कार्य एवं मन्दिर सभक प्रमुख तालुकवाला छलाह। कायस्थ मंगल सिंह दास हिनक मातहत छलाह। एतऽ ई उल्लेखनीय अछि जे जलेश्वरनाथ मन्दिरक भोग-राग लेल महोत्तरी जिलाक गुठी बन्दोवस्ती भेल छल। मंगल सिंह दास एकर देखरेख करैत छलाह। किछुए दिनमे ओ जानि गेलाह जे पैघ क्षेत्र रहबाक कारणेँ महोत्तरीक आमदनी अधिक अछि आ ई जलेश्वरनाथ मन्दिरक भोग-राग एवं अन्य व्यवस्थाक लेल आवश्यक राशिसँ बहुत बेसी अछि। राजकोषमे वृद्धिक लेल मंगल सिंह दास सम्पूर्ण क्षेत्रक स्थानपर मात्र महोत्तरी मुख्यालय केर आमदनी जलेश्वर मन्दिरक भोग-राग लेल गुठी व्यवस्था शुरू कएलनि। शेष क्षेत्रक राशि राजकोषमे जमा करब शुरू कएलनि। मुख्यालय केर आमदनी मन्दिरक व्यवस्थाक लेल पर्याप्त छल मुदा मन्दिरक पुजारी एहिसँ रुष्ट भेलाह आ राजासँ शिकायत कएलनि जे अपनेक गुठी व्यवस्थामे मंगल सिंह दास परिवर्तन आनि देलनि जाहि कारणेँ मन्दिरक व्यवस्थामे दिक्कत होइत अछि। राजा अपन आज्ञाक अवहेलना एवं संभावित गबनकेँ अत्यन्त गंभीर मानैत मंगल सिंह दासक दहिना हाथ काटबाक आदेश देलनि। मंगल सिंह बहुत कष्टमे पड़लाह। जगह-जमीन लोक हड़पि लेलकनि। विपन्न भेलाह। किछु दिन बाद घोड़ापर जाइत राजाकेँ मंगल सिंह दास सड़क कात ठाढ़ भऽ वामा हाथसँ कोर्निश कएलनि। पहिने तऽ राजा एकरा धृष्टता मानलनि। पुछलापर सब कथा कहलनि जे राजकोष केर हितमे काज करबाक कारणेँ दहिना हाथ काटल गेल तेँ वामा हाथसँ कोर्निश कएलहुँ। आगू कहलनि जे मात्र महोत्तरी मुख्यालय केर गुठी व्यवस्थासँ प्राप्त आमदनी मन्दिरक भोग-राग लेल पर्याप्त छल। तेँ ई व्यवस्था कएने छलहुँ। शेष क्षेत्रक आमदनी राजकीय खजानामे जमा होइत छल। राजा अफसोस प्रकट कएलनि। जाँच केर बाद मंगल सिंह दासक बात सत्य प्रमाणित भेल। अभियोग निराधार प्रमाणित भेलापर हिनका सोनाक हाथ पहिरा सम्मानित कएल गेल छल। हुनका द्वारा कएल जलेश्वरनाथ मन्दिरक गुठी व्यवस्थामे कोनो परिवर्तन नहि भेल। मंगल सिंह दासक वंशज यक्षपति दासक जतेक जमीन लोक सब हड़पि नेने छल सब फिर्ता भेल। मंगल सिंह दास नि:संतान छलाह। हिनक भ्राताक सन्तति चतुर्भुज दासक राणाकालीन राजकीय पोशाकमे चित्र केर चर्च श्री चन्द्र किशोर मल्लिक अपन आलेखसंग्रह अनुस्मरण (डॉ. आदित्य मल्लिक स्मृति गुठी, तीनटोलिया, विराटनगर, सं. 2079, पृष्ठ 74)मे कएने छथि। एतहि मल्लिकजी मंगल सिंह दास विषयक वर्णन कएने छथि। चतुर्भुज दासक पुत्र प्रो.

अरुण कुमार दास विराटनगरमे छथि। मंगल सिंह दासक मूल बहादुरपुर (दरभंगा) छल। अखनो एहि वंशक सिरागू बहादुरपुर गामेमे अछि। मंगल सिंह दासक वंशज उमाकान्त दास काठमाण्डूक हिन्दी पत्रकारिता केर आधार स्तम्भ छलाह। हिनक पुत्र विजय कुमार दास एहि परम्पराक निर्वहन कएलनि। हिनक पुत्र श्री भास्कर दास सपरिवार काठमाण्डूमे रहैत छथि मुदा गाम बहादुरपुरसँ सदिखन सम्पर्क बनओने रहैत छथि।

राणा राज संस्थापक जंगबहादुर राणाक उदय 15 सितम्बर 1846क कोट नरसंहार बादे शुरू भऽ गेल जे किछु व्यतिक्रम संग नेपालक प्रधानमंत्री आ कास्की आओर लामजुंग रजौटाक महाराज रूपमे 25 फरवरी 1876 धरि चलल। हिनका द्वारा संरक्षित नेपालक गिर्वान राजा सुरेन्द्र विक्रमशाह (20.10.1829-7.5.1881क देवान रूपमे एक अपर करण कायस्थ जगपति दासक नाम अबैत अछि।

योगी नरहरि दास अपन पोथी इतिहास प्रकाशमा सन्धिपत्र संग्रह भाग एकमे गिर्वान राजा युद्ध विक्रम शाह केर शासनकालमे निर्गत आ विजयपुर (धरान) अवस्थित पिण्डेश्वरनाथ महादेव मन्दिरमे राखल एक ताम्रपत्र (1812-13 ई.) केर आधारपर कहैत छथि जे पिण्डेश्वरनाथ महादेव स्थानकेँ राजा द्वारा देल गेल भूमिक सीमांकन लेल पेशकार गंगादत्त कंठ आ नौसिन्दा प्रेमनारायण दास कंठ गेल छलाह। आगू अपन एहि शोधपूर्ण आलेखमे श्री चन्द्र किशोर मल्लिक वि.सं. 1862 चैत्र शुदि 1 रोज 6 अर्थात् (1806-07 ई.)मे महोत्तरी जिलाक कोराडी परगनाक बहेड़ा मौजेक जमीन केर मेड़बंदीमे मुंसिफ मोहर चौधरी, गंगाराम चौधरी, पेशकार लालसिंह दास, मोहन दास, नायब पेशकार धर्मपति दास, नारायण दत्त दास, चौधरी लाल दास, चौधरी चूडामणि दास, कानूनगो तोती रामदासक उल्लेख करैत छथि। आगू महोत्तरी परगनाक चौधरी बुधसेन दास, हृदय सिंह दास, लाला बैजू लाल आओर खेसराहा परगनाक कानूनगो लेखनारायण दत्त प्रभृति कायस्थ सभक चर्च विभिन्न गाममे मेड़बन्दी आ भोटू पाण्डेय द्वारा निर्मित मंदिरमे सुरक्षित विभिन्न अभिलेख सभक प्रतिलिपिकार रूपमे कएने छथि। योगी नरहरिदासक उक्त पोथी (पृष्ठ 280-83)क आधारपर मल्लिकजी उपरदाङ्गढ़ी (आधुनिक चितवन)मे भेल निर्माण कार्य केर आमद-खर्च, तहवील आमदनी, जिन्सी आमदनी एवं खर्च केर फरिछौट करबाक क्रममे गिर्वान राजा राजेन्द्र विक्रम शाहक शासनकालक 1829-1831 ई. केर दस्तावेज सभमे सोवितराम दास, प्राणपति दास, मोतिराम दास, तेजनारायण, काशीनाथ दास, माणिकराम दास सभक मार्फती आमद-खर्च केर उल्लेख होएबाक चर्च कएने छथि।

मल्लिकजी अपन वैदुष्यपूर्ण आलेखमे इतिहासकार ज्ञानमणि नेपालक पोथी नेपाल निरूपण (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 283क आधारपर भोटू पाण्डेयक शौर्य केर चर्च करैत हुनका तुलसीयाहीमे लक्ष्मीनारायण मंदिर, पकनाजोल (काठमाण्डू)मे धर्मशाला, जलाशय सभक निर्माण केर श्रेय देलनि।

उपर्युक्त वर्णनसँ एतेक तऽ निर्विवाद रूपसँ कहल जा सकैछ जे राणाशाही कालमे सेहो कायस्थ सभक आव्रजन नेपालमे भेल जखन कि राणाकालमे कायस्थ सभकेँ जगह-जमीन, जागीर आ नोकरी नहि प्रदान कएल जाइत छल। एहिपर एक प्रकारक निषेध छल (भीम बहादुर पाण्डे : त्यस वखतको नेपाल, पृष्ठ 2)। एकर बादो लोक नेपाल जाइत रहल।

दरभंगा जिलाक दड़िमा गामवासी श्याम बिहारी दास नेपालक राणा कालमे ओतऽ लेखक छलाह। ओ दड़िमासँ नवलपुर आबि बसि गेल छलाह। नवलपुरसँ फेर परासी गाम अएलाह। ओतहि बसि गेलाह। बेटीक विवाह वीरगंजमे उत्तमकुमार, जे मुर्तुजापुरक वासी छथि, संग कएलनि।

सिमरी गामक डॉ. गौरीशंकर लाल दास नेपालमे राजपरिवारक चिकित्सक छलाह। अत्यन्त यशस्वी भेलाह। हेटोरा काठमाण्डूमे हिनक परिवारक अन्य सदस्य सभक स्थायी परिसम्पत्ति छल। महिसारि भवानीपुरक डॉ. टी. एन. मल्लिक आओर वीरगंज (मानापट्टी)क डॉ. श्याम सुन्दर दास डॉ. गौरीशंकर लाल दासक जमाय छथिन।

भरबाड़ा (दरभंगा)क सम्पत्तिलाल दास विराटनगर गेलाह। हिनकर मुखियाजी नाम प्रसिद्ध छल। हिनक भाए रघुनन्दन दासक मुंशीजी रूपमे प्रसिद्धि छल। एहि मुंशीजीक पुत्र आ मुखियाजीक भातिज भागलपुर मेडिकल कॉलेजक एमबीबीएस स्नातक डॉ. अवध नारायण दास सेहो विराटनगर अएलाह। एतऽ बहुत सम्पत्ति अरजलनि।

एहिना बलौर (दरभंगा)क राजबल्लभ दास राणाकालमे विराटनगर अएलाह। एहि ठाम रहलाह। बलौरमे सेहो धन सम्पत्ति रहल। वासुकी बिहारीक ध्रुव नारायण दासकक पूर्वज मोरंगमे छलाह। ध्रुव नारायणजी पूर्वांचल विश्वविद्यालय केर प्रथम भाइस चांसलर भेलाह।

मुर्तुजापुरक परमेश्वर दास अगरबा अएलाह। हिनक पुत्र विनय केर धर्मपत्नी श्रीमती पूनम आइ अगरबा नगर पंचायत केर उप महापौर छथि।

सिमरा (मधुबनी)क डॉ. जयबल्लभ दास जनकपुरधामे रहि गेलाह। बेटीक विवाह एतहि भेल। हिनक मृत्युक बाद हिनक एक पुत्र डॉ. सुबोध बिहारे रहैत छथि आ

दोसर पुत्र ज्योतिष अखनो जनकपुरे बसैत छथि। लखनपुर (दरभंगा)क श्री चन्द्र किशोर मल्लिक, जनिकर विद्वत्तापूर्ण आलेख केर सादर उल्लेख यत्र-तत्र भेल अछि, सभक वासोवास आब विराटनगरमे अछि तथापि लखनपुरसँ संबंध अखनो बरकरार अछि।

नेपालक मरइ, अगरबा, नवलपुर, परासी, तुलसीयाही, झापा जिलाक देवनिया आ हल्दीबाई, गौड़ प्रभृति गाममे मैथिल करण कायस्थक वासोवास अखनो अछि।

नेपालमे मैथिल करण कायस्थक अस्तित्व बहुत महत्त्वपूर्ण रहल अछि। शिक्षा, लेखन, चिकित्सा, प्रशासन, न्याय, राजनीति, समाजसेवा आदि क्षेत्रमे भारतवर्षक तुलनामे कने बेसीए। भारतमे कोनो मैथिल करण कायस्थ अखन धरि राजनीतिमे कोनो उच्च पदपर आसीन नहि भेलाह आ नेपालमे विमलेन्द्र निधि उप प्रधानमंत्री पदासीन भेल छलाह। हिनक पिता महेन्द्र नारायण निधि नेपालक पहिल करण कायस्थ निर्वाचित सांसद भेलाह। लक्ष्मण कर्ण, रणजीत कर्ण, पुष्पा कर्ण आदि सांसद निर्वाचित भेल छथि। वीरगंज केर लक्ष्मण लाल पूर्व मंत्री रहल छथि। सुगाक वृकेश चन्द्र दास जनकपुरधामक मेयर रहल छथि। रत्नेश्वर लाल कायस्थ मधेश प्रदेशक गवर्नर रहल छथि। सुरेन्द्र लाभ कर्ण योजना आयोगक सदस्य बनलाह। शिव नारायण दास उद्योग सचिव छलाह तऽ कृष्ण हरि पुष्कर अखन अर्थ सचिव छथि। पुलिसमे राजेश लाल कर्ण आ शैलेन्द्र सिन्हा डीआइजी भेलाह। बद्रीनारायण वर्मा डाक विभागक सर्वोच्च पदाधिकारी भेलाह तऽ हिनक भ्राता डॉ. योगेश्वर वर्मा राज परिषद् केर अध्यक्ष भेलाह। दड़िमाक उपेन्द्र लाल दासक पत्नी आ उच्च कोटिक गीतगाइन चन्द्रमा देवी वीरगंज वार्ड सं. 3सँ बहुत पूर्व न.प.स. निर्वाचित भेल छलीह। आइ ई कहल जा सकैछ जे राजनीति क्षेत्रमे नेपाली मैथिल करण कायस्थ भारतीय मैथिल करण कायस्थसँ दू डेग आगू छथि।

अखन धरि कोनो मैथिल करण कायस्थकेँ भारतवर्षक सर्वोच्च न्यायालय वा पटना उच्च न्यायालयक न्यायमूर्ति बनबाक सौभाग्य नहि भेटल अछि। नेपालमे सिरहा जिलाक सारस्वर गामवासी कमल नारायण दासजी नेपाल बार एसोसिएशन केर अध्यक्ष एवं सर्वोच्च न्यायालयमे न्यायमूर्ति भेलाह। विराटनगर केर जनार्दन मल्लिकजी उच्च न्यायालय केर मुख्य न्यायाधीश भेलाह। हिनक पुत्र विद्याधर मल्लिकजी अर्थ सचिव छलाह फेर विशेष परिस्थितिमे नेपालक विभिन्न विभागक केन्द्रीय मंत्री सेहो भेलाह। रतीश चन्द्र लालजी, सतीशचन्द्र लालजी, वृकेश चन्द्र लालजी, देवेन्द्र लालजी, डॉ. विजय दत्त, लोकेन्द्र मल्लिकजी आदि न्यायाधीश बनि एहि समाजक नाम रोशन कएलनि। नागेन्द्र लाभजी, वीरेन्द्र कर्णजी न्यायिक सेवामे अकूत प्रतिष्ठा पओलनि। कमल नारायण दासजी, जनार्दन मल्लिकजी आ गिरीश चन्द्र लालजी

न्यायिक आयोग/उच्च स्तरीय आयोग सभक अध्यक्ष रहलाह। ठक्कन मल्लिकजी, श्यामानन्द सुमनजी, विजय कान्त कर्णजी विदेशमे नेपालक राजदूत भेलाह। डॉ. ध्रुव नारायण लालजी, डॉ. घनश्याम लाल दासजी आदि भाइस चांसलर भेलाह। वीरेन्द्र कुमार मल्लिकजी, अभय कुमार दासजी, ईश्वर चन्द्र दत्तजी, अशोक कुमार मल्लिकजी, अरुण कुमार दासजी, डॉ. शैलेन्द्र नारायण मल्लिकजी प्रभृति विद्वान् कुलसचिव भेलाह। शैलेन्द्र लाभजी डीन आओर विवि सेवा आयोगक अध्यक्ष पदकेँ सुशोभित कएलनि। दरभंगाक बलौर गामक निवासी आ विराटनगर वासी प्राध्यापक अखिलेश दासजी नेपाल राष्ट्रीय प्राध्यापक संगठन केर केन्द्रीय अध्यक्ष भेल छलाह।

साहित्यक क्षेत्रमे डॉ. राजेन्द्र विमल, रेवती रमण लाल, सुरेन्द्र लाभ, राम नारायण सुधाकर, रोशन जनकपुरी (मूल नाम अरविन्द कुमार लाल), कुसुमलता कर्ण आदि नेपालमे सिद्ध साहित्यकार रूपमे जानल जाइत छथि। चेतना समितिक ज्योत्स्ना सम्मानसँ अलंकृत विजेता चौधरी, जनकपुरक रामभद्र, वृषेशचन्द्र लाल, डॉ. शिवेन्द्र लाल, जानकी रमण लाल, उमाकान्त दास; इतिहासकार हरिकान्त लाल दास, विराटनगर केर जीतेन्द्र जीत, नवीन चन्द्र कर्ण आ कर्ण संजय; धीरेन्द्र धीरज, धर्मेन्द्र अविनाश, प्रेम विदेह ललन, सी के लाल, विभा लाल, चन्द्रशेखर लाल 'शेखर', यदुवंश लाल 'चन्द्र', सुनील कुमार मल्लिक, डॉ. बद्रीनारायण वर्मा, डॉ. माधवेन्द्र, पंकज कर्ण आदि नेपाली मिथिलाक लब्धप्रतिष्ठ साहित्यिक व्यक्तित्व छथि।

उपर्युक्त किछु उदाहरणसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे नेपालमे करण कायस्थक स्थिति अत्यंत महत्त्वपूर्ण अछि आ दुनू देशमे बेटी-रोटीक संबंध रहल अछि। एक ठाम रहनिहारक सम्पत्ति दोसर ठाम सेहो अछि। उदाहरण स्वरूप नामोल्लेख भेल परिवारमे बेसी गोटे केर अपन मूल स्थानसँ संबंध अखनो अछि तथापि एहनो लोक छथि जनिकर जमीन-जथा आब भारतमे नहि अछि आ ओ सभ स्थायी रूपसँ नेपाली कायस्थ भऽ गेल छथि। सुगौली सन्धिसँ पूर्व सप्तरीक बेलछी-तिलाठी, सिरहाक ठाढ़ी-इनरवा, धनुषाक नगराइन-गंगुली, महोत्तरीक सुगा-मटिहानी, धबौली, मरइ आदि गाम भारतेमे छल। अखनो भारत-नेपाल सीमापर बहुत एहन गाम अछि जे दुनू देशमे पड़ैत अछि। मधुबनी जिलाक महिनाथपुर, खौना आदि, प. चम्पारण केर भेडिहरवा, घुड़दौरिया, सुइया आदि, सरलाही (नेपाल)क विष्णुगाँव आदि गाममे ई अन्तर करब कठिन अछि जे कोन घर भारतमे अछि आ कोन घर नेपालमे। जोगबनी (बिहार)सँ कखन विराटनगर (नेपाल) आबि गेलहुँ थाह नहि चलत। भारत-नेपाल सीमापर अवस्थित नोमैन्स लैंडपर कतेक ठाम (भरथा, रोशनगढ़, ककरदरी, लदनियाँ, महिनाथपुर आदि) बस्ती बसि गेल अछि। दुनू देशमे बेटी-रोटीक संबंध ओहिना नहि कहाइत अछि! यथार्थमे भारत-नेपाल सन्दर्भमे किछु वर्ष

पूर्व तक आव्रजन-प्रवासमे कोनो विशेष तरद्दुद नहि छल आ ई निर्बाध जारी रहैत छल। एम्हर एहि सभपर किछु आँकुश लागल अछि तथापि ई अखनो होइत अछि। उपर्युक्त विवरणीसँ ई नहि मानल जाय जे भारतवर्षसँ मात्र करण कायस्थक आव्रजन नेपालमे भेल। केस स्टडी रूपमे कायस्थक आव्रजनपर विचार भेल तेँ उदाहरणमे हुनके सभक चर्च भेल अछि। भारतीय क्षेत्रसँ प्राय: अधिकांश जाति आ धर्म विशेष रूपसँ मुस्लिम सभक आव्रजन सेहो नेपालमे भेल अछि।

नेपालमे मैथिल करण कायस्थक जनसंख्या बहुत नहि अछि। मात्र चालीस हजारक जनसंख्यावला नेपाली करण कायस्थक उपलब्धि भारतवर्षक तुलनामे बेसी जगजियार अछि। नेपाल राष्ट्र निर्माणमे हिनका सभक अवदान सरिपहुँ उल्लेखनीय अछि।

प्रवासी मैथिल सभक आव्रजन कतऽ कतऽ भेल आब ई महत्त्वपूर्ण नहि रहल। कतऽ नहि भेल ई महत्त्वपूर्ण अछि। कहि सकैत छी जे सब ठाम भेल। एहि संग्रह केर आलेख 'मैथिलीक भारतीय साहित्यपर प्रभाव'मे ब्रजबुलिक निर्माणमे मैथिल सभक अवदान केर चर्च भेल अछि। ई बिनु आव्रजन/प्रवासक संभव नहि। एहिना बंगाल, असम, त्रिपुरा, कामता राज्य (कूचबिहार), ओडिशा आदि जगहपर मैथिल सभक आव्रजन केर उल्लेख भेल अछि। एकरा सभक पुन: प्रस्तुति एहि ठाम करब उचित नहि।

अदौकालसँ मोरंग आ ढक्का-बंगल्ला गेल पतिक प्रवासपर विरहिन सभक मनोदशा केर चित्र लोकगीत आ पदावलीमे अभरल अछि। अंग्रेज सभ असम-बंगालक चाय-बगानमे काज करबाक लेल अनेक मैथिल मजदूर सभकेँ मिथिलासँ ओतए लऽ गेल। ई सभ ओतहि बसि ओहि ठामक वासी भऽ गेलाह। दिल्ली-पंजाब, कोलकाता-मुम्बई, गुजरात-बंगलुरु आदि जगह मैथिल सभक सशक्त संघ अछि। आब तऽ इंग्लैंड-अमेरिका सहित विदेशमे सेहो मैथिल सभक संघ बनल अछि। अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर संघ सक्रिय अछि। भारतवर्षक प्राय: सभ शहरमे विद्यापति स्मृति पर्व धूमधामसँ मनाओल जाइत अछि। 5Gक एहि युगमे दूरी समाप्त भऽ गेल अछि आ सम्पूर्ण विश्व एक परिवार भऽ गेल अछि। प्रवासी मैथिल आ आम मैथिल मध्य स्नेहसूत्र विकसित भेल अछि, बियाह-दान शुरू भेल अछि जे शुभ संकेत थिक।

[अयोनिजा, 19म अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, श्रीअयोध्याधाम, 2021मे प्रकाशित आलेख एवं दोसर कर्णकुम्भ, काठमाण्डूमे देल गेल व्याख्यान केर परिमार्जित रूप]

साधारणमे असाधारण साधक कवि प्रदीप

महाकवि विद्यापतिक बाद सर्वाधिक लोकप्रिय कवि सभक अग्रिम पंक्तिमे मधुपजी, भवप्रीतानन्द, स्नेहलता आदि संग ठाढ़ छथि साधारण जन केर असाधारण कवि मैथिलीपुत्र प्रदीप। हिनक मूल नाम प्रभु नारायण झा छल। ओ तारडीह प्रखण्ड केर कैथवार गाममे 30 अप्रैल 1936 ई.कैँ एहि धरतीपर अवतरित भेल छलाह आ ऋषि परम्पराक निर्वहन करैत दिनांक 30 मई 2020कैँ एहि धरा-धामसँ अनन्त पथपर महाप्रयाण कऽ गेल छलाह।

प्रदीपजी दरभंगा जिलाक विभिन्न विद्यालयमे शिक्षक रहल छलाह। मैथिलीक सेवामे लागल रहलाह। हिनकर दू दर्जनसँ बेसी मैथिलीक पोथी आ एकमात्र हिन्दी पोथी प्रकाशित अछि। हिनक कृति सब अछि— गुलाबक बहार (1955), अनमोल बोल (1957), टुनीदाइक सोहाग [गीत] (1959), सोहाग [नाटक] (1962), गीत प्रदीप (1964), उगल नव चान (1965), कुहुकल कोइलिया (1967), क्रान्ति गीत (1967), नागेश्वर भक्तिमाला (1969), अष्टदल [भक्ति गीत] (1977), जगदम्ब अहीं अवलम्ब (1978), एक घाट तीन बाट (1985), स्वयंप्रभा [कथा काव्य] (1985), श्रीरामहृदय [काव्य] (1988), श्रीकामाख्या परिभ्रमण [हिन्दी] (1993), साधना- प्रार्थना (1993), भक्तिगीत 'प्रदीप' (1994), आरती संग्रह [सावित्री सत्र] (2001), श्रीमद्भागवद्गीता (2001), द्वादश स्तोत्र (2002), अन्हारसँ इजोतमे आउ [दुर्गाचरित नाटक] (2004), श्री राघवलीला महाकथा (2006), श्रीनटवरलीला महाकाव्य (2007), कामाख्या परिभ्रमण आ जीवनगीत (2008), नामपट [उपन्यास] (2008), श्री चैतन्य चरणामृत [मैथिली अनुवाद] आ श्रीसीता अवतरण महाकाव्य।

भावयित्री आ कारयित्री प्रतिभाक सुन्दर समन्वय हिनक काव्यसँ प्रतिबिम्बित होइत अछि। हिनक सटीक शब्द संचयन भाव पक्षकैँ अनुपम उच्चता दैत अछि आ अद्भुत प्रसाद गुण काव्यकैँ लोकप्रियताक विलक्षण आयाम। उपन्यास 'नामपट'मे समाजक कुरीति आ नग्न यथार्थक चित्र रहबाक कारणेँ बहुत गोटे भ्रममे पड़ि जाइत

छथि जे अध्यात्म केर उत्तुंग शिखरपर बैसल साधक समाजमे व्याप्त व्यभिचारक एहन नग्न चित्रण कोना कऽ सकैत छथि! ई सत्य जे जनमानसमे हिनकर सन्त समान छवि पसरल छल तेँ उपन्यास 'नामपट'केँ ओ सफलता नहि भेटि सकल जे हुनक काव्य वा गीतकेँ भेटल। रचनाकारक छवि रचनाक मूल्यांकनमे केहन महत्त्वपूर्ण भूमिका रखैत अछि ओकर प्रमाण अछि ई उपन्यास।

हमर दुर्भाग्य जे हमरा हिनक दर्शन केर सौभाग्य नहि भेटल छल। जखन सहदेव सुषमा : पंडित सहदेव झा स्मृतिग्रंथ केर सम्पादनमे लागल रही तखन हुनक कृपा कमण्डल केर किछु कस्तूरी कण आसव रूपमे हमरो भाग्यमे आएल छल। एहि स्मृतिग्रंथक मूल स्वर छल शंकराचार्य-मंडन मिश्र विषयक कथित शास्त्रार्थक मूलोच्छेद करब। ओहि समय एहि विषयक वार्ता करब साहस केर परिचायक छल आ बहुत विद्वान् केँ ई स्वीकार्य नहि छल। शंकराचार्य द्वारा मंडन मिश्रक पता पुछलापर पनिभरनीक मुँहे सुग्गा-मैनाकेँ वेद विषयक शास्त्रार्थ करैत संकेतसँ मंडनक घर केर परिचय दैत विलक्षण उत्तर—

स्वत: प्रमाणं परत: प्रमाणं कीराङ्गना यत्र गिरो गिरन्ति
द्वारस्थ नीडान्तर सन्निरुद्धा जानीहि तन्मंडनपण्डितौक:

केर मोहास्त्रमे मिथिला मुकुट मणि मंडन मिश्र केर कथित पराजय केर दंश दएनिहार माधवाचार्य सभकेँ भरमा देने छलाह। समुन्नत अतीतक सरस बोर दऽ शंकर दिग्विजयकार सब मिथिलाक मुकुटमणिकेँ छीनि लेलनि। शंकर दिग्विजयकार सभक बुद्धिक बलिहारी जे ओ सब मात्र 32 वर्ष (788-820 ई.)क आयु प्राप्त कएनिहार शंकराचार्यकेँ लगभग 200 वर्ष पूर्व भेल दण्डी, बाण सहित मयूर, श्री हर्ष, भट्टभास्कर प्रभृति प्रातिभसँ शास्त्रार्थ देखा देलनि आ शंकराचार्यसँ लगभग दू शताब्दी बाद उद्भूत अपन गर्वोक्ति लेल प्रसिद्ध उदयनकेँ सेहो शंकर संग शास्त्रार्थ करा आ हुनका पराजित देखा अपन अद्भुत इतिहास बोध केर परिचय(?) देलनि। विश्व वाङ्मयमे एहन अन्याय कतहु आन ठाम नहि भेल छल जेहन शंकर दिग्विजयकार सब मनीषी मंडन मिश्र संग कएलनि। हुनका सभक ई चौरकर्म किछु शताब्दी तक झाँपल रहल मुदा बादमे मैथिल विद्वान् सब एहि शंकर दिग्विजय ग्रंथकेँ अनैतिहासिक आ काल्पनिक प्रमाणित करैत मंडन मिश्रक पराजय केर प्रवादक खंडन करबामे सफल भेलाह। एहन विद्वान् मे पं.सहदेव झा, पं.वैद्यनाथ झा, पं. बलदेव उपाध्याय, श्री विजय नारायण मिश्र प्रवासी साहित्यालंकार, श्री इन्द्र

नारायण झा, आ. तारानन्द वियोगी, श्री उदयनाथ झा अशोक प्रभृति मनीषी सभक अवदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

पंडित सहदेव झा स्मृतिग्रंथक सम्पादन करैत काल हमरो सभपर मैथिलीपुत्र प्रदीपक प्रकाशपुंजक प्रभाव पड़ल छल। श्री महेश झा (सुपुत्र पंडित सहदेव झा) तऽ प्रदीप मैथिलीपुत्रक कतेक कथा कहैत छथि जखन ओ ठाढ़ीमे महात्माजी नन्दीश्वर झा आ पं. सहदेव झाजीसँ भेंट करैत छलाह वा कवि सम्मेलनमे अबैत छलाह। सन्त सदृश विवेक, शिशु सन् स्वभाव, अहं केर छूति नहि, कतहु बैसि वा सूति सकै छी, निश्छल जीवन, विनम्रताक प्रतिमूर्त्ति, विलक्षण सदाचारी, महान् पंचाग्नि साधक, अहर्निश जप- तपमे लीन, क्रान्तिकारी सोच, निष्काम भक्त, रससिद्ध कवि, अनुपम गीतकार, सम्मोहक स्वर आर नहि जानि की सब...।

ओहि समय जखन संचारक उचित माध्यम नहि छल आ बहुत लोककेँ शंकर-मंडन शास्त्रार्थ विषयक चर्च करब अनसोहाँत लागैत छल तखनो हिनक एहि विषयक उद्गार देखल जाय—

अपन 'नामपट अनुराधा' उपन्यासमे कएलहु चर्चा।
मण्डन सदा अजेय रहल छथि मिथिला वासीक अर्चा॥
विश्वरूप क्यौ भेल छला जे अपर मंडनो भेला।
शंकरसँ शास्त्रार्थ हारि परिचय निश्चय द' गेला॥
मिथिला भूमिक प्रतिरोधीजन से ई ढोल पिटइ छथि।
अपन कोनो आधार न छनि,मिथ्या परचार करइ छथि॥
भारति- मण्डन केर प्रभासँ लागल छनि चकचोन्ही।
तकरे कारण बाजि रहल छथि मिथ्या ई अनहोनी॥

(मैथिली पुत्र प्रदीप- सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृतिग्रंथ, पृष्ठ 42)

मिथिलाक बहुत नामी-गिरामी विद्वान् सब जखन एहि विषयक चर्चकेँ मात्र बुद्धिविलास कहि अपरोक्ष रूपेँ हेय मानैत छलाह तखनो शंकर- मंडन विषयक कथित शास्त्रार्थकेँ प्रवाद मानि प्रदीपजी अपन क्रान्तिकारी भावनासँ मंडनवादी स्वर केर एक आलम्बन भेलाह। यैह समन्वित स्वर मंडन केर अपराजित स्वरूपक दिग्दर्शन करओलक आ लगभग एक सहस्राब्दी बाद ई कथित प्रवाद निर्मूल भऽ सकल।

प्राय: प्रदीपजीकेँ सुप्रसिद्ध गीतकार रूपमे अतुलित प्रतिष्ठा भेटल अछि। कालजयी गीत जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर... केर असाधारण जनप्रियताक कारण

वा एहन जनप्रिय गीत सभक रचना केर भावभित्ति हिनक अप्रतिम साधनासँ सम्बलित अछि। हिनक सुकोमल गीत सभक स्वर केर मीड़मे हिनक साधक स्वरूप ओतेक जगजियार नहि भऽ सकल जतेक पैघ ओ सिद्ध साधक सेहो छलाह। हिनक साधक स्वरूपक दिग्दर्शन निम्न विन्दुमे कएल जा सकैछ—

1. 1990 ई.सँ लगातार दू वर्ष दिन-राति मौन साधना कएलनि। आवश्यकतानुसार मात्र लिखिकेँ गप्प कएलनि। दू वर्षक ई विरल मौनव्रत साधना अभिनव ऊर्जाक संचार कएलक।

2. वर्ष 1997मे अत्यन्त कठिन पंचाग्नि साधना कएलनि। सूर्योदयसँ पूर्व नित्य कर्म व स्नानादिसँ निवृत्त भऽ पंचाग्नि मध्य सूर्याभिमुख एक पएरपर ठाढ़ भऽ किछु दिनक अनुष्ठानमे सवा लाख गायत्री मंत्र केर सिद्ध जाप कएने छलाह। ई अत्यन्त विरल साधना अछि। सौराठ गाम वासी सुप्रसिद्ध सन्त पुरुषोत्तम ठाकुर सेहो एक पएरपर ठाढ़ भऽ गायत्री मंत्र सिद्ध कएने छलाह।

3. वर्ष 2004मे सावित्री महाचरण यज्ञ करबाक प्रस्तावना लऽ 84 गामक भ्रमण कएलनि। एहिमे गाम सबमे जन सम्पर्क आ आध्यात्मिक गोष्ठी आदिसँ जनजागरण केर अलख जगाओल गेल।

4. सावित्री महाचरण यज्ञ सम्पन्न कएलाक बाद 84 दिनक 'गुप्त वास साधना' कएलनि। एहि काल ओ कतऽ आ कोना छथि एकर कोनो जानकारी परिवारमे नहि छल।

5. गुप्त वास साधनासँ आबि 84 गाममे वृक्षारोपण कएलनि।

6. एहि वर्ष 2004मे सीताराम चरण वन्दन यज्ञ कएलनि।

84 गामक भ्रमण, 84 दिनक गुप्त वास साधना आ 84 गाममे वृक्षारोपण एहि सभमे 84 अंक केर की रहस्य, महत्ता वा अभिप्राय छल से नहि जानि। सरहपा, लुइपा, भुसुकपा प्रभृति 84 सिद्ध सभसँ प्रदीपजीक एहि 84 अंक केर की सम्बन्ध अछि ई नहि कहल जा सकैत अछि। एतेक तऽ निर्भ्रान्त रूपसँ कहल जा सकैछ जे प्रदीपजी एक महान् साधक सेहो छलाह।

[अर्पण, अंक 37, विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा, 2020]

श्यामजीक महाप्रयाण : एक मेधासूर्यक अवसान

समाजमे मेघाक वितरण वा वर्गीकरण कोना होइत अछि एहिसँ सभगोटे अवगत छी। कोन मेधाक लोक कोन सेवा वा काजसँ जुड़ैत अछि एहि यथार्थसँ अवगत सभ कोइ छी मुदा दुर्भाग्य ई अछि जे आत्ममुग्धता वा आत्मश्लाघा भावेँ अपन साधारणो मेधाक आगू आनक विशेष मेधाकेँ ओहन मान्यता नहि दैत छी जेकर ओ वास्तविक अधिकारी अछि। श्याम दरिहरेजी आ मैथिलीक प्राध्यापकीय आलोचना सन्दर्भे विज्ञ प्राध्यापकगणसँ क्षमायाचना करैत ई अप्रिय सत्य बजबाक साहस कएल अछि।

श्याम दरिहरे (मूलनाम श्यामचन्द्र झा)क जन्म बेनीपट्टीक बरहा गाममे माता स्व. बृजकला देवी आ पिता स्व. कृष्णदेव झाक घरमे दि.19 फरवरी 1954 ई.कँ भेल छल। आइ. एस-सी. उत्तीर्ण करिते टाटामे एप्रेंटिशशिपमे योगदान करए पड़ल कारण विवाह भऽ गेल छल आ आजीविका लेल अपन पएरपर ठाढ़ होएबाक आवश्यकता पड़ि गेल छल। शुरूएसँ मेधावी छलाह तेँ जमशेदपुरेमे एप्रेंटिशशिप संगे इवनिंग कॉलेजसँ बी. कॉम. सेहो कएलनि। किछु बरख साराभाई फार्मास्यूटिकल्समे मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव रूपमे सेहो काज कएलनि मुदा हिनक आन्तरिक मेधा एहि सभसँ सन्तुष्ट नहि छल। बिहार लोक सेवा आयोगक 32म संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा (1986)मे सफल भेलाह। नीक रैंक आएल आ बिहार गृहरक्षा वाहिनी सेवामे चयनित भेलाह। ई बिहार पुलिस सेवाक समकक्ष छल। अप्रैल 1987मे योगदान देलनि। प्रशिक्षणादिक बाद जिला समादेष्टा (पुलिस उपाधीक्षक केर समकक्ष) पदपर भागलपुरसँ अपन कैरियर शुरू कएलनि। पलामू, बेगूसराय, पटना, धनबाद आ हजारीबाग/राँचीमे अपन सेवा देलनि। हजारीबागमे प्रमंडलीय समादेष्टा रूपमे राँचीक प्रमंडलीय समादेष्टाक अतिरिक्त प्रभारमे रहलाह। हजारीबागसँ 2014 ई.मे अपन यशस्वी आ आलंकारिक सेवासँ अवकाश ग्रहण कएलनि। दरिहरेजीक बैचमेट आ प्रखर साहित्यानुरागी श्री हरिनाथ झा सीनियर डिवीजनल कमांडेंट,

मुजफ्फरपुर पदसँ 2017मे अवकाशप्राप्त कएलनि। बहुत रास विवरण आ प्रसंग सभक जनतब देलनि। एतदर्थ हुनका प्रति आभार प्रकट करैत छी।

उर्वर मस्तिष्क आ सुकोमल भाव सभक कारणेँ अपन सेवाकालमे सेहो श्यामजी अपन नवोन्मेषशालिनी मेधासँ सभकेँ चमत्कृत कएने छलाह। 'हमर जनम किए भेलै हो रामा' उपन्यास आ कथा सभमे जे नक्सलवाद चित्रित अछि ओ सभ हुनकर सुनल नहि, देखल-भोगल यथार्थ थिक। तेँ ई सभ एकदम वास्तविक आ सत्याश्रित कथा लगैछ। नक्सलवाद केर मूल कारण की आ एकर उपाय की, एहि सभपर जे कथा वा चित्र श्यामजी उकेरित कएने छथि ओ सरिपहुँ विलक्षण अछि, श्लाघ्य अछि। तथ्यकेँ देखबाक आ ओकर चित्रण करबाक कलामे फराके प्रतिभा अपेक्षित अछि। श्यामजी एहिमे निष्णात छलाह।

हिनक प्रकाशित कृतिमे 'सरिसो मे भूत' कथासंग्रह 2004मे प्रकाशित भेल छल आ मैथिल समाज, रहिका द्वारा एहिपर 2013 ई.मे प्रतिष्ठित किरण पुरस्कार देल गेल छल। कथासंग्रह 'बड़की काकी एट हॉटमेल डॉट कॉम'पर श्यामजीकेँ 2013 ई.मे प्रतिष्ठित तिरहुत साहित्य सम्मान देल गेल छल आ 2016 ई.मे एहि पोथीपर हिनका साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कारसँ अलंकृत कएल गेल छल। उपन्यास 'घुरि आउ मान्या' 2015 ई.मे आएल छल। ई मैथिली उपन्यास साहित्यकेँ अनुपम दृष्टि देलक। अध्यात्म, दर्शन, विज्ञान, भक्ति आ विचार-प्रवाह केर अपूर्व कॉकटेल ई कृति सामान्य उपन्यास लेखन आ प्राध्यापकीय आलोचनाकेँ दलमलित कएलक, चकबिदोर लगा देलक। वर्ष 2016मे कविता-संग्रह 'क्षमा करब हे महाकवि' आएल जेकर प्रो. भैरवेश्वर झा कृत अंग्रेजी अनुवाद 'Forgive me O great poet' 2020मे प्रकाशित भेल। उपन्यास 'जगत सब सपना' 2017मे आएल। एकरा स्वतंत्र उपन्यास आ 'घुरि आउ मान्या'क क्रम विस्तार सेहो कहि सकैत छी। उपन्यास 'हमर जनम किए भेलै हो रामा' 2019मे प्रकाशित भेल छल। नक्सलवाद केर भावभूमिपर लिखल गेल मैथिलीक ई अनुपम उपन्यास थिक। 'रक्तसम्बन्ध' कथासंग्रह आ उपन्यास 'बाती कोन जराउ' 2020मे आएल। उपन्यास 'न जायते म्रियते वा' प्रेसमे अछि। अपन जीवन कालेमे दरिहरेजी एकर मुखपृष्ठ तैयार करओने छलाह। शीघ्रे ई पाठक सभक समक्ष उपस्थित होएत। हिन्दी कविता-संग्रह 'गंगा नहाना बाकी है' (2014 ई.) आ 'मन का तोरणद्वार सजा है' (2018 ई.) प्रकाशित अछि। डॉ. धर्मवीर भारतीक 'कनुप्रिया'क मैथिली अनुवाद सेहो हिनक अनुवाद कलाक बेहतरीन नमूना अछि।

मैथिली कथासंग्रह 'एकान्त द्वीपपर डॉ. मंजुला'क भावभूमि मुस्लिम

आ दलित वर्गक पृष्ठभूमिसँ जुड़ल अछि। अनुप्रास प्रकाशान, मधुबनीसँ ई पोथी श्यामजीक अवसानोत्तर हालहिमे प्रकाशित भेल अछि। एहि पोथीक उपलब्धि थिक जे एहिमे लेखकीय रूपमे श्याम जीक अंतिम हस्तलेख प्रकाशित कएल गेल अछि।

अप्रकाशित शृंखलाकाव्य 'सत्यं परम् धीमहि' केर भूमिका यशस्वी मैथिली प्राध्यापक श्री कमल मोहन चुन्नूजी लिखि रहल छथि। श्यामजीक अंतिम दीर्घकाय उपन्यास 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' 500 पृष्ठसँ पैघ कलेवरक उपन्यास अछि। एकर प्रकाशन देहावसानक बादे हुअए ई हुनकर इच्छा छल। एहन इच्छा किएक छलनि ई उपन्यास देखलाक बादे ज्ञात भऽ सकैछ। ई सेहो कालजयी कृति होयत से आश अछि, विश्वास अछि।

श्याम दरिहरेजीक तीनू कथासंग्रह 'सरिसो मे भूत', 'बड़की काकी एट हॉटमेल डॉट कॉम' आ 'रक्त संबंध' पाठक वर्ग द्वारा प्रशंसित भेल। पहिल कथासंग्रह लेल किरण सम्मान आ दोसर कथासंग्रहपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल छल। 'बड़की काकी एट हॉटमेल डॉट कॉम' जँ हिनकर मात्र एकहिटा कथा रहैत तखनो ओ मैथिली कथा-साहित्यमे अनुपम स्थानक अधिकारी रहितथि किछु ओहने जेना एकमात्र कथा 'उसने कहा था' लेल चन्द्रधर शर्मा गुलेरीजी हिन्दी कथा-साहित्यमे अमर छथि। हिनकर कथामे कथानक, देश-काल-परिस्थिति, संवाद, चरित्र-चित्रण, औत्सुक्य आ समापन सभक सुगुम्फनमे सभ ठाम दरिहरेजीक विशिष्ट छाप अछि। भाव-विह्वल करएवला ई कथा पढ़ैत काल मुंशी प्रेमचन्दक 'सोहाग का शव' कथा अनायासे मोन पड़ि गेल छल। अलग-अलग भावभित्तिक कथा रहितो त्यागक अपूर्व चित्र! मर्मन्तुद!! श्यामजीक अनेक कथा एहि अभिनव सगरमाथाक शिखर-स्पर्श करैत अछि। विस्तृत परिवेश, घनीभूत भाव-सान्द्रता, भावानुकूल खाँटी मैथिलीक शब्द चयन, एकसमान प्रवाह आ विशाल अनुभव भण्डारसँ कथानक केर चुनाव आदि श्यामजीक कथा सभकेँ विशिष्ट बना दैत अछि।

शुरूमे जाहि मेधाक चर्च कएने रही ओ हिनकर कथा, कविता, उपन्यास आदि सभठाम अभरल अछि। एतेक धरि जे रचना सभक नामकरण स्वयं सभ कथा कहि दैत अछि। संस्कृतनिष्ठ अर्थगौरवसँ युक्त नाम ! जेना कोनो हालमे कखनो हल्लुकपन स्वीकार्य नहि हो ! ने जीवनमे आ ने साहित्यमे। मुदा जाहि मेधाक संकेत करए चाहैत छलहुँ ओ हिनकर उपन्यासद्वय 'घुरि आउ मान्या' आ 'जगत सब सपना'मे पूर्ण प्रौढ़त्वकेँ प्राप्त कएने अछि। भक्ति, दर्शन, वैराग्य, कायान्तरण, क्वांटम फिजिक्स, रहस्यवाद, आत्मा-परमात्मा, जीव-ब्रह्म, आस्तिक-नास्तिक,

ब्रह्मचर्य-गृहस्थाश्रम, दैहिक भूख आ मानसिक पियास, देहावसान-पुनर्जन्म, तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि, आकाशगंगा प्रभृति विन्दु सभक जेहन वैदुष्यपूर्ण तार्किक अभिधान श्यामजी अपन दुनू उपन्यासमे समेटने छथि ओ सरिपहुँ विलक्षण अछि। आ एहि दुनू उपन्यासक उच्चताकेँ महसूस करबाक लेल किछु सामान्य ज्ञानक स्तर अपेक्षित अछि। दुर्भाग्यवश मैथिली प्राध्यापकीय आलोचनामे अपवाद छोड़ि देल जाय तखन एहि स्तर केर मेधाक प्राय: अभावे अछि। एहि कारणेँ विश्वक कोनो भाषाक लेल जे कृति गौरव केर पर्याय भऽ सकैत छल ओकर स्वागत ओहि प्रकारेँ एतऽ नहि भऽ सकल। संभव जे एहि कटु सत्यकेँ स्वीकार करबाक साहस हुनका सभमे नहि हो आ अपन मेधाकेँ विशिष्ट आ समीक्षाकेँ रचनासँ पैघ मानबाक मानसिकताक कारणेँ हिनका सभक भृकुटि तनि जाय। ओ गर्वसँ कहता जे महाकवि कालिदासक रचनामे मम्मट अविमृष्टविधेयांश दोष, अमतपरार्थत्व दोष, कारकप्रक्रम भंग दोष, अमंगल व्यंजकता वा अश्लीलता प्रभृति दोष ताकि नेने छथि। एहि प्रवृत्तिक विद्वान् सभसँ मात्र एतबे विनती करब जे पहिने रचना होइत छैक आ काव्यशास्त्रीय निकष तदनुसार निर्मित होइत छैक। आदिकवि वाल्मीकि कोन काव्यशास्त्र पढ़ि—

मा निषाद् प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती: समा:
यत्क्रौञ्च मिथुना देकम् वधी:काममोहितम्

रचि देलनि ! काममग्न पक्षीक जोड़ासँ एकटा केर हत्यासँ व्यथित आ भाव केर सान्द्रत्वसँ विचलित आदिकविक अन्त:पीड़ासँ निष्पन्न एहि श्लोकक आधारपर अनुष्टुप् छन्द केर निकष निर्मित भेल। गोस्वामी तुलसीदास आ बाबा विद्यापति संस्कृतक मर्मज्ञ छलाह तथापि ओ सभ अवधी आ मैथिलीक कोन काव्यशास्त्र पढ़ने छलाह ? निर्दुष्ट काव्यपर व्यर्थ दोष सभक अन्वेषण कएनिहार मम्मट महाराज मात्र काव्यशास्त्रीय पाठ्यक्रम धरि संकुचित भऽ रहि गेलाह आ महाकवि कालिदासक कविता-कामिनीक कमनीयता कतेक सहस्राब्दीसँ अखनो ओहिना पीयूषवर्षासँ जनमन रंजन करैत ब्रह्मानन्द सहोदर केर प्राप्ति करा रहल अछि। हम शुरूमे जाहि मेधाक विभिन्न क्षेत्रमे विभाजन केर बात कएने रही ओकर अभिप्राय यैह छल। साधारण छात्र छलहुँ, मैट्रिक आइ एमे त्रिपुण्डधारी रही, कहुना बीए-एमए कएलहुँ, कोनो कॉलेजमे सूत्र लगा पैसि गेलहुँ, किछु बरख वित्तरहित खटलहुँ

फेर महाविद्यालय अंगीभूत भेल आ बड़का प्रोफेसर बनि गेलहुँ। ई वित्त रहित व्याख्याता बनबाक 'खेल' कतेक जवानीकेँ चूसि लेलक, मेधाक नाश कएलक, जीवन अन्हार कएलक तेकर ठेकान नहि। करमसाँढ़ रही तऽ कॉलेज अंगीभूत भेल। नोकरी भेटिते पठन-पाठन कठाइन लागए लागल। अपन मूल योग्यताक स्तर बिसरा गेल आ आत्ममुग्धतामे मात्र यैह मोन रहल जे हम तऽ बड़का प्रोफेसर छी। एम्हर-ओम्हरसँ उपछि किछु लिखलहुँ आ भऽ गेलहुँ बड़का विद्वान् ! हमरा सोझाँ के ठटि सकत! आब हमही ने महाप्रभु ! बहुत काल धरि बिहारमे पसरल व्याख्याता बनबाक ई लघुपथ कतेक विध्वंसकारी छल ई कहब योग्य नहि अछि। मेधा गेल तेल आनए आ पउवा आ चानीक पनही सभक मान बढ़ल। एहनो मैथिलीक व्याख्याता छथि जे मैथिली बाजि नहि सकैत छथि। वर्ग नहि लेब आ जँ लेबऽ पड़त तखन हिन्दी माध्यमे मैथिली पढ़ाएब। अलबत्त हिसाब! संघ लोक सेवा आयोगसँ मैथिली राखि बड़का हाकिम बननिहार सभमे अपवाद छोड़ि देल जाय तऽ अधिकांश केर एहने हाल प्राय: रहैछ। गैर मैथिल सेहो मैथिली विषय राखि दसटा उत्तर रटि परीक्षा उत्तीर्ण होइत छथि। अवश्य होउ मुदा जखन मैथिलीक रोटी खा रहल छी तखन एकर किछुओ सरियत तऽ अवश्य दियौ! मैथिलीक कमाइ खएनिहार मुदा घरमे अंग्रेजी-हिन्दी बाजनिहारसँ बहुत रास आशा करब व्यर्थ। ई आन्तरिक भाव थिक जे निज देश, मातृभाषा आ अपन समाज, संस्कृति आ परम्पराक प्रति आदर जगबैत अछि, देखाउँस करबाक लेल प्रेरित नहि करैछ। श्यामजी एकरे प्रतीक छलाह।

साधारण स्तरीय मेधासँ प्राय: ई आश करब जे धर्मक तत्वत: विवेचन, दर्शनक गूढ़ घुरछीकेँ सोझरएबाक प्रयास आ क्वांटम यांत्रिकी सिद्धान्त सभक सरलतासँ व्याख्या आ अभिनव कथासूत्रमे जोड़ैत औत्सुक्यक चरम परिणति धरि आनएवला एहि विश्व स्तरीय उपन्यासक उच्चता केर स्वागत-सम्मान करताह, व्यर्थ थिक। हुनका सभसँ ई संभव नहि।

1933 ई.मे नोबेल पुरस्कारसँ सम्मानित इरविन श्रोडेगर (हमर अधिकांश विचार आ सिद्धान्त वेदान्तसँ प्रभावित अछि) होथि वा जर्मन नोबेल पुरस्कारप्राप्त भौतिकीवेत्ता वेर्नर हेसेनवर्ग (हिन्दू धर्मक रहस्यात्मक अवधारणाक आधारपर क्वांटम यांत्रिकीकेँ समझल जा सकैछ), प्रथम परमाणु बमक मैनहट्टन प्रोजेक्ट केर प्रमुख जूलियस राबर्ट ओप्पेनहेमर (वेद धरि जाहि शताब्दीमे पहुँच संभव भेल ओ पछिला सभ शताब्दीसँ बेहतर) आ नोबेल पुरस्कारप्राप्त नील्स बोर (हमर

समस्त शंकाक समाधान उपनिषद् सँ भऽ जाइछ) प्रभृति पाश्चात्य मनीषी सभक विचार भारतीय प्रज्ञाक श्रेष्ठता केर स्पष्ट जयघोष थिक।

एहिना 1970 केर दशकमे हावर्ड जोन्स, कोएस्टलर, लॉरेंस लेशान प्रभृति भौतिकीवेत्तागण जे क्वांटम यांत्रिकी सिद्धान्त द्वारा परामनोवैज्ञानिक घटना सभकेँ सोझरएबाक प्रयास शुरू कएलनि ओकर मूलाधार भारतीय प्रज्ञाक विभिन्न सोपाने थिक। मानव चेतनाक विभिन्न आयाम, परामनोविज्ञान, अनुवांशिक ध्यान आ ब्रह्माण्ड केर विभिन्न रहस्यात्मक घुरछी सोझरएबाक लेल क्वांटम रहस्यवादकेँ स्वीकार कएल गेल। फ्रिटजॉफ कैप्रा अपन ग्रंथ 'द टाउ ऑफ फिजिक्स : एक्सप्लोरेशन ऑफ द पैरेलल्स विटवीन मॉडर्न फिजिक्स एंड ईस्टर्न मिस्टिसिज्म (1975)मे सूक्ष्मतासँ एहिपर विचार कएने छथि। श्यामजी क्वांटम यांत्रिकी आ धर्मक गूढ़ तत्व विषयक गहन अध्ययन कएलनि, अपन मेधाक उपयोग करैत एहिमे दर्शन केर वैदुष्य आ गाम्भीर्य जोड़लनि आ कल्पनाक अद्भुत भावलोक ठाढ़ कएलनि। दुर्भाग्य ई भेल जे ओ भावलोक ततेक ने ऊँचगर भऽ गेल जे जँ अपवाद छोड़ि देल जाय तऽ प्राय: स्नातकोत्तर धरि लगातार कला विषयक छात्र-प्राध्यापक सभक माथ केर ऊपरे-ऊपर उड़ि गेल। जखन कि ई सर्वथा बोधगम्य भाव-भाषामे अछि आ एकर आनन्द लेबाक लेल मात्र सामान्ये बौद्धिक स्तर अपेक्षित अछि। से प्राय: नहि भेल। अनुमान लगाओल जाय जे हमरा सभक बौद्धिक स्तर कतऽ अछि! भारतीय संस्कृति केर भावप्रवणता, भारतीय दर्शनमे तत्वक सूक्ष्मातिसूक्ष्म पदार्थक विवेचन, एकर गूढ़त्वमे नुकाएल वैज्ञानिकता, शून्य केर अवधारणा, भारतीय वाङ्मय केर सार्थकता, वेद-गीता-पुराण-उपनिषद् आदिमे जगत् कल्याणक दर्शन प्रभृति तत्वक अछैत अंग्रेज सभक कुचक्रमे फँसि अज्ञानतावश एकर उपेक्षा करब वा भारतीय प्रज्ञा आ चिन्तनकेँ हीन मानब कोनो दृष्टिएँ उचित नहि। हंस जकाँ नीर-क्षीर विवेकी दृष्टि राखब उचित। नीक वस्तु स्वीकार्य खखरी त्याज्य! भारतीय चिन्तनधाराक बहुत चीज अमूल्य अछि तेँ आत्महीनताक त्याग सर्वथा उचित।

आत्महीनताक भावसँ हमसभ तेहन अधमरू भेल छी जे अपन श्रेष्ठो बात तखने स्वीकार करैत छी जखन कोनो राबर्ट, जोन्स आदि नामधारी ओकरा विलक्षण कहैत अछि। दरिहरेजीक उपन्यास सभपर जखन कोनो आंग्ल नामधारी किछु नीक लिखत तखने मैथिलीक प्राध्यापकीय आलोचक सभक कुम्भकर्णी निद्रा टूटत आ एकर यथोचित सम्मान होयत। प्रसन्नताक बात जे आब तऽ आयोग सक्रिय भऽ गेल अछि आ एकर माध्यमे नीक छात्र सभक सेहो व्याख्याता बनबाक सपना पूर

भऽ रहल अछि। बहुत रास मेधावी सभक एहिमे आगमन भेल अछि। हुनका सभकेँ ई चुनौती स्वीकार करबाक चाही।

आत्महीनतासँ जतेक जल्दी उबरि जाय ओतेक नीक। विशेष रूपसँ बुद्धिजीवी वा नवनियुक्त मेधावी प्राध्यापक सभकेँ तुरंत सचेष्ट होइत नेतृत्व करबाक चाही। पहिनेसँ बहुत देरी भऽ गेल अछि। आत्महीनता आ आत्ममुग्धता दुनू एक स्वस्थ आ प्रगतिशील समाजक लेल नीक नहि अछि। उचित केर संग देबाक चाही, मेधाक सम्मान होएबाक चाही। 'घुरि आउ मान्या' आ 'जगत सब सपना' सहित आनो विश्व स्तरीय रचना लेल नीकसँ लॉबिइंग हो, प्रयास हो, तखन साहित्यक नोबेल सहित अन्य अन्तरराष्ट्रीय शीर्ष सम्मान सेहो मिथिला आबि सकैत अछि।

दरिहरेजीसँ हमर स्नेहसूत्र दृढ़ छल। अनेक कार्यक्रम सभमे हमरा सभक सहभागिता रहल। हमरा सभक गप्प-सप्प अक्सर होइत छल। आन-जान छल। महाकवि कालिदासक श्रीलंकामे महाप्रयाण, मैथिलीक मानकीकरण, एकर भविष्य आ दशा-दिशा, मैथिलीमे वर्तनीक समस्या आदि विषयक कतेको बेर भरि पोख गप्प भेल छल। 16 मई 2021कैँ भेल एक चैटमे ओ कहने छलाह जे जगन्नाथपुरी गेल रही, ओतहि 'ककर ककर दुख गाउ' उपन्यास लिखलहुँ। कम्पोजिंग-प्रूफिंग चलि रहल अछि।

दुर्योग जे दि. 25 जून 2021कैँ कृष्णक नगरी वृन्दावनमे अपन गुरु सरकार राधेश्यामजी महाराजक मिथिला कुञ्ज आश्रममे भगवान् श्रीकृष्णकैँ साष्टांग दंडवत् कएलाक बाद ठाढ़ भेलाह आ अचेत भऽ गेलाह। चिकित्सा भेल मुदा भगवान् कृष्ण जेना साष्टांग प्रणाम करैत श्यामजीकैँ अपना लऽग बजा नेने होथि आ अनुपम कृष्णभक्त मेधासूर्य श्यामजी भगवान् श्रीश्याममे विलीन भऽ गेलाह। नमन अशेष हे मेधासूर्य!

[अर्पण, अंक 38, विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा, नवम्बर 2021]

महाकवि कालिदासक मैथिलत्व

कवि कुलगुरु कालिदास विश्व वाङ्मय केर शीर्ष कवि छथि। अनामिका आँगुर केर सार्थकतामे ई उपमा विलक्षण रूपसँ अभिव्यंजित भेल अछि—

पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदास:
अद्याततुल्यकविर्भावात् अनामिका सार्थवती बभूव।

दुर्भाग्य जे आने पुरातन प्रातिभ जकाँ हिनको जन्मस्थान आ समय अनिर्णित अछि। किछु एहने विकट स्थिति होमर, शेक्सपीयर आदि पुरा प्रातिभ सभक संग सेहो अछि। विलियम शेक्सपीयरे अपन रचना सभक मूल रचनाकार छथि वा फ्रांसिस बेकन, क्रिस्टोफर मार्लोव वा एडवर्ड डे वेरे वा अन्य केओ आर छथि। एहि विवादक फरिछौट जखन ग्रेट ब्रिटेन आ अमेरिका केर न्यायालय सभ नहि कऽ सकल तखन आमजन केर कोन कथा! अपन-अपन मान्यतापर लोक अखनो ओहिना दृढ़ छथि। एहिना एकल होमरकेँ इलियड आ ओडेसी केर रचनाकार मानी वा एक परम्पराकेँ जाहिमे बहुत रास होमर समान कवि छथि, हुनका एकर श्रेय देल जाय! एहि सभ विन्दुपर अखनो ओझरायल घुरछीसँ त्राण नहि पओलक अछि यूनानी सभ्यता!

कथित रूपसँ अपनाकेँ भारतीय सभसँ बेसी सुसभ्य आ ओरिआएल माननिहार अंग्रेज सभक एहने दशा अछि। तथापि भारतीय इतिहास आ संस्कृति सभक खिधाँस करब, हेय मानब ओ सभ अपन अधिकार मानैत छथि! जे से! अपन टेटर सरिपहुँ लोककेँ देखाइत नहि छैक!

महाकवि कालिदास आने पुरा प्रातिभ जकाँ अपन जन्मस्थान, समय आ आश्रयदाता विषयक कोनो चर्च नहि कएने छथि। हुनक रचना सभक लालित्य,

अर्थ गौरव, उपमादि अलंकार सभक अनायास प्रवेश, शब्द सभक शक्ति आ धर्म, गुण, रस, वर्णन केर सूक्ष्मता आदि काव्यगुण केर सरस सौष्ठव तेहन हृदयस्पर्शी भेल जे प्रत्येक पाठककेँ ओ 'अपने' लागल। यैह कारण अछि जे भारतवर्षक बहुत क्षेत्र हुनकर जन्मस्थान होएबाक दावी करैत अछि। मुख्य रूपसँ विदर्भ (के कृष्णमूर्त्ति), गढ़वालक देवगिरि (डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित), क्रौञ्चरन्ध्र केर आधारपर रुद्रप्रयागक कविल्ठा (राजेन्द्र मिश्र); केसर, सूर्यपूजा आ प्रत्यभिज्ञान दर्शन सभक कारणेँ कश्मीर (प्रो. लक्ष्मीधर कल्ला, डॉ. भगवत शरण उपाध्याय आदि), भगवती कालीक कृपा आ धानक बिच्चनिकेँ उखारि दोसर खेतमे खाउर करब सन वर्णनक आधारपर बंगालक मुर्शिदाबाद जिलाक गढ़सिंगरू गाम (वी वी मिरासी आदि), उज्जैन (पं. मोरेश्वर नीलकंठ शास्त्री आदि) आ मिथिलाक अपन दावी छैक। महाकविक जन्मस्थान संबंधी सिद्धान्त सभक संक्षिप्त समीक्षा उचित अछि।

विदर्भ सम्प्रति महाराष्ट्रक दू कमिश्नरी नागपुर आ अमरावतीकेँ कहल जाइत अछि। महाकविक रचना रघुवंशम् मे अज अपन राजधानी अयोध्यासँ इन्दुमतीक स्वयंवरमे भाग लेबाक लेल ससैन्य नर्मदा नदी पार कऽ विदर्भ केर राजधानी अबैत छथि— प्रस्थापयामास ससैन्यमेनमृद्धां विदर्भाधिपराजधानीम् (रघु. 5/40)। मालविकाग्निमित्रम् मे विदर्भराज आ विदिशाराज अग्निमित्रमे वैमनस्य आ युद्ध देखाओल गेल अछि। कृष्ण द्वारा विदर्भराजक पुत्री रुक्मिणी केर हरण आदि बात वर्णित अछि। ई एकदम सामान्य अछि। एहि वर्णनमे कविक कोनो मात्सर्य भाव वा कोनो अतिरिक्त विशिष्टता नहि प्रकट भेल अछि जे महाकविक जन्मस्थानक संकेत मानल जाय। गढ़वालक देवगिरि वा रुद्रप्रयागक कविल्ठा वा कश्मीर शीतल क्षेत्र अछि। एहि शीतल क्षेत्रक वासी सभक लेल गर्मीसँ निजात हेतु धारागृहमे फुहारक (यन्त्रधारागृहत्वम् ..., पूर्वमेघ, 65) आ जलक फुहारसँ शीतल भेल समीर (स्वजलकणिकाशीतलेनानिलेन..., उत्तरमेघ, 40) केर परिकल्पना करब कने कठिन अवश्य अछि। एहि क्षेत्रकेँ जन्मस्थान मानलासँ मेघदूत केर नैसर्गिक मार्गमे व्यतिक्रम सेहो अबैत अछि। ई पूर्णतया संभव अछि जे महाकवि क्रौञ्चरन्ध्र होइत हंसकेँ मानसरोवर जाइत देखने होथि। तथापि एहि वर्णनक आधारपर महाकविकेँ एतऽ केर मूल निवासी कहब उचित नहि होयत। केसर केर वर्णन आ सूर्यपूजा-प्रत्यभिज्ञान दर्शन कारणेँ सेहो महाकविकेँ कश्मीरी नहि कहल जा सकैछ। केसर केर खेतीक कोनो एहन सूक्ष्म रूप, प्रकार आ प्रविधिक बात महाकवि कतहु नहि कएने छथि जखन कि धानक बिया बाउग कएल गेल खेतसँ बिच्चनि उखाड़ि ओकरा दोसर खेतमे खाउर करबाक चर्च महाकवि करैत छथि— फलैःसंवर्धयामासुरुत्खातप्रतिरोपिताः (रघु. 4/37)। बंगाली विद्वान् सभ सेहो एकर आश्रय लैत

महाकविकेँ बंगाली प्रमाणित करबाक फेरमे छलाह। अनादि कालसँ मिथिलामे धनखेतीमे प्रचलित खाउर करब आ रघुवंशम् केर एहि उत्खात् शब्दक समानता हुनका सभक समस्त कल्पना ध्वस्त कएलक। भगवती कालीक कृपा आ धनखेतमे कमल फुलायब मिथिलाक सेहो प्रसिद्ध अछि। मूर्खसँ विद्वान् बनओनिहारि उच्चैठ भगवतीक कृपासँ के अवगत नहि अछि! एहिना महाकविक पाँती आषाढ़स्य प्रथमे दिवसेक आधारपर बंगाली सभक दावी जे बंगालमे अद्यतन दिन केर गणनामे पक्ष आ तिथिक प्रयोग नहि होइत अछि तेँ महाकवि बंगाली छथि, बालुक भीतपर ठाढ़ अछि। ई दावी सेहो सत्याश्रित नहि अछि। गुप्त नृपति चन्द्रगुप्त द्वितीयक सेनापति आम्रकार्दव केर साँची शिलालेखमे 'सम्वत् 93 भाद्रपक्ष दि. 4' आ कुमारगुप्तक कालमे मनकुवार स्थानसँ भेटल मूर्त्तिपर अंकित 'सम्वत् 129 ज्येष्ठ मास दि. 18'सँ ई दावी खंडित होइत अछि। जँ महाकवि बंगाली रहितथि तखन कदाचित् रघुक हाथेँ बंगाली राजा सभक एहन भयंकर पराजय (रघु. 4/36) केर उल्लेख नहि भेल रहैत। पूर्वमे कश्मीरकेँ कालिदासक जन्मस्थान मानबाक बातपर विचार भेल छल। ओहि क्रममे इहो कहब उचित जे सूर्यपूजाक विशिष्ट रूप महाव्रत छठि पावनि मिथिलामे अखनो समादृत अछि। प्रत्यभिज्ञान दर्शन वा इन्दुमतीक स्वयंवरमे सुनन्दा द्वारा अजकेँ वरमाला पहिरा देलासँ सेहो महाकविक कश्मीरी होएबाक निर्णायक उद्घोष नहि होइत अछि। स्वयंवरमे सुनन्दा द्वारा अज केर माला पहिराएब मात्र हुनक चयन केर द्योतक थिक। विवाह बादमे विधिपूर्वक होइत अछि। प्रत्यभिज्ञान दर्शन केर पताका फहरएबाक कारणेँ जँ महाकवि कालिदासकेँ कश्मीरी मानल जाए तखन 'कामायनी' केर प्रणेता जयशंकर प्रसादजीकेँ सेहो कश्मीरी मानए पड़त! ई उचित होयत की? कश्मीरक ई शैव दर्शन (प्रत्यभिज्ञान दर्शन) अद्वैत दर्शने केर एक प्रकार थिक ठीक ओहिना जेना मिथिलाक भावाद्वैत दर्शन। विक्रमोर्वशीयम् केर प्रथम पदमे वेदान्त, द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, भावाद्वैत, सांख्य, योग आ भक्ति दर्शन केर अभिव्यक्ति भेल अछि—

वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थितं रोदसी
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयः शब्दो यथार्थाक्षरः।
अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते
स स्थाणुःस्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायाऽस्तु वः॥

महाकवि परमात्माक स्वतंत्र आ आनन्दमय स्वरूपकेँ मानितो परमात्माक अवतारी रूपकेँ सेहो स्वीकार करैत छथि। राम आ कृष्णकेँ विष्णुक अवतार कहैत छथि— रामाभिधानो हरिरित्युवाच (रघु. 13/1), कार्यान्तरमानुषस्य विष्णोः (रघु. 16/82), गोपवेशस्य विष्णोः (पूर्वमेघ, 15) आदि। यथार्थमे महाकविक रचनामे भारतीय दर्शन केर सार सन्निहित अछि आ हुनका मात्र प्रत्यभिज्ञान दर्शन केर आचार्य कहब एवं एहि आधारपर कालिदासकेँ कश्मीरी कहब भारी अन्याय होयत एहि 'न भूतो न भविष्यति' महाकविक संग! एतऽ इहो उल्लेखनीय अछि जे कल्हण द्वारा कश्मीरी प्रातिभ सभक चर्चामे कालिदासक कोनो उल्लेख नहि अछि। ई महत्त्वपूर्ण तथ्य कश्मीरक दावीकेँ समाप्त करैत अछि।

उज्जैनवासी स्वाभाविक रूपसँ महाकविकेँ 'अपन' मानैत छथि। महाकविक रचनामे उज्जैनक मार्मिक वर्णन सेहो भेल अछि। मुदा एकर मूल कारण उज्जैनकेँ महाकविक जन्मस्थली होएब नहि अपितु कर्मस्थली होएब थिक। इन्दुमतीक स्वयंवरमे महाकवि प्रथम स्थानपर मगध नरेश परंतप आ दोसर स्थानपर अंगराजक वर्णन करैत छथि। वर्तमान बिहारक दुनू क्षेत्रक राजाक बादे ओ अवन्तिराजकेँ तेसर स्थानपर रखैत छथि। ई अपन क्षेत्रक राजाक प्रति अतिरिक्त आदरक प्रकटन थिक। मगधनरेशक विषयमे उद्गार अछि जे जेना असंख्य तारा, ग्रह, नक्षत्र सभक बादो राति तखने इजोरिया राति मानल जाइछ जखन चन्द्रमा पूर्णतामे शोभैत हो तहिना सहस्राधिक राजाक रहैत पृथ्वी मात्र मगधराजेक कारणेँ राजायुक्त कहाइत अछि—

कामं नृपाः सन्तु सहस्रशोऽन्ये राजन्वतीमाहुरनेन भूमिम्
नक्षत्रताराग्रहसङ्कुलाऽपि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः

(रघु. 6/22)

इन्दुमती मगधनरेश दिशि तकैत छथि तखने हुनक महुआक माला सरकि जाइत अछि आ ओ मात्र प्रणाम करैत आगू बढ़ि जाइत छथि। अवन्तिराज सहित आन राजा सभकेँ बिनु कोनो अभिवादन कएने ओ आगू बढ़ि जाइत छथि। ई प्रसंग अपना क्षेत्रक राजाक लेल स्वाभाविक मात्सर्य केर प्रकटन थिक जे परोक्ष रूपसँ महाकविक जन्मस्थानक संकेत अवश्य करैत अछि। उज्जैनक वारांगना सभक महाकाल मन्दिरमे नृत्य आ नखक्षतपर पड़ैत शीतल फुहारसँ सुख भेटलापर दीर्घ कनखी मारबाक बिम्ब (पूर्वमेघ 39) हो वा अभिसारिका सभकेँ अन्हारमे मार्ग

देखएबाक चित्रण (पूर्वमेघ 41) हो, पण्य स्त्री संग संभोगमे रसिकजन द्वारा प्रयुक्त सुगन्धित पदार्थ सभक गुफासँ अबैत महक (पूर्वमेघ 27) केर चर्च हो वा दोसर स्त्री संग राति व्यतीत कऽ भिनसरवामे गृह आएल पति द्वारा नोर बहबैत रूसलि प्रियाकेँ मनुहारमे नोर पोछबाक चित्र (पूर्वमेघ 43) हो, ई सभ स्पष्ट रूपसँ वर्जना करैत अछि जे उज्जैन महाकविक जन्मभूमि थिक। ई मनोवैज्ञानिक तथ्य अछि जे लोक यथासाध्य अपन गामक गुप्तकथा सभक प्रकटन अन्यत्र नहि करैत छथि। आ एतऽ तऽ महाकवि सभटा उघारिकेँ राखि देने छथि। उज्जैनक गढ़कालिका भगवतीकेँ महाकवि कालिदास पूजित मानल जाइत अछि। सर्वथा सत्य अछि। एहि मन्दिर वा गढ़कालिका मन्दिरमे लागल शिलालेखमे वर्णित बारह पापनाशिनी स्थल सभमेसँ कोनो स्थल संग कोनो मूर्खकेँ महाकवि बनएबाक कोनो कथा अनुस्यूत नहि अछि। संगे ई एकटा महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे एहि मन्दिरक पुजेगरी परम्परागत रूपसँ मैथिल होइत छथि आ एतऽ केर पूजन परम्पराक विधान सेहो मैथिल पूजन परम्परापर आश्रित अछि। एहिसँ हमर ई धारणा फलवती होइछ जे मैथिल महाकवि कालिदास जखन अपन कर्मक्षेत्र मन्दसौर-उज्जैन (मालवा क्षेत्र) अएलाह तखन एहि गढ़कालिका भगवतीकेँ अपन परम्परानुसार पूजन कएलनि। जे परम्परा अखनो अक्षुण्ण अछि। एहि तथ्य सभसँ सेहो उज्जैन वा मालवा क्षेत्र महाकविक जन्मस्थली नहि कर्मस्थलीए प्रमाणित होइत अछि।

आब अंतिम दावेदार मिथिलाक दावी केर मूल्यांकन विभिन्न विन्दु सभक आधारपर करैत छी—

महाकविक रचनाक आधारपर कालिदासक मैथिलत्व

महाकवि कालिदासक मैथिलत्वपर ऊपर किछु बीजरूपमे संकेत भेल अछि। महाकविक रचनामे ई बीज भकरार गाछ बनि अभरल अछि।

i) सीताक चरित्र- रघुवंशम् मे जे सीताक चरित्र उकेरित अछि ओ महाकविक मैथिलत्वक स्पष्ट संकेत करैत अछि। एहिमे सुदक्षिणाकेँ ऋतुस्नानक बाद देखि दिलीपक ई सोचब जे जँ अखन सम्भोग नहि करब तखन गृहस्थी गड़बड़ा जाएत (रघु. 1/76), मथुरानरेश सुषेणक जलविहारमे रानीक स्तनपर लागल चन्दनकेँ यमुना जलमे मिज्झर भेलासँ मथुरामे गंगा-यमुना केर संगम केर दृश्य (रघु. 6/48) उपस्थित होएब आ कुशक रानी सभक संग जलविहारक मांसल वर्णन भेल अछि। अग्निवर्णक केलि-वर्णन तऽ उत्कट अछि। ओ नर्तकी, दासी, सेवक सभक स्त्री संग सम्भोग करैत छथि (रघु. 21/32, 45)। रघुवंशम् मे राम-सीता केलि-वर्णन विषयक मात्र दू पद (14/ 24-25) अछि जे दुनू इच्छानुसार

भोग ओहि घरमे करैत छथि जाहि घरमे वनवास कालीन चित्र टाँगल अछि। कोनो मांसलता नहि। एहिसँ सीताक प्रति महाकविक अतिरिक्त आदर आ अनुराग प्रकट होइत अछि। अपन बहिन वा बेटीक उत्कट केलि-वर्णन कोन कवि करए चाहत? सीता परित्याग प्रसंगमे सेहो महाकविक मैथिलत्व सोझाँ अबैत अछि। अपन परित्यागक बात जानि सीता विह्वल होइत छथि, कुररी जकाँ कनैत छथि। एहि प्रसंगक चित्रणमे 'हमर अभाग हुनक नहि दोष' केर भाव अवश्य अछि तथापि सीताक ई प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि जे जखन ओ (राम) अपना समक्षमे हमरा अग्निपरीक्षामे पवित्र पओने छलाह तखन मात्र लोकापवाद सुनि अपयशक भयसँ हमर परित्याग कएलनि, ई कृत्य की रघुकुलक अनुरूप थिक?

वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा वह्नौ विशुद्धामपि यत्समक्षम्
मां लोकवादश्रवणादहासीः श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य॥

(महाकवि कालिदास : रघुवंशम्, 14/61)

रामक विराट् व्यक्तित्वपर प्रश्नचिह्न ठाढ़ करबाक साहस अपूर्व अछि। आगू निःसहाय, निरूपाय, निराश सीताकेँ वाल्मीकि आबि बोल-भरोस दैत छथि जे हे पुत्री! हम योगबलसँ जानि गेल छी जे अहाँक पति मिथ्या अपयशसँ डरि अहाँक परित्याग कऽ देलनि। अहाँ चिन्ता जुनि करू किएक तऽ अहाँ अपन पितृगृह आबि गेल छी—

जाने विसृष्टां प्राणिधानतस्त्वां मिथ्यापवादक्षुभितेन भर्त्रा।
तन्मा व्यथिष्ठा विषयान्तरस्थं प्राप्तासि वैदेहि! पितुर्निकेतम्॥

(रघु. 14/72)

आगू रामक चरित्र केर प्रशंसा कएलाक बादो ई कहएसँ ओ संकोच नहि करैत छथि जे अहाँक संग जे राम अनुचित व्यवहार कएलनि एहि लेल हुनकापर हमरा भारी क्रोध आबि रहल अछि (रघु. 14/72,73)। वाल्मीकि द्वारा सीताक लेल पुत्री सम्बोधन, पितृगृह नैहर अएबाक बात आ रामपर आक्रोशक मर्ममे महाकवि कालिदासक मैथिलत्व नुकायल अछि।

ii) प्रकृति-वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व- महाकविक प्रकृति-वर्णन अप्रतिम अछि मुदा हम एकर साहित्यिक सौन्दर्यपर नहि जाएब। महाकविक जे भाव हुनक मैथिलत्व केर संकेत करैत अछि मात्र ओहन किछु पद सभक समीक्षा

करब। चूड़ा-गुड़ केर चर्च (ऋतु. 5/16), वायुप्रवाहक कारणेँ बाँसक छिद्रसँ बहराइत बाँसुरीक ध्वनि (कु.सं. 1/8), जमुनटोकी, आमक गाछी आ पाकल धानसँ भरल खेतमे जेना महाकविक मोन रमि गेल हो, सिंगरहारक फूलसँ महमह करैत वातावरण आ विपुल जलराशिमे चिड़ै-चुनमुनी सभक कलरव (ऋतु. 3/14) मिथिला छोड़ि आर कतऽ पाबी!

पाछू महाकविक कर्मस्थली उज्जैनक नारी सभक उद्दाम यौवन केर किछु चित्र केर संकेत कएने रही। आब महाकविक अपन जन्मस्थलीक स्त्रीगण विषयक चित्र देखल जाय। धानक जजाति केर रक्षा लेल कुसियारक छाहरिमे बैसलि स्त्रीगण अपन राजाक कीर्त्तिगाथाक गीत बना गाबि रहल छथि (पूर्वमेघ 20)। कृषक सभक भोल स्त्रीगण मेघ दिशि आदर आ नेहसँ देखैत छथि किएक तऽ खेती एकमात्र मेघेक आसरे रहैत अछि आ एहि भोल स्त्री सभकेँ भौंह चला पटिआबऽ नहि अबैत अछि (पूर्वमेघ 16)। दुनू वर्णन केर पार्थक्य सहज बोधगम्य अछि।

मेघदूतम् केर प्रथम श्लोकमे 'जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु' कहि कालिदास सीताक वन्दना करैत छथि जे जनकतनयाक चरण-कमलक प्रवेशसँ सरोवर केर जल पवित्र भेल। एहिना 15म श्लोकमे जखन उधिआएल श्यामवर्णी बादल सप्तवर्णी इन्द्रधनुषपर अबैत अछि तखन इन्द्रधनुष खंडित होइत अछि आ एक समय एहन लगैत अछि जे मोरपंख पहिरने साक्षात् श्रीकृष्ण सुशोभित छथि। विलक्षण उत्प्रेक्षाक एहि चित्रमे 'धनु:खण्डमाखण्डलस्य'सँ महाकवि अपन मातृभूमि मिथिलाक संकेत करैत छथि। सम्पूर्ण संसार जनैत अछि जे श्रीराम द्वारा धनुर्भंग कएलाक बादे सीताजीसँ हुनक विवाह भेल छल। एहि 'धनु:खण्डमाखण्डलस्य'सँ महाकवि अपन मातृभूमि मिथिलाक स्मरण आ वन्दना कएने छथि, एहिमे कोनो संशय नहि। एहिना अगिला श्लोक केर 'सद्य:सीरोत्कषणसुरभि' पदखंडपर विचार करी तखन एहिसँ महाकविक अपन मातृभूमिक लेल मात्सर्य प्रकटन केर अनुपम चातुर्यक थाह लागत। हमसब जनैत छी जे सद्य: चासल, समारल आ तेखारल खेतसँ एक अलगे सुगन्ध अबैत अछि। जँ एहिपर एक अछार पानि बरसि जाय तखन ओ सोन्हगर सुगन्ध आर दिव्य भऽ जाइत अछि। महाकवि जे मेघसँ सद्य:जोतल खेतपर एक अछार बरखाक आह्वान करैत छथि ओ ओहि क्रियाक पूर्णता देबाक लेल भेल अछि जे कहियो अकाल समाप्त करबाक लेल राजा जनक स्वयं हरबाह बनल छलाह आ सिया सुकुमारी प्रकट भेल छलीह। तेकर बाद भारी बरखा भेल छल आ अकाल समाप्त भेल रहए। एतऽ सद्य:सीरोत्कषणसुरभि: सिया सुकुमारी छथि।

मेघदूतम् केर लगातार मननसँ प्रच्छन्न विशिष्ट भाव उद्घाटित होइछ तेँ 'मेघे माघे गतं वय: ' कहल गेल अछि।

iii) रीति-रिवाज/पावनि-तिहारक वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व- महाकवि कालिदास द्वारा वर्णित रीति-रिवाज आ पावनि-तिहारपर मिथिलाक स्पष्ट छाप अछि। भूमिपर भट्ठासँ शिशु केर अक्षरारम्भ (रघु. 18/46), पतिगृह जाइत काल जलाशय तक अरिआतब आ भ्रातारूपमे शाङ्र्गरव आ लोकनी रूपमे गौतमीकेँ जाएब (अभि. शाकु.), धानक लावासँ हवन, होमधूपकेँ सूँघब, दुर्वाक्षतसँ आशीर्वाद, ध्रुवताराक दर्शन, नव वर-कनिञाक चतुर्थी धरि भूमिपर शयन (कु.सं. 7/80, 81, 88, 94), वेदीक धुआँसँ लाल भेल लोचन (रघु.13/28), पलवलसँ बहराइत सुगर एवं वृषभ केर पंकमय सींग (रघु.3/24), गुप्तमणि वा गूढ़मणि बालक्रीड़ाक चर्च (उत्तरमेघ 6), महावराह क्षेत्रक चाक्षुष वर्णन (कु.सं. 8/20), देवोत्थान एकादशी (उत्तरमेघ 47), तरहत्थीपर माटिक महादेव बना पूजा करब (कु.सं. 5/ 58) आ द्वारपर शंख-कमल केर चित्र (उत्तरमेघ 20)सँ घरक पता देब मैथिल परम्परागत चित्र थिक। संभव जे एहि सभमेसँ किछु चित्र आनो क्षेत्रमे प्रचलित हो। आब जे चित्र सभक विषयमे कहब ओ मात्र मिथिलेमे संभव अछि। बियाहसँ पूर्व पार्वतीसँ माता मेना कुलदेवताकेँ प्रणाम करओलाक बाद श्रेष्ठ सभक चरणस्पर्श करबैत छथि (7/27)। ई चित्र मिथिलामे अखनो देखल जा सकैछ। एतऽ जाँट गुहलाक बाद बेटीक कुमारि मुह देखएबाक आ बेटी द्वारा श्रेष्ठ सभकेँ गोर लागबाक प्रथा अखनो अछि। कोबराघरमे भूमिपर शैय्या आ नगहरमे जल राखल रहैछ—

कनककलशयुक्तं भक्तिशोभासनाथं
क्षितिविरचितशय्यं कौतुकागारमागात्

(कु.सं. 7/94)।

चतुर्थी दिन पालोपर बैसा वर-वधूकेँ ओहि जलसँ स्नान कराओल जाइत छैक आ कोबरमे पलंगपर शैय्या देल जाइत छैक। मिथिलाक बियाहमे बरियाती संग वधूक विदागरी नहि होइत छैक। आन ठाम वधू बरियाती संगे सासुर जाइत अछि। महादेव अपन बियाहक बाद मास दिन धरि सासुरे रहैत छथि (कु.सं. 8/20)। कुमारसंभवम् (8/80)मे महादेव-पार्वती बियाहमे मात्र तीन फेरा लगबैत छथि। ई मात्र मिथिलामे प्रचलित अछि आन सबठाम सात फेरामे सातवचन लेबाक सप्तपदी केर प्रथा अछि। ई सभ तथ्य महाकविक मैथिलत्व केर स्पष्ट संकेत थिक।

iv) भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकविक मैथिलत्व- विक्रमोर्वशीयम् केर भाषा महाकविक मातृभाषा आ मैथिलत्व केर निर्णायक संकेत करैत अछि। एहिमे विशुद्ध अपभ्रंशक 14 पद आ प्राकृत-अपभ्रंश मिश्रित 16 टा पद अछि। एहि पद सभमे 'क्ष' केर 'क्ख'मे विकास, 'ए' आ 'ओ' केर ह्रस्व उच्चारण, करण कारकमे निरनुनासिक 'ए' विभक्ति, संबंध परसर्ग 'क' एवं लोकगीतक टेक रूपमे अद्यतन मिथिलामे प्रयुक्त 'ओ', 'यौ', 'रे', 'ए', 'हो', 'जान' आदिक प्रयोग भाषा वैज्ञानिक निकषपर विक्रमोर्वशीयम् केर चारिम सर्गक एहि पद सभकेँ मिथिलापभ्रंश प्रमाणित करैत अछि। महाकविक रचना सभमे मिथिलापभ्रंशक स्रोत विद्यमान अछि जे महाकविक मैथिलत्व दिशि स्पष्ट संकेत करैत अछि। भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकवि कालिदासक मैथिलत्व निर्धारण हेतु डॉ. रामचन्द्र ठाकुर केर पोथी 'मिथिलापभ्रंश के आकर स्रोत' आ प्रस्तुत लेखक केर 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान' पोथी देखल जा सकैछ।

v) राजस्व अभिलेख केर आधारपर महाकवि कालिदासक मैथिलत्व - मिथिलामे साबिक सर्वे 1896 ई.मे भेल छल आ 1904 ई.मे साविक सर्वे खतियान तैयार भेल छल। एहिमे मौजे- उच्चैठ, थाना नंबर - 89, थाना-बेनीपट्टी, जिला-दरभंगाक कालिदास डीह केर भूमिक वर्णन एहि तरहेँ अंकित अछि—

खाता	*खेसरा*	*रकबा (बीघा-कट्ठा-धूर)*
231	*883*	*1- 9 - 2*
	885	*1- 3 -17*
192	*880*	*1- 0 - 8*

कैफ़ियतमे अंकित अछि— कालिदास डीह।
हाल सर्वे खतियानमे ई प्रविष्टि निम्न प्रकारसँ अंकित अछि—

खाता	*खेसरा*	*रकबा*
494	*2138*	*12 D*
	2139	*26 D*

महाकवि कालिदास समिति स्थान— उच्चैठ

497	*2137*	*1 एकड़ 1 D*

अनाबाद बिहार सरकार गढ़ कालिदास डीह।

कालिदासक जन्मस्थानक दावी कएनिहार कोनो क्षेत्रमे महाकवि कालिदासक नामपर एक इंच जमीनक अभिलेखीय प्रमाण नहि अछि। उच्चैठक कालिदास डीहक ई राजस्व अभिलेख महाकविक मैथिलत्वपर निर्णायक मोहर लगबैत अछि। एहि डीहक माटिसँ अखनो नेना सभक अक्षरारम्भ कालिदासक कृपाक कामनासँ कराओल जाइत अछि।

आब जखन महाकवि कालिदासक मैथिलत्व निर्धारित भऽ गेल तखन महाकविक समयपर किछु संकेत करए चाहब।

महाकवि कालिदासक समय निर्धारणमे पुलकेशिन् द्वितीय केर 634 ई.क ऐहोल अभिलेख आ महाकविक मालविकाग्निमित्रम् केर महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। ऐहोल अभिलेखमे रविकीर्त्तिकेँ कालिदास समान श्रेष्ठ कवि कहल गेल अछि—

जिनेवेश्म स विजयतां रविकीर्त्ति:
कविताश्रित कालिदास भारवि कीर्त्ति:

स्पष्ट अछि जे कालिदासकेँ 634 ई.क बाद नहि राखल जा सकैछ। एहिना पुष्यमित्र आ अग्निमित्रक कथा कहबाक कारणेँ महाकविकेँ ईसापूर्व दोसर शताब्दीसँ पहिने सेहो नहि राखल जा सकैछ। कारण जे इतिहाससँ ई सिद्ध भऽ गेल अछि जे अंतिम मौर्य सम्राट् वृहद्रथकेँ सेना निरीक्षण काल ईसापूर्व 185 ई.मे सेनापति पुष्यमित्र शुंग वध करैत शुंग राजवंश केर स्थापना कएने छलाह। हुनक पुत्र अग्निमित्र आ मालविका केर कथा मालविकाग्निमित्रम् मे कहल गेल अछि। ओना बेसी विद्वान् महाकविक अवस्थिति गुप्तकालमे चन्द्रगुप्त द्वितीय (राज्यकाल 375-414 ई.) केर समयमे मानैत छथि। मुदा इहो संदेहरहित नहि अछि। चन्द्रगुप्त द्वितीयक बेटी प्रभावतीक विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय (राजत्वकाल 385-90 ई.) संग भेल छल। प्रभावतीकेँ असमय विधवा भऽ गेलाक बाद प्रभावती आ हुनक दुनू नबालिग पुत्र - दिवाकर सेन आ दामोदर सेन केर अभिभावक बनि कालिदासकेँ वाकाटक जएबाक बात सेहो कहल जाइत अछि मुदा इतिहासमे एहिपर मतैक्य नहि अछि। यशोधर्मन् (शक्ति काल 515- 543 ई.) केर समय महाकविक अवस्थिति सेहो मानल जाइत अछि। श्रीलंकाक राजा कुमारदास (अपर नाम कुमार धातुसेना, राजत्व काल 513- 522 ई.) आ कालिदासक संग-संग माटरामे भेल महाप्रयाण विषयक श्रीलंकाक अनुश्रुति ओहिना प्रचलित अछि जेना मिथिलामे जाहि डारिपर

बैसल ओकरे काटब, छलपूर्वक राजकुमारीसँ विवाह, तिरस्कार आ उच्चैठ भगवतीक कृपासँ अज्ञसँ विज्ञ बनबाक अनुश्रुति प्रचलित अछि। उच्चैठ भगवती आ मूर्खसँ विश्वविश्रुत होएबाक कालिदास विषयक जनश्रुतिक अभिलिखित प्रमाण तिब्बती बौद्ध धर्मयात्री धर्मस्वामिन् (समय 1197-1264 ई., मिथिला आ भारत यात्रा 1234-36 ई.) केर उपासक चोस-दार कृत जीवनीमे उपलब्ध अछि। श्रीलंकाक इतिहास आ साहित्यमे राजा कुमारदासक राजनर्तकी द्वारा समस्यापूर्तिक पारितोषिक केर लोभमे माहुर खुआ कालिदासक हत्या, भेद खुजलापर कालिदासक राजकीय चितामे द्रवित राजा कुमारदास (जानकीहरणकार) आ एकर बाद हुनक पाँच रानीक प्रवेश प्राय: मान्य अछि। माटरामे महाप्रयाण स्थलीपर रोपल सात बोधिवृक्ष (माटरा महाबोधिय), दुनू महाकविक समाधिस्थली, एतऽ भगवान् बुद्ध केर मन्दिर निर्माण, माटरामे कालिदास मार्ग (नीलवाला बाइपासक आर्यतिलक मवाथा सड़क केर सोझासँ बहराइत मार्ग जे आगू रहुला रोडमे मिलैत अछि) केर अवस्थिति, कालिदास-कुमारदास विषयक अनुश्रुति आदि एहि मार्मिक घटनाक सत्यता केर उद्घोष करैत अछि। कालिदास-कुमारदास विषयक ई मर्मन्तुद प्रसंग सिंहल ग्रंथ निकाय संग्रह, सद्धर्म रत्नाकर, राज रत्नाकर, राजावलीय, पूजावली (1265 ई.), पेरूकुम्बसिरित् (पराक्रमबाहु चरित, 15म शताब्दी), एच जोसेफ एन्डू फेरन्दाक कालिदास चरिताया (1887ई.), एफ. कूरे केर कालिदास नृत्यपोता (साइमन दे सिल्वा सेने विरत्ना आ मुहरन्द्रम द्वारा The Historical Tragedy entitled Kalidas रूपमे सम्पादित,1887) आ शताधिक शोध-प्रबंध सभसँ सम्बलित अछि। नागिरीकाण्डा शिलालेख (सिद्धम! महा-कुमारातसा-राजा अपाया[हा बामनागा] रीय-वहेर अताया केनावि चदा कोतु....)सँ समर्थित अछि। सेनार्थ पारानविताना (Nagirikanda Rock Inscription of Kumardas, EZ, Vol 4), बी. गुणशेकर (राजावलीय केर सम्पादकीय), एम. मेघनकर (पूजावली केर भूमिका), गेगर (चूलवंश), एच विद्याभूषण/ जीआर नादार्गीकर (Kumardas and his Place in Sanskrit Litreature), विलियम नायटन (History of Ceylon), रिया डेविड्स (Journal of the Deptt. of Letters), ए एम होकार्ट (Mortuary use of Bo Trees), गामिनी जी पुंछीहेवा (The Historic Tales of Matara) प्रभृति विद्वान् कालिदास-कुमारदास विषयक एहि प्रसंगकेँ सत्य मानैत छथि। एहि आधारपर महाकवि कालिदासक अंतिम समय 522 ई. मानल जा सकैछ। 70 वर्ष केर आयुक अनुमान करी तखन महाकविक समय 452-

522 ई. मानल जा सकैछ। विस्तृत अध्ययन आ सन्दर्भ सभक लेल प्रस्तुत लेखक केर पोथी 'महाकविक महाप्रयाण' केर अवलोकन कएल जा सकैछ। जाहि पदकेँ सम्पूर्ण घटनाक्रमक जड़ि मानल जाइछ तद्विषयक पदमे सभसँ बेसी लोकप्रिय जे पद अछि ओकर रमणीयता केर आनन्द लेबाक लेल अपने सभकेँ छोड़ि हम एहि आलेखकेँ विराम दैत छी—

कमल: कमलोत्पत्ति: श्रुयते न तु दृश्यते
बाले! तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवर द्वयम्

(कमलसँ कमल केर उत्पत्ति सुनल जाइत अछि मुदा देखल नहि जाइछ। हे स्त्री! तखन अहाँक मुखकमलसँ दू नयनकमल कोना बहरा रहल अछि!)

[उर्वीजा, 20म अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, 2022, श्रीबालाजी तिरुपति]

महाकवि पं. लालदासक जानकी रामायणक औचित्य

महर्षि वाल्मीकि आ भगवान् श्रीरामक समयपर विवाद भऽ सकैछ। Institute of Scientific Research on Vedas (I-SERVE), हैदराबादसँ प्रकाशित श्री पुष्कर भटनागर केर पोथी Dating the Era of Lord Rama (2004) केर पं. कृष्णानन्द सिन्हा द्वारा भेल अनुवाद 'श्रीराम के युग का तिथि निर्धारण'मे श्रीरामक जन्म 10 जनवरी 5114 ईसापूर्व 12.10 अपराह्नमे आकलित अछि। अनेक चर्चा -परिचर्चामे एहिपर मतभिन्नता सोझाँ अबैत रहैत अछि जे स्वाभाविके अछि। विवाद रहबे करत। मुदा ऋग्वेद, ऐतरेय ब्राह्मण, महाभारत, वाल्मीकि रामायण, जातककथा (दशरथ जातक), जैनग्रंथमे राम बलदेव, लक्ष्मण वासुदेव आ रावणकेँ प्रति वासुदेव रूपमे चर्च एवं पउमचरियं प्रभृति ग्रंथसँ कटैत-छँटैत ई रामकाव्य परम्परा अनवरत् प्रवहमान रहल अछि। शिलालेखीय प्रमाणमे चम्पा देश (आधुनिक वियतनाम)क बोचानसँ प्राप्त प्रथम-दोसर शताब्दीक क्षत्तिग्रस्त शिलालेखमे उत्कीर्ण शब्द लोकस्य गतागतिम् वाल्मीकि रामायणमे ओहिना अछि—

क्रुद्धं माज्ञाय रामं तु वशिष्ठ प्रत्युवाचह
जाबालिशर्प जानीते लोकस्यास्यगतागतिम्

(वाल्मीकि रामायण, 2/110/1)

चीनमे अनामक जातक आ दशरथ कथानम् केर अनुवाद तेसर आ पाँचम शताब्दीमे होएबाक प्रमाण अछि। 9म शताब्दीक जावानी भाषाक योगीश्वर कृत रामायण काबीन एवं इण्डोनेशियामे सेरत राम, सेरतकाणड आ रामकेलिंग आदि, कम्पुचियामे रामकेर्ति, लाओसमे फ्रलक फ्रलाम (रामजातक), ख्वाय थोरफी, ब्रह्मचक्र आ लंकानोई, थाईलैंडमे रामवत्थु, तासकिन रामायण आ छओ टा सम्राट् रामायण;

मलेशियामे हिकायत सेरीराम, हिकायत महाराज रावण, सेरीराम आदि; श्रीलंकामे ईसापूर्व 5म शताब्दीसँ आरम्भ पर्वतीय प्रदेशमे मलेराजक कथा आ कुमारदास वा कुमार धातुसेना (राजत्व काल 513-22 ई.)क जानकीहरण महाकाव्यमे रामकथा वर्णित अछि। तिब्बत, वर्मा, फिलीपींस, मंगोलिया, जापान आदि देशमे रामकथाक प्रमाण अदौकालसँ भेटैत अछि। भारतवर्षमे प्राकृतमे विमलसूरिक पउमचरियं(तेसर-चारिम शती) आदि, संस्कृतमे रविषेण कृत पद्मचरित (7म शती) आदि, अपभ्रंशक स्वयंभूदेवक रामायण पुराण(8म शती) प्रभृति रामायण उपलब्ध अछि। भारतवर्षक आन भाषा-भागमे तमिलक कम्ब रामायण (12म शताब्दी), तेलुगुक द्विपद रामायण (13म शताब्दी) आ मोल्ल रामायण (17म शती), मलयालम केर रामचरितम् (14म शती), असमीमे राजा महामाणिक्यदेवक अनुरोधपर हुनके समय रचित माधव कन्दलीक रामायण (14म शती), बाँग्लाक कृत्तिवास रामायण (15म शती), कन्नड़क नागचन्द्र कृत परम्परा रामायण (11म शती) आ तोरबे रामायण (16म शती) आदि; अवधीक रामचरित मानस (16म शती), सोलहम शताब्दीक उड़ियाक बलराम दास रामायण आ मराठीक भावार्थ रामायण, कश्मीरीक रामावतार चरित (18म शती) प्रभृति रामकाव्यक रचना उपलब्ध अछि। गोस्वामी तुलसीदासक रामचरितमानस वाल्मीकि रामायणक बाद सर्वाधिक लोकप्रिय आ प्रतिष्ठित भेल मुदा ई अत्यन्त आश्चर्यजनक अछि जे जानकीजीक नैहर मिथिला (भारतवर्ष आ नेपाल)मे 19म शताब्दीसँ पूर्व एहन कोनो रचना मैथिलीमे प्रकाशित नहि भेल। ई एकटा महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि जे अखिल विश्वमे रामकाव्यपरक रचना भेल मुदा सीताक नैहर मिथिलेमे रामकाव्य किएक उपेक्षित रहल। गोस्वामीजीक मानस केर पाठ मिथिलोमे होइत रहल, कान्हपर चचरी नेने कठिहारीक बाटपर निर्गुण 'राम नाम सत् हय' केर घोष मिथिलोमे होइत रहल मुदा रामकाव्य परम्परा मिथिलामे उपेक्षिते रहल। से किएक? शील-शक्ति-सौन्दर्य समन्वित भगवान् श्रीरामक अवतारी रूप मिथिलामे किएक जनमानसकेँ आ कवि सभकेँ आकर्षित नहि कएलक ? एहि प्रश्नक उत्तरमे निहित अछि पं. लालदासक जानकी रामायणक औचित्य।

एहि प्रश्नक उत्तर ताकबाक प्रयासमे ज्योतिषाचार्य पं. बलदेव मिश्र अपन पोथी 'रामायण शिक्षा'मे उचिते कहैत छथि जे मिथिलामे श्रवणकुमार सन पुत्र, दशरथ सन पिता, कौशल्या सन सासु, लक्ष्मण सन देओर आ भरत सन भाए केर कामना सभक रहैछ मुदा राम सन सीताक परित्याग कएनिहार पति हो, ई कामना एतऽ केर ललना सभक नहि रहैछ। डॉ. मुरलीधर झा अपन पोथी 'चन्दा झा आ

लालदासक रामायणक तुलनात्मक अध्ययन'मे एहि उत्तर दिशि संकेत करैत छथि जे बियाहक शुभ लग्न रहितो कोनो पिता अपन बेटीक बियाह विवाहपंचमीकेँ नहि करए चाहैत छथि।

मिथिलामे रामकाव्य परम्पराक अलोकप्रियताक कारण कहैत वरेण्य समालोचक मोहन भारद्वाजक एहि अवधारणासँ सहमत नहि भेल जा सकैछ जे बेटीकेँ मातृरूपमे मानि देवत्व देब मैथिल समाजकेँ कठाइन लगैत, तेँ रामकाव्य परम्पराक रचना एम्हर नहि भेल। एहि सन्दर्भमे एक प्रसंगक उल्लेख करब।

आइसँ पचास-बावन वर्ष पूर्व 9 मार्च 1969 ई.केँ हमसभ गाम सुलतानपुरसँ भैया श्री मधुसूदन दासक बरियाती सिमरा ब्रज बिहारी लाल दास ओतऽ जाइत रही। तखन झंझारपुरसँ पूर्व कमला नदीवला पुल भँगठल छल आ ओहिना नदी पार करैत आवागमन चालू छल। कमलामे पानि अल्प छल। ओहि मार्गमे एकटा घोलटल बस फँसल छल आ मोटका रस्सासँ बान्हि बहुत लोक बसकेँ घीचि निकालबाक आ चारू चक्कापर ठाढ़ करबाक प्रयास करैत छल। हमरा सभक बस दूरे रोकि देलक। किछु गोटे तमाशा देखबाक आ सहयोग लेल ओहि फँसल बस धरि गेलाह। 10 बरखक हम सेहो तमाशा देखऽ अयलहुँ। बसक लऽग एकटा छओ-सात बरखक कोनो गरीबक बेटी सेहो नरकट वस्त्र पहिरने दृश्य देखि रहल छल। एकाएक जोर लगलै आ सहसा बस उनटि ओहि छौँड़ीक देहपर खसि पड़लै। सभक बकार बन्द भऽ गेलै फेर चमत्कार भेल आ बस दोसर पलटी लेलक आ अपन चारू चक्कापर आबि गेल। आश्चर्य जे ओहि लड़कीकेँ किछु नहि भेल छल। मात्र ओ जे ठाढ़ि छलीह से जमीनपर बैसल छलीह। ओकर देह बसक खिड़कीमे आबि गेल छलै आ बस जखन फेर पलटि गेल तखन ओ एकदम सुरक्षित छल। कुशक कलेपो नहि। लड़कीकेँ सुरक्षित देखि कमला माइक जय होमऽ लागल, कंडक्टर ओकरा किछु टाका चढ़ओलनि आ ओतऽ उपस्थित लोकसभ ओहि लड़कीकेँ देवी मानि गोर लागऽ लागल। एकटा साधारण गरीबक ओहि अबोध बेटी संग चमत्कार भेल छल आ लोक ओकरा भगवती जकाँ मानए लागल। एक टकिया, दू टकिया आ पँच टकियाक छोट पथार जकाँ ओकरा आगू लागि गेल छल। उपस्थित वृद्ध सभ सेहो ओकरा भगवती मानि गोर लागि रहल छलाह। लोकसभ किछु द्रव्य चढ़ा रहल छल। भारतवर्षक आम मानस एहने छैक। दैवी शक्तिपर सरलतासँ विश्वास कएनिहार। एक साधारण बेटीकेँ संयोग वा चमत्कारसँ जीवित देखि ओकरा जखन लोक भगवती मानि सकैत अछि तखन वामा हाथसँ पिनाक सन विशाल धनुष उठा

दहिना हाथसँ तृण-कुश उखाड़ैत सीताकेँ देखि के मैथिल हुनका ओहियो कालमे भगवती नहि मानने होएत!

यथार्थ कही तऽ मिथिलामे रामकाव्य परम्पराक अलोकप्रियताक कारण अछि राम द्वारा सीताक अनुचित परित्याग! मिथिलाक सर्वश्रेष्ठ सर्वगुणसंपन्न सर्वांगसुन्दरी सीताक राम द्वारा अकारण अनुचित परित्यागकेँ आम मैथिल कहियो स्वीकार नहि कएलक। राम जनमानसमे पसरल रहलाह, लोकप्रिय सेहो छलाह, ईश्वर रूपमे पूजितो रहलाह मुदा मात्र दशानन वध धरि, लंका विजय धरि, पापपर धर्मक श्रेष्ठताक स्थापना धरि। एकर बाद केर रामक लेल आम मैथिल कहियो मात्सर्य नहि राखलक, ने जमाय जकाँ कोनो अपनत्वक भान भेल आ ने ईश्वर रूपमे अनुभूतिसँ साधारणीकरण केर स्थिति आएल। रामक प्रति जाहि आक्रोशक प्रकटन मैथिल महाकवि कालिदास सीताक माध्यमे यशस्वी रघुकुलपर प्रश्न—

वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा वह्नौ विशुद्धामपि यत्समक्षम्
मां लोकवादश्रवणादहासीः श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य॥

(महाकवि कालिदास : रघुवंशम्, 14/61)

उठाकेँ कएने छथि वैह प्रश्न, वैह आक्रोश, वैह वितृष्णा एहि प्रश्नक उत्तर थिक जे मिथिलामे रामकाव्य परम्परा किएक लोकप्रिय नहि भेल। सर्वश्रेष्ठ कन्यारत्न रहितो पतिक मिथ्या चारित्रिक उत्कर्ष केर फेरमे परित्यागक दंश भोगैत रने-वने बौआइत गर्भिणी सिया सुकुमारीक चित्र, मिथिलाक राजकुमारी जनकदुलारीकेँ असहाय हिंस्रजन्तुसँ भरल विकट वनमे दू अबोध नेनाकेँ पालन-पोषण करैत सीताक दारुण भावचित्र केर कल्पना मात्र आम मैथिलकेँ विह्वल करैत रहल। दशानन विजेता रामपर सीताक परित्याग कएनिहार राम मिथिलामे सभदिन भारी पड़ल। आमजन अखनो विवाह पंचमीकेँ अपन बेटीक बियाह नहि करैछ। ई आक्रोश नहि, असंतोष नहि, प्रतिकार नहि तऽ आर की थिक !

एहि आक्रोश आ वितृष्णाक स्तर कतेक गहीँर आ भयावह अछि ओ सीताक नैहर नेपालमे प्रचलित एक लोकगीत-नृत्यमे अभरल अछि जाहिमे किनको कहलापर रावणक चित्र बनबैत सीताकेँ देखि रामक सन्देह दृढ़ होइत अछि आ ओ लक्ष्मणकेँ सीताकेँ वनमे लऽ जा हत्या करबाक आ हुनकर माँसु आनबाक आदेश दैत छथि। लक्ष्मण सीताकेँ वन पहुँचा एक हरिणकेँ मारि ओकर माँसु आनि

दैत छथि आ रक्त रंजित तलवार देखा रामकेँ आश्वस्त करैत छथि जे आज्ञापालन कएलहुँ। रान्हलाक बाद भोजनकालमे लक्ष्मण ओहि माँसुक भक्षण करबाक रामक आदेश ई कहि अस्वीकार करैत छथि जे गर्भिणी सीताक माँसु भक्षण हम नहि कऽ सकैत छी। एहि मर्मन्तुद प्रसंग केर उल्लेख साहित्य अकादेमी, दिल्ली आ ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक तत्त्वावधानमे दि. 14-16 मई 1989 ई.केँ 'पूर्वांचलीय भाषामे रामायण' विषयक संगोष्ठीमे पठित श्री आर पी लामाक आलेखमे भेल छल जे मैथिली अकादमी, पटना द्वारा पं. उमाकान्त झाक पोथी सीताचरित (पृष्ठ 9)मे उद्धृत अछि।

जाहि क्षेत्रमे लोक जीवनमे रामक प्रति आक्रोशक सान्द्रता एहि स्तर केर हो ओहि ठाम राम विषयक महाकाव्यक रचना आकाश कुसुम आनएसँ बेसी दुष्कर।

ई तऽ धन्य कही महात्मा सूर किशोरकेँ जे जनक किशोरीसँ अनुप्राणित भऽ 1645-46 ई.सँ पूर्व जनकपुर आबि अपन खंती एतऽ गाड़लनि आ कुटी, मन्दिर आदि बनओलनि। चतुर्भुज गिरिक सेहो पदार्पण भेल। सूर किशोरजी जानकीक परम भक्त छलाह आ ओ जानकी आदि केर पूजा शुरू कएलनि। सूर किशोर दासक सीतायण आ मिथिला विलास पोथीक चर्च होइत अछि मुदा आब प्राय: ई मान्य भेल अछि जे ई सीतायण स्वामी रामप्रिया दासक कृति थिक जे 1701-03 ई.मे रचित भेल छल। रामप्रिया दासक ई कृति जनकपुरमे शताधिक वर्ष ओहिना भुतिआएल रहल। चुरुट फैक्ट्रीक सौजन्यसँ किछु प्रति 19म शताब्दीमे प्रकाशित भेल। बादमे भाषा संगम, 67/40, तुलाराम बाग, इलाहाबादसँ डॉ. एम. गोविन्दराजन केर सम्पादकत्वमे ई पुन: प्रकाशित भेल। सूर किशोरजीक रचना मिथिला विलास 1646 ई.मे रचित भेल छल। एकर भाषा अवधी-हिन्दी थिक। भाषाक उदाहरण देखल जाय—

आए दुइ वीर गोरे साँवरे शरीर आली
संग मुनि धीर विश्वामित्र निज लाए हैं।
शिवधनु तोरि सब नृपन मदमोरी सियालु
को रचा है भाल रेखा लिखवाए हैं...

जँ साँच कही तऽ महात्मा सूर किशोरे आधुनिक जनकपुरकेँ संस्थापक छथि। ओ पूर्वसँ चलैत आबि रहल गोटपकड़े साधु द्वारा विधि पुराओन जकाँ प्रचलित

पंचकोसी, चौरासी कोसी आदि परिक्रमाकेँ लोकप्रिय बनओलनि। एहिमे पहिने मात्र किछु साधु-सन्त-वैरागी सभ सम्मिलित होइत छलाह। महात्मा सूर किशोरक प्रेरणासँ बादमे एहिमे आमजन केर प्रवेश सेहो भेल। परिक्रमामे शनैः शनैः गति आएल। अयोध्यासँ सेहो साधु सभक सहभागिता एहि यात्रामे बढ़ल। जनकपुर आ अयोध्याक सम्बन्ध सेतुपर जमल बर्फ पघीलि रहल छल। अयोध्याक महात्मा सभक माता जानकीक प्रति अगाध श्रद्धा देखि पूर्वसँ व्याप्त मैथिलक आक्रोश ढलानपर आबि गेल। जनकपुर केर प्रगति भेल आ विभिन्न मन्दिर सभक विकास भेल। 1895 ई.मे टीकमगढ़ केर महारानी वृषभानु कुँवर जानकी मन्दिरक निर्माण शुरू करओलनि जे 1911 ई.मे पूर्ण भेल। विभिन्न मन्दिर सभमे कार्यक्रम शुरू भेल जाहिमे सीताराम विषयक गीत, कथा आदि केर गायन होइत छल। सीताराम विषयक रचना शुरू भऽ गेल छल।

सूर किशोर वा रामप्रिया दासक सीतायणसँ मिथिलामे रामकाव्य परम्पराक उद्‌भव मानि सकैत छी। मुदा अवधीक एहि रचनाक अनुपलब्धता एकर लोकप्रियताकेँ प्रभावित कएलक। तथापि मिथिलाक रामकाव्य विषयक गंगोत्री होएबाक सम्मान तऽ एकरे भेटत। नेपालमे गुमनी पंत आ रघुनाथ भक्त केर रामायण रचित भेल। फेर 1853 ई.मे नेपालक सर्वाधिक लोकप्रिय रामकाव्य भानुभक्त रामायण पूर्ण भेल। कवीश्वर चन्दा झाक मिथिला रामायण 1886 ई.मे पूर्ण भेल छल। 1892 ई.मे एकर प्रथम प्रकाशन भेल। महाकवि लालदासक रमेश्वर चरित मिथिला रामायण वर्ष 1913-14 ई.मे पूर्ण भेल। महाकविक जीवन कालेमे बालकाण्ड आ सुन्दर काण्ड प्रकाशित भेल छल मुदा एहि रामायणक पूर्ण प्रकाशन 1954 ई.मे भेल।

स्पष्ट अछि जे मैथिल सभक आक्रोशक सान्द्रता पातर भेल आ बर्फ जखन नीकसँ पघीलि गेल तखन अनेक रामकाव्य विषयक रचना मैथिलीमे भेल। कवीश्वर चन्दा झाक रामायण जे मैथिलीमे रामकाव्य परम्पराक श्रीगणेश करैत मुनल द्वार अनावृत्त कएलक ओहि मार्गकेँ लालदासक रामायण, मुंशी रघुनन्दन दासक वीर बालक, पं. सीताराम झाक अम्बचरित, वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'जीक सीतायन, आ. रामलोचन शरणक मैथिली श्रीरामचरितमानस, खड्‌गवल्लभ दास 'स्वजन'जीक सीताशील, रमाकान्त झाजीक व्यथा, आनन्द झाजीक सीता स्वयंवर, हीरालाल झा 'हेम'जीक सीताचरितामृत, भुवनेश्वर प्रसाद 'अध्यापक'जीक मैथिली बालरामायण, काञ्चीनाथ झा 'किरण'जीक पराशर, पं. जीवनाथ झाक रावणवध,

पं. कपिलेश्वर मिश्र 'वैयाकरण'क सीतादाइ, पं. कालीकान्त झाक हनुमान चरित, रवीन्द्रनाथ ठाकुरजीक सीता, श्री राजेन्द्र लाल दासक सीताक प्रस्थान प्रभृति कृति आर प्रशस्त कएलक। मानिपद्म जीक उपन्यास लवहरि कुशहरि सीताक चारित्रिक दृढ़ता, स्वाभिमान, आत्मविश्वास, त्याग केर अनुपम चित्र उकेरित करैछ।

सीता परित्यागपर आक्रोश किछु कृति सभमे अवश्य अभरल अछि। कवीश्वर चन्दा झा '...अहह रघूत्तम कएल अनीति' (उत्तर काण्ड, पृष्ठ 406) कहैत छथि तऽ मुंशी रघुनन्दन दास '...भ्रष्ट ज्ञानक भावना' (मुंशी रघुनन्दन दास रचनावली, पृष्ठ 250) कहि प्रश्न ठाढ़ करैत छथि। विधुजीक तऽ कामना अछि जे 'कुशलव हय पकड़ि घोरतर युद्ध करथि रिपुसूदन भरत लखन राघव तनकेँ शरसँ विद्ध करथि (विधु : सीतायन, पृष्ठ 604)। एहिमे म्रियमाण राम सहित चारू भाएक वस्त्र उतारैत मिथिलाक भागिन कुश लव केर चित्रसँ महाकवि वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' जेना माता सीताक अकारण अपमान केर प्रतिशोध लऽ रहल होथि। अपूर्व!

महाकवि लालदासक सीताक अवधारणा अद्‌भुत अछि। बिनु एकटा कटाह शब्द लिखने ओ सीताक रामपर उच्चता स्थापित कएलनि। हिनक सीता आदिशक्ति महामायाक स्वरूप छथि। 'रामरूप सीता सिय राम' कहलाक बादो पं. लालदास अत्यन्त सरल चातुर्यसँ रामपर सीताकेँ अधिमान दैत छथि। पुष्कर काण्डमे सहस्रमुख रावणसँ पस्त भेल रामदल केर रक्षा करैत छथि। महाकाली रूपमे ओहि सहस्रमुख रावणक वध करैत छथि जे दशानन विजेता रामकेँ म्रियमाण कऽ देने छल। राम द्वारा सीताक स्तुति करा महाकवि लालदास 'जैँ सीता तैँ राम' आ 'रामक सीता' केर अवधारणाकेँ जे अपूर्व स्वर देलनि ओ विलक्षण अछि, अपूर्व अछि, अद्‌भुत अछि।

जानकी रामायणक रचनाक औचित्य सेहो यैह थिक। रामायण सभमे रामक प्रधानता अछि। वैह सभ रचनामे नायक छथि। जानकी रामायणमे मुख्य पात्र आदिशक्ति सीता छथि। सभठाम हुनके कथाक विस्तार अछि।

जानकी रामायणक प्रथम चरित्रम् मे अम्बरीष, हुनक पुत्री, नारदक वानर-लंगूर सन मुखाकृति कारणेँ वरमालाक पराभव आदि कथा अछि।

जानकी रामायणक तीनू काण्ड- सीता काण्ड अथ कथारम्भ (पृष्ठ 3-32), लक्ष्मी काण्ड (पृष्ठ 33-60) आ राधा काण्ड (पृष्ठ 60-103)क वैशिष्ट्य अनुपम अछि। एहिमे महालक्ष्मीक सहस्र नामावली विलक्षण अछि। देवनागरीक अ अक्षरसँ ह धरि प्रत्येक अक्षरपर पृथक् चारि पंक्तिक वा अधिक पाँतीक पद अछि

आ ओहि पद केर समस्त शब्द ओही अक्षरसँ शुरू भेल अछि। जानकी रामायणक ई अंश महाकवि लालदासक प्रौढ़ पाण्डित्यक प्रकटन थिक। हिनक नाममे लागल महाकवि संग पण्डित शब्दक सार्थकता जानकी रामायणेसँ स्पष्ट रूपसँ प्रतिभासित होइत अछि। रससिद्ध कवि होएब आ प्रकाण्ड पण्डित होएब दुनू दू बात अछि। एकहि ठाम एहन मेधा अभरए ई अत्यन्त विरल अछि। महाकवि लालदासमे एहि दुनूक अनुपम मणि-कांचन संयोग छल तैँ ओ मिथिलाक रामकाव्य परम्पराक किरीट छथि, जगज्जननी जानकीक भालपर कुम्-कुम् केर ठोप छथि, मिथिला रामकाव्य परम्पराक सर्वश्रेष्ठ कवि छथि। विस्तार भयसँ लक्ष्मी सहस्रनामसँ एकमात्र उदाहरण प्रस्तुत अछि—

रमणि रमे रामे रामेश्वरि रुक्मिणि रोहिणि रिक्षे।
राजकुलेश्वरि राके रंजिनि राज्यप्रदे रति रक्षे॥
राजलक्ष्मि रक्ते राकेश्वरि रामप्रिये रसरूपे।
रम्ये रम्यस्वने रमणीये रेखे रत्नस्वरूपे॥

(पं. लालदास : जानकी रामायण, पृष्ठ 56)

जँ एकहि ठाम कारयित्री प्रतिभाक उत्कर्ष आ पाण्डित्यक प्रकर्ष देखबाक कामना हो तखन एक बेर लक्ष्मी सहस्त्रनाम केर मनन अवश्य करी, दिव्यज्ञान भऽ जाएत। एकर विलक्षण वैदुष्य नि:संदेह बेजोड़ अछि।

एहि महाग्रंथक राधा काण्डक वैशिष्ट्य सेहो अनुपम अछि। एहिमे रामकालीन खल वा अन्य उपेक्षित पात्र सभक पापक परिहार केर प्रशंसनीय प्रयास भेल अछि। त्रेताक कैकेयी द्वापरमे देवकी बनि पुत्र वियोग सहि रहल छथि—

जेहि विधि कौशल्या दुख भोग। अहूँ सहब दुख पुत्र वियोग॥
वर्ष चतुर्दश गोकुल रहब। ताबत कारा दुख अहँ सहब॥
त्रेतामे केकयि छल जैह। द्वापरमे देवकि भेलि सैह॥

(पं. लालदास : जानकी रामायण, पृष्ठ 65)

एहिना वानरराज बालिक बहिन रत्नावली द्वापरमे पुतना रूपमे अबैत छथि। अशोक वाटिकामे सीताकैँ सेतु बान्हि रामकैँ लंका आगमन केर प्राणरक्षक समाद देनिहारि

कुब्जाकेँ सीता द्वारा देल आशीर्वाद सुफल होइत अछि—

जखन हयत कृष्णक अवतार। हयबह दासी कंसक द्वार॥
तखन कृष्ण लेथुन अपनाय। कुब्जासँ अब्जासनि काय॥

अक्रूर द्वारा हनुमानकेँ चीन्हबाक प्रसंग हो, कृष्ण रामेक अवतार छथि ई जानि विभीषणकेँ ब्रजमे आगमन केर प्रसंग हो, कृष्ण द्वारा शूर्पणखा, खरदूषण आदिक पश्चात्तापपर अपराध क्षमा करबाक दृश्य हो वा विवाह काल मिथिलामे सीताक सखी सभकेँ देल गेल द्वापरमे कामनापूर्तिक वचन हो, सर्वत्र समन्वय, पापक प्रायश्चित-परिहार आ लोक कल्याण हेतु उद्गार-उद्देश्य प्रबल रहल अछि—

पूर्वहि मिथिलानगरमे सीता परिणय काल।
हरिकेँ नारि निहारि सभ प्रेमेँ विवश बिहाल॥
देखि प्रीति रघुवीर सकल नारिकेँ देल वर।
एखन धरू सभ धीर द्वापरमे सभसौँ मिलब॥
एक नारी व्रत एहि अवतार। तेँ अहँ सौँ नहि करब विहार॥
द्वापर कृष्ण हयत मोर नाम। ततय हयब सभजनि मोर वाम॥

(पं. लालदास : जानकी रामायण, पृष्ठ 79-80)

राधाक वर्णनमे महाकविक साकांक्ष छथि। लक्ष्मीक रूप सीता आ सीतेक रूप राधा छथि। यथार्थमे जानकी रामायणमे रामकथा कहैत काल लालदास गोस्वामी तुलसीदासक समता प्राप्त करैत छथि तऽ कृष्णकथा कहैत काल ओ रससिद्ध सूर समान दृष्टिगोचर होइत छथि। गोस्वामी तुलसीदास आ दिव्यचक्षुप्राप्त सूर केर विलक्षण समन्वित रूप छथि महाकवि लालदास! जँ दुनूक एकहि ठाम दर्शनाभिलाषी होइ वा रसानुभूति केर आकांक्षी होइ तखन एक बेर जानकी रामायण केर भावसागरमे अवश्य अवगाहन करी।

गोप-गोपीसँ विरह भेलाक बाद एक दिन राधाक पाती पाबि कृष्ण भाव-विभोर होइत छथि—

लेल कृष्ण पाँती हरषाय।
पढ़थि नयनसौँ नोर बहाय॥

कृष्ण गोपी सभकेँ परबोधए उद्धवकेँ पठबैत छथि। ज्ञानगर्वित उद्धव प्रेमक आगू नतमस्तक होइत छथि। कृष्णक दर्शनाभिलाषी गोपी सभकेँ उद्धव चलबाक लेल कहैत राधाकेँ रथपर बैसबाक अनुरोध करैत छथि जे चलू अखने दर्शन करा दैत छी। राधा नहि तैयार छथि। एहि ठामक दृश्य वर्णनमे महाकविक कौशल अद्‌भुत अछि। पाठकगण विह्वल होइत छथि, सभक कोँढ़ एहि मर्मस्पर्शी चित्र देखि फाटि जाइत अछि—

चढ़ू एहि रथपर हम अगुआय। कृष्णक निकट दै छी पहुँचाय॥
हम तनिके छी सखा प्रधान। अहाँक करायब तहँ सम्मान॥
राधा तनिक अपटुता जानि। लगलिह कहय कथा गुणखानि॥
हम नहि चढ़ब रथोपरि फेर। त्रेतामे भेल अति अन्धेरि॥
छलहुँ जखन सीताक शरीर। कृष्णे रहथि राम रघुवीर॥
हमर रहय अन्तःपुर वास। पंचम मासक गर्भ प्रकाश॥
रथपर लक्ष्मण लेल चढ़ाय। कहल चलू वन देब देखाय॥
हम नहि किंचित् बूझल प्रपंच। रथ चढ़ि वन चल गेलहुँ संच॥
लक्ष्मण वनमे देलनि त्यागि। लगलहुँ सहय पतिक विरहागि॥
पड़ल विपति दुख सहल न जाय। मुनिकन्या सभ भेलि सहाय।
दुइ बालक भेल हमरा ततय। रक्षक वाल्मीकि मुनि जतय॥
बड़ दुख सहलहुँ राम वियोग। पति भेटक नहि भेल संयोग॥
पंचवटीमे पुनि एक बेरि। छलसौँ रावण कएल अन्धेरि॥
भिक्षुक बनि हमरा भोतिआय। माया रथपर लेल चढ़ाय॥
हे उद्धव सज्ञान हम नहि पुनि पुनि रथ चढ़ब
बड़ दुखदायक यान हमरा सभटा बूझल अछि।

(पं. लालदास : जानकी रामायण, पृष्ठ 94)

राधा रथपर नहि बैसेत छथि। उद्धव सीताहरण आदि कथा कहबाक अनुरोध करैत छथि। राधा द्वारा देल दिव्यदृष्टिसँ उद्धव सीताकथा देखैत छथि। जाइत काल जाहि ज्ञानगर्वित उद्धवकेँ अपन तर्कज्ञानपर गुमान छल जे ओ राधाकेँ कृष्णक विरह केर अग्निक शमन करैत हुनकामे ज्ञानभाव जगा शान्त कऽ सकताह, वैह उद्धव राधाक निश्छल प्रेम देखि आ सीताक दिव्य कथा सुनि परास्त होइत छथि आ राधाकेँ माय कहि प्रणाम करैत आपस घूरि जाइत छथि—

कृष्ण सहित अपने हे माय।
हृदयकमलमे रहू सदाय॥

(पं. लालदास : जानकी रामायण, पृष्ठ 98)

जानकी रामायणमे सर्वत्र सीताक प्रधानता अछि, मातृशक्तिक अधिमानता अछि।

जानकी रामायणक मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रथम संस्करण वर्ष 1980 ई.मे प्रकाशित भेल छल। प्रथम चरित्रम् सीताक कथा अछि। महाकवि मैथिलीभाषाकेँ माता जानकीक भाषा कहैत छथि—

बजली सीता भाषा जैह।
तेहिमे कहब कथा हम सैह॥

(पं. लालदास : जानकी रामायण, पृष्ठ 7)

महाकविक ई उद्‌गार हुनकर मातृवाणी आ मातृशक्तिक प्रति अगाध स्नेह आ श्रद्धाक परिचायक थिक। एहि मातृशक्तिकेँ अधिमान देबाक लेल महाकवि लालदास जानकी रामायण केर रचना कएलनि। यैह एकर औचित्य थिक।

शोध आ सर्वांगीण दृष्टिसँ मैथिलीक सेवाक बात हो तखन कवीश्वर चन्दा झा स्पष्ट रूपसँ महाकवि लालदाससँ आगू छथि मुदा रामकाव्य परम्परामे मिथिलाक अवदानक दृष्टिसँ, सीताक चक्षुसँ आ मैथिलत्वक दृष्टिकोणसँ जँ आकलन करी तखन ई कहबामे हमरा कोनो द्वैत नहि अछि जे एहि ठाम महाकवि लालदास बहुत आगू छथि। मैथिली रामकाव्य परम्परामे जे महाकवि लालदासकेँ शीर्ष स्थान अछि ओकर मूलमे महाकवि लालदासक रामायण केर पुष्कर काण्डक अवधारणा आ जानकी रामायणमे प्रतिबिम्बित हुनक प्रकाण्ड पाण्डित्ये अछि। महाकवि पण्डित लालदासक जानकी रामायण केर औचित्य यैह अछि।

[महाकवि पं. लालदास स्मृतिपर्व समारोह स्मारिका, अंक 10, 2021]

सीताक चित्रणमे महाकवि लालदासक वैशिष्ट्य

राम काव्य परम्परामे प्राय: रामक शील-शक्ति-सौन्दर्य समन्वित हिमाद्रि-तुंग-श्रृंग विराट व्यक्तित्वेक प्रधानता अछि। सीता मात्र हुनक सहचरी रूपमे चित्रित छथि। सर्वत्र 'रामक सीता' वला भाव उत्कीर्ण भेल अछि। सर्वप्रथम रामक विराट व्यक्तित्व आ उच्च कुलपर रघुवंशम् केर सीता निर्वासन प्रसंगमे महाकवि कालिदास प्रश्न ठाढ़ करैत छथि। लक्ष्मण जखन राम द्वारा सीताक परित्याग आ निर्वासन केर कथा सीताकेँ सुनबैत निर्जन वनमे एसकर छोड़ि प्रस्थान करैत छथि तखन सीता प्रश्न करैत छथि—

वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा वह्नौ विशुद्धामपि यत्समक्षम्
मां लोकवादश्रवणादहासी: श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य॥

(महाकवि कालिदास : रघुवंशम्, 14/61)

भाव जे अहाँ राजा (राम)सँ हमर वाणीमे पुछबनि जे जखन ओ अपना समक्ष अग्निपरीक्षामे हमरा विशुद्ध पओने छलाह तखन मात्र लोकापवाद सुनि हमर त्याग कएलनि। ई कृत्य की हुनक उच्च कुलक अनुरूप आचरण भेल?

रामक विराट् व्यक्तित्व आ उच्च रघुकुलपर उठल ई प्रश्न यथार्थमे रामकथामे अत्यन्त विरल अछि। 14म शताब्दीमे असम-त्रिपुराक महाराज महामाणिक्यक अनुरोधपर माधव कन्दली द्वारा रचित रामायणमे रावण वध बाद राम सीताक पवित्रतापर सन्देह करैत हुनक परित्यागक विचार करैत छथि आ सीतासँ लक्ष्मण-भरत वा विभीषण-सुग्रीवमे कोनो एककेँ वरण करबाक लेल कहैत छथि। एहिपर सीता कुपित होइत रामक खिधाँस करैत छथि—

दुबरि वचन शाले शालिलेक हिये।
धीरे धीरे बुलि लन्त जनकर जीये।
उत्तम कुलत मोक बापे बिया देलाहा।
आमाक इतर नारी सम देयिलाहा।
न सुमरा मोर एक दिबसर गुण।
निर्दय पुरुष जाति किनो निदारुण।

(माधव कन्दली रामायण, गुवाहाटी, 1972, पृष्ठ 449-50)

15म शताब्दीक कृत्तिवासक बाँग्ला रामायणमे सीता अपन अपमानपर रामकेँ बहुत बात-कथा कहैत छथि। आश्चर्यजनक अछि जे सीताक नैहर नेपालमे लोक नृत्य नाटिकामे रावणक चित्र बनबैत देखि राम लक्ष्मणसँ सीताक वनमे लऽ जा हुनक हत्या करैत हुनक माँसु आनबाक आदेश दैत छथि। लक्ष्मण हरिण मारि ओकर माँसु आनि दैत छथि। लक्ष्मण रान्हल माँसु भक्षण अस्वीकार करैत छथि (श्री आर पी लामाक आलेख, उद्धृत सीता चरित— उमाकान्त झा, मैथिली अकादमी, पटना, 2021, पृष्ठ 9)। ई रामक प्रति आक्रोशक स्तर अछि। सीताक अग्निपरीक्षा आ परित्यागसँ रामक उज्ज्वल चरित्रपर करिखाक रेख अवश्य लगैत अछि भले रामकाव्य परम्पराक विद्वान् एकरा सीताहरणसँ पूर्व अग्निदेवक संरक्षणमे राखल सीताक आपस लेबाक योजना, जन भावनाक सम्मान आ राजधर्मक बाध्यता आदि केर जे शब्दजाल बुनथि। सीता निर्वासनकेँ डॉ. कांचीनाथ झा 'किरण' 'पराशर'मे अभिनव रूप देबाक प्रयास कएलनि। राम अश्वमेध यज्ञ करबाक नेयार करैत छथि। सीता एकरा अहंकारक प्रकटन कहैत छथि—

जन-धन-बल सामर्थ्यक अहंकारे ने रहैछ
अश्वमेध सन यज्ञक जड़िमे।
अहंकार स्वयं थिक महापाप
पापसँ पुण्यक जन्म तर्कहीन असंगत।

(डॉ. कांचीनाथ झा किरण : पराशर, ऋचापाठ, पृष्ठ 11)

सीता मिथिलाक चिन्ता करैत छथि जे मैथिल अश्वमेधक अश्व पकड़ि लेत आ भारी विनाश होयत। एहिसँ पूर्व हमरे मारि देल जाय। क्रुद्ध राम एकरा राजद्रोह

मानि हुनका निर्वासित करैत छथि। कोनो आवरण देल जाय, कोनो शब्दाडंबर वा तर्क देल जाय, रामक ई कृत्य अनुचित छल। बिनु कोनो कारण पृच्छाकेँ सीधा निर्वासन! ने ई कृत्य ओहि कालमे उचित छल ने अखन भऽ सकैछ। विद्वान् सभक जे आडम्बर हो, होइत रहए।

एहि कृत्यसँ रामक चरित्र स्खलित भेल अछि। ई सत्य जे रामकाव्यमे सीता चरित्रक उन्नयन केर बिम्ब अत्यन्त विरल अछि आ सर्वत्र 'रामक सीता' वला भाव अछि। महाकवि लालदास एहि भावसँ इतर 'सीताक राम' आ 'जैं सीता तैं राम' वला भावकेँ स्थिर कएलनि। बिनु कोनो प्रतिकार कएने, बिनु रामकेँ कोनो अपशब्द कहने, बिनु कोनो तरहक अप्रीतिकर प्रसंगक उद्भावना कएने ओ अत्यन्त सरलता आ सहजतासँ सीताक श्रेष्ठता साबित कएलनि। ई महाकवि लालदासक अनुपम वैशिष्ट्य अछि। आगू ई स्थापना आर फरीच्छ होयत। लालदासक सीता लक्ष्मीक अवतार छथि—

लक्ष्मी जखन लेल अवतार। मिथिला देश भेल उजियार॥
वैकुण्ठक जे विभव विलास। आबि कएल मिथिलापुर वास॥
सुरतरु सुर वैकुण्ठक अंग। सभ मिथिला अयला श्री संग॥

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 49)

सीताक रहस्य अनावृत करैत नारद कहैत छथि—

सुनु सुनु हे मिथिला महराज। गोपनीय कहयित छी आज॥
ई नहि प्राकृति कन्या भूप। थिकथि स्वयं लक्ष्मी अनुरूप॥
हरिक योगमाया दृढ़ जानु। जगत् स्वरूपा हिनकहि मानु॥
जगमे जे भासित अछि रूप। सभमे हिनके तेज अनूप॥

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 52)

सीताकेँ वाम हस्तसँ पिनाक धनुष उठा दहिना हाथसँ भूमि साफ करैत देखि जनकजीकेँ सीताक योगमाया स्वरूपक भान होइत अछि—

अनायास निपितहि धनु धाय। बामहि करसौँ लेल उठाय॥
बाम हाथ धनु अवनत माथ। नोचथि तृण कुश दहिना हाथ॥
अयला नृप कयनहि अस्नान। देखि चकित कृत मन अनुमान॥
शिवधनु उठि नहि ककरो बूत। से सीता धयलनि अजगूत॥
बुझलहुँ निश्चय दृढ़ अनुमान। थिकथि योगमाया नहि आन॥

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 55)

लालदास एहि रहस्यकेँ जनितो सीताकेँ सहज मानवीय गुणसँ ओतप्रोत रखने छथि। वन गमन काल ओ स्पष्ट कहैत छथि जे जँ हमरा संग नहि लेब तऽ हम प्राण त्यागि देब—

हम जानल पतिसेवा सार। तेहि बिनु थिक असार संसार॥
अहँ बिनु हमर रहत नहि प्राण। अहीं करब विपिनहुँमे त्राण॥
जौँ प्राणेश संग नहि लेब। एहि खन प्राण त्यागि हम देब॥

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020,पृष्ठ 116)

सीताक चरित्र चित्रणमे रामकाव्य परम्पराक स्वर प्रायः समाने अछि। सीताक परित्यागपर कतहु-कतहु किछु आक्रोश अभरल भेटैछ। कवीश्वर चन्दा झा एकरा अनीति कहैत छथि—

कहलनि मुनि वाल्मीकि विचारि। सती शिरोमणि सीता नारि।
त्यागल पर-अपवादक रीति। अहह रघूत्तम कएल अनीति॥

(चन्दा झाक रामायण, उत्तर काण्ड, पृष्ठ 406)

मुंशी रघुनन्दन दास सेहो सीताक निर्वासनपर आक्रोश प्रकट करैत छथि-

भू-सुता राजर्षि जनकक ललिता सुकुमारि।
जे अजन्मा पतिव्रता छथि अति प्रशंसित नारि॥
दिव्यमे कुलपति समक्षहिँ अग्नि शोधल जाहि।
भ्रष्ट ज्ञानक भावनासँ की तेजब थिक ताहि॥

(मुंशी रघुनन्दन दास रचनावली, वीर बालक, पृष्ठ 250)

जनक कहु सीता पवित्रा अग्नि शोधित भेलि।
इतर जनक क्रोधित कथनपर वास वन की देल॥
नीति रघुवंशक प्रशंसित अहँक सन गुरु पाय।
तदपि मम दुहिताक दुर्गति कएल की बुझि न्याय॥

(मुंशी रघुनन्दन दास रचनावली, पृष्ठ 273)

सीतायनमे ई आक्रोश वाल्मीकि केर कामना रूपमे अछि जे बादमे सिद्ध भेल आ रामदलकेँ सीता परित्यागक मोल अपन पराजयसँ चुकबए पड़ल—

वाल्मीकिक मनमे छल कुश लव
हय पकड़ि घोरतर युद्ध करथि।
रिपुसूदन भरत लखन राघव तनकेँ
शरसँ से विद्ध करथि।

(वैद्यनाथ मल्लिक विधु : सीतायन, तेसर सर्ग, पृष्ठ 604)

कुश रामसँ कहैत छथि— पौरुषहीन पुरुषकेँ जगमे प्रशंसा नहि भेटैछ, जे पवित्र गर्भिणी सतीकेँ भयंकर वनमे बाघ- सिंहक भोज्य बना पठा देलक जँ अहाँ वैह राम छी तखन सीता परित्यागक पापसँ पराजित अहाँ अवश्य होएब। ओ म्रियमाण राम सहित चारू भाएक वस्त्र उतारि लैत छथि। सीता वस्त्र चीन्ह दुनू पुत्रकेँ गंजन करैत छथि फेर युद्ध क्षेत्र आबि कहैत छथि—

जँ हो निश्छल प्रेम हमर, सीता सतीत्व जँ साँच।
जागी एहि द्रुत निद्रासँ, भऽ जाय पुनः ई जाँच।

(वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' : सीतायन, पृष्ठ 616)

मायक अपमान केर प्रतिशोध लैत ई चित्र मैथिली साहित्यमे विरल अछि। कालीकान्त झाक हनुमान चरित् सेहो मैथिलीक दुग्ध-शक्तिक परिचय दैत अछि जखन हनुमान कहैत छथि—

अंजलिबद्ध मुदित मारुति कह 'अम्ब न हमर पराभव ।
कोटि विजयसँ अधिक नीक दुइ अनुजक हाथहि हारब'॥

(कालीकान्त झा : हनुमान चरित्, पद 39)

रघुवंशम् केर अच्युतानन्द दत्त द्वारा भेल मैथिली अनुवाद सीतादाईमे सीता अपन परित्यागक दोष स्वामीकेँ नहि दऽ निज भाग्यकेँ दैत छथि—

हमर त्याग अपना इच्छासौँ कएल न ओ मतिमान।
हमरे जन्म-जन्ममे सम्पादित अछि जे बड़ पाप।
तकरे फलसौँ ई हमरा भेटल अछि दुस्तर ताप॥

(सीतादाई : पृष्ठ 119)

खड्गवल्लभ दास 'स्वजन' केर सीता एहि भाव केर प्रतिबिम्ब छथि। रामक अश्वमेध यज्ञमे वाल्मीकि जीकेँ शिष्य सहित आमंत्रण भेटल अछि। ओ सीतासँ कहैत छथि—

हमहुँ निमंत्रित भेल छी संग सकल शिष्य कुमारकेँ।
जैबाक चाही संग कऽ लव-कुश दुनू सुकुमारकेँ॥

(खड्गवल्लभ दास 'स्वजन' : सीताशील, पृष्ठ 208)

सिया सुकुमारी ई सुनि मुदित छथि जे कुश-लव सेहो जएताह। ओ वाल्मीकिसँ कहैत छथि—

जौँ पूछि बैसथि नाथ अपना नारिकेँ सम्बन्धमे।
कहि सुनेबनि सिय तपस्विनी संग छथि आनन्दमे॥

मिथिलाक राजकुमारी आ अयोध्याक महारानी सीता पति राजा रामचन्द्र आ समस्त राजवैभवसँ हीन दूर वनमे अभावमे रहैत कहुना जीवन व्यतीत करैत छथि मुदा अपन पतिसँ अपन आनन्दक समाचार कहबाक लेल कहैत छथि। 'चाहैत छी हमहूँ खिधाँस ने होनि प्रिय प्राणेशकेँ' भाव रखैत छथि। एहन मर्मन्तुद दृश्य देखि-सुनि ककर कोँढ़ नहि फाटत !

सीता चरित्र चित्रणमे मैथिलीक रचनाकार सभक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अवदान अछि। ई सत्य अछि जे सभकेँ अपन-अपन क्षेत्रमे अलग-अलग विशिष्टता प्राप्त भेल मुदा ई कहबामे कोनो द्वैत नहि अछि जे सीताक चरित्र चित्रणमे सभसँ

पैघ सफलता लालदासेकेँ भेटल। पुष्कर काण्ड केर परिकल्पना एहि अभिनव विशिष्टताक आधार अछि।

दशानन विजयक बाद अयोध्यामे पैघ बैसार भेल आ ओहिमे रामक जय-जयकार भेल। मुनिगण केर अतिशयोक्तिपूर्ण स्तुतिगान सुनि सीता हँसए लगलीह। सभक आग्रहपर कहलनि जे ओहि दशाननकेँ तऽ हम पहिने मारि देने छलहुँ।

ई रावण छल मृतक शरीर। मृतक मारि क्यौ हो नहि वीर॥
बुझि पड़ल परिहास समान। तैँ हँसलहुँ नहि कारण आन॥

***

पूर्व रहय रावण बलवान। त्रिभुवन जीति बढ़ाओल मान॥
जखन हमर दृगगोचर पड़ल। तकर शक्ति सभटा हम हरल॥
तखनहिसौँ भेल मृतक समान। रहल न तकरा बलक विधान॥

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 408)

सीता अपन पूर्व जन्मक इतिवृत्त, वेदवती कथा, पुष्कर आ श्वेतद्वीप केर कथा, दशानन आ सहस्रानन केर कथा आदि कहैत अपन परिचय दैत छथि—

हमरा नहि हरलक लंकेश। हमही हरल प्राण धन वेश॥
हमहि अग्निकाँ शक्ति बढ़ाय। लंका नगर देल जरबाय॥
सेतुबान्धमे हमरे युक्ति। देल जलधिकाँ हमही शक्ति॥

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 413)

जँ सहस्राननकेँ मारि सकी तऽ ई शौर्यक कथा अवश्य भऽ सकैछ। राम सदल बल श्वेतद्वीप लेल प्रस्थान कएलनि। आधा समुद्रमे अशोथकित भेलाह। रथ उबडुब करय लागल। लक्ष्मण सीताक स्तुति करैत सुमिरय लगलाह—

त्राण करू हे प्रकृति प्रधान। अहँक कृपा बिनु नहि कल्याण॥
अहीं सभक छी प्राणाधार। सदा अहिँक सभमे व्यापार॥
सकल सृष्टि अछि अहिँक अधीन। अहिँक दया बिनु सभ छी दीन॥

महालक्ष्मि अहिँ वैष्णव शक्ति। सकल सृष्टिमे अहिँक विभक्ति॥
अहिँ आधार शक्ति जगदम्ब। अहिँ छी सभक प्राण अवलम्ब॥...

(लालदासक रामायण,साहित्य अकादेमी, 2020, पृष्ठ 415)

सीता बजरंग बलीकेँ बजाए सभकेँ अयोध्या आनलनि। फेर सभ श्वेतद्वीप लेल चलल। ओतऽ पहुँचि सहस्रमुख केर विशाल घंटाकेँ रामदल कहुना बजा सकल। सहस्रमुख एकहि प्रहारमे सभकेँ अयोध्या पहुँचा देलक। राम लाजे कठौत भेल छलाह। बादमे पुष्पक विमानसँ सभक संग सीता सेहो श्वेतद्वीप चललीह। जाहि घंटाकेँ बजएबामे सभक घाम चुअल छल ओकरा सीता अपन लीलासँ सहजतासँ बजा देलनि। भयंकर शब्द भेल। सहस्रमुख रावण घंटाक ध्वनि सुनि बाहर आबि भयंकर युद्ध कएलनि आ अन्तमे रामक वक्ष विदीर्ण करैत ओकर वाण पाताल चलि गेल। राम संज्ञाहीन भऽ पुष्पक विमानपर अचेत खसि पड़लाह। सीता सभटा देखि रहल छलीह। रामक दुर्दशा देखि वैदेही विकराल शरीर धारण कएलनि। अपन रोमकूपसँ अनन्त मातृका सभक सृजन कएलनि आ सहस्रमुख रावण केर संहार कएलनि। राम होशमे आबि देखैत छथि—

तखन देखल राम रणमे कालिकाक स्वरूप।
खड्ग खप्पर वर अभय कर जीभ दन्त अनूप॥
शव स्वरूपी शिव हृदिस्थिति मुक्त कबरी भार।
मुण्डमाल विशाल उर कटि किंकिणी कर हार॥
चलित रसना भीम दशना उदर अति गम्भीर।
नयन कदली कोश सम दुहु भीम रूप शरीर॥
जगत् ग्रासक आस कएने कतहु चयन न अङ्ग।
कोटि-कोटि विचित्र रूपिणि मातृकागण सङ्ग॥
नृत्य करयित सबहि खेलथि गेन रावण मुण्ड।
पद प्रहारेँ जाय जहँ शिर धाब योगिनि झुण्ड॥
लोक क्षोभित सतत सुनि सुनि अट्टहास कराल।
कएल काली समर कौतुक कहय कहँ धरि लाल'॥

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, पृष्ठ 436-37)

सीताकेँ एहि महाकाली रूपमे देखि विस्मित राम हुनकासँ परिचय पूछैत छथि। एहिपर सीता कहैत छथि—

हमरा जानब परमा शक्ति। हमहि करै छी सृष्टि विभक्ति॥
नाशरहित नित्या हम एक। हमरहिसौँ ई जगत् अनेक॥
हमही छी परमात्मा रूप। विद्याऽविद्या हमर स्वरूप॥
महिमा हमर परम विस्तार। बन्धन मुक्त करी संसार॥
विधि शंकर भगवान् अनन्त। पाबथि हमर केऔ नहि अन्त॥

(लालदासक रामायण, साहित्य अकादेमी, पृष्ठ 438)

फेर राम सीता सहस्रनामसँ सीताक स्तुति करैत सामान्य स्वरूपमे अएबाक अनुरोध करैत छथि। रामक करबद्ध अनुनय-विनय मानि सीता अपन सामान्य रूपमे अबैत छथि। सीता द्वारा रामक प्राण रक्षा आ राम द्वारा सीताक स्तुतिगानसँ महाकवि लालदास 'जैँ सीता तैँ राम' केर अभिनव जयघोष करैत छथि। ई प्रसंग मैथिली रामकाव्य परम्परामे प्रथम बेर आएल अछि। सीता चरित्र चित्रण दृष्टिएँ महाकवि लालदासक वैशिष्ट्य अनुपम अछि! विलक्षण अछि !! एकर कोनो परतर नहि अछि!!!

[मिथिलांगन, महाकवि पं. लालदास विशेषांक, अंक 48-49,
अप्रैल- सितम्बर, 2021]

जानकी चरित्रक वैशिष्ट्य

विश्व वाङ्मयमे एहन कोनो नारी चरित्र नहि छथि जनिकासँ जानकी चरित्रक परतर देल जा सकए। यूनान, मिस्त्र आ रोमन सभक जे पौराणिक देवी सभ छथि ओहि सभमेसँ केओ सीताक समता नहि प्राप्त करैछ। अरिन्नीति सूर्यक, डायोन भविष्यवाणीक, गजा धरतीक देवी छथि मुदा कोइ सीता सन नहि छथि। एफ्रोडाइट, नेफरतीति, क्लियोपैट्रा, हेलेन प्रभृति नारी अनिंद्य सुन्दरी मानल जाइत छथि मुदा ओ सब सेहो सौन्दर्यमे सीताक समता नहि कऽ सकैत छलीह। सौन्दर्यक संग जे एकनिष्ठता आ शुचिताक मानदंड अछि ओहिमे सीता हिनका सभसँ बहुत आगू छथि। रोमन आधिपत्यकेँ चुनौती देनिहारि बाउडिका, असीरियाक योद्धा रानी सेमिरामिस, मिस्त्रक सत्ता प्राप्त कऽ रोमक प्रतिरोध कएनिहारि जेनोबिया, किसान कन्यासँ सए सालक युद्धमे विजयश्री दिएनिहारि आ मृत्युक लगभग पाँच सए वर्ष बाद देवी रूपमे मान्य जीन डी'आर्क प्रभृति सम्मानित योद्धा नारी पात्र सभसँ सीता पृथक् छथि। हिनका सभक अन्त गरिमामय नहि रहल। पराजय आ कारागार यैह नियति रहल। भारतीय वाङ्मयमे लक्ष्मी, पार्वती, राधा, द्रौपदी आदि चरित्र सेहो सीता चरित्रक धवलताक समता नहि प्राप्त करैत छथि। द्रौपदी छोड़ि आन किनको सीता जकाँ कष्ट सेहो नहि भोगए पड़ल। द्रौपदी उग्र छथि अपन अपमान केर प्रतिशोध लैत छथि मुदा सीता तऽ सेहो नहि लैत छथि। समस्त दुख-दर्द, कष्ट, टीस-संत्रास, तिरस्कार, लांक्षण, मिथ्या कलंक, परित्यागक दंश आदिकेँ विधाताक नियति मानि सहि जाइत छथि। सीताक धवल चरित्रपर विधाता अपन कोपक कोनो डाङ्ग बचाकेँ नहि रखलनि, सभकेँ आजमा लेलनि मुदा सीता अपन चारित्रिक वैशिष्ट्यसँ सभकेँ हँसैत सहि निष्फल कएलनि। भूमिजाक एक नाम तँ सर्वसहा अछि। विधाताक ओ समस्त डाङ्ग सीताक सतीत्वक तपसँ पुष्पहार बनि सीताक गरामे सुशोभित भेल।

भूमिजा सीताक लालन-पालन मिथिलाधीश जनक केर राजभवनमे भेल। सौन्दर्य आ शौर्य केर प्रतिमान छलीह। जाहि पिनाक धनुषकेँ ओहि समयक कोनो बलशाली राजा टससँ मस नहि कऽ सकैत छलाह सीता ओहि पिनाक धनुषकेँ वाम हाथसँ उठा दहिना हाथसँ नीचाँ केर भूमि नीपैत छलीह। ई शक्तिक सीमेसँ संभव! राजा जनक केर मिथिलाक राजभवनसँ जानकी अयोध्याक चक्रवर्ती सम्राट् राजा दशरथ केर पुतोहु बनि अवध अएलीह। किछुए दिन बाद राजपरिवारक चक्रचालिसँ पति श्रीरामकेँ वनवास भेटलनि। पति परायणा सीता वनमे श्रीरामक संग देबाक निश्चय करैत छथि। श्रीराम वन केर कष्टमय जीवनक चर्च करैत मना करैत छथि मुदा सीता नहि डिगैत छथि। रामकेँ सीताक रक्षाक भयपर ओ कहैत छथि जे अहाँ केहन अज्ञानी जकाँ बजैत छी। पिता हमरा केहन संग लगा देलनि। जे पुरुष अपन पत्नीक रक्षा नहि कऽ सकए ओकरा वीर के कहत—

पंडित हइया बूल निर्व्वोधिरे प्राय।
केन हेन जने पिता दिलेन आमाय॥
निज नारी राखिते जे करे भय मने।
देख तारे वीर बले कौन वीर जने॥

(कृत्तिवास : रामायण, अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ 241)

फेर आगू सीता कहैत छथि जे माए-बाप, भाए, पुत्र, पुतोहु सब स्व अर्जित पुण्यक भागी छथि, अपन भाग्याधीन रहैत छथि, संसारमे एकमात्र पत्नी छथि जे पतिक भाग्याधीन होइत छथि तेँ हे आर्यपुत्र! हमरो अपना संग वनगमन केर आज्ञा देल जाय—

आर्यपुत्र! पिता माता भ्राता पुत्रस्तथास्तुषा
स्वानि पुण्यानि भुंजाना: स्वयम्वंभाग्यमुपासते।
भर्तृर्भाग्यं तु नार्येका प्राप्नोति पुरर्षभ
अतश्चैवाहमादिष्टा वनेवस्तव्यमित्यपि॥

(महर्षि वाल्मीकि : रामायण, अयोध्याकाण्ड, 27/4-5)

आगू राम द्वारा वनक कष्ट सभक उल्लेख कएलापर सीता कहैत छथि जे नारीक गति मात्र पतिएसँ अछि। पतिक संग नारीकेँ कोनो कष्टक चिन्ता नहि। पिताक घरे जकाँ हम अहाँक संग रहि सेवा करब। हम अहाँक छाया छी अलग नहि भऽ सकैत छी। हम निश्चित रूपसँ अपन धर्मक पालन करैत अहाँक संग वन जाएब।

एहिमे कोनो संशय नहि राखल जाय। वनगमनोत्सुक भेलापर हमरा रोकि सकब असंभव अछि। अनन्यभाव केर कारण अहाँसँ विमुक्त होइते हम अपन मृत्युक निश्चय कएने छी—

सुखं वने निवत्स्यामि यथैव भवने पितुः।
अचिन्त्ययन्ती त्रिलोकांश्चिन्तयन्ती पतिव्रतम्॥
साहं त्वया गमिष्यामि वनमद्य न संशयः
नाहं शक्या महाभाग निवर्तयितुमुद्यता।...
अनन्य भावामनुरक्त चेतसं त्वया विमुक्तां मरणाय निश्चिताम्।

(महर्षि वाल्मीकि : रामायण, अयोध्याकाण्ड, 26/ 12-15)

एहि ठाम सीता श्रीरामक प्रति अनन्य अनुराग आ अपन दृढ़ताक परिचय दैत छथि। ओ स्त्रीधर्मक ध्वजवाहिका रूपमे सोझाँ अबैत छथि। अपन तर्क आ ज्ञानगर्वित वैदुष्यसँ सीता श्रीरामकेँ अपन निर्णयपर पुनर्विचार करबा लेल विवश करैत छथि आ पति परायणताक उदाहरण बनि श्रीराम-लक्ष्मण संग वनगमन करैत छथि।

वन केर कष्टप्रद जीवनपर सीता किछु नहि बजैत छथि। सहज भावसँ स्वर्णमृग आनबाक लेल कहैत छथि। फेर सीता अपहृत भऽ दशानन केर अशोक वाटिका आनल जाइत छथि। रावण अपन सोनाक लंका, त्रिलोकक राज, समस्त वैभव-सम्पदा सीताकेँ निछाउरमे देबऽ चाहैत छथि मुदा सीता कखनो 'तृण धरि ओट कहत वैदेही' वला रूप केर त्याग नहि करैत छथि। कोनो प्रलोभन हुनका डिगा नहि सकल। अशोक वाटिकामे रामक मायावी मस्तक देखि मैथिली मूर्च्छित भेलीह। त्रिजटा द्वारा मायावी मस्तक रहस्य अनावृत्त कएलापर हुनक शोक तऽ दूर भेल मुदा एकर कचोट रहि गेल जे पतिक मृत्युक समाचार सुनलाक बादो ओ जीवित कोना रहि गेलीह—

कामं जीविति मे नाथ! इति सा विजहौ शूचम्।
प्राङ्मत्वा सत्यनस्यान्तं जीविताऽस्मीति लज्जिता॥

(महाकवि कालिदास : रघुवंशम्, 12/75)

राम-रावण युद्ध भेल। रावण वध केर बाद श्रीराम शंकामे पड़ि सीताक पवित्रतापर सन्देह कएलनि। ओ सीताक परित्यागक विचार कऽ सीतासँ भरत-लक्ष्मण वा

विभीषण-सुग्रीवमे किनको वरण करबाक लेल कहैत छथि। एहिपर सीता क्रुद्ध होइत कहैत छथि जे अहाँक उत्तम कुलक मानि हमर पिता अहाँसँ हमर विवाह कएलनि। अहाँ हमरा एम्हर-ओम्हर केर वारांगना बूझैत छी की? हमर एक गुण अहाँकेँ मोन नहि रहल! केहन निर्दय निस्तरर पुरुष छी अहाँ—

उत्तम कुलत मोक बापे बिया देलाहा।
आमाक इतर नारी सम देयिलाहा।
न सुमरा मोर एक दिबसर गुण।
निर्दय पुरुष जाति किनो निदारुण।

(माधव कन्दली रामायण, 1972, पृष्ठ 449-50)

लंकामे सीताकेँ अग्निपरीक्षा देबए पड़ैत अछि। आश्चर्य अछि जे एक तृण केर ओटसँ दशानन सन प्रतापीकेँ दूर रखबामे सक्षम सीताकेँ अपन पवित्रता प्रमाणित करबाक लेल अग्निपरीक्षा देबऽ पड़ल छल। सीताक सतीत्वसँ अनल शीतल चन्दन भेल।

लंकासँ आपस अयलापर जखन कौशल्या आ सुमित्रा राम-लक्ष्मण केर घाव हँसोथैत विह्वल छलीह तखने सीता आबि स्वर्गवासी ससुरक दुनू रानीकेँ समान भक्तिपूर्वक चरणस्पर्श करैत विनम्रताक प्रतिमूर्त्ति बनि कहैत छथि जे हिनका सभकेँ कष्ट दिएनिहारि हमही कुलक्षणा सीता छी—

क्लेशावहा भर्तुरलक्षणाऽहं सीतेति नाम स्वमुदीरयन्ती।
स्वर्गप्रतिष्ठस्य गुरोर्महिष्यावभक्तिभेदेन वधूर्ववन्दे॥

(महाकवि कालिदास : रघुवंशम्, 14/5)

दुनू रानी अपन पयरपर खसलि सीताकेँ नेहपूर्वक उठबैत कहैत छथि जे उठू पुत्री! अहींक शुचिता आ पातिव्रत्यक बलसँ राम-लक्ष्मण एहि भारी विपत्तिसँ सकुशल आपस आबि सकलाह—

उत्तिष्ठ वत्से! ननु सानुजोऽसौ वृत्तेन भर्ता शुचिना तवेव।
कृच्छ्रं महत्तीर्ण इति प्रियार्हां तामूचतुस्ते प्रियमप्यमिथ्या॥

(वैह, 14/6)

अयोध्याक राजसभामे श्रीरामक गुणगान भऽ रहल छल आ जानकी हँसि रहल छलीह। श्रीराम द्वारा बहुत आग्रहपर जानकी कहलनि जे ओहि दशाननकेँ हम पहिने मृतप्राय कऽ देने रही, ओकर वधमे कोन शौर्य! सहस्रमुख रावण केर वध करी तऽ ओ वीरोचित कृत्य कहाओत। रामदल प्रस्थान कएलक मुदा अपमानित होइत आपस भेल। फेर सीता सेहो श्वेतद्वीप गेलीह। जाहि घंटाकेँ रामदल पहिने कहुना हिला सकल छल ओकरा सीता सहजतासँ जोरसँ बजा देलनि। सहस्रमुख रामदलकेँ दलमलित करैत रामकेँ म्रियमाण करैत खसा देलक। रामक ई दुर्दशा देखि सीता विकराल रूप धरैत छथि। ब्रह्मा जकाँ अपन रोमकूपसँ मातृका सभक सर्जना करैत छथि आ शिव समान सीता सहस्रमुखक संहार करैत छथि। विष्णु समान विष्णु अंश श्रीरामकेँ जीवनदान आ परिपालन करैत छथि। कृतज्ञ राम सीता सहस्रनामसँ स्तुति करैत छथि। कविश्रेष्ठ महाकवि पं. लालदासक रमेश्वर चरित मिथिला रामायणक पुष्करकाण्ड जानकी चरित्रक जीवन्त शिलालेख थिक। राम सीताकेँ भगवती आ परमाशक्ति मानैत छथि—

हे भगवति जौं छी अनुकूल। ओ शरीर धय हरु भव शूल॥...
अहीं प्रकृतिमे परमाशक्ति। अहींक चराचर रूप विभक्ति॥

(पं. लालदास : रामायण, साहित्य अकादेमी, पृष्ठ 441-42)

ई दृश्य सरिपहुँ विलक्षण अछि, सीता शौर्यक उत्कर्ष अछि। सीता त्रिमूर्त्तिक सर्जन शक्ति, परिपालन शक्ति आ संहार शक्तिसँ युक्त छथि। पं. लालदासक पुष्करकाण्ड श्रीरामपर सीताक अधिमान केर स्पष्ट जयघोष थिक।

सीताक परित्याग आ पाताल प्रवेश प्रसंग अद्भुत अछि। लक्ष्मण जखन सीताकेँ घनघोर आ हिंस्र जीवसँ भरल वनमे छोड़ि परित्यागक रामाज्ञा सुनबैत छथि तखन सीता कुररी जकाँ कनैत छथि। एतऽ 'हमर अभाग हुनक नहि दोष' केर भाव रखितो सीता श्रीरामक यशस्वी रघुकुलपर प्रश्नचिह्न लगबैत छथि जे अग्निपरीक्षामे सफल भेलाक बादो परित्यागक करब की उचित थिक—

वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा वह्नौ विशुद्धामपि यत्समक्षम्
मां लोकवादश्रवणादहासीः श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य॥

(महाकवि कालिदास : रघुवंशम्, 14/61)

ई प्रश्नचिह्न सीताक साहस अवश्य प्रदर्शित करैत अछि मुदा सीता एकरो स्वीकार करैत छथि। महाराज जनक केर पुत्री, चक्रवर्ती सम्राट् दशरथ केर पुत्रवधू आ दशानन विजेता अयोध्या नरेश श्रीरामक गर्भिणी पत्नी सीता रने-वने बौआइत छथि। दू अबोध नेनाक परिपालन करैत छथि मुदा मुहसँ पतिक विरुद्ध एक शब्द नहि बजैत छथि। वाल्मीकिकेँ यज्ञमे कुश-लवक संग जएबाक बात जानि सीता कखनो वन केर खोपरी चूअब, कहियो कोनो विषधर केर प्रवेश, कहियो भालु-रीछकेँ खेहारब, कोनो हिंस्र पशुक फेरा, कोनो दिन भारी बरखामे जारनि केर अभावमे उपासे रहबाक विवशता आदि वनक समस्त कष्ट बिसरि प्रमुदित होइत कहैत छथि—

जँ पुछि बैसथि नाथ अपन नारिकेँ सम्बन्धमे
कहि सुनेबनि सिय तपस्विनी संग छथि आनन्दमे।

(स्वजन : सीता शील, पृष्ठ 208)

वन केर भयंकर कष्ट सभक बादो सीता अपन आनन्दक समाचार (सेहो श्रीराम द्वारा पुछलापर) कहबाक अनुरोध करैत छथि। पाठक केर कोँढ़ तखन फाटि जाइत छैक जखन एहन दुरावस्थाक मूल अपन पति केर यज्ञक सफलताक कामना एहि पंक्तिमे प्रकट करैत छथि—

चाहैत छी हमहूँ खिधाँस ने होनि प्रिय प्राणेश कैँ।

अपन परित्याग कएनिहारक पतिक यश लेल चिन्तित छथि सीता! कुश-लव अश्वमेध यज्ञ केर घोड़ा पकड़ने छथि। बेरा-बेरी हनुमान, विभीषण, शत्रुघ्न, लक्ष्मण, भरत आदि मूर्च्छित होइत छथि। श्रीराम स्वयं समरमे अबैत छथि। श्रीरामसँ कुश कहैत छथि जे जँ अहाँ वैह राम छी जे गर्भिणी निर्दोष सीताकेँ अकारण बाघ-सिंहक भोज्य बना वन पठा देलहुँ तखन एहि पाप केर कारण अहाँ अवश्य पराजित होएब। यैह होइत अछि। राम सहित म्रियमाण चारू भाएक वस्त्र उतारि कुश-लव लऽ जाइत छथि। सीता वस्त्र चीन्हि हाक्रोशमे दुनू पुत्र केर गंजन करैत युद्ध स्थल आबि कहैत छथि—

जँ हो निश्छल प्रेम हमर सीता सतीत्व जँ साँच
जागी एहि द्रुत निद्रासँ भऽ जाय पुनः ई जाँच।

(वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' : सीतायन, पृष्ठ 616)

अपन सतीत्वसँ सीता चारू भाएक मूर्च्छा दूर करैत छथि। सीता सतीत्वक उत्कर्ष तखन भेटैत अछि जखन महर्षि वाल्मीकि, हनुमान, त्रिजटा आदि द्वारा सीताक शुचिता विषयक स्पष्ट घोषणाक बादो श्रीराम सीतासँ अपन पवित्रता प्रमाणित करबाक लेल कहैत छथि आ सीता सभामध्य रामक प्रति एकनिष्ठताक बलपर पृथ्वीसँ विवरयाचना करैत छथि—

यथाहं राघवादन्यं मनसापि न चिन्तये
तथामे माधवी देवी विवरं दातुर्महति।

(वा. रामा. 97/14)

वाङ्मन: कर्मभि: पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे
तथा विश्वम्भरे देवि! मामन्तर्धातुमर्हसि।

(रघु.15/81)

सीताक सतीत्वक आनपर धरती फटैत अछि आ स्वयं नागफणपर सजल सिंहासनमे बैसलि धरतीमाता अपन सुता सीताकेँ कोरामे बैसाए धरतीमे समा जाइत छथि। श्रीराम अहुरिया काटैत रहि जाइत छथि। ने पूर्वमे कहियो एहन आह्वान आ ने बादमे एहन निर्वाण! सीताक सतीत्व ध्रुवताराक कपालपर अमिट शिलालेख बनि अंकित भेल।

सीता सौन्दर्यमे रतिकेँ लज्जित करैत छथि। ओ विवेक आ मेधामे सरस्वती, शक्तिमे महाकाली, धैर्यमे धरित्री, सेवामे सावित्री, शौर्यमे नारायण, त्यागमे दधीचि आ शीलमे सागर छथि। आदर्श पुत्री, आदर्श पत्नी, आदर्श माता छथि। नारीक सहज मानवीय समस्त गुण केर सीमा सिया सुकुमारी छथि तेँ आराध्य देवीरूपमे सर्वमान्य छथि। साँचे जेँ सीता तेँ राम!

जानकी केर जे चारित्रिक वैशिष्ट्य अछि, औदात्य अछि, उच्चता अछि से सरिपहुँ अनुपम अछि। सीताक समता सिर्फ सीतेसँ संभव अछि विश्व वाङ्मय केर आन कोनो नारी चरित्रसँ नहि। ने कहियो एहन चरित्र पूर्वमे भेल आ ने फेर कहियो होयत! जय जानकी!!

[कर्णप्रिय, अंक 11, अप्रैल-जून, 2022]

मैथिलीक भारतीय साहित्यपर प्रभाव

नेनपनसँ सुनैत आबि रहल छी— कोस-कोसपर पानी बदले चारि कोसपर वाणी। सत्य अछि जे भाषा किछु-किछु दूरीपर बदलि जाइत अछि। इहो देखैत छी जे एकहि गाममे विभवशाली वर्ग आ मजूर वर्गक भाषामे किंचित् पार्थक्य रहैत अछि। भाषामे परिवर्तनक कारण अनेक अछि। सरलीकरण, ध्वनि विकार, अर्थ परिवर्तन, आव्रजन/पलायन, सम्पर्क भाषाक प्रभाव प्रभृति अनेक कारण सभक व्याख्या कएल जा सकैछ जे एतऽ हमर अखन अभिप्रेत नहि अछि।

सम्पर्क भाषाक प्रभाव अदौ कालसँ क्षेत्र भाषापर पड़ैत आएल अछि। भारतवर्षक सन्दर्भमे एकर भावात्मक एकताक सूत्र सात पावन तीर्थ, सात पवित्र नदी आ सात पुनीत पर्वतमे सहजतासँ ताकल जा सकैछ—

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका।
पुरी द्वारवती चैव सप्तैता मोक्षदायिका:॥

***

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु॥

***

महेन्द्रो मलय: सह्य: शुक्तिमानृक्ष पर्वत:।
विन्ध्यश्च परियात्रश्च सप्तैतेकुल पर्वत:॥

भारतवर्षक विभिन्न भागमे अवस्थित ई सात पावन तीर्थ, सात पवित्र नदी आ सात पुनीत पर्वत भारतवर्षक भावात्मक एकताक अन्त:सलिला वाहिका अछि। प्रत्येक उत्तर भारतीय रामेश्वरम् दर्शन केर मनोरथ रखैत अछि। एहिना दक्षिण

भारतीय सभक सेहन्ता रहैछ जे कमसँ कम एक बेर गंगाजीमे डुबकी लगा जन्म कृतार्थ करी। गुजरातवासी कामाख्या आबिकेँ अपन जन्म सार्थक मानैत छथि आ अरुणाचलवासी सुदूर पश्चिम अवस्थित द्वारकापुरी आबि दुःख हरो द्वारकानाथ शरणमे तेरो गाबि विभोर होइत छथि। जाहि देशमे एहन भावना हो, एहि लेल यात्रा हो ओहि देशमे कोनो ने कोनो सम्पर्क भाषाक अस्तित्व प्राचीन कालेसँ अवश्य रहल होएत। यैह महत्त्वपूर्ण कारण अछि जे प्रायः तीर्थस्थल सभक पंडा बहुभाषाविद् होइत छलाह। प्राचीन कालमे ई सम्पर्क भाषा संस्कृत छल आब एकर उत्तराधिकारिणी हिन्दी आ पूर्व केर शासकीय भाषा अंग्रेजी अछि।

मिथिलामे भाषिक प्रभाव वा परिवर्तनक सन्दर्भमे जँ गप्प करी तखन सर्वप्रथम विश्व वाङ्मय केर सर्वश्रेष्ठ महाकवि कालिदासक विक्रमोर्वशीयम् केर भाषा ध्यान आकृष्ट करैत अछि। एहि ग्रंथक चतुर्थ अंकमे शुद्ध अपभ्रंशक 14 पद आ प्राकृत-अपभ्रंश मिश्रित 17 पद अछि। एतऽ ई उल्लेख करब आवश्यक जे एस. पी. पंडित[1], पी डी गुणे[2], सुनीति कुमार चटर्जी[3] प्रभृति विद्वान् एहि पद सभकेँ अप्रामाणिक आ प्रक्षिप्त कहैत छथि मुदा विद्वान् सभक एक पैघ वर्ग— पं.भगवद्दत्त [4], पिशेल[5], वेलंकर[6], हीरालाल जैन[7], आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी[8], डॉ. अग्रवाल[9], डॉ. उपाध्याय[10], डॉ. तागारे[11], डॉ. रामचन्द्र ठाकुर[12], एहि पाँती सभक लेखक[13] प्रभृति विद्वान् एहि पद सभकेँ प्रामाणिक आ महाकवि रचित मानैत अछि। विस्तार भयसँ महाकवि कालिदास विरचित विक्रमोर्वशीयम् ग्रंथसँ शुद्ध अपभ्रंशक पद आ प्राकृत-अपभ्रंश मिश्रित पदसभसँ एक-एकटा उदाहरण प्रस्तुत अछि—

अपभ्रंशक पद—

मइं जाणिइं मिअलोअणी, णिसअरु कोइ हरेइ ।
जाव णु णवतडसामलि, धाराहरु वरिसेइ॥ 4/8

प्राकृत-अपभ्रंश मिश्रित पद—

सुरसुन्दरि जहणभरालस पीणुत्तुंगघणत्थणि
थिरजोव्वण तणुसरीरि हंसगई।
गअणुज्जलकाणणे मिअलोअणि भमंती
दिट्ठी पइं तह विरहसमुद्दंतरे उत्तारहि मइं॥ 4/59

(प्रथम पद केर भाव अछि— हमरा लगैत छल जे हमर मृगनयनी प्रियतमाकेँ कोनो निशाचर हरिकेँ पड़ा रहल अछि मुदा एतऽ बिजुरी चमकाबैत कारी मेघ मात्र पानि खसा रहल अछि। दोसर पद केर भाव अछि - नितम्बक भारक कारण मंथरगामिनी, ऊँच उठल पैघ-पैघ स्तन केर स्वामिनी, चिर यौवना, कृशोदरी आ हंसक समान गतिवाली हमर मृगनयनीकेँ निरभ्र आकाश समान स्वच्छ वनमे जँ अपने देखने होइ तखन हमरा एहि विरह समुद्रसँ उबारि लियऽ।)

एहि दुनू पद आ अन्य शेष 29 पद केर भाषिक प्रवृत्ति स्पष्ट रूपसँ पूर्वी अछि। गोटपकड़े अपवाद छोड़ि सर्वत्र 'क्ष' केर 'क्ख'मे विकास, 'ए' एवं 'ओ' केर ह्रस्व उच्चारण, अकारान्त करण कारकमे निरनुनासिक 'ए' विभक्ति, संबंध परसर्ग 'क' एवं लोकगीतक टेक प्रभृति प्रयोग भेल अछि जे वर्ण रत्नाकर, कीर्त्तिलता, कीर्त्तिपताका सहित अन्य ग्रंथमे प्रयुक्त अछि। भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण केर आधारपर महाकवि कालिदासक मैथिलत्व सेहो सोझाँ आनल गेल अछि।

84 सिद्धमे सरहपा, भुसुकपा, लुइपा आदि मैथिल छलाह आ हुनका सभक भाषा पूर्वी अछि एहिमे किनको सन्देह नहि भऽ सकैछ। एहि सभसँ विकासक सोपान चढ़ैत मैथिली विकसित भेल अछि। सामान्य भाषामे कहल जाय तऽ कोनो क्षेत्रमे दू प्रकारक भाषाक प्रचलन रहैछ। एक जेकर उपयोग विभवशाली वर्ग करैछ आ दोसर जेकर उपयोग आम लोक करैछ। लोकभाषामे जखन सर्जनात्मक रचना शुरू होइछ आ कालक्रममे ओ परिनिष्ठित रूप अंगीकार करैछ तखन तक पूर्व केर परिनिष्ठित भाषामे विभिन्न प्रभाव सभक कारणेँ विकार अबैछ आ ओकर स्वरूपमे परिवर्तन होइत अछि। लौकिक संस्कृत, वैदिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट, मैथिली प्रभृति भाषा सभक विकास क्रम प्राय: एहिना अछि।

महाकवि विद्यापतिक अवतरण भारतीय भाषा सभक लेल एक युगान्तकारी घटना अछि। मिथिलाक इतिहासमे सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्का सभक चलनसारि कएनिहार जनप्रिय राजा शिवसिंहक राजसभाक ई विलक्षण कविरत्न भारतीय भाषा सभकेँ अत्यधिक प्रभावित कएलनि। हिनकासँ पूर्व ज्योतिरीश्वर केर वर्णरत्नाकर वृहत्तर क्षेत्रमे कवि सभक लेल उपमाग्रंथ बनि आवश्यक भऽ चुकल छल। विद्यापतिक संस्कृतमे भूपरिक्रमा, गोरक्ष विजय, शैवसर्वस्वसार, पुरुष परीक्षा, विभागसार, गंगादानवाक्यावली आदि ग्रंथ अछि। अवहट्टमे कीर्त्तिलता आ कीर्त्तिपताका अछि। विद्यापतिक अक्षय आ अपूर्व कीर्त्तिकलश केर कारण संस्कृत वा अवहट्टक ग्रंथ नहि अछि। हुनकर अजस्र यशगंगाक गोमुखी मैथिलीक

पदावली अछि। ई तथ्य भाषा विकासक सोपान, नव भाषाक उत्पत्ति आ ओकर स्वीकार्यतापर यथेष्ट इजोत दैत अछि।

तीर्थाटन, आव्रजन, रोजगारक खोज, नव संबंध वा सम्पर्क आदि केर अतिरिक्त बंगाल आदि क्षेत्रसँ अध्ययनार्थ मिथिला आएल लोक सभक योगदान सेहो भाषा निर्माणमे रहल अछि। बाहरसँ अध्ययन हेतु आएल बटुकगण जखन आपस जाइत छलाह तखन हुनक मस्तिष्कमे ज्ञानक आभा तऽ रहिते छल हुनकर ठोरपर विद्यापतिक कोमल कान्त पदावलीक दू चारि गीत अवश्य रहैत छल। अपना क्षेत्रमे एहन काव्य सर्जन हेतु हुनका सभक प्रयास आ हुनका सभक देखाउँसमे आर लोकक प्रयास एकटा नव भावभित्तिक रचना संसार बनओलक जे कालान्तरमे ब्रजबुलि नामसँ प्रसिद्ध भेल। ओना ब्रजबुलि शब्दक प्रथम प्रयोग 19म शताब्दीक कंचनपुरा जिला 24 परगना वासी बाँग्लाकवि ईश्वरचन्द्र (1812-1859 ई.)क रचनामे भेल अछि। तथापि 15म शताब्दीसँ ब्रजबुलिमे रचना भेटैत अछि।

ब्रजबुलि मैथिलीक सदृश भाषा वा संगिनी भाषा अछि जाहिपर ब्रजी, बाँग्ला, असमिया, उड़िया प्रभृति भाषा सभक प्रभाव अछि। डॉ. सुकुमार सेन[14] मानने छलाह जे ब्रजबुलिक आधारभूत अंश मैथिली थिक आ ब्रजी/ बाँग्ला एकर बाह्य विन्यास कएने अछि। मुदा बादमे ओ अपन स्थापनासँ पलटि गेलाह आ कहलनि जे ब्रजबुलिक उत्पत्ति अवहट्टसँ भेल अछि। ओ ब्रजबुलिकेँ आदिभाषा सम्पदा आ अंतिम सर्वभारतीय आर्यभाषा कहलनि।[15] एहि स्थापनामे परिवर्तनक आधार कोनो नव भाषावैज्ञानिक शोध नहि छल मात्र हुनक व्यामोह छल। ओहिना जेना पड़ोस देशमे नव अयोध्याक परिकल्पना भऽ गेल। मैथिल आ गैर मैथिल अधिकांश विद्वान् ब्रजबुलिक आधारभूत भाषा रूपमे मैथिलीएकेँ मानैत छथि। डॉ. सुकुमार सेन सेहो मानने छथि जे अवहट्टपर मैथिली एवं अन्य भाषा सभक प्रभाव अछि।

मैथिलीक प्रभावसँ बंगाल, असम, ओडिशा प्रभृति राज्यमे ब्रजबुलिक विकास भेल।

12म शताब्दीमे सेन साम्राज्यक राजा लक्ष्मणसेनक समयमे संस्कृत केर सर्वमान्य कवि जयदेवक राधाकृष्ण विषयक पद धूम मचा देने छल। इहो एतऽ उल्लेखनीय अछि जे राजा लक्ष्मणसेनक राजसभामे मैथिल गोवर्द्धन, उमापति, श्रीधर सेहो छलाह। भाषाक एहन संक्रान्ति कालमे मैथिल मनीषी सभक पृथक् अवदान छल। निश्चित रूपसँ विद्यापति जयदेवसँ प्रभावित रहितो अपन मौलिक

प्रतिभा रूपी पारससँ स्पर्श करा राधाकृष्ण विषयक पद सभकेँ कंचन बना वृहत्तर क्षेत्रमे प्रचलित करा देने छलाह। हुनका अभिनव जयदेव सेहो कहल गेल।

ललित लवङ्ग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे
मधुकर निकर करम्बित कोकिल कुजति कुञ्ज कुटीरे
आ
नन्दक नन्द कदम्बक तरुतर धीर धीर मुरली बजाब।

केर ध्वन्यात्मक सौन्दर्य के बिसरि सकैछ! कालान्तरमे विद्यापतिक प्रभाव तेहन मौलिक आ भकरार स्वरूप धएलक जे पदावलीक प्रबल प्रवाहमे भाषाक भेद बहि गेल। ब्रजबुलिक प्रथम कवि यशोराज खाँक एहि पदपर विद्यापतिक प्रभावक सहज अनुमान कएल जा सकैछ—

एक पयोधर चन्दन लेपित आरे सहजई गोर
हिय धराधर कनक भूधर कोले मिलल जोर।
माधव तुअ दर्शन काजे।
आध पदचारि करत सुन्दरी बाहरि देहलि माझे।
दहिन लोचन कजरे रंजित धवल रहल वाम।
नील धवल कमले युगले चाँद पूजल काम।
श्रीयुत हसन जगत् भूषण सोइ रस यह जान।
पंच गौड़ेश्वर भोग पुरन्दर भने यशोराज खान।

उल्लेखनीय जे पंचगौड़ेश्वर हुसैन शाह (1493-1519 ई.)क राजसभामे यशोराज खाँ सुशोभित छलाह। ब्रजबुलिक एहि प्रथम पदपर विद्यापतिक प्रभाव स्पष्ट अछि। एहिसँ पूर्व माधवेन्द्रपुरी आ हुनक शिष्य विष्णुपुरीक महाप्रभु चैतन्यदेवपर प्रभूत प्रभाव पड़ल छल। महाप्रभु अपन पिता जगन्नाथ मिश्रक श्राद्ध करबाक लेल गया आएल छलाह। ओतहि माधवेन्द्रपुरी आ विष्णुपुरीक विद्वत्तासँ प्रभावित भेल छलाह। बादमे ओ राधाकृष्ण विषयक विद्यापतिक पदसँ ततेक प्रभावित भेलाह जे कीर्तन करैत-करैत बेसुध भऽ जाइत छलाह। सम्पूर्ण बंगाल, असम, ओडिशा आदि क्षेत्र सरिपहुँ विद्यापतिक राधाकृष्ण विषयक पद केर दिव्य जऽड़ी सुँघि मोहित भऽ

चुकल छल। स्वाभाविक रूपसँ स्थानीय साहित्यपर मैथिलीक स्पष्ट प्रभाव छल। विद्यापतिक पद—

अंकुर तपन ताप की कहब वारिध मेघ

केर प्रभाव मुरारिगुप्त (बाँग्ला कवि)पर देखल जाय—

तपत किरण यदि अँगना दगधल की करब जल अभिषेके।
दुख भरे प्राण बाहिरे यव निकसवे की करब औषध विशेषे।
मानिनि एतऽ समापह माने।

विद्यापति आ चण्डीदास समकालीन छलाह। राधाकृष्ण विषयक वैष्णव पदावलीक पदमे हुनक सहजिया सम्प्रदाय, रागानुगा प्रेमाभक्ति आ परकीया भावाभिव्यक्तिक सहज प्रस्तुति भेल अछि। बाँशुली देवी मंदिरमे रहलाक बादो चण्डीदासकेँ राममणि धोबिनक प्रेममे पड़ि प्रमत्त प्रेमीक प्रतीक बनि जएबाक कारणेँ अखनो बंगालमे उत्कट प्रेमीकेँ पागला चण्डी कहबाक परम्परा अछि। हिनक रचनामे सेहो ई भाव आएल अछि। हिनकर राधा कृष्ण लेल ओहिना उन्मत्त रहैत छथि जखन कि विद्यापतिक राधा सद्य:यौवना आ विलासप्रिया मात्र छथि। अंतमे चण्डीदासक राधा 'विरति आहारे राङ्गावास परे येमन योगिनी पारा' जकाँ उन्मत्त संन्यासिनी बनि जाइत छथि। मुदा विद्यापतिक राधा चिर यौवना आ प्रेमशीला रमणी रहि जाइत छथि। चण्डीदास एवं ज्ञानदासपर विद्यापतिक प्रभाव सर्वत्र झलकैत अछि। चण्डीदास विद्यापतिसँ कतेक प्रभावित छथि ई किछु उद्धरणसँ स्पष्ट भऽ जाएत जाहिमे मात्र भाव साम्ये नहि अपितु शब्द साम्य सेहो भेटैत अछि—

विद्यापति— *दय तुलसी तिल देह सौंपल देया जनि छाड़ब मोर।*
चण्डीदास— *श्याम अनुरागे ए तनु बेचिनु तिल तुलसी दिया।*
ज्ञानदास— *श्यामेर राङ्गापाय ए तनु सौंपेछी तिल तुलसी दिया।*
विद्यापति— *अविरल नयन बारि झर निर्झर जनि साओन घनमाला।*
चण्डीदास— *ओ दुटी नयाने बहिच्छे सघन श्रावन मेघेर माला।*
विद्यापति— *हठ नहि करबे आइति पाय भूखल नहि दुहु कओरे खाय।*
चण्डीदास— *भूखिल हयिलेँ कन्हाञि दुई हाथे ना खाइए।*

ब्रजबुलि आ बाँग्लाक श्रेष्ठ कवि ज्ञानदासक पदपर विद्यापतिक प्रभाव परिलक्षित होइत अछि—

लहु लहु मुचकि हासि चलि आओलि, पुन-पुन हेरसि फेरि,
जनु रतिपति सञे मिलन रंगभूमे, ऐछन कएल पुछेरि॥
धनि हे, बुझलुँए सब बात॥

***

कानु अनुरागे हृदय भेल कातर रहइ न पारइ गेह।
गुरु-दुरजन-भय किछु नहि मानय चीर नहि सञ्चरु देह॥
देख देख अनुराग रीत।
घन अन्धियार भुजग भय शतशत तनु नहि मानय भीत॥
सखीगण तेजि चलिलि एकेश्वरी हेरि सहचरिगण धाय।
अद्‌भुत प्रेम तरंगे तरंगित तेजि संग नहि पाय॥
चललि कलावति अतिशय रसभरे पंथविपंथ नहि मान।
ज्ञानदास कह एहन अपरुव नह भनहि उजोरल कान॥

अभिसारिका राधाक एहन मनोरम चित्र विद्यापतिक प्रभावसँ आएल अछि। वासुदेव घोषक ब्रजबुलिक ई पद देखल जाय—

निर्मल गोरा तनु कपिल कांचन जनु हेरैति भऽ गेल भोर।
माङ्भुजंगमे दंशल मझुमन अन्तर काँपय मोर।
सजनि जखन हम पेखलु गोरा।
आकुल दिग विदित ना पाइए मदन लालसे मन भोरा।

हिनक भ्राता माधव घोष आ गोविन्द घोषक अनेक ब्रजबुलिक पद उपलब्ध अछि। रामानन्द वसुक एहि पदपर मैथिलीक प्रभाव स्पष्ट अछि—

मलयज मिलित यमुना जल शीतल वंशीवट निर्माण।
निकटहि नीप कदम्ब तरु कुसुमित कोकिल भ्रमर करु गान।
तारतले तीरिभंग तरुण तमाल तनु वामे रसवति राइ।
एक नव जलधर कोरे विजुरी थिर कांचन रतन मिसाइ।

बंगालमे ब्रजबुलिक बहुत रास रचना भेल अछि। समस्त रचनापर विद्यापतिक प्रभाव अछि। सोलहम शताब्दीक अन्त आ 17म शताब्दीमे बंगालमे श्रीनिवास आचार्य, नरोत्तम दास आ श्यामानन्द वैष्णव त्रिमूर्त्ति रूपमे प्रसिद्ध भेल छलाह। एहि त्रिमूर्त्तिक रचना सभक उदाहरण देखल जाय—

प्रेमक पञ्जरि सुन गुण मञ्जरी तहुंसे सकल सुखदायी।
तोहारि गुणागुण चिन्तई अनुखन मझु मन रहल बकाइ।
हरि-हरि कवे मोर शुभदिन होय।
किशोरा-किशोरी पद सेवकेर सम्पद
तुया गुणे मिलब कि मोय।...
तुआ सेवि धन गति निश्चय निश्चय अति मझु मने इह परमाणे।
कहइ कातर भाषे पुनःपुनः श्रीनिवासे करुणाय करु अवधाने।

(श्री निवास आचार्य)

राइ हेरल यबसौं मुख इन्दु। उछलल मन माहा आनन्द सिन्धु।
भाँगल मान रोदनहिँ मोर। कानु कमल केर मोछइ लोर।
मान जनित दुख सब दूर गेल। दुहु मुख दरसने आनन्द भेल।
ललिता विसाखा आदि यत सखिगन। आनन्दे मगन भेल दुइजन।
निकुंजेर माझे वों हार केलि विलास। दूरहि दूरे रहु नरोत्तमदास।

(नरोत्तमदास)

मंगल आरति युगलकिशोर।
जय जय करितहिँ सखिगण भोर॥
रतन प्रदीप करे टलमल थोर।
निरखत मुख विधु श्याम सुगौर।...
गाओत शुक पिक नाचत मोर।
चांद उपेखि मुख निरखय चकोर।
बाजत विविध यन्त्र घन घोर।
श्यामानन्द आनन्दे बाजये जय तोर।

(श्यामानन्द)

एहि वैष्णव त्रिमूर्त्तिक एक पैघ शिष्य परम्परा छल जाहिमे राय वसन्त, गंगाराम द्विज, कविरंजन विद्यापति, रायशेखर, मोहनदास, कविवल्लभ आदि प्रख्यात छलाह।

बंगालमे ब्रजबुलिक कवि सभक एक अविच्छिन्न परम्परा छल जाहिमे वंशीवदनदास, नयनान्द, वृन्दावनदास, देवकीनन्दनदास, शिवानन्द चक्रवर्ती, शिवानन्द सेन, यदुनन्दनदास, माधवदास, द्विज हरिदास, माधवीदास, पुरुषोत्तमदास, नरोत्तमदास, अनन्तदास, बलरामदास, कानुरामदास, कृष्णदास, राधामोहन ठाकुर, नरहरि चक्रवर्ती, चन्द्रशेखर, शशिशेखर, जनमेजय मित्र, कृष्णदास कविराज, गोविन्दराज कविराज, वंकिमचन्द्र, एम मधुसूदन दत्त, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, राजकृष्ण राय, गुरुप्रसाद सेनगुप्त प्रभृति मनीषी सभक नाम अछि। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर भानुसिंहक नामसँ ब्रजबुलिमे रचना कएलनि जे 1886 ई.मे भानुसिंहेर पदावली नामसँ प्रकाशित भेल छल। हिनक एक पद देखल जाय—

देखि सजनि श्याम राय नयन प्रेम उठल जाय
मधुर वदन अमृत सदन चन्द्रमाय निन्दि छे।
आओ आओ सजनि वृन्द देखि सजनि श्रीगोविन्द
श्याम को पदारविन्द भानुसिंह वन्दि छे।

एहिमे 'चन्द्रमाय निन्दि छे' आ 'भानुसिह वन्दि छे' मात्र बाँग्लाक लेप मानि सकैत छी। शेष पद मैथिलीक भाव आ प्रभावकेँ परिलक्षित करैछ।

मैथिलीक प्रभाव बंगालपर कतेक गहींर छल ई एहि तथ्यसँ अकानल जा सकैछ जे बंगलामे रचना कएनिहार अधिकांश कवि मैथिलीक सदृश भाषा ब्रजबुलिमे सेहो रचना कएलनि। कदाचित् कोनो कविक काव्य केर श्रेष्ठता आ जनप्रियताक यैह मानदंड रहल हो।

मैथिलीक बंगाल यात्राक बाद असम केर यात्रासँ पूर्व किछु ऐतिहासिक आव्रजनपर इजोत देब उचित। त्रिपुराक राजा आदि धर्मपा (दुर्गुरपा, दाँगरपा, धर्म माणिक्य प्रथम नामसँ सेहो प्रसिद्ध)क राजत्व काल (1431-62 ई.)मे हुनक राजमहलपर गिद्ध बैसि गेल छल। अपशकुनसँ चिन्तित धर्मपा एकर शुद्धिकरण आ परिहारक लेल पण्डितगणसँ परामर्श कएलनि। ज्योतिष्टोम यज्ञ करबाक निर्णय भेल। राज्यमे एहन यज्ञ सम्पन्न करओनिहार होता, उज्गाता, अध्वर्यु, ब्रह्मा,

ऋत्विज आदि वैदिक ब्राह्मण केर अभाव देखि ओ मिथिलाक राजा बलभद्रसँ यज्ञकर्म निपुण ब्राह्मण पठएबाक अनुरोध कएलनि। बलभद्र मिथिलासँ वत्स, वात्स्य, भारद्वाज, कृष्णात्रेय आ पाराशर गोत्रीय यज्ञकर्म निष्णात वैदिक ब्राह्मण क्रमश: श्रीनन्द, आनन्द, गोविन्द, श्रीपति आ पुरुषोत्तमकेँ मिथिलासँ त्रिपुरा पठओलनि। ओ सभ ओतऽ जा सफलतापूर्वक यज्ञ सम्पन्न करओलनि। ई यज्ञ वर्तमान बाँग्लादेशक श्रीहट्टान्तर्गत भानुगाछ परगनाक मंगलपुर गाममे भेल छल। यज्ञ समाप्तिक बाद आदि धर्मपा हिनका सभकेँ अकूत दान-दक्षिणा, ब्रह्मोत्तर-शिवोत्तर आ मान-सम्मान दैत एतहि बसि जएबाक अनुरोध कएलनि। ई सभ गोटे अपन परिजनकेँ बजा एतहि बसि गेलाह। आदि धर्मपा 1458 ई.मे राजमाला ग्रंथ केर शुरूआत राजपुरोहित दुर्लभेन्द्र आ दू अन्य ब्राह्मण सुखेश्वर आ बाणेश्वरक माध्यमसँ करओलनि। त्रिपुराक इतिहासक ई आदिग्रंथ अछि। बादमे 19म शताब्दीमे महाराज कृष्ण किशोर माणिक्यक समयमे ई कुल छ: खंडमे पूर्ण भेल छल। आदि धर्मपा द्वारा मिथिलाक विद्वान् सभकेँ देल गेल दानपत्रमे उल्लेख अछि—

त्रिपुरा पर्वताधीश: श्रीयुक्तादिधर्मपा:
समाज्ञं दत्त पत्रं च मैथिलेषु तपस्विषु।
वत्स-वात्स्य-भारद्वाज-कृष्णात्रेय-पराशरा:
श्रीनन्दानन्द गोविन्द श्रीपति पुरुषोत्तमा:।
प्रतीच्यानुत्तरस्यां च वक्र गा क्रोशिरा नदी
दक्षिणस्यं च पूर्वस्यां हाङ्कनाकोकिका पुरी।
एतन्मध्यो सशस्यां या टेङगकरीकूकिकर्षताम्
प्रगल्भदत्तो तद्भूमिं तेषु पंचतपस्विषु।
मकरस्थे रवै शुक्ले पंचदशीतिथौ
त्रिपुराचन्द्र बाणाब्दे प्रदत्ता दत्त पत्रिका।

दानपत्र 4 जून 1843 ई.केँ महाराज कृष्ण कुमार माणिक्य श्रीहट्ट (सम्प्रति बाँग्लादेश)क अदालतमे चलि रहल एक वादमे प्रस्तुत कएने छलाह। सम्प्रति ई शिलांग अदालत केर अभिलेखागारमे संरक्षित अछि। एहिना 15म शताब्दीमे कूचबिहारक राजा विष्णु सिंहक समयमे बहुत रास मैथिल विद्वान् ओतऽ गेल छलाह। एहि कामता राज्यक प्रधानमंत्री मैथिल करण कायस्थ नरहरि दास छलाह।

हिनक अवसानोत्तर पुत्र पयोनिधि सेहो एहि पदपर सुशोभित भेल छलाह। पयोनिधि पुत्र कवीन्द्र असमिया कायस्थ सभक मध्य कुलीन प्रथा केर शुरूआत कएने छलाह। त्रिपुरामे अनेक मैथिल विद्वान् रहैत छलाह।[16]

मैथिलीक असमपर प्रभावक सन्दर्भमे एहि कामता (कूचबिहार) राज्यक राजसभाक महत्त्व अत्यधिक अछि। 1540 ई.मे एहि राज्यक अधिपति नर-नारायण मल्लदेव छलाह। मैथिल विद्वान् म.म. देवनाथ ठक्कुर तर्कपंचानन अपन 'तंत्र कौमुदी'मे एहि मल्लदेवकैं अपन आश्रयदाता कहने छथि।[17] मल्लदेवक भणितासँ हिनक अनेक मैथिली पद उपलब्ध अछि।[18] शंकरदेव एहि राजसभाक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व छलाह। हिनका मैथिल विद्वान् पं. जगदीश मिश्र भागवत सुना चुकल छलाह। राजसभामे मैथिल कवि धीरेश्वर आ अनिरुद्धक साहचर्य सेहो शंकरदेवकैं भेटल छल। ओ स्वाभाविक रूपसँ मैथिलीसँ प्रभावित छलाह आ असममे मैथिली वा ब्रजबुलिक समावेश अपन कृति सभमे कएलनि। इहो महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे असम केर अंकिया नाट सभक उद्‌भव मैथिलीक कीर्तनिया नाटक केर परम्परासँ भेल अछि। असमी 'भओना' अखनो असमक मठ सभमे होइत अछि। एहिपर मैथिलीक प्रभाव अखनो देखल जा सकैछ।

असम केर अंकिया नाट आ वरगीतपर मैथिलीक विशेष प्रभाव अछि। शंकरदेवपर ई प्रभाव देखल जाय—

श्यामल तनु पीत अम्बर लासा। वदन छन्द रूचि ईषत् हासा।
नयन पंकज भुज लम्बित जानु। कंठे कौस्तुभ नव शोभित भानु।
हार मुकुटमणि कुण्डल डोले। चरण पंकज मणि मंजिर बोले।
शशधर कोटि कान्ति परकाशा। शंकर कह उहि केशव दासा।

शंकरदेव दीर्घजीवी (1449-1568 ई.) छलाह आ रुक्मिणी हरण, पारिजात हरण, कालिय दमन, श्रीराम विजय नाट, केलि गोपाल, पत्नी प्रसाद प्रभृति रचना कएलनि। हिनका असम केर सर्वश्रेष्ठ सन्त सुकवि आ साहित्यिक विभूति मानल जाइत अछि। ई एकशरणीआ सम्प्रदाय (एहिमे कृष्ण छोड़ि आर किनको अभ्यर्थना नहि होइत अछि)क प्रवर्त्तक छलाह। शंकरदेवक शिष्य आ दौहित्र माधवदेव (1509-1596 ई.) भूषण हरण, जन्म रहस्य, आदिकाण्ड, नामघोषा, ब्रह्मा मोहन, अर्जुन भंजन आ विभिन्न रास एवं झुमरा सभक यशस्वी रचयिता छलाह। मैथिल वैष्णव सन्त विष्णुपुरीक ग्रंथ भक्तिरत्नावलीक असमियामे अनुवाद कएने छलाह। हिनको रचनापर मैथिलीक प्रभाव स्पष्ट अछि—

धन धन भुज दोहों मेलि आलिंगन चुम्बत नयन मिलाय
हरिकहु कंठे आलिंगि रहु राधे नयने नयन छिपाय
परमानन्द अनंग रस सागर तथिए भजु रहु माय
हरि को परशरा से विचुरि रहत तनु माधव दीन गुण गाय।

(रसभुरा)

माधवदेवक भाषा ब्रजबुलि अछि। यत्र-तत्र अवधी आ ब्रजीक प्रभाव सेहो अछि। हिनकर बाद शिष्य गोपाल अता (1533-1608 ई.)क जन्म यात्रा आ गोपी उद्धव संवाद, द्विजभूषण (1507-1577 ई.)क शंकरदेव जीवन चरित्र आ अजामिल उपाख्यान, रामचरण ठाकुर (1521-1600 ई.)क शुद्ध ब्रजबुलिमे कंसवध नाटक अछि। रामचरण ठाकुरक पुत्र दैत्यारि ठाकुर (1564- 1622 ई.) शंकरदेव चरित् आ माधवदेव चरित् सभक असमियामे रचना कएलनि। हिनकर नाटक नृसिंह यात्रा आ स्यमन्तक हरण केर गीत सभक रचना ब्रजबुलिमे भेल अछि। बादमे रूचिदेव (शतस्कन्ध-वध), रूचिदेवसुत (कुमार हरण), गोपाल (सीताहरण, दुर्वासा भोजन आ बलि छलन) आ माधव (भीष्म निर्वाण आ सिन्धुरायात्रा) एहि धाराकेँ आगू प्रवहमान कएलनि।

बंगाल आ असमपर मैथिलीक प्रभावक दिग्दर्शन करएलाक बाद आब ओडिशा दिशि बढ़ैत छी। महाकवि विद्यापतिक समकालीन ओडिशाक पाटनागढ़क राजा वैजलदेव छलाह। सम्बल जिलाक गंधमादन पर्वत केर उपत्यकामे अवस्थित पइकमल नृसिंह मन्दिरमे लागल शिलालेखमे देल गेल तिथिक गणनासँ स्पष्ट अछि जे राजा वैजलदेव एहि मन्दिरक न्योँ 17 मार्च 1413 ई.केँ राखने छलाह। एहिसँ हुनक विद्यापतिसँ समकालीनता सिद्ध होइत अछि। विद्यापतिक भणितामे वैजलदेवक नाम सेहो आयल अछि—

भनइ विद्यापति अभिमत देवा।
चन्दल देविपति वैजलदेवा॥
*****
भनइ विद्यापति पुन पुन सेव।
चन्दल देविपति वैजनाथ देव॥

रूप नारायण विजय नारायण वैजनाथ शिवसिंह।
मिलन भावि दुहुँक करु वर्णन तहु पद कमलक भृंग॥

नृप वैजलदेव वा वैजनाथक वर्णन शिवसिंहक संग करब उद्घाटित करैछ जे विद्यापति अपन अधिपति संग हुनको प्रति अतिशय उदार छलाह। दुनू मध्य सख्य भाव छल। मुरारि मिश्रक अनर्घराघव केर प्रस्तावनासँ स्पष्ट अछि जे विद्यापतिक नाटिका मणिमंजरीक प्रदर्शन जगन्नाथपुरीमे रथयात्राक अवसरपर भेल छल।[19]

उपर्युक्त विश्लेषणसँ स्पष्ट अछि जे विद्यापति आ वैजलदेव एक दोसरासँ सुपरिचित छलाह। वैजलदेवक भाषासँ ई पूर्णतः फरिछा जाओत। वैजलदेव कृत केलि वर्णन देखल जाय—

पहिलहि दरसन वसन उतारि। कैल आलिंगन बाँहि पसारि॥
अन्तरे पयिसि रहल कुच भाल। उशसि उशसि जिय उदय हमार।
कयिवर रे सखि सुबुध सयान। कलिवर करे कमलिनी देरे आनि।
कुचे लो उपर नखे रो पहार। सुपथ ना मानय नाह गँवार।
घामल तनु सब दीर्घ निस्वास। पेलि पराउ नहि पाउ उस्वास।
नृप वैजनाथ कह एहि दुख ठोर। मदन श्रीमुख कुलिस कठोर।

एहि पदमे जँ नृप वैजनाथक स्थानपर भनइ विद्यापति कऽ देल जाय तखन ई अनुमान करब अत्यन्त दुष्कर जे ई पद विद्यापतिक नहि छी। ई छल विद्यापतिक प्रभाव वैजलदेवपर! मैथिलीक प्रभाव उड़ियापर!!

राय रामानन्द उड़ीसाक गजपति राजा प्रतापरुद्र (शासन काल 1504-1532 ई.)क अधीन विद्यानगरक शासक छलाह। चैतन्य महाप्रभु आ वैजलदेवक भेंट 1511 ई.मे भेल छल। दू अलग-अलग प्रदेशक गैर मैथिल सभक वार्तालापक माध्यम ब्रजबुलिए छल। रामानन्दक ई पद सुनैत मातर महाप्रभु चैतन्य भावविभोर भऽ कीर्तन करैत बेसुध भेल छलाह—

पहिलहि राग नयन रंग भेल। अनुदिन बाढ़ल अवधि ना गेल।
न सो रमण ना हम रमणी। दुहुँ मन मनोभव पेशल जनि।
ए सखि सो सभ प्रेम कहिनी। कानु ठामे कहबि बिछुरह जनि।
न खोजल दूती न खोजल आन। दुहु केर मिलने मधव पंचवाण।
अब सोइ विरागे तुहुँ भेल दूति। सुपुरुष प्रेमक ऐछन रीति।
वर्द्धन रुद्र नराधिप मान। रामानन्द राय कवि मान।

रामानन्द केर अतिरिक्त जगन्नाथ दासक सेहो ब्रजबुलिमे रचना भेटैत अछि। चम्पति राय (1479- 1532 ई.) विद्यापतिसँ ततेक प्रभावित छलाह जे ओ अपन भणितामे विद्यापतिक उल्लेख तक कएने छथि—

सुन सुन माधव निर्दय वेह। कि कवहु ऐछन तोहरि सुलेह।
***
विद्यापति कवि चम्पति भान। राइ न हेरब तोहरि बयान।

कानुराम दास, माधवी दासी, चन्द्रकवि, यदुपति दास प्रभृति कवि सभक ब्रजबुलिमे पद उपलब्ध अछि।

बंगाल, असम, मिथिला आ नेपालमे तंत्र मंत्रक विशिष्ट स्थान रहल अछि। ओहि समयक सामाजिक जीवनमे मिथिलामे ओझा-गुणी, डाइन-जोगिन, नैना-जोगिन, हिरिया जिरिया आदि, नेपालक पहाड़मे झंक्री आ तराई क्षेत्रमे धाइम आदि केर महत्वपूर्ण स्थान छल। नेपालक थारू जातिमे तंत्र-मंत्र आ गीत-नृत्य जीवनक अभिन्न अंग अछि। हिनका सभक चाँचर गीत, तंत्र-मंत्र आ संस्कार गीतादि मैथिलीक सम्पदा थिक। एकटा चाँचर गीत देखल जाय—

ओही पार रसिया बसिया बजावल
अही पार तरोनी नहाबे लला हो।
बसिया सबद सुनि हिया मोरा साले
चित्त नाही रहे मोरा थीर लला हो।
साँझ पड़ीये गेल जाड़ लगीये गेल।
घरे घरे धुनिआँ रमाये लला हो।
लया लया कमिनी मने मन झुरमये
कखनी होयत घड़ी साँझे लला हो।

एहिना डाकार्णव केर लिपि मिथिलाक्षरक प्राचीन रूप अछि आ एकर भाषा अवहट्ट आ मैथिलीक मिज्झर अछि।

इहो उल्लेखनीय तथ्य अछि जे राजा शिवसिंहक रणमे शहादत केर बाद विद्यापति राजपरिवारकँ लऽकँ सप्तरीक बनौलीमे द्रोणवार कुलोद्भव पुरादित्य

ओतऽ सुरक्षित कएलनि। लिखनावलीक रचना एतहि मानल जाइछ। एहिना इहो उल्लेखनीय अछि जे नान्यदेव 10 जुलाई 1097कँ सिमराँवगढ़मे वास्तु स्थापत्य कएलनि जे सम्प्रति नेपालक बारा जिलामे अछि। सिमराँवगढ़सँ पलायन केर बाद हरिसिंहदेव द्वारा नेपालमे कर्णाट शासनक दोसर पारी शुरू करबाक बात सेहो कहल जाइछ। मुदा एहिपर नेपालक इतिहासकार सभमे मतभिन्नता अछि। कर्णाट ठकुरी आ मल्ल सभक बीच चलैत संघर्ष कर्णाटी जगत सिंहक बेटी राजल्ल देवीक विवाह जयस्थितिमल्ल संग भेला सन्ताँ समाप्त भेल। समय केर एतेक पैघ अन्तराल आ मिथिलाक दुनू भागक अनादि कालसँ अबैत संबंधमे भाषापर प्रभाव पड़ब स्वाभाविक अछि। थारू गीतक भाषा, भास, भाव आदिपर विद्यापतिक प्रभाव अत्यन्त स्पष्ट अछि। मानल जाइत अछि जे किराती अक्षरक स्थानपर लोहांगसेन किरात प्रदेशमे मिथिलाक्षरक प्रयोग शुरू करओलनि।[20]

बादमे जयस्थितिमल्लक पौत्र यक्षमल्लक बाद विभक्त शासन केर तीनू केन्द्र कान्तिपुर (काठमांडू), ललितपुर (पाटन) आ भक्तपुर (भातगाँव)मे मैथिलीक विशेष प्रभाव रहल। तीनू केन्द्रक राजा लोकनि मैथिलीक विद्वान् सभक सम्माने नहि कएलनि ओ सभ स्वयं मैथिलीक श्रीवृद्धिमे रचनात्मक सहयोग कएलनि।

पाटन शाखाक नृपति नरसिंहमल्ल (1622-57 ई.) विद्यापतिक भाव आ भाषा दुनूक अनुसरण कएलनि। एहि पदसँ ई स्पष्ट होयत—

सजल नलिन दल सेजे। देह दइ हुतवह तेजे।
तरब कोन परकारे। विरह पयोनिधि पारे।
सौध सहस सखि पासे। जनि सुन वन भेल वासे॥

एहि ललितपुर शाखाक राजा विष्णुमल्ल स्वयं नाटक उषाहरण केर प्रणेता छलाह आ हिनका सभक समय मैथिलीक विशेष उन्नति भेल।

भातगाँव शाखाक राजा विश्वमल्लक समय (1533 ई.) प्रसिद्ध नाटक विद्याविलाप सहित कतेको नाटक रचित भेल। एहि शाखाक जगज्ज्योतिर्मल्ल (राज्यकाल 1618-33 ई.) बहुमुखी प्रतिभाक स्वामी छलाह। हिनक कुञ्जविहार, मुदितकुवलयाश्व, हरगौरीविवाह, नानारागगीतसंग्रह, गीतपंचासिका, रामभजनसंग्रह दशावतारनृत्यम् आदि उपलब्ध अछि। एक उदाहरण प्रस्तुत अछि—

तिमिर मलिन जग किरणहि धोय।
दिनकर उदित मुदित सब होय॥
सुजन कमल जत होअ सानन्द।
पाप हृदय कैरव कुल छन्द।
एहन दिवाकर के नहि सेव।
अहनिश नाम हृदय तसु लेब।
नृप जगजोति भन मन अवधारि।
तोह शिवदायक दुरित विदारि॥

हिनकर पौत्र जगतप्रकाशमल्लक नामसँ राष्ट्रीय अभिलेखागारमे उषाहरण, नलीय नाटकम्, पारिजात हरणम्, प्रभावती हरणम्, मलयगन्धिनी, मुलशशिदेवोपाख्यान आ माधवमालति केर पाण्डुलिपि सुरक्षित अछि।

हिनक पुत्र सुमतिजितामित्रमल्ल केर कुमार प्रादुर्भाव, मदालसा हरण आदि रचना राष्ट्रीय अभिलेखागारमे राखल अछि। हिनकर पुत्र भूपतीन्द्रमल्ल गान्धर्व विद्यानिपुण आ सुकवि छलाह। हिनको अनेक रचना आ एक भाषागीत नामक संगीत संग्रह राष्ट्रीय अभिलेखागारमे सुरक्षित राखल गेल अछि। हिनक पुत्र राजा राजा रणजीत मल्ल केर समय हिनक दरबारी धनपति माधवानन्द कामकन्दला नाटक लिखलनि। एहिमे प्रथम बेर मैथिलीमे मंगलाचरण लिखल गेल छल।

हिन्दीक विकासमे मैथिलीक योगदान केर सम्यक् मूल्यांकन अखन धरि नहि भेल अछि। विद्यापतिकेँ हिन्दीक पाठ्यक्रममे जोड़ि हिन्दीक कर्ता-धर्ता अपन काजक इतिश्री कऽ देलनि। बहुत कम लोककेँ ज्ञात अछि जे हिन्दीक पुरोधा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850-85 ई.) जखन गद्यमे खड़ीबोली आ काव्यमे ब्रजीक पक्षधर छलाह तखन मैथिलीक चन्दा झा (1831-1907 ई.) खड़ीबोलीमे सेहो काव्य रचलनि।

कचहरी देवी सोच है तेरा नाम।
अन्यायी को दंड देतिहाँ को नहि करै सलाम।
जो कोई नीति रीतिसौँ चलता वाको सुख परिणाम।

***

गुम हो गई नाटिका अब ही हुकुम कौन अब देता है।
तन हाकिम को पता नहीं है कर को जन से लेता है।

सन्दुक बन्द कबर में सोता जो पृथिवी जन जेता है।
यमराजा कारागृह अन्तर को कह कैदी केता है।

महाकवि चन्दा झाक पुरुष परीक्षा (विद्यापति)क हिन्दीमे अनुवाद सेहो भाषिक दृष्टिसँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

दुर्भाग्यवश कवीश्वर चन्दा झाक एहि महत्त्वपूर्ण अवदान सभक समुचित मूल्यांकन नहि भेल। यथार्थमे भारतेन्दुक प्रचंड आभासँ हिन्दी साहित्यक इतिहासकार लोकनिक आँखिमे तेहन चकचौन्ही लागल जे ओ सभ विद्यापतिसँ आगाँ देखबे नहि कएलनि। यैह स्थिति मिथिलाक सन्त काव्य परम्परा आ वीर काव्य परम्पराक मूल्यांकनमे सेहो अछि।

प्राय: एक भ्रम रूढ़ भेल अछि जे मिथिलांचलमे संस्कृतक बाद मात्र मैथिलीमे रचना भेल अछि। ई तथ्यात्मक नहि अछि। सन्त लालचदासक रामजन्म आ सन्त सूरजदासक हरि चरित् अवधी - ब्रजीमे रचित भेल अछि। हिनका सभक अतिरिक्त सन्त कबीर, सन्त साहेबरामदास, सन्त लक्ष्मीनाथ गोसाई प्रभृति सन्त सभक भाषासँ आँखि विस्फारित होइछ। वीर काव्य परम्परामे तऽ आर आश्चर्यजनक तथ्य अभरैछ। मँगरौनी निवासी ज्यो. सोनमणिक ज्येष्ठ पुत्र मनबोध (1717-1788 ई.)क भाषा देखल जाय—

कतओक दिवस जखन बीति गेल।
हरि पुनि हथगर गोरगर भेल।

(कृष्ण चरित)

आ कनिष्ठ पुत्र लालकवि(1720-1790 ई.)क कन्दर्पीघाट समर वर्णन केर भाषा देखल जाय—

रामनारायण भूपतेँ कह्यो मुखालिफ जाय।
हाकिम को मिथिलेश ने दीन्हो अदल उठाय॥
सीर करो तिरहूति को ताके रचो उपाय।
फौजदार महथा भए संग सलावति राय॥

(कन्दर्पीघाट समर वर्णन)

एहि पदसभक भाषापर अवधी-ब्रजीक प्रभाव अछि। 'को' आ 'ने' स्वयं सभटा स्पष्ट कऽ दैत अछि। एक परिवारमे दू सहोदर केर दू भाषा आश्चर्यचकित करैछ। इहो कम उल्लेखनीय नहि अछि जे लालकविक गौरीस्वयंवरक भाषा मैथिली अछि मुदा कन्दर्पीघाट समर वर्णनमे ओ अवधीक ओज आ ब्रजीक साजसज्जा स्वीकार करैत छथि। एहिसँ एतेक तऽ स्पष्ट अछि जे मात्र मातृवाणीएमे रचना नहि भेल अछि। ई अलग तथ्य जे रचना केर आन भाषापर मातृवाणीक प्रभाव स्पष्ट रहैछ। मिथिलांचलक मध्यकालीन वीर काव्य परम्पराक श्रीसम्पन्न करबामे एक विशेष परम्पराक सोनकवि, लालकवि, गोपालकवि, हेमकवि, धीरकवि, चन्द्रकवि, ऋतुराजकवि प्रभृति कवि सभक महत्त्वपूर्ण अवदान अछि। एहि अवधी-ब्रजीक रचनापर स्वाभाविक रूपसँ मैथिलीक स्पष्ट प्रभाव अछि। ई एकटा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि। आव्रजन/पलायन केर भाषापर प्रभावक चर्च पूर्वमे भेल अछि। एहि सन्दर्भमे ब्रजस्थ मैथिल कवि सभक भाषा सेहो महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। डॉ. राधे बिहारी शाल सक्सेना राकेश अपन ग्रंथ ब्रजस्थ मैथिल कविमे कुल 22 ब्रजस्थ मैथिल कवि सभक उल्लेख कएने छथि। पं. माणिक ठाकुर, पं. नवल किशोर नील, प्रज्ञाचक्षु देवीसुर, पं. घूरेलाल झा सूरकवि, पं. प्रेमदत्त मिश्र 'मैथिल', पं. रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र', वल्लभ सखा प्रभृति ब्रजीक अध्येता सभक मैथिलीक प्रति सेहो नैसर्गिक अनुराग छल। बहुत गोटे मैथिलीमे सेहो रचना कएलनि। हुनका सभक ब्रजीपर मैथिलीक प्रभाव अछि। हुनका सभकेँ अपन मैथिलत्वपर गुमान अछि। गर्वसँ ओ लोकनि एहि तथ्यकेँ स्वीकार करैत छथि।

आब अंतमे विद्यापतिक मैथिलीक आन भाषापर पड़ल प्रभावक किछु उदाहरण विन्दु स्वरूप प्रस्तुत करैत छी। ई प्रभाव मात्र भावेपर नहि अछि। कतेक ठाम ई भावानुवाद लगैत अछि आ कतेक ठाम शब्दश: ओहिना उतारल प्रतीत होइछ।

विद्यापतिक पद अछि—

पन्थ विपथ नहि मान।

बाँग्लाक ज्ञानदास अक्षरश: उतारि दैत छथि—

पन्थ विपथ नहि मान।

एहिना विद्यापतिक पद—

आओल ऋतुपति राज वसन्त
धाओल अलिकुल माधवी पन्थ

केर भावानुवाद ज्ञानदासक पद देखल जाय—

आओल रे ऋतुराज वसन्त। खेलत राइ कान्ह गुणवन्त।

विद्यापतिक एक पद अछि—

कुसुमित कानन हेरि कमलमुख, मूदि रहय दू नयान।

बाँग्लाक राधामोहन एहिना कहैत छथि—

कुसुमित कानन हेरि शचीनन्दन डारत काहे घनश्याम।

विद्यापतिक पद अछि—

कि कहब ऐ सखी मानन्द तोरा, चिर दिने मन्दिर माधव मोरा।

बाँग्लाक आनन्द दास शब्दश: जेना उतारि देने छथि—

रजनीक आनन्द की कहब तोय,
चिर दिने माधव मिलल मोय।

विद्यापतिक ई पद देखल जाय—

सजनी अपरूप पेखल रामा।
कनकलता अवलम्बन ऊअल हरिन हीन हिम धामा।

राधावल्लभ एहिना कहैत छथि—

सखि हे अपरूप पेखलु बाला।
हिमकर वदन-मिलित मुखमण्डल तापर जलधर माला।

विद्यापतिक एक पद अछि—

ई भर बादर माह भादर सून मन्दिर मोर।
झम्पि घन गरजन्ति सन्तति भुवन भरि वरसन्तिया।

एहि ध्वन्यात्मक सौन्दर्यक प्रभाव बाँग्लाक घनश्याम दासक पदपर देखल जाय—

डाके डाहुक झमझम झमकत, झरि झलकत झारिया।
डिन्डियामित मन्डुकीवर मयूर नाचत साजिया।

एहि भाव केर रवीन्द्रनाथ ठाकुरक पद अछि—

i) *के मन करे काटबे आमार एमन बाद बेला।*

ii) *भरा गृह शून्य आमि तोमा विहने।*

महाकवि विद्यापतिक ई पद देखल जाय—

अनमिख नयन नाह मुख निरखइत तिरपित न भेल नयान रे।
ई सुख समय सहय एत संकट अबला कठिन परान रे॥

एहि पद केर प्रभाव बाँग्लाक ज्ञानदास आ बलराम दास एवं उर्दूक दाग देहलवी आ हसरत मोहानीपर देखल जाय—

ज्ञानदास— *अनमिख निकट नाह मुख हेरइत तिरपित नहिए नयान।*
ए सब समय सहय एत संकट अबला कठिन परान॥

बलराम दास—

बसिया दिवस राति अनमिख आँखि, कोटि कलप यदि निरवधि देखि।
तभु तिरपित नहि ए दुइ नयान। जागिते तोमारे देखि स्वपन समान॥

दाग— *क्या जौक है क्या शौक है सौ मर्तबा देखूँ,*
फिरभी एक हुँ जलवा ए जाना नहीं देखा।

हसरत मोहानी—

हवसे दीदी न मिटी है न मिटेगी हसरत',
देखने के लिए चाहे उन्हें जितना देखें।

विद्यापतिक एहि पद केर प्रभाव मीर आ सौदापर केहन पड़ल अछि से देखल जाय—

विद्यापति—

आसाए मन्दिर निसि गमाबए सुखेन सुत सयान।
जखने जतय जाहि निहारय ताहि ताहि तोही भान।

मीर— *दिया दिखाई मुझे तो उसीका जल्वा मीर'*
पड़ी जहान में जाकर जहाँ नजर मेरी।

सौदा— *नजारह बाज बज्मे बुताका हूँ जबसे मैं,*
तूही नजर पड़ा मेरी जिधर नजर गई।

मीर— *समाया है जबसे तू आँखों में मेरी,*
जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।

विद्यापतिक एहि पद केर प्रभाव उर्दूक शायर सभपर देखल जाय।

विद्यापति—
धन अछैत जे नहि उपभोगए तामन हो पछताव।
यौवन जीवन बड़ निरापन गेलै पलटि न आव।

दाग— *रहती है क्या बहारे जवानी ताउम्र,*
मानिन्द बू ए गुल इधर आई उधर गई।

दाग— *तुझे है दाग' क्या अरमान ऐय्यामे गुजस्ता का*
दोबारा जाके आती है कहीं उम्रे रवाँ फिर भी।

लाला माधव राम जौहर—
अब इत्र भी मलो तो मुहव्बत की बू कहाँ,
वो दिन हवा हुए जब पसीना गुलाब था।

असर—*झपकी जरा जो आँख जवानी गुजर गयी*
बदली की छाँव भी इधर आयी उधर गयी

अमीर—*जल्वा दिखा के रंग जवानी हवा हुई*
आते ही उल्टे पाँव फिरे दिन बहार के।

विद्यापतिक पद—

अबुध सखीजन न बुझय आधि
आन औषध कर आन ब्याधि

केर प्रभाव मीर'पर देखल जाय—

तहवीर दोस्तों की मुझे नफा क्या करे
बीमारी और कुछ है, करे है दवा कुछ और।

विद्यापतिक भाव केर शायर सभपर प्रभावक किछु आओर पद केर आनन्द लेल जाय—

विद्यापति—

हीरा मणि माणिक एकओ न माँगब
फेर माँगब पहु तोरा।

मीर— *हर सुबह उठके तुझसे माँगू हूँ मैं तुझी को*
तेरे सिवा मेरा कोई मुद्दा नहीं है।

विद्यापति—

पाँखिक पाँखि मीनक पानी जीवक जीवन हम तुअ जानी
तुहुँ कइसे माधव कह तुहुँ मोय विद्यापति कह दुहु-दुहु होय।

जौक— *तू हमारी जिन्दगी पर जिन्दगी की क्या उम्मीद*
तू हमारी जान लेकिन क्या भरोसा जान का।

एहि विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे महाकवि विद्यापतिक प्रभाव आन क्षेत्र आ भाषाक कवि सभपर अत्यन्त व्यापक छल।[21] एहिठाम मात्र किछु संकेत उदाहरण रूपमे भेल अछि। एहन असंख्य स्थल भारतीय वाङ्मय-वारिधिमे यत्र-तत्र छिड़िआएल अछि। भारतवर्षक कोनो एक कवि जनिकर प्रभाव देश, काल आ भाषाक सीमा सभक अतिक्रमण करैत सर्वाधिक व्यापक भेल ओहिमे महाकवि विद्यापति अन्यतम छथि।

सन्दर्भ :-

1. डॉ. एस पी पंडित : विक्रमोर्वशीय, बम्बई, 1901 आ भविसयत् कहा केर भूमिका, पृष्ठ 56-66।
2. पी डी गुणे : भविसयत् कहा, भूमिका, पृष्ठ 37।
3. डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी : द ओरिजिन एण्ड डवलपमेंट ऑफ बेंगाली लैंग्वेज, पृष्ठ 88।
4. पं. भगवद्दत्त : भाषा का इतिहास, पृष्ठ 285।
5. पिशेल : प्राकृत भाषा व्याकरण, पृष्ठ 60।
6. एच डी वेलंकर : विक्रमोर्वशीयम्, पृष्ठ 66।
7. हीरालाल जैन : णयकुमार चरिउ, भूमिका, पृष्ठ 25 तथा करकंडचरिउ, प्रस्तावना, पृष्ठ 32।
8. आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृष्ठ 20।
9. डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल : कीर्त्तिलता, पृष्ठ 64।
10. डॉ. ए एल उपाध्याय : परमात्म प्रकाश, भूमिका, पृष्ठ 66।
11. डॉ. गणेश वासुदेव तागारे : पुरुषार्थ पत्रिका, जून 1942।
12. डॉ. रामचन्द्र ठाकुर : मिथिला अपभ्रंश के विकास स्रोत।
13. डॉ. रंगनाथ दिवाकर : हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान, जानकी प्रकाशन, पटना, 2000, पृष्ठ 43-54।
14. डॉ. सुकुमार सेन : ए हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुलि लिटरेचर, पृष्ठ 1।
15. डॉ. सुकुमार सेन : भारतीय साहित्य, जनवरी 1956, पृष्ठ 77।
16. प्रो. राधाकृष्ण चौधरी : पूर्वांचल भाषा साहित्य एवं संस्कृत, पृष्ठ 7 (मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य, पं. राजेश्वर झा, मैथिली अकादमी,पटना, 1997, पृष्ठ 134पर उद्धृत)।
17. उमेश मिश्र कोमोमोरेशन अंक, पृष्ठ 254। (वैह पृष्ठ 134)।
18. पं. राजेश्वर झा : मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य, पृष्ठ 134।
19. पं. राजेश्वर झा : मध्यकालीन पूर्वांचलक वैष्णव साहित्य, पृष्ठ 89।
20. वैह, पृष्ठ 197।
21. नरेन्द्र नाथ दास विद्यालंकार : विद्यापति काव्यालोक, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना,1986, पृष्ठ 242-271।

[साहित्य अकादेमीक ‘मैथिलीक भारतीय साहित्यपर प्रभाव’ विषयक परिसंवाद दि. 28 जून, 2021मे वाचित बीज भाषण केर परिमार्जित रूप]

मिथिला-मैथिली आन्दोलन : इतिहास आओर दशा-दिशा

अपन भृंगदूत काव्यमे भगवान् श्रीकृष्णक मुखारविन्दसँ सत्यभामाकेँ मिथिलाक विषयमे कवि गंगानन्द कहओने छथि—

यत्र विज्ञ वदनेषु दर्पिता नृत्यति प्रतिगृहं सरस्वती

अर्थात् मिथिलाक प्रत्येक घरमे सरस्वती सोल्लास नृत्य करैत छथि। जाहि ठाम घर-घरमे सरस्वतीक वास हो, जतऽ केर आम लोक व्यवहार धर्मक मानदंड मानल जाइत हो- धर्मस्य निर्णयो ज्ञेय: मिथिला व्यवहारत:; जतए याज्ञवल्क्य, गार्गी, मैत्रेयी, कालिदास, मंडन, वाचस्पति, विद्यापति, अयाची, शंकर, बच्चा झा प्रभृति मनीषी उद्‌भूत भेल होथि ओहि ठाम मिथिला-मैथिलीक लेल आन्दोलनपर बात करब मोनकेँ उद्विग्न करैत अछि। आखिर ई की परिवर्तन भेल जे कहियो राष्ट्रीय मेधाक प्रतिनिधित्व करएवला क्षेत्रकेँ अपन अस्मिताक रक्षार्थ आन्दोलन करबाक लेल विवश होमऽ पड़ल! एकर बहुत रास कारण अछि जाहिमे एक महत्त्वपूर्ण कारण अंग्रेज सभक कृष्ण भारतीय नीति सेहो अछि। अंग्रेज सभक विशेष रूपसँ मैकालेक नीति आम भारतीयमे अपन भाषा, धर्म-संस्कृति, वेद-पुराण, साहित्य-दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, इतिहास-परम्परा आदिक प्रति हीन भावना आ पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-दर्शन, भाषा आदिकेँ श्रेष्ठ मानबाक प्रवृत्ति विकसित करबामे सफल भेल। मैकालेक मिथ्या दम्भ विषयक अवधारणा छल जे सम्पूर्ण भारतीय ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-दर्शन आ प्रज्ञा यूरोपक कोनो पुस्तकालयक एक अलमीराक एक रैकमे राखल पोथीक परतर नहि कऽ सकैछ, भारतीयमे ने इतिहास बोध अछि, ने ज्ञान-विज्ञान केर समझ। कोनो भारतीय भाषा ने शिक्षाक माध्यम भऽ सकैछ आ ने सम्पर्क भाषा, एहि लेल मात्र अंग्रेजीए सक्षम अछि। शिक्षा संबंधी ओ निस्पंदन सिद्धान्त (Theory of Filteration)केँ माननलनि जे हमर निधि हमरा एकर

अनुमति नहि दैत अछि जे सभकेँ पढ़ा सकी तेँ मात्र संभ्रान्त वर्गक नेनाकेँ पढ़ाओल जाएत आ निस्पंदन केर सिद्धान्तानुसार निम्नवर्गीय बच्चा ओकरा सभक संसर्गमे स्वयं पढ़ि लेत। वाह रे अंग्रेजी सोच! यथार्थमे ओ अंग्रेजी शासनकेँ सुचारु रूपसँ चलएबाक लेल एहन भारतीय सभकेँ तैयार करबाक उद्योगमे छल जे रूप-रंगमे तऽ भारतीय हो मुदा सोच-विचार आ भावना-कल्पनासँ अंग्रेज हो। अपन प्रयासमे ओ सफल भेल आ एहन असंख्य कृष्ण अंग्रेज तैयार भेल जे भारतीय रहितो अपन नीको चीजकेँ हेय आ अंग्रेज सभक निकृष्टो वस्तुकेँ श्रेष्ठ मानैत रहल। मैकाले केर यैह विषबीज कालान्तरमे छतनार गाछ बनि गेल। भारतवर्षमे अखनो ओकर बहुत रास सन्तति ओकरा अपन पुरखा मानि प्रेतशिलापर बैसा पिण्डदान दैत छथि। भारत आ इंडियाक सोचमे एवं मातृभाषा आ अंग्रेजीक स्थितिमे ई द्वन्द्व अखनो देखल जा सकैछ। मिथिलाक सन्दर्भमे तऽ ई आर प्रासंगिक अछि। आइ कतेक उच्च मध्यवर्गीय लोक अपन परिवारमे धिया-पुता, पौत्र-पौत्री, नाति-नतिनी संग मैथिली बजैत छथि? जँ छातीपर हाथ राखि एकर गणना कएल जाय वा कोनो गाममे कोनो विभवशाली लोक ओतए उपनयन, बियाह, श्राद्ध आदिमे विभिन्न ठामसँ जुटल लोक सभक नेनाक समूहमे जा ओकरा सभक बातचीत सुनल जाय, जे बेसी हिन्दी-अंग्रेजीमे होइत अछि, तखन ओहि मैकाले केर अवधारणाक अपरिमित शक्ति आ युगान्तकारी प्रभाव केर एहसास होयत! सभ घरक एकहि लेखा! अपन भाषा-संस्कृति आ देश-धर्मकेँ हीन मानबाक आत्महीनताकेँ तिलांजलि देबए पड़त। ई साँच जे जहिना आत्महीनता अनिष्टकारी अछि तहिना आत्ममुग्धता सेहो अमंगलकारी अछि तथापि एहि प्रवृत्तिसँ मुक्त होएब उचित जे अपन भाषा आ संस्कृतिमे नीको चीजकेँ तखने स्वीकार करब जखन कोनो विलियम जोन्स, कोनो गेटे, कोनो मैक्समूलर, कोनो राबर्ट वा विलियम सन आंग्ल नामधारी ओकरा श्रेष्ठ कहत! ई सत्य जे भारतीय वाङ्मयमे सभटा सर्वस्वीकार्य आ उचिते बात नहि अछि। मुदा इहो सत्य जे एहन मात्र भारतीय वाङ्मय संग नहि अछि। सभटा प्राचीन सभ्यता संग एहन बात छैक। अनर्गल कथादि केर प्राचुर्य सभ सभ्यताक प्राचीन ग्रंथमे छैक। प्रत्येक युगक यथार्थ भिन्न होइत छैक। ओहि समय जे उचित रहए से अखनो प्रासंगिक हो, ई आवश्यक नहि। अपन समुचित दृष्टिसँ, नीर-क्षीर विवेकसँ एकर निर्धारण करी जे श्रेय की आ त्याज्य की। एहि समुचित दृष्टि आ विवेक लेल अपन भाषा-संस्कृतिक प्रति आदरभाव आवश्यक। एहि आदरभावसँ विमुख भेल जन-जनमे चेतना व जागृति आनबाक हेतु जड़िसँ जुड़ल आन्दोलन केर आवश्यकता सभ दिन रहैत अछि। मिथिलामे सेहो एहि विन्दुपर आन्दोलन वा जागृतिक प्रयास केर इतिहास रहल अछि।

शिमलामे छुट्टी मना रहल भारतवर्षक भाइसराय कर्जन 19 जुलाई 1905कैं ओतहिसँ बंगाल विभाजन केर घोषणा कएलनि। घोषणा होइते जेना बिढ़नीक खोँतामे ढेला पड़ि गेल हो। भारी विरोध शुरू भेल। भाषा आ धर्मक नामपर पूर्व बंग आ असम बनल छल। सभ ठाम बंग-भंग केर प्रबल विरोध भेल मुदा बंगालमे ई अत्यन्त उग्र छल। अग्निपुत्र सभक उदय भेल। उग्र राष्ट्रीय भावनाक संचार भेल। प्रबल प्रतिरोधक प्रभाव रहल जे 12 दिसम्बर 1911कैं दिल्लीमे आयोजित दरबारमे घोषणा भेल जे बंग-भंग समाप्त कएल जा रहल अछि। 1912मे भारतवर्षक राजधानी कलकत्तासँ दिल्ली आबि गेल। एहि वर्ष सेहो पृथक् राज्यक माँग भेल आ 22 मार्च 1912कैं बिहारक गठन भेल।

मिथिलेश रमेश्वर सिंह मिथिलाक्षर लिपि केर स्थानपर देवनागरीक गागरीमे डुबकी लगा भयंकर गलती कएने छलाह। राज-काजक भाषा रूपमे फारसी-अंग्रेजीक स्थानपर हिन्दीकैं स्थान देलनि। 1910मे ओ मैथिल महासभाक स्थापना कएलनि आ 1921मे मिथिला राज्यक माँग कएलनि (मिथिलेश कुमार झा : Language Politics and Public Sphere in North India : Making of the Maithili Movement, p 156)। हुनकर एहि काजकैं मिथिलाक्षर लिपिकैं त्याग करबाक भूल केर प्रायश्चित कहि सकैत छी। बादमे मैथिल महासभाक 35म राजनगर सम्मेलन (1946), 37म दरभंगा सम्मेलन (1948) आ 38म मधुबनी सम्मेलन (1949)मे मिथिलेश सर कामेश्वर सिंह अपन अध्यक्षीय उद्बोधनमे मिथिला राज्यक प्रश्न उठबैत रहलाह, प्रस्ताव पारित होइत रहल मुदा सरकार कानमे तूर-तेल देने सुतले रहल।

1936मे जखन उड़ीसाकैं अलग राज्यक दर्जा देल गेल तखन फेर मिथिला राज्यक कर्ता-धर्ता सक्रिय भेलाह मुदा कोनो सार्थक सुरि-सारि संभव नहि भेल। 1948मे जस्टिस एस के धर केर चारि सदस्यीय समिति भाषाक आधारपर राज्यक गठन केर विरोध कएलक। एकर बाद एहि समिति केर सिफारिश सभक समीक्षा हेतु गठित जेवीपी (जवाहर लाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल आ पट्टभि सीतारमैय्या) समिति सेहो भाषाक नामपर राज्य निर्माणक विरोध कएलक। एहि निर्णय केर भारी विरोध भेल। तेलुगु मनीषी पोट्टी श्रीरामुलु (16 मार्च 1901-15 दिसम्बर 1952) तेलुगुभाषी राज्यक लेल 19 अक्टूबर 1952सँ आमरण अनशन शुरू कएलनि। 56 दिनक अनशन बाद ओ देहत्याग कएलनि। हुनका अमरजीवी कहल गेल। भारतवर्षक आजादीक लेल लाहौर सेन्ट्रल जेलमे यतीन्द्रनाथ दास 63 दिनक अनशन करैत 13 सितम्बर1929कैं अपन सुन्दर काया भारतमाताकैं अर्पित कएने छलाह। श्रीरामुलुक देहत्यागसँ यतीन्द्रनाथ केर आत्मोत्सर्ग लोककैं

मोन पड़ल। यज्ञाग्निमे जेना घी-चन्दन-गुग्गुलादि केर आहुति पड़ि गेल हो! सम्पूर्ण क्षेत्र दलमलित भेल। कहि सकैत छी जे उग्र आन्दोलनकेँ शान्त करबा लेल तेलुगु भाषाक नामपर श्रीरामुलुक लहासपर 1 अक्टूबर 1953केँ तेलुगुभाषी राज्य आन्ध्रप्रदेशक उदय भेल। बादमे एहिसँ 2 जून 2014केँ तेलांगना राज्य अलग भेल। भाषाक नामपर राज्य गठन केर माँग जोर पकड़ि रहल छल। 19 दिसम्बर 1953केँ राज्य पुनर्गठन आयोग बनल। जस्टिस सैय्यद फजल अली, ह्रदयनाथ कुंजरू आ सरदार के एम पणिक्कर एकर सदस्य भेलाह। 1955मे समर्पित अपन प्रतिवेदनमे समिति कहलक जे 1951 केर जनगणनाक आधारपर भारतमे 844 भाषा अछि मुदा 91 प्रतिशत लोक मात्र 14 भाषाक उपयोग करैत छथि। 1956मे एहि समितिक अनुशंसा स्वीकृत भेल जाहि आधारपर 14 राज्य आ 6 केन्द्र शासित प्रदेश बनल। मैथिलीकेँ हिन्दी संग गानल गेल आ मिथिला पृथक् राज्य नहि बनि बिहारमे रहबाक लेल विवश भेल। यद्यपि 1952मे डॉ. लक्ष्मण झा पृथक् मिथिला राज्यक लेल आन्दोलन शुरू कऽ देने छलाह। बाबू जानकी नन्दन सिंह सेहो एहि लेल आवाज बुलन्द कएलनि। अखिल भारतीय मैथिल महासभा राज्य पुनर्गठन आयोगकेँ मिथिला राज्यक लेल 1953मे स्मारपत्र देलक। एहि वर्ष अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् सेहो पृथक् मिथिला राज्य निर्माण हेतु माँगपत्र देलक। जानकी बाबू 1954मे राज्य पुनर्गठन आयोगकेँ स्मारपत्र देलनि। 1954मे कांग्रेस केर कल्याणी (कलकत्ता) अधिवेशनमे एहि माँगकेँ तीक्ष्णतासँ उठएबाक लेल 65 आन्दोलनकारी संग कलकत्ता विदा भेलाह। आसनसोलमे सभकेँ 22 जनवरी 1954केँ गिरफ्तार कऽ लेल गेल। अधिवेशनमे नहि जएबाक शर्त्तपर न्यायालय द्वारा छोड़ल गेल। जानकी बाबू किछु गोटे संग तखनो कलकत्ता पहुँचि गेलाह। कलकत्तामे 23 जनवरी 1954केँ नागेश्वर मिश्रजीक अध्यक्षतामे मिथिला राज्यक लेल बैसार भेल। फेर 26 जनवरी 1954केँ गिरीश पार्क, कलकत्तामे जानकी बाबूक अध्यक्षतामे पैघ सभा भेल जाहिमे मिथिला राज्यक माँग दृढ़तापूर्वक उठाओल गेल। एहि कारणेँ जानकी बाबूपर कांग्रेसमे अनुशासनात्मक कार्रवाई भेल आ 1956मे बाबू जानकीनन्दन सिंह कांग्रेससँ हटि गेलाह।

डॉ. लक्ष्मण झा अपन अतुलित मेधाक सारस्वत उपयोग करैत मिथिलाक समग्र स्वरूप स्थिर करबा लेल Mithila and Magadh (शोध-प्रबंध, 1948), Mithila : A Union Republic (1951), Mithila in India (1953), Mithila : A Sovereign Republic (1954), Mithila will Rise (1955),The Voters in Mithila (1956) आदि पोथी सभक रचना कएलनि। हुनक मिथिला मण्डल संस्था सक्रिय रहल मुदा सरकार सीरक तानने सुतले रहल। सरकारक

दृष्टिकोणसँ व्यथित डॉ. लक्ष्मण झा मिथिला-मैथिलीक स्वतंत्र स्वरूप आ मिथिला राज्यक औचित्यपूर्ण आवश्यकता दर्शावैत प्रधानमंत्रीकेँ 1956मे अपन मिथिला संबंधी किछु रचना आओर आन दस्तावेज सहित मिथिला राज्य लेल माँगपत्र देलनि।

मिथिलाक सन्दर्भमे सरकार सरिपहुँ सुतले रहल जखन कि गुजराती आ मराठी विवादक बाद 1 मई 1960केँ बम्बईकेँ महाराष्ट्र आ गुजरातमे बाँटल गेल, 1 दिसम्बर 1963केँ नागा आन्दोलन केर बाद असमसँ नागालैंड बनल, 1 नवम्बर 1966केँ पंजाबी आ हिन्दीक नामपर पंजाबसँ हरियाणा पृथक् कएल गेल। 25 जनवरी 1971केँ हिमाचल पूर्ण राज्य बनल। 21 जनवरी 1972केँ केन्द्र शासित मणिपुर आ त्रिपुराकेँ पूर्ण राज्यक दर्जा देल गेल। सिक्किम 26 अप्रैल 1975केँ बनल, 20 फरवरी 1987केँ अरुणाचल/ मिजोरम आ 30 मई 1987केँ गोवा बनल। 1 नवम्बर 2000केँ मध्यप्रदेशसँ छत्तीसगढ (26म राज्य), एहि वर्ष 9 नवम्बरकेँ उत्तरप्रदेशसँ उत्तराखंड (27म राज्य) आ 15 नवम्बरकेँ बिहारसँ झारखंड (28म राज्य) बनल। 2014मे आन्ध्रप्रदेशसँ तेलांगना (29म राज्य) बनल। 5 अगस्त 2019केँ जम्मू-कश्मीरसँ धारा 370/ 35ए हटएलाक बाद आब भारतवर्षमे 28 राज्य बाँचल अछि। सत्य अछि जे दवाबपर किछु राज्यक नाम सेहो परिवर्तित भेल जेना मैसूर कर्णाटक, मद्रास तमिलनाडु, उत्तरांचल उत्तराखंड, उड़ीसा ओडिशा आ पांडिचेरी पुडुचेरी भेल मुदा मिथिलाक अस्तित्व ओहिना रहल। एहि वर्णनसँ एक बात धरि स्पष्ट अछि जे सरकार राज्य निर्माणमे आन्दोलनेक भाषा बुझैत अछि। मिथिला राज्यक लेल आन्दोलन तऽ चलिए रहल छल मुदा सरकार एहिपर कोनो गंभीर विचार नहि कएलक।

मिथिला-मैथिल-मैथिलीक विकास हेतु प्रतिबद्ध अनेक संस्था बनल। पुरान संस्था सभमे मैथिल शिक्षित समाज, कलकत्ता; मिथिला विकास परिषद्, कलकत्ता; मैथिल सम्मेलन, पटना; सुबोधिनी सभा, पटना; मैथिल युवक संघ (अड़ाइडंगा आ पूर्णियाँ), विभिन्न मैथिल सभा (आगरा, अजमेर, अलवर, जबलपुर, हाथरस, इटावा, झाँसी, जैत मथुरा), मैथिल ब्राह्मण सेवा समिति, हरियाणा; अखिल भारतीय मैथिल महासभा(1949-50), प्रवासी मैथिल ब्राह्मण सभक संघ, वैदेही समिति, चेतना समिति, संकल्प लोक, विद्यापति सेवा संस्थान प्रभृति संस्था सभ प्रमुख अछि। मिथिला-मैथिलीक लेल जागृतिक प्रचार-प्रसारमे संस्था सभक अवदान महत्त्वपूर्ण अछि।

मैथिली पत्र-पत्रिका सभक अभ्युदय मिथिलासँ बाहरे शुरू भेल। मैथिल हित साधन 1905मे मासिक रूपमे मधुसूदन झाजी (जयपुर) आ रामभद्र ओझाजी

(अलवर स्टेटक मुख्य न्यायाधीश) केर सत्प्रयाससँ जयपुरसँ प्रकाशित होएब शुरू भेल। म.म. मुरलीधर झा, पं. दीनानाथ मिश्र, पं. कुशेश्वर कुमर आदि महानुभाव 1905मे काशीसँ मिथिला मोद शुरू कएलनि। 1908मे दरभंगासँ मिथिला मिहिर शुरू भेल। 1935-36मे आ. सुमनजीक सम्पादनमे प्रकाशित एकर मिथिलांक अखनो मिथिलाक धरोहर मानल जाइत अछि। 17 जुलाई 1947सँ मार्च 1954 केर मिथिला मिहिरक अनेक अंकमे मिथिला राज्यक माँगसँ संबंधित बहुत रास स्तरीय आलेख प्रकाशित भेल छल। ब्रजस्थ प्रवासी मैथिल पं. रामचन्द्र मिश्र 1920मे मथुरासँ मिथिला प्रभा शुरू कएलनि। 1925मे उदित नारायण दासजी आ नन्दकिशोर दासजीक संयुक्त सम्पादनमे लहेरियासरायसँ श्री मैथिली नामक पत्र केर प्रकाशन शुरू भेल जे उदितजीक खराब स्वास्थ्यक कारणेँ अल्पजीवी भेल। 1929मे विद्यापति प्रेस, लहेरियासरायसँ कुशेश्वर कुमरजी आ भोलालाल दासजीक सम्पादनमे मिथिला मासिक पत्र शुरू भेल। एहि समस्त पत्र-पत्रिकादिक मिथिला-मैथिलीक विकासमे महत्त्वपूर्ण अवदान अछि। मैथिलीमे अनेक पत्र-पत्रिकादि शुरू भेल मुदा दुर्भाग्य जे ई सभ अल्पजीवी होइत रहल। दैनिक पत्र स्वदेश आ मिथिला आवाजकेँ अकाल काल-कवलित होएब हम मैथिल सभक भाषाप्रेमपर प्रश्नचिह्न तऽ अवश्य लगबैत अछि। सुखद जे मिथिला आवाज पाक्षिक रूपमे फेर शुरू भेल तथा मैथिली दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश लगातार अपन 262म अंक (17 सित. 2022) प्रकाशित कऽ चुकल अछि। एकर निरन्तरता बरकरार रहए एहि लेल तन-मन-धनसँ सहयोग करब आ एकरा डेबिकेँ, जोगाकेँ राखब प्रत्येक मैथिलक पुनीत कर्त्तव्य थिक। आमजन केर ई भाव मिथिला-मैथिलीक यज्ञमे समिधा होएत। एहिना पठन-पाठनमे मैथिली सेहो मिथिलासँ बाहरे शुरू भेल। राजा कृत्यानंद सिंह, राजा कालिकानंद सिंह, कुमार गंगानंद सिंह, बाबू गंगापति सिंह, ब्रजमोहन ठाकुरजी, विद्यानंद ठाकुरजी, राजा टंकनाथ चौधरी प्रभृति दानी-अभियानी सभक सत्प्रयाससँ 1914मे कलकत्ता विश्वविद्यालय केर भविष्यद्रष्टा उप कुलपति सर आशुतोष मुखोपाध्यायक समय मैथिली चेयर स्थापित भेल। फेर 1919मे मैथिलीमे स्नातकोत्तर केर पढ़ाई शुरू भेल। पं. बाबूजी मिश्र, पं. खुद्दी झा, डॉ. सुधाकर झा शास्त्री, बाबू गंगापति सिंह आदिकेँ मैथिलीक आरम्भिक प्रोफेसर होएबाक गौरव भेटल। 1972 केर बाद ई पढ़ौनी बन्द भऽ गेल। पुनः पढ़ौनी शुरू करबाक प्रयास चलि रहल अछि। पटना विश्वविद्यालयमे 1948सँ मातृभाषा रूपमे मैथिलीक पढ़ाई शुरू भेल। मैथिली पढ़निहार छात्र सभक अभाव रहैत छल तखन अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगाक प्रचार विभागक मंत्री अभिभावकगणसँ एक निवेदन कएलनि। पत्र रूपमे प्रचारित एहि निवेदनमे अनुरोध कएल गेल छल जे

मातृभाषाक निरादर माताक निरादर थिक। एहन लोक देशभक्तिक दावी नहि कऽ सकैत छथि तेँ छात्र मातृभाषा अवश्य पढ़थि ताहि लेल अपने सब सेहो यत्न करी। मातृभाषा पत्रमे मैथिली पढ़बाक लेल प्रोत्साहन देल जाय। एकर कचोट अखनो अछि जे एहि निवेदनकेँ निर्गत भेना सात दशकसँ बेसी भेल मुदा स्थिति आइयो लगभग ओहिना अछि। मेधावी छात्र तऽ ओम्हर ताकबो नहि करैत छथि। एकर कारण मानसिकता आ मैथिलीकेँ अर्थकरी विद्या नहि बनि सकब थिक। बिहारमे जे वित्तरहित व्याख्याताक अवधारणा बनि गेल छल से मेधाक सत्यानाश कएलक। आब एम्हर नियमित नियुक्ति शुरू भेल जे सुखद संकेत अछि। मैथिली शिक्षक केर बहालीसँ स्थितिमे गुणात्मक सुधार आबि सकत। एहि लेल प्रयास चलि रहल अछि। मिथिला-मैथिली आन्दोलन केर एक प्रमुख स्वर पाठशालामे मैथिली अछि। श्री दिलीप कुमार झा आदि शिक्षकगण एहि दिशामे बेस सक्रिय छथि।

जन सेवा आयोगक परीक्षामे ऐच्छिक विषय रूपमे मैथिलीक स्वीकृतिक घोषणा 1957 केर आम निर्वाचनसँ पूर्व भेल छल। एकर प्रस्तावक पं. राधानन्दन झाक अभिनन्दन केर ओरिआन अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् केर प्रधान मंत्री रूपमे सुप्रसिद्ध कवि पं. सुरेन्द्र झा सुमनजी सीएम महाविद्यालय, दरभंगामे कएलनि। मैथिली छात्र परिषद् एमएल एकेडमी, लहेरियासरायमे पं. नागेश्वर मिश्र केर अध्यक्षता आ पं. लक्ष्मण झा द्वारा उद्घाटित समारोहमे सेहो राधानन्दनजीक अभिनन्दन कएलक। बिहार लोक सेवा आयोगक अध्यक्ष रूपमे डॉ. अमरनाथ झाक मैथिलीकेँ ऐच्छिक विषय रूपमे मान्यता दिएबाक दिशामे अप्रतिम अवदान अछि। बादमे मैथिलीकेँ ऐच्छिक विषय सूचीसँ निष्कासित सेहो कएल गेल मुदा ई मिथिला-मैथिली आन्दोलन केर सफलते थिक जे आइ मैथिली बिहार लोक सेवा आयोग एवं संघ लोक सेवा आयोगमे ऐच्छिक विषय रूपमे सम्मिलित अछि आ प्रत्येक वर्ष मैथिली ऐच्छिक विषय राखि बहुत रास विद्यार्थी सरकारी पदाधिकारी बनैत छथि। एहन सफल प्रतिभागी जँ अपन-अपन कार्यालयमे मैथिलीक बेसीसँ बेसी उपयोग करथि आ कोनो मैथिलसँ निधोख मैथिलीएमे गप्प करथि तखन मैथिलीक स्वाभाविक विकास आसान भऽ जाएत। मैथिलीक प्रति यैह हुनकर सरियत! एहिसँ मिथिला-मैथिली आन्दोलनकेँ अनायासे तीव्र गति भेटि जेतैक। ओना अखन बिहार लोक सेवा आयोग ऐच्छिक विषय सूचीसँ भाषा सभकेँ हटा देलक अछि जेकर पुरजोर विरोध शुरू भेल अछि।

प्रो. धर्मेन्द्र कुमर अपन गाम पुतइमे दि. 29, 30 आ 31 मई 1984केँ वृहत् रूपमे अखिल भारतीय मिथिला जन सम्मेलनक सफल आयोजन कएने छलाह। एहिमे जननेता भोगेन्द्र झाजी, रमाकान्त झाजी, किरणजी, मणिपद्मजी, प्रो.

मायानंद मिश्र, डॉ. सुरेश्वर झा प्रभृति नरश्रेष्ठ सभक उपस्थिति छल। एहि अभूतपूर्व समारोहक प्रथम दिनक सम्मेलन केर अध्यक्षता डॉ. सुरेश्वर झा कएने छलाह आ मंच संचालन प्रो. मायानंद मिश्र कएने रहथि। दोसर दिन डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'जीक अध्यक्षतामे चलि रहल सम्मेलनमे डॉ. सुरेश्वर झा पृथक् मिथिला राज्यक प्रस्ताव रखलनि जे सर्वसम्मतिसँ पारित भेल। एहि त्रिदिवसीय मिथिला जन सम्मेलनक सफलता अपूर्व रहल। प्रो. धर्मेन्द्र कुमर आ कालीकान्त झाजी सहित पुतइ ग्रामवासी सरिपहुँ बधाई केर पात्र छथि।

1992सँ अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद् मिथिला राज्य आन्दोलनमे सक्रिय रूपसँ लागल अछि। डॉ. धनाकर ठाकुर, कमलाकान्त झाजी, डॉ. भुवनेश्वर प्रसाद गुरमैता आ के एन झाजीक कमानमे ई संस्था अपन सक्रियता देखओने छल। मिथिला राज्य संघर्ष समितिक गठन 1994मे भेल। मधुबनीमे आयोजित अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद् केर दोसर सम्मेलन 1996मे डॉ. जयकान्त मिश्रकेँ अध्यक्ष बनाओल गेल। चुनचुन मिश्रजी, प्रो. उदयशंकर मिश्र, नगीना प्रसाद महतोजी, प्रमोद कुमार झाजी, सत्य नारायण महतोजी, डॉ. धनाकर ठाकुर प्रभृति उत्साही अभियानी सभक नेतृत्वमे रहल ई संस्था अखनो मिथिला-मैथिली एवं मिथिला राज्यक लेल सक्रिय रूपसँ लागल अछि। जनसम्पर्क आ प्रचार-प्रसारसँ आन्दोलनकेँ धारदार कएल जा रहल अछि। कतेको वर्षसँ अखिल भारतीय मिथिला राज्य संघर्ष समिति संसद केर सत्रारम्भक प्रथम दिन मिथिला राज्यक माँग दोहराबैत अछि। सम्प्रति एकर अध्यक्ष वैजूजी छथि। 1996मे मिथिला राज्यक लेल जनसम्पर्क आ पदयात्राक मध्य मिथिलांचल विकास कांग्रेस मिथिलाक लेल स्वायत्त विकास परिषद केर गठनक माँग कएलक। 2013मे मिथिला राज्य निर्माण समितिक गठन भेल। योगी जनक कुशवाहाजी (मधेपुरा) अध्यक्ष आ महेन्द्र मिश्रजी महासचिव भेलाह। अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषदसँ अनुप्राणित आदर्श मिथिला पार्टीक अध्यक्ष श्री सुधीरनाथ मिश्र (अररिया) आओर महासचिव श्री मनोज कुमार यादव (वैशाली) छथि। सभक एकमात्र लक्ष्य मिथिलाक कल्याण आ मिथिला राज्यक निर्माण अछि। 14 जनवरी 2013केँ दिल्लीमे गठित मिथिला राज्य निर्माण सेना विभिन्न कार्यक्रम आ पुनर्जागरण यात्रासँ अपन सक्रिय उपस्थिति दर्शा रहल अछि। भले एकर मूल वाक्य 'ले जान की दे जान'सँ सभक सहमति नहि रहल हो मुदा एकर कार्यक्रमसँ सभक सहमति निश्चित रहैत अछि। श्री रंगनाथ ठाकुर, दीपकजी, राजेश कुमार झाजी, नुनूजी प्रभृति उत्साही अभियानी सभक नेतृत्वमे

संस्था अपन नाम सार्थक करैत अछि। 24 अप्रैल 2022कँ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह मेमो. कॉलेजमे मिथिला राज्य विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी केर सफल आयोजन भेल। अखिल भारतीय मिथिला संघ, नयी दिल्ली 24 दिसम्बर 2017कँ भव्य रूपसँ अपन स्वर्ण जयन्ती समारोह मनओलक अछि। संस्थाक राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा बेस सक्रिय छथि। 'तीरभुक्ति'क प्रकाशन सेहो होइत अछि।

5 अगस्त 2000कँ पं. ताराकान्त झा मिथिला राज्य अभियान शुरू कएलनि। स्वयं संरक्षक छलाह आओर सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. मोहन मिश्र अध्यक्ष। बादमे डॉ. सुरेश्वर झा कार्यकारी अध्यक्ष आ प्रो. चन्द्रकान्त मिश्र सचिव केर दायित्व वहन कएलनि।

4 अगस्त 2004कँ पं. ताराकान्त झा एक प्रेसवार्तामे पृथक् मिथिला राज्यक लेल आन्दोलनक घोषणा कएलनि। एहि कारणेँ भाजपासँ निष्कासित भेलाह। 15सँ 23 दिसम्बर 2007 धरि ताराकान्त बाबू मिथिला राज्यक अलख जगएबाक लेल बेगूसराय, खगड़िया, कटिहार, पूर्णियाँ, किशनगंज, अररिया, फारविशगंज, मधेपुरा, सहरसा, सुपौल आदि क्षेत्रक भ्रमण कएलनि।

2015मे कीर्त्तिवर्द्धन भागवत झा आजाद संसदमे एहि मुद्दाकँ उठओलनि आ मिथिला राज्यक माँग कएलनि। अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्ली अध्यक्ष मान. पूर्व सांसद राजेन्द्र प्रसाद यादव एवं महासचिव विजय चन्द्र झाक नेतृत्वमे एहि आन्दोलनकँ जगओने छथि। Youth of Mithila (अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषद् केर दिल्ली इकाई) आ Voice of Mithilaक भवेश नंदन आ आनन्द कुमार झा जमीनी कार्यकर्ता सभमे जोश दिया रहल छथि। दिल्लीक जंतर-मंतरपर राजीव कुमार झा (कवि एकान्त)क चारि दिनक अनशन मिथिला राज्य आन्दोलन केर एक महत्त्वपूर्ण पड़ाओ रहल। हिनकर Rise for Mithila एहि आन्दोलनमे अपन जोर लगा रहल अछि। मिथिलांचल विकास सेना, दीनाभद्री संस्थान, मिथिला फाउंडेशन एवं अन्य समानधर्मी संस्था सभक कार्यकर्तागण अनवरत एहि आन्दोलन केर सफलताक लेल सक्रिय छथि। मिथिला वाहिनी (संस्थापक-सह-मुख्य संरक्षक श्री मिहिर झा महादेव) मिथिला-मैथिलीक उत्थान लेल बेस सक्रिय अछि। मिहिरजीक सम्बोधन एवं बात-चीतमे जय मातृभूमिक उद्घोष मुदित करैत अछि।

2019मे विद्यापति सेवा संस्थानक 47म विद्यापति स्मृतिपर्वमे सांसद श्री गोपालजी ठाकुर, सांसद श्री अशोक कुमार यादव एवं विधायक श्री संजय सरावगी मंचसँ अलग मिथिला राज्यक माँग उठओलनि। कहियो मान. सांसद हुकुमदेव नारायण यादवजी लोकसभामे मैथिलीमे शपथ नेने रहथि एहि बेर तऽ मिथिलांचल

केर समस्त मान. विधायकगण विधानसभामे मैथिलीमे शपथ लेलनि। एहि अपूर्व घटनाकेँ जनाकांक्षाक प्रतिध्वनिए मानल जा सकैछ जेकर मूलमे मिथिला-मैथिली आन्दोलने थिक। रेलवे केर उद्घोषणा, दूरदर्शन-आकाशवाणीपर कार्यक्रम, दूरसंचार विभाग द्वारा मोबाइलपर मैथिलीमे पूर्व ध्वन्यंकित आवाज आदि एहि आन्दोलन केर सफलते थिक। अखन तऽ बहुत दूर जएबाक अछि।

ई गर्वक विषय रहल जे 22 दिसम्बर 2003केँ लोकसभा आ 23 दिसम्बर 2003केँ राज्यसभासँ मैथिलीकेँ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटल। डॉ. सी पी ठाकुर, डॉ. वैद्यनाथ चौधरी वैजू एवं अन्य प्रतिनिधि प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयीकेँ आभार प्रकट करबाक लेल गेल छलाह। वार्ताक क्रममे अटलजी कहलनि जे एकरा मात्र अपने संग सीमित नहि राखब, आर विस्तार देब। एहिसँ अनुप्राणित वैजूजी अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन शुरू कएलनि। प्रतिवर्ष 22-23 दिसम्बरकेँ मैथिली अधिकार दिवस रूपमे देशक विभिन्न क्षेत्रमे एकर गरिमामय आयोजन होइत अछि। 2021 केर आयोजन अयोध्याधाममे 22-23 दिसम्बरकेँ भेल छल। मैथिल परिधान धोती-कुरता आ मिथिला पेंटिंगयुक्त पाग-डोपटामे सजल-धजल पुरुषवर्ग आ मिथिला पेंटिंगसँ सुशोभित साड़ीमे सजल मैथिलानी सभक जुलूस जखन जानकीजी केर जयनाद करैत अयोध्याक बड़ा भक्तमाल आश्रमसँ श्रीराम जन्मभूमि धरि चलल तखन जेना अवध केर सड़क सियाराममय भऽ गेल हो। अपूर्व दृश्य छल ओ! बाट चलैत बटोही सभकेँ चकबिदोर लागि रहल छल। जानकीक नैहरसँ आएल मैथिल हुनक सासुर अवधमे हुनकर जयघोष कऽ रहल छल। अयोध्याक किछु भावुक महन्थ सभक आँखि ई अनुपम दृश्य देखि नोरा गेल रहए। समारोहमे बजैत काल सेहो किछु गोटे भावुक भेल छलाह। एहि सम्मेलनमे बहुत गोटेकेँ विभिन्न क्षेत्रमे उत्कृष्ट अवदानक लेल मिथिला रत्न केर सम्मानोपाधिसँ अलंकृत कएल गेल छल।

विद्यापति सेवा संस्थानक एहि बेर 2022क आयोजन तऽ सरिपहुँ समस्त कीर्त्तिमान ध्वस्त करैत फीनिक्स (एरिजोना, अमरीका)मे प्रस्तावित छल। कोरोनाक पुनर्प्रसार भेलाक करणेँ ई आयोजन श्रीबालाजी तिरुपतिमे सम्पन्न भेल। सम्प्रति डॉ. महेन्द्र नारायण राम एकर अध्यक्ष आ डॉ. वैद्यनाथ चौधरी वैजू महासचिव छथि। निश्चित रूपसँ मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटब एहि आन्दोलन केर सफलता थिक मुदा ई एकटा पड़ाओ मात्र अछि। अखन यात्रा समाप्त कहाँ भेल अछि अखन तऽ कोसक कोस धाँगबाक अछि। असली सफलता मिथिला राज्यक स्थापनासँ होएत। एहि लेल संघर्ष जारी अछि।

21 अगस्त 2022कैँ मिथिला स्टुडेंट यूनियन आ समानधर्मी लोक सभक सहयोगसँ मिथिला राज्यक लेल दिल्लीक जंतर-मंतरपर अभूतपूर्व, दर्शनीय आ प्रभावकारी धरना-प्रदर्शन आयोजित भेल। दिल्लीमे जेना पीयर रंगक जनसमुद्र आबि गेल हो। हम बिहारी नहि हम मैथिल छी, हमरा चाही मिथिला राज्य आदि नारा सभक जयघोषसँ दिल्ली गुँजायमान भेल रहए।

मिथिला-मैथिलीक लेल पुनर्जागरणक निमित्त अनेक संस्था सभक निर्माण भेल जे मिथिलावाद केर अग्रदूत बनल। 1910 ई.मे मिथिलेश रमेश्वर सिंह द्वारा स्थापित मैथिल महासभाक बैसारमे 1919मे मैथिली साहित्य परिषद्/मिथिला भाषा परिषद् केर स्थापना भेल छल।

1927 ई.मे बाबा विद्यापतिक नामपर आम मैथिलमे जागृतिक प्रचार-प्रसार लेल विद्यापति स्मृतिपर्व केर विचार आएल आ आयोजन शुरू भेल। 1935 ई.मे विद्यापति संबंधी लेख प्रतियोगिताक सूचना आ ओहिमे उमेश मिश्रजीकैँ प्रथम पुरस्कार रूपमे 100 टाका देल जएबाक सूचना पं. चन्द्रनाथ मिश्र अमरजी भारती (पृष्ठ 34)क आधारपर दैत छथि (मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण, 1962, पृष्ठ 434)। कतहु विद्यापति जयन्ती कतहु विद्यापति स्मृतिपर्व रूपमे शुरू भेल ई समारोह मैथिलकैँ एक सूत्रमे जोड़बाक लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आयोजन बनल। दरभंगामे स्थापित विद्यापति गोष्ठीक सत्प्रयाससँ ई जोर पकड़ि लेलक। आब मिथिलाक ई महोत्सव विशाल वटवृक्ष बनि मिथिला-मैथिलीकैँ प्राणवायु दऽ रहल अछि। मिथिलामे तऽ ई गामेगामक उत्सव बनि गेल अछि। मिथिलांचलक बाहर सेहो भारतवर्षक प्राय: प्रत्येक पैघ शहरमे ई हर्षोल्लास आ समारोहपूर्वक मनाओल जाइत अछि। एहि आयोजनकैँ शुरू करबामे आ. पं. बलदेव मिश्र आओर नरेन्द्र नाथ दासक प्रयास महत्त्वपूर्ण छल। पं. काञ्चीनाथ झा किरणक सत्प्रयाससँ सोतिपुरामे गामेगाम विद्यापति गोष्ठी संगठित भेल जे प्रतिमास धवल त्रयोदशीकैँ विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करैत छल।

मिथिला-मैथिलीक लेल रचनाकार सभमे अनुपम मात्सर्य छल। ओ सभ लोककैँ जागरूक करबा लेल साइकिलपर दरी लादि यात्रा करैत छलाह आ विभिन्न ठाम दरी-जाजिम बिछा बैसार करैत जनमानसमे मिथिला-मैथिलीक लेल जागृतिक भाव जगबैत छलाह। एहन अभियानीमे किरणजी, मधुपजी, मणिपद्मजी, अमरजी, सीताराम झाजी, आरसी बाबू आदि प्रमुख छलाह। मिथिला-मैथिलीपर कतेक गीत रचल गेल। एहि आन्दोलनमे मैथिल दधीचि भोला लाल दास, बाबू भुवनेश्वर सिंह भुवन, प्रो. रमानाथ झा, प्रो. कृष्णकान्त मिश्र, बाबू लक्ष्मीपति सिंह, प्रो. प्रबोध नारायण सिंह, डॉ. लक्ष्मण झा, राघवाचार्यजी, पं. भोलानाथ मिश्र,

पं. देवनारायण झा, कमलेश झाजी, पीताम्बर पाठकजी, मिथिलेन्दुजी, अमरनाथ चौधरी 'दीपक'जी, रमाकान्त मिश्रजी, सुधाकान्त मिश्रजी, धीरजी, राजनन्दन लाल दासजी, विजय चन्द्र झाजी, राकेश कुमार झाजी, रंगनाथ ठाकुरजी, अशोक झाजी आदि अभियानी सभक अवदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहल अछि। डॉ. वैद्यनाथ चौधरी वैजू आ डॉ. धनाकर ठाकुर केर अभियानी स्वरूप हुनका सभकेँ जीवित किंवदन्ती पुरुष रूपमे परिचिति दैत अछि।

1956मे वैदेही समितिक तत्त्वावधानमे प्रथम अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन आयोजित भेल छल। म.म. उमेश मिश्रक सत्प्रयाससँ मैथिलीकेँ PEN आ प्राच्य विद्या महासम्मेलनमे महत्त्वपूर्ण स्थान भेटल।

सहस्राधिक छोट-पैघ मिथिला जागरण यात्रा सभक अवदान मिथिला-मैथिली आन्दोलनमे सेहो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। डॉ. धनाकर ठाकुर केर शताधिक मिथिला जागरण यात्रा प्रसिद्ध अछि। ग्रेटर मिथिला एशोसियेशन केर किसलय कृष्णजी आ पं. धर्मेन्द्र नाथ मिश्र 16 जुलाई 2021केँ मिथिला जागरण यात्रा शुरू कएलनि। सर्वश्री एन मंडल, दक्षिणेश्वर राय, अर्जुन प्रसाद, विमलजी मिश्रा, रामकुमार सिंह आदि उत्साही सभ ग्रेटर मिथिला एशोसियेशनक बैनर तऽर विभिन्न सार्थक यात्रा कएलनि। एहिना श्री अरविंद कुमार झा, सचिव, अखिल भारतीय मिथिला पार्टी जनतब दैत छथि जे 31 अक्टूबरसँ 6 नवम्बर 2021 धरि मिथिला मंथन यात्रा तीन रथसँ संपन्न भेल। प्रथम रथ बलिराजगढ़सँ, दोसर सीतामढ़ीसँ आ तेसर वनगाँवसँ चलल आ विभिन्न क्षेत्रमे जन जागरण करैत सिमरिया धाम पहुँचल। एहि पार्टीक रत्नेश्वर झाजी सेहो मिथिला राज्यक लेल विभिन्न यात्रा कएलनि। चेतना आ जागृति लेल सचेष्ट रहैत छथि। मिथिला राज्य निर्माण सेनाक श्याम सुन्दर झाजी सेहो विभिन्न रथयात्रा कएलनि।

नेपालमे सेहो मिथिला-मैथिलीक लेल कम मात्सर्य नहि अछि। एहि दिशामे नेपालक अभियानी सभक जोश कनियो कम नहि अछि। जखन नेपालमे 'सौंसे मिथिला एके टोल मैथिली जकर माएक बोल' नारा बुलंद होइत अछि तखन मोन प्रमुदित होइत अछि। 2 दिसम्बर 1815केँ नेपाल आ ईस्ट इंडिया कम्पनीक मध्य सुगौली सन्धिपर हस्ताक्षर भेल छल। ई आश्चर्यजनक अछि जे तत्कालीन नेपाल नरेश युद्ध विक्रम शाह केर एहिपर हस्ताक्षर नहि अछि। सन्धिपर राजगुरु गजराज मिश्रजी (सहायक चन्द्र शेखर उपाध्यायजी) हस्ताक्षर कएलनि। ईस्ट इंडिया कम्पनी दिशिसँ लेफ्टिनेंट कर्नल पैरिस ब्रेडशॉक हस्ताक्षर भेल छल। नेपाल नरेश द्वारा एकर अनुमोदन नहि भेल तथापि 4 मार्च 1816केँ एहि सन्धिकेँ राजा द्वारा अनुमोदित मानि लेल गेल। एहिमे मिथिलाक उत्तरी क्षेत्र जनकपुर, धनुषा, वीरगंज आ विराटनगर क्षेत्र नेपालकेँ

देल गेल आ नेपालक गढ़वाल, कुमाउँ, सिक्किम आ दार्जिलिंग ब्रिटिश भारतवर्षकेँ देल गेल। ई सन्धि मिथिलाकेँ दू भागमे खंडित कएलक। डॉ. लक्ष्मण झा एहि सुगौली सन्धि केर भारी विरोध करैत छलाह। भारत-नेपाल सीमापर ठाढ़ विभाजनकारी स्तम्भ सभकेँ ध्वस्त कएने छलाह। मिथिला-मैथिलीक एहि किंवदन्तीपुरुषकेँ कमसँ कम मिथिला राज्य बनाकेँ तर्पण करब वर्तमान पीढ़ीक दायित्व अछि। सीमापरक स्तम्भ एक दिन स्थायी रूपसँ हटि जाय आ दुनू कातक मिथिला एक हुअए ई मैथिल मनीषी सभक स्वप्न अछि। आइ भले नेपालक एक पूर्व प्रधानमंत्री राजनीतिक कारणेँ चितवन लऽग दोसर मादी अयोध्या होएबाक प्रलाप कएने होथि, दुनू देशक आमजन सिया सुकुमारीक पति रूपमे भारतवर्षक सरयू नदीक कात अवस्थित अयोध्याधामक दशरथनंदन श्रीरामेकेँ जनैत अछि। दुनू देशमे बेटी-रोटीक ई शाश्वत संबंध सम्पूर्ण मिथिलाकेँ उद्वेलित करैत अछि। आब अखंड मिथिलाक स्वप्न सेहो देखल जा रहल अछि। मैथिली एशोसियेशन, नेपाल; मैथिली विकास कोष, जनकपुरधाम; मातृभाषा संघर्ष समिति, विराटनगर; मैथिली साहित्यकार सभा, जनकपुर धाम; मैथिली सेवा समिति, विराटनगर; मैथिली जिन्दाबाद, विराटनगर; विराटगढ़ परोपकार समाज, मैथिल ब्राह्मण महासभा युवा समिति, मैथिली चलचित्र कर्मी संघ, थारू आ राजवंशी समाज सभक जोश दर्शनीय रहैत अछि। नेपालक प्रांत संख्या 2 केर नाम मधेश प्रांत करब सेहो सर्व स्वीकार्य नहि भेल आ एकर नामकरण मिथिला प्रांत करबाक अभियान सेहो चलि रहल अछि।

यथार्थमे मिथिला-मैथिलीक उन्नति लेल एतेक संस्था आ लोक सक्रिय छथि जे सभक अवदानक उल्लेख करब कठिन अछि। नेटपर सक्रिय संस्था सभक संख्या गानब धरि संभव नहि। संभव जे एहि आलेखमे अचर्चित संस्था/ व्यक्तिक अवदान बहुत पैघ आ महत्त्वपूर्ण हो। एहन संस्था/व्यक्तिसँ क्षमायाचना करैत आन्दोलनमे लागल समस्त सक्रिय सदस्य सभकेँ शुभकामना दैत छी जे सभक स्वप्न शीघ्रे साकार हो।

एहि ठाम इहो कहब उचित जे जाबत ई आन्दोलन जनान्दोलन केर रूप नहि धरत ताबत परिणाम आकाश कुसुमे रहत। इहो महत्त्वपूर्ण अछि जे एहिमे अंगिका-बज्जिका-सुरजापुरी-पचपनिया-उर्दू आदि भाषाक साहित्यकार सभकेँ वृहत्तर मैथिल क्षेत्रमे आनल जएबाक चाही। एहन किछु गोटेक भ्रम केर स्थायी निवारण करब परमावश्यक अछि जे मैथिलीकेँ ओ सब रकीब नहि तथ्यात्मक रूपसँ मातृसंस्था मानथि। एहि लेल शुद्ध अन्तर्मनसँ प्रयास होएबाक चाही। सभ भाषा विकासक पात्रता रखैत अछि मुदा एक भाषाक बलि चढ़ा दोसर केर उत्थान कोनो विवेकशील मानव नहि चाहत। मातृहन्ता भगवान् परशुरामक गर्व मातृसेवी

श्रीरामक समक्षे खंडित होइत अछि। अखिल भारतीय अंग-अंगिका विकास मंचक राष्ट्रीय महासचिव श्री कुन्दन अमिताभ केर प्रधानमंत्रीसँ माँग जे नेपालक भाषा मैथिली आ नेपालीकेँ संविधानक अष्टम अनुसूचीसँ निष्कासित कऽ अंगिकाकेँ अष्टम अनुसूचीमे शामिल कएल जाय, आश्चर्यजनक आ दुखद अछि। अपन माएक मानमे मतामहीक मानमर्दन करब सर्वथा अनुचित! एहि दिशामे तत्काल सार्थक प्रयास केर आवश्यकता छैक।

आब किछु कटु सत्यसँ साक्षात्कार करायब। मैथिलीक मंचपर जोरजोरसँ चिचिया आ पाग-डोपटासँ सम्मानित भेलाक बाद जखन किछु मातवर लोक उतरैत छथि तखन अपन मैथिल अंगरक्षक, वाहनचालक वा लगुआ-भगुआकेँ हिन्दीमे आदेश दैत छथि- गाड़ी लाओ। ओ जखन घर अबैत छथि तखन नाति-पौत्रकेँ हिन्दीमे मैथिलीक कथा सुनबैत छथि। बहुत गोटे आ संस्था मात्र मैथिलीक समर्थनमे फोटो घिचा फेसबुक वा अन्य सामाजिक माध्यमपर दैत अपन कर्त्तव्यक इतिश्री मानि लैत छथि। जमीनपर परिश्रम करएसँ कनछी काटैत छथि। एहि आभासी दुनियाँसँ बाहर आबए पड़त। अपन घाम चुआबए पड़त। ई प्रवृत्ति जे खुदीराम-भगतसिंह-आजाद-अशफाक आदि अग्निपुत्र दोसर घरमे जन्म लेथि आ देशपर कुर्बान होथि, अत्यन्त खतरनाक अछि। हमर ई अभिप्राय नहि अछि जे सभ केओ आन्दोलनमे कुदि हिंसक अभियान करी, ई ने उचित अछि आ ने संभव। मुदा हमर ई अभिप्राय तऽ अवश्य अछि जे सार्वजनिक जीवन वा कार्यालयमे आवश्यकतानुसार भले दोसरो भाषामे बात करी मुदा अपन घरमे, समाजमे वा कोनो मैथिल संग कोनो परिस्थितिमे कतहु मैथिली छोड़ि हिन्दी-अंग्रेजीमे गप्प नहि करी। एहि छोट निश्चय केर ताकतसँ बड़का साम्राज्य झुकाओल जा सकैत अछि। मात्र यैह निश्चय एहन पीढ़ी अवश्य तैयार करत जे अपन अधिकार लऽकेँ रहत। देखाउँस करबाक कोनो प्रयोजन नहि। जे काज करैत छी ओहिमे मैथिलीक सर्वाधिक उपयोग करी। पंचायत अन्तर्गत पत्राचार, सूचनादि काज मुखियाजी/पंचायत सचिव मैथिलीमे करथि तऽ एहिमे कोन व्यवधान? विद्यालय वा आन संस्था सेहो अपन पत्र व्यवहार मैथिलीमे कऽ सकैत अछि। श्री दीप नारायण 18 मई 2017सँ मधुबनीक बेनीपट्टी प्रखण्ड अंतर्गत कपसिया पंचायतक नव प्रा. विद्यालय लोहनाटोलमे प्र. प्रधानाध्यापक रूपमे कार्यरत छथि। ओ बिनु कोनो आत्मप्रचार वा ताम-झामकेँ अपन विद्यालयक सभटा पत्राचार, प्रत्येक सूचना, समस्त पंजी सभक पृष्ठांकन प्रमाणपत्र सहित अन्य सभटा काज अनिवार्य रूपसँ मैथिलीएमे करैत छथि। प्रत्येक दिन विद्यालयक चेतना सत्रमे बाबा विद्यापति रचित जय जय भैरवि असुर भयाओनि केर प्रार्थना होइत अछि आ भारतीय संविधानक प्रस्तावना केर मैथिलीमे वाचन कएल जाइत

अछि। मैथिलीक प्रति हिनक मात्सर्यसँ प्रभावित भऽ सहकर्मी सभमे मातृभाषाक लेल अनुराग उत्पन्न भेल। हिनक सहकर्मी श्रीमती ज्योति एवं अनेक शिक्षक/ शिक्षकेतर मित्र मातृभाषा मैथिलीमे स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कएलनि। श्री दीप नारायण आ श्रीमती ज्योति मैथिली माध्यमसँ बच्चा सभकेँ पढ़ा रहल छथि। ई देखल जा रहल अछि जे नेना सभक बीच मातृभाषा मैथिलीमे पढ़ौनी एवं वार्तालाप सहज बोधगम्य एवं प्रभावी भेल अछि। वास्तविक मैथिली अभियानी एहने लोक छथि जे चुपचाप अपन काजमे लागल रहैत छथि। पाठशालामे मैथिली अभियान केर बैनर संग धरना-प्रदर्शन कएनिहार शिक्षक सभकेँ श्री दीप नारायणक एहि मौन मैथिली सेवासँ प्रेरणा लेबाक चाही। जँ मिथिला क्षेत्रक सब शिक्षकगण एकरा अपन-अपन विद्यालयमे लागू करैत छथि तखन कार्यसिद्धि कतेक सुगम भऽ जाओत ! एहि लेल कोनो अनुमतिक आवश्यकता नहि छैक मात्र दीप नारायण सन अपन मातृभाषाक लेल नेह, निष्ठा आ निष्काम सेवाभाव चाही। इहो आह्लादकारी बात अछि जे दीप नारायणजी ने ब्राह्मण छथि ने कायस्थ छथि। मैथिलीक लेल हुनकर ई स्वत:स्फूर्त मौन अभियान एवं अन्य ब्राह्मण-कायस्थेतर मनीषी सभक मैथिलीक लेल कएल गेल अवदानसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली मात्र ब्राह्मण आ कायस्थक भाषा नहि थिक। स्वार्थवश लगाओल गेल एहन आरोप निराधार अछि। मैथिली लेल श्री हुकुमदेव नारायण यादवजीक मात्सर्य किनकासँ कम अछि? गीदड़गंज जमैलाक पूर्व मुखियाजी बदरूद्दीन साहेब सन सुन्दर मैथिली के बाजि सकैत छल? हरिणाक पूर्व मुखियाजी आ वरीय अधिवक्ता श्री अतिकुर रहमानजीक सुन्दर मैथिली संवादक परतर के कऽ सकैत छथि? जाति-धर्मसँ परे मिथिलामे रहनिहार समस्त जन मैथिल छथि। आब जखन सबजना मैथिल उनटि गेल अछि तखन बिनु अपन अधिकार नेने मानत नहि। मिथिला राज्यक सपना साकार भऽकेँ रहत! अखंड मिथिला सेहो बहुत दूर नहि अछि।

[अर्पण, स्वर्ण जयन्ती विशेषांक, विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा, नवम्बर 2022]

साहित्यक श्रीवृद्धिमे करण कायस्थक अवदान

साहित्यकार सभक गोत्र मात्र मेधा आ जाति सारस्वत होइत अछि। आधुनिक जाति सभक खाँचामे हुनका सभकेँ फिट करब हमरा लेल अप्रिय आ दुष्कर काज! तथापि कर्णप्रिय केर प्रधान सम्पादक श्री सुरेन्द्र शैलक निदेश केर सम्मान करैत साहित्यक श्रीवृद्धिमे मैथिल करण कायस्थक अवदानकेँ रेखांकित करबाक एक छोटछीन प्रयास करैत छी। ओना ई विषय कोनो पोथीक लेल उपयुक्त अछि। निबंध लेल ई विषय उपयुक्त नहि। पूर्ण संभव जे बहुत रास प्रातिभ अचर्चिते रहि जाथि। हुनका सभसँ क्षमायाचना करैत हम करण कायस्थक मेधाक महोदधिमे प्रवेश करैत छी।

मिथिलापभ्रंश केर आदिकवि कालिदास (विशेष रूपसँ विक्रमोर्वशीयम् केर चारिम अंक) एवं अंतिम कवि बाबा विद्यापति (अवहट्ट एवं पदावली)क भाषा मध्य मिथिलापभ्रंशमे प्रवहमान पूर्वी प्रवृत्ति पाल राजा धर्मपाल (769-809 ई.)क समकालीन शबरपा, लुइपा, सरहपा आदि सिद्ध सभक भाषामे प्रतिभासित होइछ। एहि 84 सिद्धमे प्रथम सिद्ध एवं शबरपा शिष्य लुइपाकेँ आ. शिवपूजन सहाय (हिन्दी साहित्य और बिहार, प्रथम खंड, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, पृष्ठ 5) आ डॉ. धर्मवीर भारती (सिद्ध साहित्य, पृष्ठ 51)मे कायस्थ कहने छथि। ई भंगल (भागलपुर प्रक्षेत्र) देशवासी छलाह। तिब्बती ग्रंथ स्तन् ग्युरमे हिनकर अभिसमय विभंग, तत्त्वस्वभाव दोहाकोष, बुद्धोदय, भगवदभिसमय एवं लुइपाद गीतिका कुल पाँच ग्रंथ संकलित अछि। हिनक रचनाक एक उदाहरण अछि—

काआ तरुवर पञ्च बिडाल। चञ्चल चीए पइट्ठो काल।
दिढ करिअ महासुह परिमाण। लुइ भणइ गुरु पुच्छिअ जाण।

बसाढ़ (वैशाली)क कायस्थ सिद्ध गयाधर केर मौलिक ग्रंथ ज्ञानोदयोपदेश स्तन् ग्युरमे संकलित अछि। 1045 ई.मे बौद्ध धर्म प्रचारार्थ ओ तिब्बत गेल छलाह। तिब्बत अएबाक आमंत्रण देनिहार शाक्य-ये-शेस् केँ सम्पुटी तंत्र केर अनुवादमे

सहायता कएलनि। ई तिब्बतमे ल्इ-चैं (ब्रह्मपुत्र) नदीक कातमे डोग्-गी-लो-च-बा संग पाँच वर्ष रहि विभिन्न तंत्र ग्रंथ सभक अनुवाद भोट भाषामे कएलनि। ओ स्थान अखनो तिब्बतमे पवित्र स्थान मानल जाइछ। हिनक पुत्र तिब्रुपा सेहो सिद्ध छलाह। एहि सिद्ध कालमे मैथिलीक स्वरूप विकसित भऽ रहल छल।

नान्यदेव (राज्यारोहण 10 जुलाई 1097)क अँधराठाढ़ी शिलालेख केर रचयिता श्रीधर (1120-1208) सदुक्तिकर्णामृतकार छथि। संस्कृतक ई दीर्घकाय सूक्तिग्रंथ श्रीधर केर कुशल कवित्व एवं सफल सम्पादन कला केर जीवन्त दस्तावेज थिक। श्रीधर सुत बोधिदासक संत समान स्वभाव छल। पर हिंसा, पर दारा आ पर धनसँ असम्पृक्त रहबाक कारणेँ गंगाजी हिनका लऽग आएल छलीह। महाकवि विद्यापति पुरुष परीक्षाक सात्विक कथा (28म कथा)मे हिनके गाथा कहने छथि। मिथिलेश हरिसिंह देवक मंत्री सूर्यकर पंजी प्रबंध केर नेओँमे रहल छलाह। हरिसिंह देव मैथिल करण कायस्थ, ब्राह्मण आ क्षत्रिय सभक लेल जे हरिसिंहदेवी व्यवस्था शुरू कएलनि ओहिमे करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण आ तैयारीक भार सीसव वंशी कायस्थ शंकरदत्तकेँ देल गेल छल—

श्रीमच्छ्रीहरिसिंहदेव विजयी पंजी प्रबंधः कृतः तस्मात् कर्णीबीज कलितं सद्विश्वचक्रेपुरा कायस्थमतिप्रदस्थगुणिनः श्री शंकर दत्तवान्...। शंकरदत्त सुकवि सेहो छलाह। हिनक एक रचनाक उदाहरण प्रस्तुत अछि—

माधव माधव कहि मोहि गेल। माधव बितल माधव मोर भेल।
माधव तुल माधव नहि ठाम। माधव बिसरल माधव नाम।
माधव सुधि माधव नहि लेल। तैँ माधव जाय परवश भेल।
माधव बिनु जीवन नहि थीर। कह शंकर माधव हर पीर।

ज्योतिरीश्वर एवं विद्यापतिक समय अबैत-अबैत मैथिलीक स्वरूप प्रायः निखरि गेल छल। राजा शिवसिंहक प्रधानमंत्री अमृतकर (अमियकर, अमिअकर) केर एक पद रागतरंगिणी (संपा. पं. बलदेव मिश्र, वि.1991, पृष्ठ 84-85)मे एवं दू पद विद्यापति पदावलीमे संकलित अछि। हिनक पद रचना देखल जाय—

दह दिस भमि भमि लोचन आव। तेसरि दोसरि कतहु न पाव।
लगहि अछलि धनि विहि हरि लेल। ललित लता सागरिका भेलि।...

ते अधिकाइलि मानस आधि। धकधक कर मदनानल धाधि।
भनइ अमिञकर नागरि नाम। आकवि कएलिहि सिरिजल काम।

(डॉ. सुभद्र झा : विद्यापति गीतसंग्रह,1954, Appendix A, पद 10, पृष्ठ घ)
महाकवि विद्यापति सन पुरोधा जखन अमियकर केर गुणगान एतेक सुन्दर सम्मानसूचक शब्द सभसँ करैत छथि तखन हुनक चारित्रिक गुणक वितान आ मेधाक मात्र अनुमान कएल जा सकैछ—

नीति निपुण गुण नाह, अंक मे आगर।
कोष-काव्य-व्याकरण, अधिक अधिकारक सागर।
सबकर कर सम्मान सबहु सो नेह बढ़ाबिअ।
विप्रदीन अतिदुखी सबहुँ का विपत्ति छोड़ाबिअ।
कायस्थ माँह सुरसिद्ध भउ चन्द्र तुलाइव राशिधर
कवि कण्ठहार कुल उच्चरै अमिअ वरिष्यइ अमिअकर।

बाबा विद्यापतिक बाद गोविन्द दास सभसँ बेसी लोकप्रिय भेलाह। हुनक एकाक्षर अनुप्रासक छटा देखल जाय—

काँटा कंचन कांति कमलमुखी कुसुमित कानन जोइ।
कुंज कुटीर कलावती कातर कान्हु कान्हु की रोइ।

बाद केर कालखंडमे नाहस रूपौली गामक सिद्ध तांत्रिक अमला वंशीय घनानंद दासक ग्रंथ तंत्रराज आ मंत्रकल्पद्रुम एवं अजयड़ापाल वंशक भगीरथपुर निवासी कवि जयानन्द दासक रुक्मांगद नाटक प्रसिद्ध भेल छल। वृद्ध माताक लेल कमलाधारकेँ तंत्रशक्तिसँ नाहस रूपौली आनबाक जनश्रुति हिनके संग रूढ़ अछि। कल्पतरु ग्रंथकार लक्ष्मीधर, बीअर वंशीय दुधैल ग्रामवासी भक्तकवि मंगलदास, कोठिपाल वंशक बीजी पुरुष प्रभाकर केर प्रसिद्धि लेख्य प्रभाकर रूपमे होएब, लेख दुवाइ रूपमे प्रसिद्ध दुवाइ, नेउरी गामक वासी सामुद्रिक शास्त्रवेत्ता मुद्रा हस्तक रूपमे प्रसिद्ध उदयकर, मिथिलेश छत्र सिंहक मुशाविदा विशेषज्ञ गढ़कव वंशीय सिमरा ग्रामवासी मुंशी आनन्द दास आदि केर सारस्वत मेधाक मात्र अनुमान कएल

जा सकैछ। अमहला वंशीय नाहस रूपौलीवासी विश्वनाथ दासक संस्कृत ग्रंथ आह्निक (16म शती) केर प्रकाशन परमेश्वर मिश्रजी 1912मे करओलनि। गढ़कव वंशीय लदहो ग्रामवासी कान्हाराम दासक गौरी परिणय एवं सीता स्वयंवर, नवादा ग्रामवासी नन्दीदासक ब्रज परिक्रमा, वसंतपुर वंशीय इजोत ग्रामवासी परमेश्वरी दत्त कृत गौरी विलाप, कन्हौली वासी गणितज्ञ नित्यानंद दास एवं अन्य मनीषी सभक कतेक कृति तऽ अप्रकाशिते रहि गेल।

मैथिली महाकाव्य परम्परामे रमेश्वरचरित रामायणक रचना कऽ पं. लालदास (1846-1911) अमर भेलाह। हिनक अन्य कृति अछि दुर्गा सप्तशती टीका, चण्डी चरित, स्त्री धर्म शिक्षा, गणेश खण्ड, महेश्वर विनोद, हरिताली व्रत कथा, वैधव्य भंजनी, विरुदावली, गंगा माहात्म्य, जानकी रामायण, गीता अनुवाद, लक्ष्मी काण्ड, सावित्री-सत्यवान नाटक आदि। रामायणमे पुष्कर काण्डक अवधारणा एवं जानकी रामायणमे सीताक अप्रतिम चरित्र स्थापना कारणेँ महाकवि पं. लालदास मैथिली रामकाव्य परम्पराक किरीट बनि सुशोभित भेलाह। मैथिल करण कायस्थमे हिनकर सारस्वत व्यक्तित्वक समता आन केओ प्राप्त नहि कएलनि। सरिपहुँ अनुपम आ संदेहरहित सर्वश्रेष्ठ सरस्वती-साधक!

हरौली/प्रसाद वासी मनमोहन चौधरी (1849-1929) आयुर्वेद आ काव्यशास्त्र केर पंडित छलाह। हिनक मनमोहन विलास आओर राज दरभंगा पदावली प्रकाशित भेल छल।

सखबाड़ ग्रामवासी महाकवि मुंशी रघुनन्दन लाल दास (1860-1945) सुभद्रा हरण महाकाव्य, खंडकाव्य वीर बालक, दूतांगद व्यायोग, मिथिला नाटक, उत्तर रामचरित (अनु.) आदि अनुपम ग्रंथ रचि एहि समाजे नहि सम्पूर्ण मैथिली साहित्याकाशक देदीप्यमान नक्षत्र बनि सुशोभित भेलाह। हिनक सुयोग्य पुत्र नरेन्द्र नाथ दास 'विद्यालंकार' सरिपहुँ विद्याक अलंकार छलाह। महाकवि विद्यापतिपर रचित हिनक विद्यापति काव्यालोकमे महाकविक विश्व वाङ्मय केर आन कवि संग तुलनामे जे हिनकर वैदुष्यपूर्ण वैशिष्ट्य अभरल अछि ओ यथार्थमे विलक्षण अछि। मधेपुरा जिलाक खोखसी श्याम (मातृक) गाममे 28 अप्रैल 1885कैँ अवतरित रामानुग्रह लाल दास प्रसिद्ध सद्गुरु मैँही दास सन्त परम्पराक अद्भुत महापुरुष भेलाह। कुप्पाघाट(भागलपुर) सहित अनेक ठाम हिनक आश्रम अछि। अपन शिष्य परम्परामे हिनका देवत्व प्राप्त अछि। सत्संग योग (अनेक भाग), मैँही पदावली, सत्संग सुधा, वेद दर्शन योग, मानस सार सटीक, श्रीगीतायोग प्रकाश, सन्तवाणी

आदि कृति एवं प्रवचन सभक संग्रह अद्भुत रचना अछि। 8 जून 1986कैँ ई दीपशिखा अनन्त ज्योतिमे मिज्झर भऽ गेल।

महाकवि पं. लालदासक बाद मैथिली रामकाव्य परम्पराकैँ वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' (1912-1987) अपन अनुपम कृति सीतायन, इमादपट्टीक खड्गवल्ललभ दास 'स्वजन' अपन सीताशील आ आहिल केर राजेन्द्र लाल दास सीताक प्रस्थान (दोसर रचना कर्ण स्तम्भावली)सँ परिपुष्ट कएलनि।

भच्छी ग्रामवासी मिथिलाक प्रथम गजेटियरकार मुंशी रास बिहारी लाल दास (1872-1940) मिथिलाक प्रथम इतिहासकार रूपमे समादृत छथि। एहि क्षेत्रमे हिनक मिथिला दर्पण (1915 ई.)कैँ मीलक पाथर मानल गेल। हिनकर सुमति (1918) उपन्यास सेहो लोकप्रिय भेल। एहि गुणवन्त खानदानमे धौत परीक्षोत्तीर्ण आ पंडित उपाधित गुणवन्त लाल दास सुदर्शनोपाख्यान, गौरी परिणय, गजग्राहोद्धार सन प्राणवन्त रचना कएलनि। हिनक पुत्र सत्यानन्द दास (27 दिसम्बर 1933- 22 मई 2014)कैँ शिक्षक दिवस (5 सितम्बर), 1993कैँ तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा महोदय सम्मानित कएने छलाह। हिनकर रचना तथागत एवं वरगुण प्रसिद्ध भेल छल। हिनक अग्रज चतुरानन्द दास 1936मे विधायक निर्वाचित भेल छलाह। मधुबनी नगर निकाय केर अध्यक्ष सेहो रहल छलाह। एहि गामक काली कुमार दास (28.2.1902 - 11.1.1948) केर कामिनीक जीवन हिन्दी साहित्य कार्यालय, दरभंगासँ 1927मे प्रकाशित भऽ लोकप्रिय भेल छल। अन्य कृतिमे मैथिली गीतांजलि, काव्य कुसुमांजलि आ परदेशी सेहो प्रशंसित भेल छल। डखरामवासी मुकुन्द लाल दासक दरभंगा राज वंशावली एहि कालखंडमे प्रकाशित भेल। नरंगवाली वंशीय पकरी गामवासी धरणी दासक काया परिचय प्रकाशित भेल। एहिमे अद्भुत गानब देखल जाय—

एका एक मिले गुरु पूरा मूलमंत्र जौं पाबै
सकल साधुके वाणी बूझे मन परतीत बुझाबै
दुआ दुइ तजो नर दुविधा रजगुण तमगुण त्यागो
सतगुण मारग उलटि के निरखो सोवत से उठि जागो
तीया तीन त्रिवेणी संगम अगम एक स्थाना...

रतिपति भगत नामक कायस्थ गीत गोविन्द केर मैथिली अनुवाद कएने छलाह। बेरि गामक विष्णु प्रकाश चौधरी (1887-1943) लब्धप्रतिष्ठ आशुकवि आ समस्यापूर्ति विधाक विशेषज्ञ छलाह। हिनक रचना राम वन गमन नाटक प्रकाशित अछि। दोसर कृति जानकी जयमाला अनुपलब्ध अछि।

रजनी बभनगामाक पुलकित लाल दास 'मधुर' (1893-1943) इतिहासप्रेमी कवि छलाह। ई गन्धवरिया राजपूत सभक इतिहास लेखन केर आधारपुरुष छलाह। डॉ. राधाकृष्ण चौधरीकेँ एहि वंशक इतिहास लेल आधारभूत सामग्री यैह देने छलाह। कृतज्ञतापूर्वक डॉ. चौधरी एकरा स्वीकार कएलनि।

मैथिल दधीचि बाबू भोला लाल दास (1894-28 मई 1977)क जीवन मैथिलीक उत्थान लेल समर्पित छल। मैथिली आन्दोलन केर एक सबल स्तम्भ, पाठ्यक्रममे मैथिलीक स्थान दिएबाक लेल समर्पित अभियानी भोला बाबू विषयक महाकवि सुमनजी कहैत छथि—

कविवर, कविशेखर विदित भोलालाल अमोल जे
जेठ-जेठ गुन, तत्समक सगुन अभयगुन घोल से।...
जनिका नहि परवाहि अछि क्यौ कहौ बताहो
मैथिलीक हित लड़बे उचित पहिरि सन्नाहो
जे विधान-विद्वान, सुकवि, सम्पादक वक्ता
उभय भारती मिथिला हित निज जे अधिवक्ता
दास मैथिलीक लाल छथि जे अमोल भोला भला
माथ मातृभाषाक नहि झुकओ, कटओ बरू निज गला।

हिनक सुपुत्र जगदीश ना. कर्णक सेहो सारस्वत व्यक्तित्व छल। सुप्रसिद्ध गीतकार बरहेता निवासी दामोदर लाल दास 'विशारद' (1904-4.2.1981) खंडकाव्य शकुन्तला केर रचयिता छलाह। हिनक कालजयी कीर्त्ति केर कलश हिनक रसपूरित गीतसँ अखनो प्रत्येक अवसरपर छलकि जाइत अछि। हिनकर भगवती गीत आ विधि-व्यवहारक गीत सभक बिना बियाह-दान संपन्न नहि होइत अछि। श्रीमती चाँदनी दास, रागिनी चौधरी, किरण दास आदि अपन मधुर स्वरमे हिनक गीत गाबि यशस्विनी भेलीह। दामोदर बाबूक एक विशेषता छल जे ओ पत्र-व्यवहार सेहो मैथिली पद्यमे करैत छलाह। पिता-पुत्रीक पत्र-व्यवहार प्रसिद्ध भेल छल।

बिहारक एकमात्र दांडी यात्री गिरिवरधारी चौधरी (प्रसिद्ध कारोबाबू) क अग्रज ऋषितुल्य रमापति चौधरी (23.1.1908-21.5.1986) कोठिपाल वंशावली, धृतराष्ट्र विलाप, गीता अनुवाद, कुमारसंभवम् केर भावानुवाद पार्वती तपस्या, रघुवंशम्, स्तोत्र रत्नावली, दुर्गा सप्तशती आदि रचनासँ बेस लोकप्रिय भेल

छलाह। भजले राम चौधरी (1914-2.4.1981) केर वंशावली, एकादशी माहात्म्य, तीर्थयात्रा, संस्कृतक विभिन्न धार्मिक ग्रंथ सभक अनुवाद, बगुला भगत, संगीत समाज, गांधीवाद आ क्रान्तिवाद : खंडन मंडन आदि कृति अछि। बहुत रास रचना अप्रकाशित रहि गेल अछि। एहि गामक मिथिला विभूति हृदय नारायण चौधरी (ज. 5 मार्च 1943) खादी ग्रामोद्योग संघ केर मंत्री एवं अध्यक्ष रहलाह। हिनक कृति अछि - बाल ज्ञानमाला (हिन्दी कवितासंग्रह), कथा सुरसरि (मैथिली कथासंग्रह) आओर आदर्श कथाएँ। अनुज दिनेश नारायण चौधरीक सारस्वत छवि अछि। एतहि केर गौरीशंकर चौधरी एवं अम्बिका चरण दास सारस्वत व्यक्तित्व छलाह। बेरि गामक प्रतिष्ठित पत्रकार अवधेश बच्चन केर 'चलिए गंगापुर' ग्राम गौरव ग्रंथमालाक गौरव थिक।

पंजी प्रबंधपर प्रमुख शोधपोथी डॉ. विनोद बिहारी वर्माजीक 'मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण', प्रसिद्ध पंजीकार लक्ष्मीपुरवासी वासुदेव मल्लिक (13.7.1917-23. 3.1993) केर 'मैथिल कर्ण कायस्थक पंजी ज्ञान प्रकाश', कुलानन्द लाल दास कृत 'विवाह व्यवस्था : मैथिल कर्ण कायस्थ' एवं खेराजपुरक कमलधर दासक पोथी 'मैथिल करण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक संबंध' (2008) एहि समाजक धरोहर थिक।

इमादपट्टी गामक जयदेव दास 'अभिनव' (15 अगस्त 1914-2.8.2005) स्वतंत्रता आन्दोलनमे सेल-जेल यात्रा कएलनि। फेर प्रशासनिक सेवामे आबि विभिन्न पदपर रहैत संयुक्त सचिव रूपमे सेवानिवृत्त भेलाह। हिनक प्रकाशित कृति अछि— अरुणा, सरजोम-बा-डुम्बा (शालपुष्प गुच्छ— हो जातिक विवाह गीत), अँदी (हो जातिक विवाह पद्धति), हो भाषा और उसका साहित्य, अश्रु अर्घ्य (काव्य), विदा, वनांचल, गीतामृत (अनुवाद), गीतातत्त्व तरंगिनी, मेघदूतम् केर हिन्दी काव्यानुवाद, दास कैपिटल (अनु.), ईशमय जगत् (चिन्तन), कुमारसंभवम् केर हिन्दी आ मैथिली अनुवाद, स्वप्नवासदत्तम् केर हिन्दी अनुवाद (एनबीटीसँ प्रकाशित)। डखराम गामक गंगाधर लाल दास कम्युनिस्ट दल केर मूलाधार एवं जनशक्ति अखबारक यशस्वी संपादक छलाह।

प्रशासनिक सेवाक पदाधिकारी एवं शुद्ध सारस्वत सम्पदा संपन्न ब्रजेश्वर मल्लिक (1917-1949) अपन गौरवग्रंथ 'कोशी-गीत'मे कोशीक लोकगीत सभक प्रथम संकलन-संपादनसँ यशस्वी भेलाह। अन्य पोथी अछि - अमूल्य जीवन की ओर, चाँदी का गिलास, हिमालय पुकार रहा, भ्रष्टाचार के दंश (आत्मकथा), The Role of Services in the Making of India, Splendour of Bihar आदि।

मैथिली लोकगाथा साहित्यक पुरोधा डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म (7 सित.1918- 19 जून 1986)केँ यायावरीमे राहुल सांकृत्यायन, जासूसी औपन्यासिक कलामे देवकीनंदन खत्री आ लोकगाथा चित्रणमे सिंहासन बत्तीसीकार सभ केर मिश्रित रूप मानब उचित। मिथिलामे लोकगाथाक एहन पुरोधा कोइ दोसर नहि भेल। हिनक कोब्रागर्ल, लोरिक विजय, राय रणपाल, दुलरा दयाल, राजा सल्हेस, लवहरि कुशहरि, फुटपाथ, नागभूमि, कनकी, आदिम गुलाम आदि औपन्यासिक कृति आओर कंठहार, झुमकी, तेसर कनिञा प्रभृति नाटक एवं अनंग कुसुमा महाकाव्य हिनकर बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभाकेँ प्रतिभासित करैछ। कहुआ गामक नन्दीपति दासक अनेक भुतिआएल रचना सभमेसँ हुनक संतति ललित बल्लभ दास जतनपूर्वक ताकि-हेरि हुनकर पोथी बँगटू बाबूक अंग्रेजी प्रकाशित करओलनि।

मिथिलाक इतिहासकेँ नव दिशा देनिहार अप्रतिम इतिहासकार प्रो. राधाकृष्ण चौधरी (15.2.1921-15.3. 1985) केर इतिहास एवं साहित्य विषयक अनेक ग्रंथ अछि। Mithila in the Age of Vidyapati, History of Muslim Rule in Tirhut, Selected Inscriptions of Bihar, History of Bihar, भारतवर्ष का राज. व सांस्कृतिक इतिहास, मिथिलाक इतिहास, The Political and Cultural Heritage of Mithila आदि कृति एवं विभिन्न आलेख/ व्याख्यान हुनक अतुलित मेधा आ अक्षय कीर्त्ति केर साक्षी अछि।

सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी सरहदवासी मैथिली अभियानी जटाशंकर दास (3.3.1923- 4.8.2006) चेतना समितिक अनेक बेर सचिव आ उपाध्यक्ष रहल छलाह। लोकनायक जयप्रकाश नारायणपर हिनक व्याख्यान मैथिली अकादमी प्रकाशित कएलक। मैथिल दधीचि बाबू भोलालाल दासपर विनिबंध साहित्य अकादेमी छापलक। विभिन्न आलेख प्रकाशित अछि। शरतचन्द्रक पंडित मोशाय केर मैथिली अनुवाद की यौ पंडितजी अप्रकाशित अछि। हिनकर भाउज अन्नपूर्णा देवी (पति गौरीशंकर दास)क मैथिली गीतमाला लोकप्रिय भेल। हिनक पौत्र आशीष नीरज साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम सभमे सक्रिय रहि अग्रणी भूमिका केर निर्वहन करैत छथि।

भरबाड़ाक गिरिवर लाल दासक सुपुत्र सत्य नारायण लाल दास प्रसिद्ध बौआ साहेब (अवतरण 5 मई 1926, महाप्रयाण 18 नवम्बर 2009) कबीर सम्प्रदायक सुप्रसिद्ध नाम अछि। हिनकर सारस्वत अवदानमे हमारे सद्‌गुरु कबीर, रामनाम, सहज योग, तीन खंडमे सद्‌गुरु कबीर के विचार-सत्यखंड, योगखंड आ भक्तिखंड, गुरुवाणी सरलार्थ, कबीर ग्रंथावली टीका, गरीब नेवाज, भजनमाला

आदि अछि। हिनक पुत्र विद्यानंद दास पिता द्वारा 1968मे स्थापित कबीर विचार प्रचार संघसँ सत्य की ओर पत्रिका प्रकाशित करैत छथि। हिनक योग रहस्य पोथी प्रकाशनाधीन अछि।

भदहर ग्रामवासी जगदीप नारायण चौधरी 'दीपक' (5 फरवरी 1928-25.3.1992) सुकोमल भाव केर कवि छलाह। हिनक कृति 'आरती' पाठ्यक्रममे छल। ई कृति अत्यधिक प्रतिष्ठा अर्जित कएने छल।

अनन्त बिहारी लाल दास 'इन्दु' (18.7.1928-20.1. 2010) मैथिली, हिन्दी आ नेपालीमे रचना कएलनि। तीन सप्तक, तंत्रगीतिका, सजनी गे, खंजन नयन निरंजन, मधुर मैथिली गजल, हुनकहि लागि (नेपाल नरेश महेन्द्र वीर विक्रम शाहदेवक उसैको लागी केर मैथिली अनुवाद), युद्ध आओर योद्धा (साहित्य अकादेमी द्वारा 2004मे पुरस्कृत), अथाह (उपन्यास) मैथिलीमे अछि। हिन्दीमे रागमयी-अनुरागमयी, नेपाली कविता, सीता व्यथा कथा, राम व्यथा कथा आदि अछि। नेपालीमे माया को गीत हरू अत्यन्त लोकप्रिय भेल छल। अप्रतिम भाषा-सौष्ठव आ रसपूरित अद्‌भुत भाव-गाम्भीर्यक विलक्षण चितेरा मैथिली-हिन्दीक मूर्द्धन्य साहित्यकार दूधपुरा ग्रामवासी डॉ. केदारनाथ लाभ (जन्म 2.5.1929) केर महाकाव्य भारती आ लखिमा अत्यन्त लोकप्रिय भेल। हिनक मधुवर्षी लेखनीक रससिक्त वर्णन, भाव केर प्रांजलता एवं गति-छन्द आदि काव्यशास्त्रीय निकष सभक सम्यक् निर्वहन कारणेँ दुनू कृति साहित्यक गौरवग्रंथ बनि गेल। छपरामे रामकृष्ण मिशन केर स्थापना आ विवेक शिखा पत्रिका शुरू कएलनि। व्युत्पन्न विद्वान् सभमे अग्रगण्य छथि लाभजी।

कनकपुरा गामक वासी अंग्रेजीक प्रो. जनक किशोर लाल दास (4.1.1930- 23.10.2016) भालसरिक फूल (कथासंग्रह), दिल्लीक सड़कपर (काव्य), Jai Prakash Narayan : A Revolutionary Sublime, मैथिली गीता आदि लिखि यशस्वी भेलाह। मैथिलीमे रचल जा रहल हिनक रामायण अपूर्ण रहि गेल।

कर्णामृत (कोलकाता) केर पर्याय राजनन्दन लाल दास (5 जन.1934-4.7.2021) आजन्म मिथिला-मैथिलीक लेल सक्रिय रहलाह। हिनक ग्रंथ सभमे मिथिला-मैथिलीक विकासमे कर्णगोष्ठी एवं कर्णामृतक योगदान, सन्तो (नाटक), चित्रा-विचित्रा (आलेखसंग्रह), प्रबोध नारायण सिंह (साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित विनिबंध) आदि प्रमुख अछि। मैथिली लेल अहर्निश जरैत ई दीप दि. 4.7. 2021कैँ मिझा गेल।

सुन्दरपुरक योगेन्द्र ना. लाल दास 'योगी' (1934-1990)क जीवन चरित एकर प्रमाण थिक जे कोना गृहस्थ रहि योगी बनल जा सकैछ। हिनकर श्री रघुवर बाल माधुरी, मिथिला विहार, श्रीसीताराम फुलवारी लीला, सीता स्वयंवर, केवटक अनुराग, शबरीक प्रेमाभक्ति, सुतीक्ष्ण संवाद, गिद्धराज जटायु, विभीषण शरणागति, श्रीकृष्ण जन्म-लीला, पार्वती परिणय, भक्त शिरोमणि ध्रुव, सीता बाल चन्द्रिका, झूला गीत, सख्य भाव, उद्‌गार (मैथिली विवाह गीतसंग्रह) आ हिलकोर (नाटिका) आदि कृति अछि। श्रीमती ज्योति चौधरी अपन पिताक गीत सभकेँ संकलित कऽ प्रकाशित करा अपन मधुर स्वरमे Yogi Bhajanawali Jyoti Choudhary यूट्यूब चैनलपर अपलोड कऽ पिताकेँ सारस्वत तर्पण देलनि।

कासिमपुर(सहरसा)वासी नवगीत केर प्रमुख हस्ताक्षर शान्ति सुमन (जन्म 15 सितम्बर 1942) केर सुलगते पसीने, पसीने के रिश्ते, मौसम हुआ कबीर, समय चेतावनी नहीं देता, भीतर भीतर आग, एक सूर्य रोटी पर, तप रहे कचनार आदि हिन्दी कृति अछि। मेघ इन्द्रनील मैथिली गीतसंग्रह प्रशंसित भेल छल।

9 अगस्त 1943केँ साहित्यकार एवं प्रशासनिक सेवाक पदाधिकारी पिता ब्रजेश्वर मल्लिक केर प्रथम संतान रूपमे जन्म ग्रहण कएनिहारि डॉ. शेफालिका वर्माजीक जीवन अपन नामकेँ सार्थक करैत सिंगरहारक पुष्प जकाँ सुवासित रहल अछि। झहरैत नोर विहुसैत ठोर, विप्रलब्धा, स्मृति रेखा, एकटा आकाश, यायावरी, भावांजलि, ठहरे हुए पल, नागफाँस, किस्त किस्त जीवन (2012मे साहित्य अकादेमी सम्मान) आदि कृति प्रकाशित अछि। अनेक संस्था सभसँ पुरस्कृत/सम्मानित छथि। हिनक सुपुत्र डॉ. राजीव कुमार वर्मा सेहो साहित्य सेवामे सतत् रत रहैत छथि। माताश्रीक उपन्यास नागफाँसक आंग्ल अनुवाद कएने छथि। ओ समयक हस्ताक्षर : शेफालिका वर्माक सम्पादन कुमकुम झा संग कएने छथि। हिनक अन्य कृति अछि — Feudal Social Formation Under the Kalchuries of Tripuri, From Village to Globe आदि।

पटना कलम केर यशस्वी चित्रकार आ आर्यावर्त अखबारमे प्रकाशित होइवला चुटकुलानन्दक चिट्ठी केर अनाम लेखक कुलानन्द दास छलाह। अँधराठाढ़ी ग्रामवासी कुलानन्द दासक सुपुत्र ललित कुमुद सेहो श्रेष्ठ चित्रकार छलाह। हिनक सुदर्शन व्यक्तित्व, सुकोमल वाणी, आत्मीय आपकता सभकेँ आकृष्ट करैत छल। अनेक इतिहास प्रसिद्ध चित्र सभक चित्रकार सुयोग्य पिताक सुयोग्य पुत्र ललित कुमुद (1946- 3.4.2012) अनेक संस्था सभसँ सम्मानित-अलंकृत एक विरल व्यक्तित्व छलाह। हिनकर मैथिल कर्ण कायस्थों की सारस्वत

साधना, अनामिका छद्मनामसँ गीतसंग्रह, मिथिला लोक चित्र कला प्रकाशित अछि। हिन्दी कवितासंग्रह मेरे हिस्से की धूप बेस चर्चित भेल छल। एहि गामक मेधावी नरश्रेष्ठमे प्रो. जगदीश लाल कर्ण गणित आ प्रो. लक्ष्मीकान्त कर्ण भौतिकी केर निष्णात विद्वान् छलाह। जगदम्ब कॉलेज, छपराक यशस्वी प्राध्यापक प्रो. जगदीश लाल कर्ण केर College Algebra पाठ्यक्रममे शामिल छल। प्रो. लक्ष्मीकान्त कर्ण भौतिक शास्त्रमे अकूत यश प्राप्त कएलनि। हिनक ग्रामीण रामेश्वर दत्त रमण (आर डी रमण) केर मेधाक चर्च होइत अछि। हिनक रचना सभ हिनक सारस्वत स्वरूपकैँ सोझाँ अनैत अछि। मरुकिया गामक धनुषधारी लाल कर्ण केर मेधा आ विलक्षण सुलेख वा हस्तलिपि सेहो चर्चित भेल छल। मिथिला चित्रकला/ पेपरमैसी कलामे जितवारपुरवासी जगदम्बा देवी, रसीदपुरक गंगा देवी, राँटी वासी महासुन्दरी देवी, गोदावरी दत्त, सुभद्रा देवी प्रभृति कलाकार सब पद्मश्रीसँ अलंकृत भेलीह। भरबाड़ाक दास पुष्कर राष्ट्रीय स्तरपर सम्मानित यशस्वी चित्रकार छथि। राष्ट्रपतिसँ सम्मानित सन्कोर्थ रामपुरक धीरेन्द्र कुमार दास सीकी कलाक सर्वश्रेष्ठ साधक छथि।

आधुनिक युगमे जे मनीषी सभ अपन विद्वत्रसँ वाग्देवीक आराधना कएलनि ओहिमे परसौनी गामक वीरेन्द्र मल्लिक (ज. 3 जनवरी 1937 ई.) अन्यतम छथि। हिनक शोधग्रंथ नाटक आ रंगमंच : प्रकृति प्रतिमान (2018) तीरभुक्ति, संगम बिहार, नव दिल्लीसँ प्रकाशित अछि। हिनक अनेक कृति अप्रकाशित अछि। एहन व्युत्पन्न विद्वान् सभक परम्परामे वनगाँव केर सुधी चिन्तक, परिश्रमी संकलनकर्ता आ दक्ष सम्पादक डॉ. विनय कर्ण एवं शोधमर्मज्ञ श्री अशोक कुमार वर्मा (जन्म 10 जून 1941, लब्धप्रतिष्ठ पोथी कायस्थों की सामाजिक पृष्ठभूमि, ISBN 9788185244860 केर लेखक) कैँ सेहो राखल जा सकैछ। डॉ. विनय कर्ण द्वारा सन्त शिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोसाईं केर जीवनवृत्तपर निर्मित डाक्युड्रामा फिल्म कालजयी कृति अछि। मुर्तुजापुरक विजय शंकर मल्लिक (जन्म 22 नवम्बर 1947) केर हृदयोद्गार, भावाभिव्यक्ति, शुभ अभिनन्दन, शुभावसरोचित काव्य रस प्रसाद, रसमंजरी, सुधामंजरी, सगुनक भार, कथासंग्रह सीप और मोती आदि कृति अछि।

1 जून 1940कैँ हरिपुर रेवाड़ी गाममे जन्म नेनिहार उमेशचन्द्र कंठक कृति अछि— होरिक हुड़दंग, प्रखर रश्मि, नौनिहाल, तनी मुट्ठी, सहर, प्रतिभा पुरुष आदि। गोढ़ियारी (मुजफ्फरपुर)क डॉ. अरुण कुमार कर्णक कृति अछि— अवलोकन, द्वादशी, आकलन आदि। तारालाही गामक डॉ. उमाशंकर चौधरी (ज.1.1.1949) केर काव्यसंकलन एवं कोइली कथासंग्रह काफी लोकप्रिय भेल।

कुआ कमलपुरक डॉ. सुरेन्द्र लाल दास (ज.16.8.1949)क Mahatma Gandhi and Touchability since 1932, आब की (कथा/निबंध संकलन) आ संयोगसँ (काव्यसंग्रह) प्रकाशित अछि।

सुप्रसिद्ध पत्रकार आ लेखक चंगेल ग्रामवासी अरविन्द नारायण दास (6 सित.1949- 6 अग. 2000) केर The Republic of Bihar, The State of Bihar, Changel : The Biography of a Village, Agrarian Movements in India : Studies on 20th Century Bihar (ed.) आदि कृति अछि। नक्सलवादी आन्दोलनसँ प्रभावित छलाह।

अंग्रेजीक यशस्वी प्राध्यापक प्रो. नित्यानंद लाल दास (10.11.1938-24.6.2014)कैँ कलाम साहेबक Ignited Minds केर मैथिली अनुवाद प्रज्ज्वलित प्रज्ञापर साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार प्राप्त भेल छल। हिनक The Legends of Naika (मणिपद्मजीक नैका बनजाराक अंग्रेजी अनुवाद), Thus Spoke Nachiketa, All Passion Spent, तिरुक्कुरल (संत तिरुवल्लुवर केर तमिल वेद तिरुक्कुरल केर मैथिली अनुवाद), प्रो. राधाकृष्ण चौधरीपर साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित विनिबंध सेहो प्रशंसित भेल छल। द राइटर्स डे, फेरारी बाबा एवं ओ रसायनी अन्य अनुवाद रचना अछि। श्री भैरव लाल दास संग कएल गेल भारतीय संविधानक मैथिली अनुवाद बेस चर्चित भेल छल। राष्ट्रपति महोदय द्वारा सम्मानित हिनक शिक्षिका सुपुत्री चन्दना दत्त साहित्य, मिथिला पेंटिंग आओर सामाजिक कार्यमे सक्रिय रहैत छथि। हिनक मैथिली कथासंग्रह 'गंगास्नान' प्रशंसित आ पुरस्कृत कृति अछि। कल्याणी (मैथिली कथासंग्रह) शीघ्र प्रकाश्य अछि आ हिन्दी काव्य किरण अखने प्रकाशित भेल अछि। मिथिला पेंटिंग केर सिद्धहस्त कलाकार विमला दत्त केर मिथिलाक पावनि-तिहार आ सोलह संस्कार पोथी प्रकाशनाधीन अछि। कृष्ण कुमार कश्यप केर शशिबाला संग कएल मेघदूतम् आ गीत गोविन्दम् केर अनुवाद यश प्राप्त कएने छल। मिथिला चित्रकलापर विभिन्न पोथी आओर माछ भात अन्य रचना अछि।

सिमरा ग्रामवासी हिन्दीक अधीति विद्वान् प्रो. श्यामानन्द लाल दासक साहित्यिक मनीषी सभक परिचयात्मक संकलन लोकप्रिय भेल छल। हैदरपुरक बद्रीनारायण दासक गीतायण एवं अन्य पोथी सेहो चर्चित भेल छल। विधि-व्यवहार आ गीतपर विन्देश्वरी देवी/ ब्रह्मदेव लाल दास (नवानी) कृत मैथिल शुभ संस्कार, शैल देवी/सच्चिदानंद लाल दासक मैथिल कर्ण कायस्थक मूल-गोत्र-प्रवर एवं विवाहक विध-व्यवहार, राजवल्लभ कंठ (विशहथ) केर बियाह दान, कुलानन्द लाल

दासक विवाह व्यवस्था : मैथिल कर्ण कायस्थ तथा केदारनाथ दास (कनकपुरा)क एहि विषयक पोथी समाजमे लोकप्रिय भेल अछि। सच्चिदानंद दासक सन्धि विजय (संस्कृत) आ कायस्थ कौन (हिन्दी) सेहो लोकप्रिय भेल।

बेलाराहीक विश्व मोहन लाल दास (15.2.1949-2021) केर सन्नाटे की धूप, इन्हें मत तोड़ो, गांधी की एक और मौत, दुर्गा बनी रुक्मिणी, खंभे खामोश हैं, पोरबंदर में सिकंदर आदि कृति हिन्दीमे अछि। मैथिलीमे उकटा पैंची, उफाँटि गोटी आदि रचना अछि। प्रतिष्ठित कार्टूनिस्ट श्री रामजी लाल दास (बेलाराही)क शक्ति संकट आओर कवि मन ने जो कहा प्रकाशित अछि। बेलाराही गामक विभूति/ वैशिष्ट्यपर श्री अरुण दासक पोथी हिनकर सारस्वत सहयोगसँ शीघ्र प्रकाश्य अछि। डॉ. प्रमोद कुमारक 'कनकिरबा' (लघुकथासंग्रह) एवं कवितासंग्रह 'मुदित मन' सुधी पाठक सभक ध्यान आकृष्ट कएलक अछि।

पूर्णियाँ जिलाक जगन्नाथपुर ग्रामवासी मिथिला-मैथिलीक लेल समर्पित चन्द्रमोहन कर्ण (जन्म 2 जनवरी 1951) 2012-13सँ लगातार देसिल बयना (हैदराबाद)क सम्पादन करैत आबि रहल छथि। हिनक मैथिली काव्यसंग्रह माए-बाबूजी प्रकाशित आ प्रशंसित अछि।

सुच्चा कवि रूपमे विख्यात भदहर ग्रामवासी सुरेन्द्र शैल (ज. 3 जनवरी 1951) कर्णप्रिय केर यशस्वी प्रधान सम्पादक आ भू सेवा संवाद एवं पेंशनर्स संदेशक सम्पादक छथि। अनेक नव लेखक-लेखिकाकेँ आँगुर पकड़ि लेखन केर प्रशिक्षण दैत भविष्य सँवारि रहल छथि। हिनक काव्य संकलन 'अछिंजल' लोकप्रियताक नव प्रतिमान बनओलक। काव्य संकलन 'गाम' प्रेसस्थ अछि। शैलजी मैथिली दोहा विधाक प्रमुख हस्ताक्षर छथि। पचहीक विनोद बिहारी लाल (ज. 1953) चर्चित कथाकार छथि। शताधिक कथा प्रकाशित छनि।

पोरौल गामक डॉ. धीरेन्द्र कुमार दास 'अरविन्द' (जन्म 15.1.1952) मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीक सिद्ध विद्वान् छथि। हिनक श्रीमद्भगवद्गीताक मैथिली पद्यानुवाद, कक्का कहलनि, डायपर वीसा; जुड़ब, रूचब आ पचब (उपन्यास), आदि कृति अछि। Infinite Variety : A Psychological Study of aspects of womanhood in Shakespeare's Plays विषयक शोध अति गम्भीर अछि।

कन्हौली (खजौली)मे 5 मार्च 1963केँ जन्म ग्रहण कऽ प्रदीप बिहारी मैथिली कथा साहित्यक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर भेलाह। विसुवियस, शेष, जड़ि, कोखि आ मृत्युलीला सन लोकप्रिय कृतिसँ मैथिली उपन्यास साहित्यक श्रीवृद्धि कएलनि।

औतीह कमला जयतीह कमला, मकड़ी, सरोकार (साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कारसँ सम्मानित), पोखरिमे दहाइत काठ, सपन एक देखल आदि कथासंग्रह सभसँ अकूत यश अर्जित कएलनि। लघुकथासंग्रह खण्ड खण्ड जिनगी आ हे रौ सुधी पाठक सभक ध्यान आकृष्ट कएलक। नेपालीसँ मैथिलीमे प्रदीपजी द्वारा अनूदित पोथी सभ अछि— अक्षर आर्केस्ट्रा, गाममे कविता, आदिम बस्ती, किएक कनलैं उपमा, जहल आदि। नेपालीसँ हिन्दीमे अनूदित पोथी कारा साहित्य अकादेमीसँ आ बैजूमामा नेशनल बूक ट्रस्टसँ प्रकाशित भेल अछि। हिनक मैथिली कथासंग्रह सभक हिन्दी अनुवाद केर दू पोथी— उजास (चतुरंग प्रकाशन, बेगूसरायसँ) आ तालाब में तैरती लकड़ी भारतीय ज्ञानपीठसँ प्रकाशित भेल अछि। सगर राति दीप जरय गोष्ठीमे पठित कथा सभमेसँ चयनित कथा सभक संग्रह भरि राति भोर आ जीवकान्तजीक पाँचटा उपन्यास केर संकलन जेना कोनो गाम होइत अछि केर सम्पादन कएने छथि। भारतीय स्टेट बैंकक यशस्वी सेवासँ एहि वर्ष सेवानिवृत्त भऽ साहित्य सर्जनामे लीन छथि। हिनक धर्मपत्नी झापा (नेपाल) जिलाक आयाबारीवासी मेनका मल्लिक (जन्म 18 जून1966)क प्रथम पोथी नेपालीसँ मैथिलीमे अनूदित कवितासंग्रह ओ लोकनि जे नहि घुरलाह अछि। देश आ अन्य कविता केर अनुवाद एवं नीलकंठ उपन्यास केर अनुवाद सेहो प्रकाशित भेल अछि। हिनक मौलिक कवितासंग्रह गेल्ह सब झाड़ैत अछि पाँखि आ चर्चित कथासंग्रह स्त्री, राति आ प्लेटफार्म नंबर तेरह प्रकाशित एवं प्रशंसित भेल। नारी विमर्शक हिन्दी त्रैमासिक औरत आ मैथिली पाक्षिक दक्षिण मिथिलाकैँ सम्पादन कएने छथि। अपराजिता सम्मान आ ज्योत्स्ना सम्मान सहित अनेक सम्मान सभसँ अलंकृत छथि। एहि गामक घनश्याम घनेरो (ज. 7.11.1964) लघुकथा विधाक प्रमुख हस्ताक्षर छथि। संग्रह 'उपरान्त' समादृत भेल छल।

दरभंगा जिलाक सुलतानपुर ग्रामवासी डॉ. अमरनाथ केर मैथिली उपन्यास 'सिनुरिया आमक गाछ' अत्यन्त लोकप्रिय भेल। डॉ. अमरनाथ जहिना आँखिक ऑपरेशनमे एकदम सटीक आ परिशुद्ध स्कालपेल चलबैत छथि ओहने परिशुद्धता हिनक शब्द चयनमे अछि। दोसर पोथी नेत्ररोग चिकित्सा भारतीय भाषामे चिकित्सा विज्ञानक पढ़ौनीक दृष्टिसँ अत्यन्त उपयोगी अछि। महात्मा गांधी आ चम्पारण विषयक बहुत रास पोथी आ अपन विशिष्ट व्याख्यानसँ देश भरिमे अकूत सुयश अर्जित कएनिहार रतुपार निवासी श्री भैरव लाल दासक अनेक पोथी सभमेसँ किछु महत्त्वपूर्ण पोथी अछि— गोत्राध्याय (मै.), कैथी लिपि का इतिहास, विप्लवी बटुकेश्वर दत्त, गदर आन्दोलन का इतिहास, बटुकेश्वर दत्त और क्रान्तिकारी आन्दोलन, चम्पारण में

गांधी की सृजन-यात्रा, तिनकठिया, दामोदर लाल दासपर विनिबंध (साहित्य अकादेमी, दिल्ली) आदि। एहि गामक सुच्चा कलाकार वृजेन्द्र कुमार 'कलाकार'जीक पोथी भ्रातृद्वितीया प्रकाशित अछि। नाटक चित्रगुप्त प्रकाशनाधीन अछि। ई दक्ष चित्रकार आ नाटक केर कलाकार-निर्देशक रूपमे प्रसिद्ध छलाह। एहि गामक ठाकुर सिंह दासक पोथी आम्रपरी, कीर्तन रत्नावली (तीन भाग) प्रकाशित अछि एवं गांधी चरित रामायण महाकाव्य (प्रकाशनाधीन) अछि। रतुपारक श्री समीर कुमार दास केर विभिन्न नाटक बहुत लोकप्रिय भेल छल। बलाट गामक डॉ. जितेन्द्र लाल दास (जन्म 6जून 1951) क कपिलेश्वर माहात्म्य (1974) एवं परमावतार श्री चित्रगुप्तजी महाराज प्रकाशित छनि। कुलानन्द नन्दन, मेघौलक दयानंद मल्लिक (उपन्यास सोनदाइक सोहाग प्रकाशित आ प्रशंसित), सखबाड़क तारानन्द दास (प्रेमसुधा अमृतांजलिसँ चर्चित), मधेपुराक पुरुषोत्तम लाल दास, कन्दर्प नारायण लाल कर्ण, छातापुरक इन्दुभूषण 'आरत' (एकटा हिन्दी कवितासंग्रह प्रकाशित), हैदरपुरक बद्रीनारायण दास (गीतायण आ अष्टावक्रगीताक यशस्वी रचयिता) एहि समाजक सारस्वत रत्न भेलाह। रतुपारक कुमार साहेब (गुडमौँछ)क प्रत्युत्पन्नमतित्व, हास्यपूर्ण हाजिर-जवाबी, भाषा सौष्ठव एवं अगाध ज्ञानसागर हुनक अनुपम सारस्वत व्यक्तित्व गढ़ने अछि।

ढंगा हरिपुर पुबारि टोलक वासी अरुण लाल दास (21 जनवरी 1954-30 अप्रैल 2022) केर काव्य संकलन जेना होइत हो भोर प्रकाशित होइते पाठक सभक ध्यान आकृष्ट कएलक। हिनक अवसानक उपरान्त लघुकथासंग्रह अनुप्रास प्रकाशनसँ शीघ्र प्रकाश्य अछि। अधिवक्ता आ साहित्यिक व्यक्तित्व डॉ. परमानन्द लाभ (समस्तीपुर) अनेक लघुकाय पोथी सभक रचयिता छथि। मिथिला-मैथिलीक उन्नयन लेल संघर्षरत आदर्श मिथिला पार्टीक राष्ट्रीय अध्यक्ष छथि।

सन्कोर्थ रामपुरक उमेश नारायण कर्ण 'कल्पकवि' (ज. 2 जनवरी 1955) संस्कृत, मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, बाँग्ला आदि भाषामे रचना करैत छथि। महाकवि पं. लालदास सम्मान सहित आन सम्मान सभसँ अलंकृत आशुकवि उमेशजी कल्पकवि रूपमे विख्यात छथि।

सिमरा गाममे 8 दिसम्बर 1955 कँ जन्म ग्रहण कऽ रेणुका 'लाली' अपन पोथी 'स्वप्निल' आ 'दुनिया मेरी'मे अपन प्रतिभा रूपी अरुणोदयक लाली झमका चुकल छथि।

भारतीय प्रशासनिक सेवाक अवकाश प्राप्त पदाधिकारी नारायणपुरवासी विजय प्रकाश (ज. 18 सित. 1956) केर Creative Learning : A Hand-

book for Teachers and Trainers, Art of Developing Concentration, पाँच भागमे Developing Minds केर सम्पादन, Education for Democracy, अभिवंचितों का शिक्षाधिकार : एक सृजनात्मक प्रयोग, प्रायोगिक गतिविधियों का एक समुच्चय, नन्ही शबरी, किशोरी शबरी, तपस्विनी शबरी आदि मौलिक चिन्तन एवं दिशाक दिग्दर्शन करबैत अछि। सृजनात्मक गणित प्रेसस्थ अछि।

ओना हमरा नेपालमे प्रचलित नारा— 'सौंसे मिथिला एकहि टोल मैथिली जेकर माएक बोल' आह्लादित करैत अछि तथापि देशक सीमा तऽ मानए पड़त। ओहि टोलक नेपाली मिथिलामे डॉ. राजेन्द्र विमल (जन्म 26 जुलाई1949) नेपालीमे राजेन्द्रविमल का कथाहरू, कथा अच्युत धिमिरे, श्रुति संवेग आ मैथिली गजलसंग्रह सूर्यास्तसँ पहिने एवं अन्य पोथी सभक कारणेँ समादृत छथि। बहादुरपुर निवासी नेपालवासी राधानाथ दास (1912-1 जून 1992)क गीता माधुरी (श्रीमद्भागवत गीता केर मैथिली काव्यानुवाद) 2008मे प्रकाशित भेल छल। वाणी विलास, भर्तृहरिशतक केर अनुवाद, मिनती पाँती, रंजिनी, कान्ता, प्रिया आदि अप्रकाशित अछि। यदुवंश लाल चन्द्र (5 दिसम्बर 1913- 8 सितम्बर 1988)क पुष्पांजलि, सुधा, गंगा यमुना आदि कृति प्रकाशित अछि। अप्रकाशित कृतिमे खंडकाव्य शकुन्तला आ पंचामृत तथा कुरुक्षेत्र आ रश्मिरथी केर अनुवाद अछि। रेवती रमण लाल (ज. 2 मार्च1943) केर 'साक्षात्कार' एवं 'माधव नहि अएलाह मधुपुर'सँ यश प्राप्त कएलक। हिनक कविता 'झुनिया' बेस चर्चित रहल। सुरेन्द्र लाभ (जन्म 19 जून 1954) नेपालीय मैथिलीक उत्कृष्ट गल्प एवं धधरा केर सम्पादनसँ यशस्वी भेलाह। कथा यात्रा (कथासंग्रह) आ व्यंग्यसंग्रह नरकपालिका बेस चर्चित भेल छल। कलैया (वीरगंज)क राम नारायण सुधाकर (जन्म 1946 ई.) लब्धप्रतिष्ठ आ अनेक सम्मानसँ अलंकृत साहित्यकार छथि। हिनकर दियरि कथासंग्रह यश प्राप्त कएलक। रोशन जनकपुरी (मूल नाम अरविन्द कुमार लाल, जन्म 24.11.1959) नव पीढ़ीक कवि आ गजलकार रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। कुसुमलता कर्ण आ गजलकार पंकज कर्ण नेपालमे प्रतिष्ठित साहित्यकार रूपमे जानल जाइत छथि। 2021मे अपन 'कर्फ्यू' कथासंग्रहक लेल चेतना समितिक ज्योत्स्ना सम्मानसँ अलंकृत विजेता चौधरीक कवितासंग्रह 'धाराक विरुद्ध'सेहो प्रकाशित अछि। जनकपुरक रामभद्र, वृषेशचन्द्र लाल, डॉ. शिवेन्द्र लाल, जानकी रमण लाल; इतिहासकार हरिकान्त लाल दास, डॉ. भुवनेश्वर वर्मा, विराटनगर केर जीतेन्द्र जीत, नवीन चन्द्र कर्ण

आ कर्ण संजय; धीरेन्द्र धीरज, धर्मेन्द्र अविनाश, प्रेम विदेह ललन, सी के लाल, विभा लाल, चन्द्रशेखर लाल 'शेखर' (हम नेपाली हम नेपाल), सुनील कुमार मल्लिक, डॉ. बद्रीनारायण वर्मा, डॉ. माधवेन्द्र आदि नेपाली मिथिलाक लब्धप्रतिष्ठ साहित्यिक व्यक्तित्व छथि। डॉ. मालती लालक प्रकाशित पोथी 'मिथिला आर मैथिलीक विकासमे कर्ण कायस्थक योगदान' एक स्तरीय शोधग्रंथ अछि। नेपाल सरकारक सेवानिवृत्त उप सचिव तीनटोलिया, विराटनगर निवासी श्री चन्द्र किशोर मल्लिक केर 'मैथिल कायस्थक अन्त्यकर्म संस्कारमे सरलीकरण आ सुधारक अवस्था एवं आवश्यकता' (मैथिली) एक विचारोत्तेजक समसामयिक कृति अछि। हिनक नेपाली आलेखसंग्रह 'अनुस्मरण' पोथी बेस चर्चित भेल। हिनक अनेक रचना प्रकाशित अछि। राजविराजमे इतिहास केर प्राध्यापक श्री हीरालाल कर्ण अपन विभिन्न आलेखसँ यश अर्जित कएलनि।

भरबाड़ाक यशस्वी कवि-गीतकार शम्भू सौरभजीक अमरगीत जगदम्बा घरमे दियरा बारि अएली हे अत्यधिक लोकप्रिय भेल अछि। हिनक पोथी गीता रस, चकोरी, रसगुल्ला, शिव दर्शन, हरि दर्शन, रमन-चमन आदि लोकप्रिय भेल। नाट्यविधा आ गीत-संगीतमे शारदानन्द दास परिमल (मिथिलांगन केर संस्थापक), बलौरक कौशल कुमार दास, नवानीक रवीन्द्र राजू, फेंटक इन्द्रभूषण रमण 'बमबम', संजय चौधरी, सुन्दरम् आदि यश अर्जित कएलनि। फिल्म क्षेत्रमे बरहेताक अविनाश दास निर्देशन (अनारकली ऑफ आरा), अभिनय क्षेत्रमे अँधराठाढ़ीक राजेन्द्र कर्ण, बलौरक अंजनी कुमार दास, रतुपारक रूपक शरर आदि यश अर्जित कएलनि। तारालाहीक अर्जुन नारायण चौधरीक सारस्वत व्यक्तित्व अनेक रचनामे अभरल अछि। नवानी गामक सुशील लाल दास (ज. 1.6.1950) केर अनुपम दोहा संकलन सुशील दोहावली शीघ्र प्रकाश्य अछि।

अप्रत्यक्ष कर केर महानिदेशक पदसँ सेवानिवृत्त भारतीय राजस्व सेवाक उच्चस्थ पूर्व पदाधिकारी सखबाड़ गामक श्री प्रेमानन्द दास (जन्म 1955 ई.)क 'भगवान् श्री चित्रगुप्तक पूजा पद्धति एवं कथा' तथा 'सावित्री-सत्यवान उपाख्यान' पोथी प्रकाशित भेल अछि। आमेजनपर उपलब्ध पोथी सभक विक्रीसँ प्राप्त आय अपन गामक मेधावी छात्र सभमे वितरित करैत छथि। एक मेधावी सारस्वत व्यक्तित्व द्वारा दोसर मेधाकेँ सम्मान-सहयोग लेल एक अभिनव प्रयास!

5G आ सामाजिक माध्यम विवि केर विशिष्ट स्नातक सभक एहि युगमे प्रत्येक कट-पेस्टक ओस्ताद स्मार्टफोनधारी अपनाकेँ श्रेष्ठ साहित्यकार, सुकवि

आदि मानि नेने छथि भले आभासी दुनियासँ बाहर ओ 'ओना मासी धं' किएक नहि होथि। तथापि आत्म-प्रदर्शन केर एहनो उझैय्यामे बहुत लोक प्रभविष्णु छथि। एहन किछु नाममे हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटनासँ विदुषी रूपमे शताब्दी सम्मानप्राप्त सिमरी गामक सुधा कुमारी 'जूही' (पोथी - समंदर का शहर आ कुछ मासूम सी बातें प्रकाशित), प्रो.अंजू दास (मैथिली कथासंग्रह खोइँछ प्रकाशित), रागिनी प्रीत, रीना चौधरी (विविधा पोथी प्रकाशित), बबली मीरा (पोथी काव्य कौशल प्रकाशित) आदि उज्ज्वल भविष्यक संकेत करैत छथि।

लौफाक विमल कान्त दास (ज. 1.1.1961) केर प्रकाशित काव्यसंकलन विमल कवितावली लोकप्रिय भेल। दोसर पोथी रमाचरित मैथिली सुन्दर कांड प्रकाशनाधीन अछि।

देवधा (समस्तीपुर)मे 1.1.1966कैँ जन्मग्रहण कएनिहार श्री विजयव्रत कंठक काव्यसंग्रह सपने होंगे सच लोकप्रिय भेल। फेंट गामक रेखा कुमार 'आर्य' हरियाणामे रहि मैथिली-हिन्दीक सेवामे तल्लीन छथि। मैथिलीमे स्वर्णिम उजास काव्य संकलन एवं हिन्दीमे नवांकुर, प्रेमांकुर, नवजीवन, किसलय आदि संकलन प्रकाशित छनि। प्रजातंत्र के गौरव एवं अन्य सम्मान सभसँ अलंकृत छथि। ज्ञानवर्द्धन कंठ केर लखिया, ककिया, दद्दा, पचहीवाली काकी, भाइरस, स्पीड पोस्ट आदि पोथी प्रकाशित भेल अछि। कंठजी अपन रचना सभसँ साहित्य जगत् मे अपन महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करओलनि अछि। Economic Times केर prepress टीममे कार्यरत अवाम (झंझारपुर) गामक दिल्लीवासी मुकेश दत्त (जन्म 6.12.1982, सम्पादक मिथिलांगन) श्रीमती शेफालिका वर्माक मोहपाश (ओम कर्ण द्वारा अनूदित पोथी), नागफाँस (डॉ. राजीव वर्मा एवं डॉ. जया वर्मा द्वारा कएल गेल अनुवाद), इमादपट्टीक गिरिजा देवीक गिरिजा गीत, प्रो. जनक किशोर लाल दासक मैथिली गीता आओर डीहटोल, हरिपुरक विनीता मल्लिक केर काव्यसंकलन अहीँ जकाँ एवं आउ बढ़ि चलू केर सम्पादन कएने छथि। चित्रांगन स्मारिका केर सम्पादन केर भार दक्षतापूर्वक वहन करैत छथि। अनेक आलेख प्रकाशित छनि। मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्लीक द्विभाषी (मैथिली एवं भोजपुरी) पत्रिका परिछन केर मैथिली प्रभाग केर कार्यभार देखैत छलाह। तारालाहीक प्रभास अकिंचन (कुसुमित कानन आ अँचरी प्रकाशित एवं समादृत, महाकाव्य भूमिजा प्रकाशनाधीन), संजीव मिथिलाकिंकर (भाजपाक मुखपत्र कमल सन्देश केर उप सम्पादक, मैथिली साहित्य सम्मेलन केर अध्यक्ष, मैथिली साहित्य महासभा (मैसाम)क कार्यकारिणी सदस्य, इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारतीक सचिव आओर साहित्यिकी डॉटकॉम केर यशस्वी

सम्पादक), कुन्दन कर्ण (भाजपा दिल्ली प्रदेशमे एक सुपरिचित नाम एवं पूर्वांचल युवा मोर्चा जिला करोलबाग केर महामंत्री एवं लघुकथा लेखनमे एक सुपरिचित नाम), दुनू आँखिसँ निपट सूरदास बहेड़ा ग्रामवासी आ दिल्ली विश्वविद्यालयमे कार्यरत प्रो. किशोर कुमार दास 'पथिक', मानवर्द्धन कंठ (विज्ञान विषयक स्तरीय लेखन एवं सरकारी पत्रिका विज्ञान रत्नाकर केर सम्पादक), शशिबाला, नवानी-बहादुरपुरक नूतन दास (मिथिलांगन केर पूर्व सम्पादक), गोनौनक ऋतुश्री, कमलेश कुमार दास (मिथिलांगन केर अध्यक्ष), कंचन कंठ (फाटल कुहेस प्रकाशित), अभिनव मल्लिक (साहित्य किरण पोथीक सम्पादन एवं अनेक आलेख प्रकाशित), उषा दास, शोभना दत्त, इड़ा मल्लिक, सुमन शेखर आजाद (प्रेमांजलि) आदि अपन प्रतिभासँ प्रशस्त भविष्यक लेल आश्वस्त करैत छथि।

संजीव शमा साहित्य आ संगीत साधनामे समान रूपसँ सक्रिय छथि। लोक संगीत एवं लोक वाद्य : संरक्षण एवं संवर्द्धन विषयपर पी-एच.डी. उपाधित छथि। अनेक साझा संकलन प्रकाशित अछि। पुरस्कृत उर्दू कथासंग्रह बादे सबा का इंतिजार (लेखक- सैय्यद मुहम्मद अशरफ) केर मैथिलीमे शमाजी द्वारा अनूदित पोथी भोरुका बसातक प्रतीक्षा साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित भेल अछि।

मिथिला-मैथिलीक सेवा लेल जीवनक मोह नहि कएनिहार अभय कुमार दासक यद्यपि कोनो पोथी प्रकाशित नहि अछि मुदा साहित्यकार सभक सेवा, परिष्कृत रूचि, नि:स्वार्थ सहयोग आ फलवती प्रेरणासँ ओ सारस्वत व्यक्तित्व बनि गेल छलाह।

पहिने कहने रही जे हम मैथिल करण कायस्थ सभक मेधाक महोदधिमे उतरि रहल छी। एहि महासागरमे जाहि मोती सभक आभासँ साक्षात्कार भेल हुनका सभक सारस्वत अवदानक माला बना माता मैथिलीक ग्रीवामे पहिरा देल।

पं. सहदेव झा कहियो कहने छलाह जे पोखरिमे केहनो महाजाल किएक नहि खसए पोखरि निमच्छ नहि भऽ सकैछ। यैह स्थिति मैथिल करण कायस्थक एहि मेधा-सागर केर अछि। कतबो प्रयास कएल हमर सीमा कारणेँ बहुत गोटे अवश्य छुटि गेल छथि। हम विस्तार भयसँ एतऽ मात्र संकेत कएल अछि। एहि विषयपर विस्तृत शोध अपेक्षित अछि। जाहि मणिप्रभा धरि हम पहुँचि नहि सकलहुँ ओहि मोती-माणिक्य सभसँ क्षमायाचना करैत अपन लेखनीकेँ विराम दैत छी। एहि मेधा महासागर केर जय हो!

[कर्णप्रिय, कर्णकुम्भ विशेषांक, काठमाण्डू, 2022]

अंग्रेज सभक मिथ्याचार : भारत बनाम इंडिया

18 सितम्बर 1615कँ इंग्लैंडक राजा जेम्स प्रथम केर दूत टॉमस रो पनिया जहाजसँ उतरि भारतवर्षक शहर सूरत केर धरतीपर अपन पएर रखने छल। 10 जनवरी 1616कँ अजमेरक शाही दरबारमे भारतवर्षक मुगल बादशाह जहाँगीरक सोझाँ कलपैत आ कोर्निश करैत एकटंगा याचक टॉमस रो केर चित्र हो वा 1617मे एने जहाजमे इंग्लैंडसँ भारत आबि मरियम, फ्रांसिस स्टील आदि गोरकी ब्रितानी महिला सभकँ बादशाह जहाँगीरक अन्त:पुरमे रखैल बनि रहबाक कामुक चित्र हो, अंग्रेज सभक वास्तविक चरित्रक उद्घाटन यैह चित्र करैत अछि। आब दोसर चित्र देखल जाय जखन जार्ज पंचम आ महारानी मैरी पूर्ण राजकीय परिधानमे सजल छथि आ हिनका सभक स्वागत-सम्मानमे दि. 12 दिसम्बर 1911कँ दिल्ली दरबारमे राजतिलक करैत भारतवर्षक क्षत्रप-सामन्त सब ठाढ़ छथि। अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध (शुभ स्वागत - प्रभु पग कमल को छू यहाँ की भूमि भाग्यवती बनी...), बद्रीनाथ चौधरी प्रेमधन (सौभाग्य समागम), श्रीधर पाठक (जार्ज वन्दना), नाथूराम शर्मा 'शंकर' (महेन्द्र मंगलाष्टक) प्रभृति भारतीय विद्वान् कऽल जोड़ने प्रशस्तिगान करैत नत छथि। भारतीय इतिहासक एहि दुनू चित्रमे अद्भुत विरोधाभासी संगति अछि। पहिल चित्र केर कलपैत याचक आ रखैल अंग्रेज सब आब भारतवर्षक चक्रवर्ती सम्राट् आ साम्राज्ञी केर भूमिकामे छल।

एतेक पैघ परिवर्तन केर मूल मात्र 23 जून 1757 केर पलासी युद्ध आ 22 अक्टूबर 1764 केर बक्सर युद्धमे अंग्रेज सभक विजयेटा नहि छल। ई युद्ध सब तऽ भारतवर्षमे अंग्रेजी राज्यक मार्ग प्रशस्त कएने छल। आम भारतीय केर मानसमे भारतवर्षक भाग्यविधाता रूपमे अंग्रेज सभक स्वीकृति लेल जार्ज पंचमकँ चक्रवर्ती सम्राट् जकाँ राजतिलक समारोह आयोजित भेल। एहि आयोजनक मूलमे अछि अंग्रेज सभक स्वयंकँ श्रेष्ठ आ श्वेतांग दैवीय प्रभु मानि अंग्रेजी परस्त दीर्घकालीन रणनीति।

अंग्रेज सब एहि रणनीतिक क्रमिक विकास कएलक। 1813 केर चार्टर अधिनियमसँ ईस्ट इंडिया कम्पनी भारतीय सभकेँ शिक्षित करबाक दायित्व लेलक। एक लाख टाका एहि लेल आवंटित भेल। ई राशि कोना व्यय हो एहिपर मतैक्य नहि छल। विवादक कारणेँ 17 जुलाई 1823केँ 10 सदस्यक लोक शिक्षा समिति बनल। एहि समितिमे सेहो मतांतर छल। देशी भाषामे शिक्षा हो एहन माननिहार प्राच्यवादी सभमे एच टी प्रिंसेप आ एच एच विल्सन प्रमुख छलाह। दोसर आंग्लवादी सभक समूह छल जे आधुनिक शिक्षा पद्धति आ अंग्रेजीक समर्थन करैत छल। थॉमस मुनरो आ एलफिंस्टन एहि समूहक प्रमुख छलाह। दुनू समूह पाँच-पाँचटा सदस्यमे बँटि गेल। बारह वर्ष धरि ई विवाद चलल। 1833 केर चार्टर अधिनियममे गवर्नर जेनरल केर कार्यकारिणी परिषद् मे एक अतिरिक्त सदस्य केर व्यवस्था भेल। 1834मे मैकॉले एहि कार्यकारिणी परिषद् केर प्रथम विधि सदस्य रूपमे नामित भेलाह जे बादमे शिक्षा समितिक अध्यक्ष बनाओल गेलाह।

एहि आंग्लवादी रणनीतिक प्रणेता थामस बेबिंग्टन मैकॉले (1800-1859) छल। ओ 2 फरवरी 1835केँ अपन कुख्यात मैकाले मिनट्स लिखलनि जेकर आधारपर 7 मार्च 1835केँ विलियम बैंटिंग अपन कुत्सित नीति सभक घोषणा कएलनि। एकर मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी भाषा, यूरोपीय साहित्य आ विज्ञान एवं ईसाई धर्मक प्रचार-प्रसार करब छल। एहिसँ भारतवर्षक परम्परागत धर्म, शास्त्र, नीति आदिक पढ़ौनी प्रभावित भेल। यद्यपि एहिमे पहिनेसँ प्रचलित प्राच्य पद्धतिक पढ़ौनी पूर्ण रूपसँ बन्द नहि कएल गेल छल आ पूर्वसँ कार्यरत शिक्षक सभकेँ वेतन भेटैत रहल, तथापि नव पोथी सभक प्रकाशन बन्द भेल आ अंग्रेजी भाषा आ संस्कृतिकेँ राजकीय संरक्षण भेटल।

अंग्रेज सभक मान्यता छल जे भारतवर्षमे ने तऽ शिक्षा अछि ने संस्कार, ने इतिहास, ने साहित्य आ ने विज्ञान। भारतीय सब दृष्टिएँ अविकसित जाहिल-गँमार छथि। हिनका सभमे सुधार आनबाक लेल अंग्रेजीकेँ प्रोत्साहन देब आवश्यक। आंग्लवादी एहि एकाकी दृष्टिकोण केर विरोध होइत रहल।

अंग्रेज न्यायाधीश फ्रेडरिक जॉन शोर 1832मे कहने छलाह जे देशक काज देशक भाषा आ लिपिमे होएबाक चाही। 1834मे एक आलेखमे ओ राजकाज लेल हिन्दुस्तानी भाषाक लेल आग्रही छलाह। मोनियर विलियम्स 1859मे कहलनि जे देवनागरीक यैह दोष अछि जे ई दोषरहित अछि (प्रो. दिलीप सिंह : हिन्दी भाषा चिन्तन, पृष्ठ 55)। तथापि प्राच्यवादी सभक कोनो बात नहि सुनल गेल आ 1837मे

फारसीकेँ पदच्युत करैत अंग्रेजी राजकाज, शासन आओर शिक्षाक भाषा बनि गेल। 1838सँ तऽ अंग्रेजी निम्न न्यायालय सभक भाषा सेहो बनि गेल। प्राच्यवादी आ आंग्लवादी सभक मतभिन्नतामे भारत बनाम इंडियाक द्वन्द्व केर शुरूआत मानल जा सकैछ।

अपन एहि सिद्धान्तमे अंग्रेज सब एहन भारतीय केर परिकल्पना कएलक जे रक्त आ रंग-रूपमे तऽ भारतीय होथि मुदा सोच-विचार, रूचि-अरूचि, वेशभूषा, व्यवहार आदिमे पूर्ण रूपसँ अंग्रेज होथि। जे अंग्रेजी सोच, संस्कृति, परम्परा आदिकेँ भारतीय सोच, संस्कृति, परम्परा सभसँ श्रेष्ठ मानैत होथि। मैकॉले केर एहि कृष्ण भारतीयक परिकल्पना भारतवर्षक लेल कतेक घातक भेल एकर अनुमान मात्र एहि तथ्यसँ लगाओल जा सकैत अछि जे अंग्रेज सभक आपसीक एतेक वर्ष बादो 'भारतीय सोच' आ 'इण्डियन सोच'मे द्वन्द्व अखनो मचले अछि। आब शिक्षा-संस्कृति, इतिहास-साहित्य आ दृष्टिकोण विषयक भारतीय एवं ब्रितानी सोचमे पार्थक्यपर किछु विचार करैत छी।

शिक्षाक क्षेत्रमे जँ विचार करी तऽ मजेदार तथ्य सोझाँ अबैत अछि। 597 ई.सँ पूर्व ब्रिटेनमे सेहो मौखिके शिक्षा व्यवस्था छल। एहि वर्ष आगस्टाइन कैंटरबरी (बादमे ऑगस्टाइन एबे रूपमे प्रसिद्ध)मे प्रथम विद्यालय चर्चमे आरम्भ कएलनि जे धार्मिक शिक्षा दैत छल। 7म-8म शताब्दीमे बहुत रास विद्यालय शुरू भेल। 1096 ई.मे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय आ 1209 ई.मे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयमे पठन-पाठन केर प्रमाण अछि । ओना बहुत लोक 1167 ई.मे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय केर स्थापना मानैत छथि। भारतीय शिक्षा व्यवस्थामे जँ प्राचीन गुरुकुल, टोल, चौपाड़ि, चटसार, पोसाल, मन्दिर, मदरसा, मक्तब, मस्जिद, दलान आदिक चर्च छोड़ियो देल जाय तखनो 700 BCमे तक्षशिला विश्वविद्यालय, 400 ई.मे नालन्दा विश्वविद्यालय आ 8म शताब्दीमे विक्रमशिला विश्वविद्यालय केर अस्तित्व स्पष्ट रूपसँ ई प्रमाणित करैत अछि जे अंग्रेज सब शिक्षा क्षेत्रमे भारतीय सभसँ बहुत पाछू छल। ourworldindata.org, WDI, CIA World Fact Book आदि स्रोतसँ पता चलैत अछि जे 16म सदी तक विश्व साक्षरता दर 20%सँ कम छल। यूरोपमे साक्षरता दर 17म शताब्दीक आरम्भ तक 40%सँ कम छल। एहि ठाम स्त्री साक्षरता दर 18म शताब्दीक आरम्भमे 20%सँ कम छल। जखन कि प्राचीन भारतमे ऋषिका सभक अस्तित्व छल। 1835मे बिहार आ बंगालक शिक्षाक स्थितिक सर्वेक्षण हेतु प्रतिनियुक्त विलियम एडम 1837-38मे अपन तीन प्रतिवेदन (एडम्स रिपोर्ट्स

रूपमे प्रसिद्ध) देलनि जे तिरहुत जिलामे 80 प्राथमिक विद्यालय आ 56 संस्कृत विद्यालय अछि। अपन प्रथम प्रतिवेदनमे ओ कहलनि जे बिहार-बंगालमे लगभग एक लाख शाला अछि। एहिसँ पूर्व बुकानन केर पूर्णिया प्रतिवेदन (1809-10)मे पूर्णियाँ जिलामे कुल जनसंख्या 2904380क विरुद्ध 38301 अर्थात् 13% लोककेँ साक्षर होएबाक स्थिति सोझाँ आएल छल (डॉ. शंकरदेव झा : 18वीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास, ISBN 978-93-81698-95-2, 2015, पृष्ठ 295)। एहिना 10 मार्च 1826केँ मद्रास प्रेसीडेंसीक गवर्नर जेनरल थॉमस मुनरो द्वारा जारी मुनरो मिनट्समे स्पष्ट रूपसँ उल्लिखित अछि जे एहि प्रेसीडेंसीक प्रत्येक गाममे पाठशाला अछि। एतऽ 12498 पाठशालामे 1,88,650 बच्चा पढ़ैत अछि। बाम्बे प्रेसीडेंसीक गवर्नर कौंसिल केर सदस्य जी एल प्रेंडरगास्ट अपन प्रतिवेदनमे कहैत छथि जे बॉम्बे प्रेसीडेंसीक शायदे कोनो गाम एहन अछि जतऽ कमसँ कम एक विद्यालय नहि हो, पैघ गाममे एकसँ बेसी विद्यालय अछि। एहिना पंजाबक सर्वेक्षण केर बाद जी डब्ल्यू लेटनर, ICS द्वारा प्रतिवेदन सभक आधारपर लिखित पोथी History of Indigenous Education in Punjab since Annexation in 1822मे एहिना कहैत छथि जे एहिमेसँ किछु विद्यालयक स्तर ऑक्सफोर्ड कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय केर स्तरक अछि। होशियारपुर जिलाक साक्षरता दर 84% अछि।

भारतीय जनगणनाक अनुसार 1941 ई.मे 18.34% लोक साक्षर छल। बहुत लोक आजादीक समय साक्षरता दर मात्र 12% मानैत छथि। 2011मे साक्षरता दर 74.04% छल अर्थात् 70 वर्षमे छः गुना। जखन कि अंग्रेजक आगमन आ सत्तारूढ़ काल खंडमे जँ अंग्रेज सभक मान्यता, जे प्राय: हर भारतीय अशिक्षित छथि, केँ सत्य मानी तखन लगभग 200 वर्षमे शिक्षामे मात्र 20% केर वृद्धि मानऽ पड़त। अंग्रेज सब अपनाकेँ भारतीयसँ अधिक सभ्य, सुसंस्कृत आ शिक्षित मानैत छल आ कथित रूपसँ पिछड़ल, जाहिल, गँमार भारतीयकेँ सभ्य, सुसंस्कृत आ शिक्षित करबाक वृथा दम्भ भरैत छल। ब्रिटिशकालीन भारतक 200 वर्षमे मात्र 20% आ स्वतंत्र भारतवर्षक 70 वर्षमे लगभग चारि गुनासँ बेसी ! यैह छल भारतवर्षमे शिक्षाक लेल कुटिल अंग्रेज सभक सभ्य दृष्टि!

शिक्षाक क्षेत्रमे अंग्रेज सभक कथित प्रगतिशीलता आ भारतीय सभपर कथित कृपा करबाक चित्र देखलाक बाद आब कने संस्कृति विषयक तुलनात्मक विचार करी। अंग्रेजी संस्कृति भारतीय संस्कृतिक तुलनामे अर्वाचीन अछि। एहि समाजमे व्यक्तिगत स्वतंत्रताक यैह महत्त्व अछि जे 18 वर्षक होइत-होइत बेटा-

बेटी बापक घर छोड़ि दैत अछि। जखन बापे केर घर दूर तखन कक्का-काकी, नाना-नानी, मामा-मामी, ममियौत-पिसीऔत, भागिन-भगिनी, नाति-नतिनी प्रभृति संबंधपर तऽ चर्चो करब व्यर्थ होयत। यद्यपि व्यक्तिगत स्वतंत्रताक उझैयामे एतहु आब सामाजिक ताना-बाना तन्नुक अवश्य भेल अछि मुदा अखनो भारतीय संस्कृतिमे लोक-लज्जाक सामाजिक दवाब बाँचल अछि जे एहि संस्कृतिकेँ जोगाकेँ राखएमे सक्षम अछि। महावीर मन्दिर, पटना माता-पिताक नि:स्वार्थ सेवा-शुश्रूषाक लेल एक लाखक प्रथम आ पचास हजारक द्वितीय श्रवण कुमार पुरस्कार दैत अछि। श्रवण कुमार सन चरित्रक कल्पनो अंग्रेजी संस्कृतिमे संभव नहि अछि। अशक्त माय-बापक लेल ओल्ड एज होम वा वृद्धाश्रम एकमात्र सहारा। ई सत्य जे पश्चिमक अंधानुकरणमे एम्हरो आब बूढ़ सभक अनादर आ तिरस्कार केर घटना बढ़ल अछि। हालमे एक कन्याक परिचय-विवरणीमे देखल जे ओ सासु-ससुरक संग नहि रहतीह। स्त्री स्वतंत्रताक ई निकृष्ट नव रूप! मुदा प्रश्न अछि जे जखन ओ स्वयं सासु बनतीह तखन एहन पुतोहुकेँ स्वीकार करतीह की ? आ फेर जखन ओ दादी बनतीह तखन हुनक सोच वैह रहि सकत की? किन्नहु नहि! ओना आब एम्हरो एकल परिवार (मियाँ-बीबी-बच्चा)क चलनसारि बढ़ि रहल अछि आ एहि कारणेँ वृद्धावस्था कष्टमय भेल जा रहल अछि। एहि स्थितिकेँ सम्हारबाक लेल वा एहिपर आँकुश लगएबाक लेल सरकारकेँ माता-पिता और वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण कल्याण अधिनियम, 2007 आनए पड़ल। एहिमे माता-पिताक भरण-पोषण नहि कएलापर 5000क जुर्माना/ तीन मासक जहलक सजा केर प्रावधान कएल गेल अछि। ई पैघ परिवर्तन भेल अछि तथापि एम्हरका संस्कृतिमे जे चिरकालसँ व्याप्त लोक-लज्जा वा लोकापवादक दवाब अछि ओ अखनो बहुलांश बूढ़ा-बूढ़ीकेँ नारकीय जीवनसँ बचओने अछि। लंदनमे स्वामी रामदेवक किछु वर्ष पूर्व भेल कार्यक्रम आ व्याख्यानक बाद ओल्ड एज होमसँ माय-बापकेँ अपन घर आपस लऽ जएबाक लेल पंक्तिबद्ध भेल अंग्रेज सभक तस्वीर छापि अंग्रेजी अखबार भारतीय संस्कृतिक श्रेष्ठताक चर्च कएने छल। ग्रेट ब्रिटेनक 2019केँ अनुमानित जनसंख्या 6.64 करोड़पर 17000 आवासीय केयर होम अछि (NHS England) आ भारतवर्षमे 130 करोड़ जनसंख्यापर मात्र 728 ओल्ड एज होम अछि। ई दुनू देशक संस्कृति वा आत्माक पार्थक्य केर मात्र छोटछीन दिग्दर्शन अछि। संस्कृतिक आनो-आन तत्त्व सभक तुलनात्मक स्थिति किछु एहने अछि।

आब दुनू देशक इतिहासपर संक्षिप्त दृष्टि देल जाय। अंग्रेज सभक दावी अछि जे ओकरा सभक आगमनसँ पूर्व भारतवर्षमे इतिहास दृष्टि नहि छल। अंग्रेज सभक इतिहास अपने शुरू होइत अछि 700 ईसा पूर्वसँ जखन केल्टिक सभक

वास ब्रिटेनमे भेल। 43 BCमे रोम एहि ब्रिटेनपर कब्जा कएलक। 450-750 ई.क अवधिमे ज्यूटी (ज्यूटलैण्ड), अंगेल्स (द. डेनमार्क) आ सैक्सोन (जर्मनी) सब ब्रिटेनपर आक्रमण कऽ एकरा सात राज्यमे विभक्त कएलक। 1016 ई.मे डेनमार्कक राजा कैन्यूट इंग्लैंडक शासक भेलाह। 1066 ई.मे स्टैम्फोर्ड पुल युद्धमे सैक्सोन सब जीतल। नार्मन आक्रमणकारी सब सैक्सोन सभकेँ परास्त कएलनि। 1215 ई.मे गृहयुद्धक बाद मैग्नाकार्टापर हस्ताक्षर भेल। 22 जुलाई 1706 ई.केँ इंग्लैंड आ स्कॉटलैंड साम्राज्य द्वारा यूनाइटेड किंगडम स्थापना संबंधी सन्धि भेल आ दुनूक संसद संघ अधिनियम 1707 द्वारा एकर सम्पुष्टि कएलक। अनेक प्रयासक बादो इंग्लैंडक इतिहास 700 BCसँ पाछू नहि जा सकल आ भारतीय इतिहाससँ ओकरा सभकेँ चकबिदोर लागि गेल छल। भारतीय इतिहासक प्राचीनता ओकरा सभकेँ नहि अरघल आ शोधक नाटक करैत निष्कर्ष देल गेल जे रामायण आ महाभारत तऽ काल्पनिक साहित्य वा मिथ अछि ऐतिहासिक तथ्य नहि। श्रुति, अनुश्रुति, स्मृति, वेद, पुराण, गीता आदिक एहिना उपेक्षा अंग्रेज सभ सोचल-विचारल रणनीतिक तहत कएलक। मैकॉले द्वारा रोपल विषबीजकेँ सरकारी प्रश्रय केर खाद-पानि भेटलै आ किछुए समयमे ओ छतनार-भकरार गाछ बनि गेल। एहि वटवृक्षक छाहरि तऽर कहुना बाँचल प्राच्य विद्याक छोट-छोट पादप सब शनैः-शनैः सुखा गेल।

अंग्रेज सभक दावी अछि जे ओकरे सभक कारणेँ भारतवर्षक इतिहासमे सम्राट् अशोकक अस्तित्वसँ लोक परिचित भेल। ई तथ्यात्मक अछि जे बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न जेम्स प्रिंसेप (20.8.1799 - 22.4.1840) 1836-38 ई.मे ब्राह्मी/ खरोष्ठी लिपि पढ़बामे प्रथम-प्रथम सफल भेल छलाह जाहि कारणेँ अशोकक शिलालेखादि पढ़ल जा सकल आ तत्कालीन समाजक विषयमे विस्तृत जानकारी भेटि सकल। मुदा इहो तथ्यात्मक अछि जे जेम्स प्रिंसेप केर जन्मक पहिनेसँ परम्परा, अनुश्रुति, साहित्य आ दन्त कथादिमे अशोक जीवित छलाह आ हुनक अस्तित्वसँ भारतीय सब परिचित छल। जाहि क्षेत्रमे अगमकुआँ, शिलालेख वा अशोक स्तम्भ आदि छल ओहि क्षेत्रमे सभकेँ ई ज्ञात छल जे ई अशोकसँ जुड़ल स्थल अछि। तेँ ई गप्प हाँकब जे जँ अंग्रेज सब नहि देखैत तऽ अशोक भारतीय इतिहाससँ विलोपित भऽ गेल रहितथि, सिवा आत्म-प्रचारक अतिरिक्त आओर किछु नहि अछि। ई मानएमे कोनो द्वन्द्व नहि जे जेम्स प्रिंसेप अपन अल्पायु (मात्र 41वर्ष)केँ अपन अपूर्व अवदानसँ चिरायुमे बदलैत चिरजीवी आ प्रातःस्मरणीय

बनि गेल छथि। इहो मानि लेबाक चाही जे अंग्रेज सभक शोधसँ भारतीय इतिहास लेखनकेँ नव रूप भेटल। क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित आओर समग्रतामे अध्ययनक आयाम बेसी प्रशस्त भेल। मुदा ई कहब जे भारतीयमे इतिहास बोध नहि छल, सर्वथा असत्य अछि। शिलालेखमे समय आ घटनाक इतिवृत्त देब इतिहास बोध नहि थिक की? मात्र उपलब्ध शिलालेख सभक आधारपर भारतीय इतिहासक सर्जना कएल जा सकैछ। मात्र राजनीतिक इतिहासेकेँ इतिहास कहब उचित नहि। जँ एहिपर विर्त होइ तखनो पुराणक पाँच लक्षण—

सर्गश्च प्रतिसर्गशश्च वंशेमन्वन्तराणि च

*वंशानुचरितञ्चैव पुराणं पंचलक्षणाः*सँ जे पुराणमे वंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित आदि वर्णित अछि ओ आँखि खोलि देत। ई तऽ स्पष्ट रूपसँ इतिहासे थिक। भारतीय केर इतिहास बोध अलग प्रकारक छल। रामायण(वाल्मीकि)-महाभारत (व्यास), वेद-पुराण, अर्थशास्त्र (कौटिल्य), प्राचीन बौद्ध-जैन ग्रंथ, कालिदासक रघुवंशम् आदिमे इतिहास एहि शैलीमे अछि। अर्थशास्त्रमे कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य कालमे गोप नामक पदाधिकारीक चर्च करैत छथि जिनका जाति समूह सभक विवरणी, विभिन्न घटना, कृषि-व्यापार आदि केर सांख्यिकीय आँकड़ा सभक संग्रहण आ संरक्षण केर दायित्व छल। एहि ग्रंथमे अभिलेखागारक अस्तित्व केर प्रमाण सेहो अछि। एहि सभकेँ इतिहास बोध नहि कहब सर्वथा अनुचित! विलियम जोन्स, प्रिंसेप, एच एच विल्सन, मैक्समूलर, कोलब्रुक, ब्रूनो, ह्विटनी, रॉथ, ग्रियर्सन प्रभृति अंग्रेज विद्वान् सब अपन-अपन क्षमता अनुसार काज कएलनि आ भारतीय वाङ्मयकेँ नूतन पाश्चात्य वितान देलनि, एहिमे कोनो सन्देह नहि अछि। मुदा जखन गम्भीरतासँ शोध करब तखन स्पष्ट भऽ जायत जे एहि सभ अधिकांश नामक प्रतिष्ठाक मूलमे कोनो ने कोनो भारतीय पण्डित वा मनीषी अवश्य छथि जे अपन मेधा, परिश्रम आओर शोधसँ हुनका सभक काजकेँ नव आयाम देलनि। भले लड़ल सिपाही आ नाम हवलदारक कहबी किएक नहि चरितार्थ भेल हो। आंग्ल विद्वान् सभक जे वैदुष्यपूर्ण शोध, अनुवाद, सम्पादन आदि जगजिआर भेल भले ओकर श्रेय वैद्य पं. रामलोचन कविभूषण, पं. जगन्नाथ तर्कपंचानन आओर पं. राधाकान्त शर्मणकेँ नहि भेटि कोनो विलियम जोन्सकेँ भेटल हो, सक्रिय सहयोगी रत्न पाल, कमलाकान्त विद्यालंकार, शारदा प्रसाद चक्रवर्ती आओर गोविन्द रामकेँ विभिन्न शिलालेखादि पढ़बाक श्रेय नहि भेटि

जेम्स प्रिंसेपकेँ भेटल हो, धमदाहाक चित्रपति उपाध्यायकेँ मिताक्षरा(विज्ञानेश्वर) आ दायभाग (जीमूतवाहन) केर अनुवाद एवं संस्कृत व्याकरण आ कोश केर निर्माणक श्रेय नहि भेटि कोनो कलक्टर एच टी कोलब्रुककेँ भेटल हो, गीताक प्रथम अंग्रेजी अनुवाद केर श्रेय कालिनाथ भट्टाचार्यकेँ नहि भेटि कोनो चार्ल्स विल्किंसकेँ भेटल हो। एहिना सेरामपुरक पंचानन कर्मकारकेँ बाँग्ला अक्षर केर टायपफेस बनएबाक श्रेय नहि भेटि चार्ल्स विल्किंसकेँ भेटल हो, मैथिली विषयक अनेक शोध केर श्रेय पं. हल्ली झा (हरिनगर) एवं पं. बौआजी मिश्र (कोइलख)केँ नहि भेटि कोनो जार्ज अब्राहम ग्रियर्सनकेँ भेटल हो । एहिना वेदान्तक भाष्य लेल एवं भास्कर केर ग्रंथ 'अर्थ-संग्रह' केर अनुवाद 1782मे ब्रजभूषण दासक कम्पनीक प्रेससँ प्रकाशित करबाक श्रेय काशीक वेदान्ती राम मिश्र शास्त्रीकेँ नहि भेटि कोनो प्राध्यापक थीबाकेँ भेटल हो। हमर ई भाव कथमपि नहि जे एहि आंग्ल विद्वान् सभकेँ एकर श्रेय नहि भेटबाक चाही। मात्र एतबे जे भारतीय मनीषी सभक अवदानक सेहो मूल्यांकन उचित अछि। एहि सभमेसँ असाधारण एवं वास्तविक मेधावी जेम्स प्रिंसेप अपन सहयोगी रत्न पाल आ कमलाकान्तकेँ उचित श्रेय देने छथि।

ई अवश्य मानि लेबाक चाही जे बहुत रास आंग्ल विद्वान् अपन मौलिक मेधासँ चमत्कृत कएलनि। विलियम जोन्सकेँ संस्कृत पढ़एबा लेल पं रामलोचन केर शर्त्त - संगमरमर केर फर्श बनाओल जाय, हिन्दू सेवक द्वारा साफ-सफाइ हो, प्रतिदिन गंगाजल छीटि पवित्र कएल जाय, जोन्स माछ-माँसु भक्षण नहि करथि, 100 चानीक सिक्का प्रतिमाह लेब, अबरजात लेल पालकी-कहारक व्यवस्था हो आदि कठोर अवश्य छल मुदा जोन्स जिज्ञासु आ ज्ञानपिपासु बनि सभटा शर्त्त स्वीकारलनि आ अपन भक्तिभाव आओर मेधासँ गुरुकेँ प्रसन्न करैत आशीर्वाद प्राप्त कएलनि। पं. राधाकान्त शर्मण अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मनुस्मृति आदि केर अनुवाद, विभिन्न शिलालेख केर अनुशीलन आदिमे विलियम जोन्सक मार्गदर्शक रहल छलाह।

आधुनिक भारत केर अनेक अधकिच्चू विद्वान् अंग्रेज सभकेँ अत्यधिक मेधा सम्पन्न, भारतीय इतिहास आ पुरा साहित्यक उद्धारक, भारतीय भाषा सभक जानकार, भविष्यद्रष्टा, महान् प्रभृति विशेषणसँ विभूषित करैत गौरवान्वित होइत छथि। हिनका सभक गुणगान करैत अघाइत नहि छथि। जँ ओ सभ एहि अर्द्ध सत्यपर पूर्ण शोध करथि तखन हुनका सभक ज्ञानचक्षु विस्फारित भऽ जएतनि। सत्य यैह अछि जे अधिकांश अंग्रेज विद्वान् भारतवर्षक जे कथित उपकार कएलनि ओ मात्र अपन स्वार्थवश। ओतबे जतेक शासन व्यवस्था चलाबएमे सहायक हो,

एकरा प्रति आक्रोश नहि उत्पन्न हो आ एहिसँ ईसाई धर्म केर प्रचार हो। अपवाद सभठाम रहैत छैक से एहिमे सेहो अछि।

सम्राट् अशोकक तेरहम शिलालेखसँ ज्ञात होइत अछि जे धम्मप्रचार लेल अशोकक राजदूत सीरियाक अंतियोकस, मिस्रक टालेमी फिलाडेल्फस, सायरिनक मेगेस, एपिरस (कोरिंथ)क एलेक्जेंडर आ मैसेडोनियाक एंटीगोनस गोनेट्सक दरबारमे गेल छलाह मुदा रीज डेविड्स आ अन्य अंग्रेज विद्वान् ई मानबाक लेल तैयार नहि छथि जे अशोकक राजदूत यूनानी राज्यमे गेल छल। ओ एकरा अशोकक राजकीय प्रलापसँ परिपूर्ण गर्वक सूचक मात्र मानैत छथि जेकर जवाब प्रो. राधाकृष्ण चौधरी अपन ग्रंथ(प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ 139)मे देने छथि। मैकॉलेक ई केहन अनर्गल प्रलाप भेल जे ओ स्पष्ट रूपसँ कहलक जे सम्पूर्ण अरबी आ भारतीय प्रज्ञा, वेद-पुराण-शास्त्र-धर्म-दर्शन, ज्ञान-विज्ञान आ साहित्य यूरोप केर कोनो पुस्तकालयक एक अलमीराक एक रैकपर राखल पोथीक परतर नहि कऽ सकैछ! यथार्थमे ओकर मूल उद्देश्य अंग्रेजीकेँ शिक्षा आ सम्पर्क केर भाषा बना कृष्ण अंग्रेज सभक फौज तैयार कऽ भारतपर अपन शासनकेँ स्थायित्व देबाक छल तेँ निर्लज्जतापूर्वक एहन कुचक्र रचने छल। एतबे नहि ओ निधिक अभाव कहि सर्वजनकेँ शिक्षा उपलब्ध करा सकब असंभव मानि मात्र आवश्यकतानुसार किछु उच्च प्रबुद्ध वर्गक संतान सभकेँ शिक्षा दिएबाक लेल निन्दनीय निस्पंदन सिद्धान्त (Theory of Filteration)क सूत्रधार बनल। एहि निस्पंदन सिद्धान्तानुसार निम्न वर्गीय लोकक संतान उच्च वर्गीय लोकक संतान सभक सम्पर्कसँ स्वयं शिक्षित भऽ सकताह। आश्चर्य जे एकर बादो किछु भ्रमित लोक मैकॉलेक गुणगान करैत छथि। भारतवर्षक सभटा निधि तऽ कथित सुसभ्य अंग्रेज सभ इंग्लैंड लऽ गेल। अंग्रेज सभक लूट तऽ एहने वीभत्स छल जे एक अंग्रेज सांसद विलियम टॉरेन अपन पोथी Empire in Asia (पृष्ठ 126-28)मे अवध केर नवाब शुजाउद्दौला द्वारा अंग्रेज सभक संरक्षणमे राखल बेगम सभकेँ शुजाउद्दौलाक मृत्युक बाद एक न्यायाधीश एलाइजा इम्पेक कुटिचालीसँ लूटबाक भयानक चित्र देने छथि। एहिना अंग्रेज इतिहासकार जेम्स मिल अपन पोथी हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडियामे कर्नल हैने द्वारा गोरखपुरमे 6 लाखक क्षमतावला क्षेत्रसँ निर्लज्ज जकाँ अन्याय करैत 1780मे लाठी हाथेँ 1456088/ ओसूल करबाक क्रूर कथा कहैत छथि। निरीह प्रजाक प्रतिकारकेँ विद्रोह मानि क्रूरतापूर्वक दमनचक्र चलल छल। अंग्रेजक गवर्नर क्लाइव आ वारेन हेस्टिंग्स केर भ्रष्टाचार नामी छल।

हिनका सभक घूस आ महाभियोगक कथा अखनो सुनल जाइत अछि। अंग्रेज सभक अनाचार-भ्रष्टाचार, भेदभाव आदि कुकर्मक कथासँ ग्रंथसभ भरल पड़ल अछि। अपन पोथी The Case of Indiaमे Will Durant अंग्रेज सभक लूट एवं भारतीय प्रज्ञा, इतिहास, संस्कृति, चरित्र आदिपर अंग्रेज सभक आक्रमण केर कच्चा चिट्ठा खोलने छथि। कहियो भारतीय वस्त्र उद्योग विश्वक शान छल आ ढाकाक मलमल केर माँग शीर्षपर छल। मुदा अंग्रेज सब ढाका सहित सम्पूर्ण बंगालमे लूम ध्वस्त कएलक आ बुनकर सभक औंठा काटलक ताकि ओ लूम नहि चला सकथि। भारतीय वस्त्रपर इंग्लैंडमे 80% आयात शुल्क आ इंग्लैंडक वस्त्रपर भारतमे मात्र 5% शुल्क रहल जे एतऽ केर वस्त्र उद्योगक डाँढ़ तोड़ि देलक। जाहि ढाकाक बुनकर सभक मलमल विश्वक सिरमौर छल ओ बुनकर सब भिखारि बनि गेल। 1772मे प्रकाशित एक अंग्रेज व्यापारी William Bolts अपन पोथी Consideration of India Affairs : Particularly Respecting the Present State of Bengal and its Dependencies (पृष्ठ 194)मे ई करुण कथा कहैत छथि। जाहि किछु पोथी सभक चर्च पहिने भेल अछि ओ सब 5Gक युगमे आइ उपलब्ध अछि। संचारक अभावमे अंग्रेजे सभक लिखल ओ पोथी सब पहिने सर्वत्र उपलब्ध नहि छल तेँ मैकॉले एवं हुनक अवैध सन्तति सभक कुटिचालि सुतरि गेल जे अंग्रेज सभक कृपासँ भारत केर कल्याण भेल। रेल, बिजली, संचार माध्यम, शिक्षा आदिकेँ अंग्रेज सभक उपकार मानि लोक भ्रमित होइत रहल। ई नहि सोचल गेल जे जाहि देशपर ब्रितानी शासन नहि छल ओतऽ ई सब कोना पहुँचल! अंग्रेजी शासनमे बेर-बेर भयंकर अकाल किएक पड़ैत छल! एहि सभपर किएक नहि सोचल गेल। लोक एहन त्रासदी सभकेँ बिसरि कोना सकैत अछि!

एकर मूलमे तऽ अंग्रेजीए नीति छल। जहाँ धरि डाक-तार-रेल आदिक प्रसंग अछि एहि सन्दर्भमे यैह कहब उचित जे कोनो आविष्कार एक जातिक बपौती नहि होइत छैक आ एकर प्रसारकेँ कोइ रोकि नहि सकैत अछि। सम्पूर्ण मानव केर ओकर लाभ भेटैत अछि। अंग्रेज सब जतेक सम्पत्ति भारतवर्षसँ लुटि लऽ गेल आ जे इतिहास-परम्परा-प्रज्ञादिकेँ अन्यायपूर्वक मेटएबाक कुत्सित प्रयास कएलक ओकर तुलनामे ई देन नगण्य अछि। ई सब ओहिनो एकदिन भारतवर्षमे अएबे करैत मुदा जे ओ सब लुटिकेँ लऽ गेल ओ कहियो घुरि नहि सकैछ।

भारतवर्षमे लूट-अन्याय-भ्रष्टाचारकेँ प्रोत्साहन आओर शिक्षा-धर्म-सभ्यता-संस्कृतिकेँ नष्ट करबाक षड्यंत्र सभक एहन अँधेरगर्दी अपनाकेँ सुसभ्य,

न्यायप्रिय, शिक्षित आ दिव्य माननिहार अंग्रेजे सभसँ संभव अछि। अंग्रेज सभ तेहन ने काल्पनिक आभामंडल बनओलक जे ओकर सात खून माफ मानल गेल। छोट-छोट बातपर भारतीय सभक अपमान करब अंग्रेज अपन धर्म मानि नेने छल आ भारतीय सभक तन-मन-धन केर शोषण करब अपन अधिकार! ई भारतीय अग्निपुत्रे सभ छलाह जे एकरा सभक दैवीय श्वेत रक्त भावकेँ खंडित कएलनि। दिल्ली दरबारक बाद भव्य जुलूसमे हाथीपर सपत्नीक बैसल हार्डिंगपर जखन रासबिहारी बोसक योजनानुसार वसन्त कुमार विश्वास आदि बम प्रहार कएलनि आ लाल खूनसँ लथपथ हार्डिंगकेँ लोक देखलक तखन अग्निपुत्र सभ द्वारा कहल बातपर लोकक विश्वास बढ़ल जे साँचे ई अंग्रेज सब कोनो देव नहि सामान्य मानव अछि। ओकरो देहमे वैह खून छैक जे एक आम भारतीयक देहमे अछि। अंग्रेज सभक श्वेत रक्त वा देवत्व केर प्रचारित भाव अग्निपुत्रे सब समाप्त कएलनि। यैह भाव भारतवर्षक स्वतंत्रता संग्राममे आमलोकक पाथेय बनल आ अंग्रेज सभकेँ एतऽसँ भागए पड़ल।

अंग्रेज सभ भागि तऽ गेल मुदा ओ सब अंग्रेजीक तेहन ने छद्म आभामंडल तैयार कएलक जे अखनो बहुत लोककेँ चकचोन्ही लगिते छनि। कोनो सभा-गोष्ठी-सेमिनार-वाद-विवाद प्रतियोगिता आदिमे अंग्रेजी बजनिहारकेँ अकारण विद्या विशारद मानि लेल जाइत अछि भले ओ निर्धारित विषयपर ध्यान नहि दऽ मात्र ओकर परिधि केर परिक्रमा किएक नहि कएने होथि। हिन्दीमे बजनिहारकेँ एक तरहक आ मैथिलीमे नीक आ विन्दुपर बजनिहारोकेँ सभसँ गेल-गुजरल ओहिना मानि लेल जाइत अछि। एकर कारण सभक विश्लेषण 'गामक जोगी जोगड़ा आन गामक सिद्ध' आओर 'बारीक पटुआ तीत' केर भीतपर ठाढ़ अवश्य अछि मुदा एहिमे ओहि मैकॉलेक विषबीज केर प्रभाव सेहो भेटत जे ओ रोपिकेँ पार भऽ गेल। मेकॉलेसँ अनुप्राणित ई प्रवृत्ति तखन बड़ कचोटैत अछि जखन मैथिलीक पुरोधा सभकेँ सेहो एहि प्रवृत्तिसँ ग्रसित देखैत छी।

पटनासँ प्रकाशित एक प्रतिष्ठित शोध पत्रिका 'मिथिला- भारती'क अंक I-IV, भाग 5, 2018मे एक आंग्ल अध्यापक डॉ. रॉब लिनरॉथ, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ आर्ट हिस्ट्री, नार्थ-वेस्टर्न यूनिवर्सिटी, यू एस ए केर कोलकातामे आयोजित 12म International Congress on Bengal Art, 2017मे देल गेल व्याख्यानक आधारपर तैयार एक मैथिली आलेख 'पूर्व मध्यकालीन प्रतिमा सभमे दाताक चित्रण : एक प्रगति प्रतिवेदन' (पृष्ठ 14-25) प्रकाशित भेल छल। एहिमे बिनु कोनो उपयुक्त आधार देने डॉ. लिनरॉथ अँधराठाढ़ी शिलालेख

केर पादपीठमे उत्कीर्ण एक पुरुषक चित्रकेँ श्रीधर आ दोसर स्त्रीक चित्रकेँ हुनक पत्नी कहैत छथि। पत्रिकामे एहि विषयक कोनो तटस्थ सम्पादकीय टिप्पणी नहि अछि अपितु सम्पादकीयमे एकरा ओहि अंकक मुख्य आकर्षण कहल गेल अछि। चित्रावली पृष्ठ 214पर प्रकाशित चित्र सं. 2.2 केर नीचाँ श्रीधर आ हुनक स्त्री केर चित्र होएबाक स्पष्ट जानकारी सेहो अंकित अछि। आश्चर्यजनक! जखन दाता केर चित्रणपर शोध केर कठिन कल्पना करी तखन राजा नान्यदेव आ रानीक चित्र किएक नहि? ब्रह्मा-ब्रह्माणी किएक नहि? महादेव-पार्वती किएक नहि? एहि विषयक 'मिथिला-भारती'क एक यशस्वी सम्पादक श्री शिवकुमार मिश्रजीसँ भेल वार्तामे ओ कहलनि जे ई नव शोध अछि आ अपने ई नहि बुझबै। प्रतिक्रियामे जे लिखि पठायब से हम प्रकाशित कऽ देब। हम हतप्रभ भेल सोचि रहल छलहुँ जे मैकॉले आओर ओकर सन्तति हमरा सभक की-की लुटि लेलक!

जँ एहि अंग्रेजक बात मानि ली तखन तऽ बेनवारा (दरभंगा) आओर सलेमपुर (बेनीपट्टी, मधुबनी)सँ प्राप्त महावराह विष्णु केर मूर्त्तिक पादपीठमे अंकित आकृति सभकेँ मूर्त्ति निर्माणमे सहयोगी सभक चित्र मानए पड़त! भारतवर्षमे अनेक मूर्त्तिक पादपीठमे जे मानव एवं पशु सभक आकृति अंकित अछि ओहि सभकेँ मूर्त्ति निर्माता/दानदाता/राजा सभक मूर्त्ति मानए पड़त। दुखद जे अंकित पशु सभकेँ सेहो एहने दाता मानए पड़त। यथार्थमे मूर्त्ति, प्रतिमा, आकृति, विग्रहादिमे जिनका फर्क नहि ज्ञात अछि वा जे ओहि समयक भारतीय परम्परासँ अनभिज्ञ छथि वैह किछु नव अनर्गल लिखि एहन प्रलाप कऽ सकैत छथि। समग्रतामे भारतीय इतिहास, परम्परा आ संस्कृति जाननिहार एहन आगि लेसबाक कुकृत्य कखनो नहि करत! आजुक आत्म-प्रचारक प्रवृत्ति देखि लिनरॉथ एहन कठिन कल्पना कएलनि जे विवेच्य कालमे कथमपि संभव नहि छल। राजा-रानीक अछैत श्रीधर हुनका छोड़ि मात्र अपन दुनू प्राणीक चित्र दऽ राजा हाथेँ अपन मृत्युक आवाहन कथमपि नहि कऽ सकैत छलाह!

आवश्यकता अछि जे अंग्रेज सभ द्वारा कहल वा लिखल अनर्गल बातकेँ ब्रह्मवाक्य मानि लेबाक आत्महीनतासँ मुक्त होइ आ अंग्रेजी बजनिहारकेँ अकारण श्रेष्ठ मानबाक प्रवृत्तिकेँ तिलांजलि दी। रोममे सेहो गदहा होइत छैक आ इंग्लैंडक निकृष्ट वर्ग वा मूर्ख सेहो धुरझार अंग्रेजीए बजैत छैक। तखन एहि कारणेँ हुनका सभकेँ महापंडित मानब कोना उचित! किनको वैदुष्यक परीक्षणमे भाव महत्त्वपूर्ण होइत छैक भाषा नहि। तँ एकरा लऽकेँ एक मैथिलकेँ हीन भावनासँ ग्रसित होएबाक कोनो प्रयोजन नहि। ई सत्य जे भारतीय प्रज्ञा-परम्परामे सेहो सभटा श्लीले नहि

अछि मुदा इहो सत्य जे विश्व केर सभ प्रचीन सभ्यताक एहने स्थिति छैक। हंस समान नीर-क्षीर विवेकी दृष्टि राखब उचित। एतए इहो कहब उचित जे - मा मा प्रापत्प्रतीचिका (पश्चिम दिशि नहि देखू) सेहो आब अप्रासंगिक भऽ गेल अछि आ सम्पूर्ण संसार एक वृहत् परिवार बनि गेल अछि। एहन परिस्थितिमे अंग्रेजीक अंध विरोध करब उचित नहि। ज्ञान कतहु से आबए अवश्य ग्रहण करी। ऋग्वेदक एहने एक मंत्र अछि— ऊँ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः...। तखनो एकर ध्यान अवश्य रहए जे जेना गुड्डी गगनमे विचरैत अछि तथापि लटाइक तागसँ ओकर जड़ि जमीनेपर रहैत छैक। जहिना ताग कटिते गुड्डी अस्तित्वहीन भऽ जाइत अछि तहिना कतबो आधुनिक वा गगनविहारी बनी मुदा अपन जड़ि, अपन भाषा-संस्कृति-परम्परासँ अवश्य जुड़ल रही। एहिसँ असम्पृक्त रहब अपन अस्तित्वकेँ समाप्त करब थिक। तेँ मन-प्राणसँ अपन भाषा-संस्कृति-परम्पराक सम्मान करैत रही। मैकॉलेक प्रेत मात्र एहि मंत्रसँ बिला जाएत आओर भारत बनाम इंडियाक द्वन्द्व सेहो समाप्त भऽ जाएत।

[देसिल बयना, 13म अर्घ्य, हैदराबाद, नवम्बर 2022]

डॉ. रंगनाथ दिवाकर

दरभंगा जिलाक गाम सुलतानपुर (कुशेश्वरस्थान)क निवासी डॉ. रंगनाथ दिवाकर बिहार प्रशासनिक सेवामे अनेक उच्च पद सभकेँ सुशोभित कएलनि। डॉ. दिवाकर 'ब्रह्मभट्ट वैभव', 'सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृति ग्रंथ', 'मधुबनी दर्पण', 'विरासत मधुबनी', समस्तीपुर जिला गजेटियर 'समेटियर', 'विरासत मुजफ्फरपुर', श्री विजय ना. मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार'क काव्यसंकलन 'प्रवासी प्रतिबिम्ब', 'भामती' आदिक सम्पादन कएने छथि। स्वतंत्र पोथीमे 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान', 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी', मैथिली कथासंग्रह 'भखरैत नील रंग', 'सुलतानपुर सौरभ', 'महाकविक महाप्रयाण' प्रमुख अछि। साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित पंजाबी कथासंग्रह 'अमर कथा' (ले. गुलजार सिंह संधू)क मैथिली अनुवाद साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित भेल अछि। मेधावादी दिवाकरजी स्नातक विज्ञान प्रतिष्ठाक बाद स्नातक कला परीक्षामे विशिष्टता एवं स्नातकोत्तर हिन्दीमे प्रथम वर्गमे प्रथम स्थान प्राप्त कएलनि। मिथिला-मैथिली विषयक गम्भीर शोधमे रूचि रखैत छथि एवं मिथिलाक इतिहास आ संस्कृति विषयक अनेक विवादास्पद घुरछीकेँ सफलतापूर्वक सोझरा देने छथि। एहिमे श्रीधर केर काल-निर्धारण, मैथिल करण कायस्थक कर्णाटसँ कथित आव्रजन केर खंडन, मण्डन मिश्र-शंकराचार्यक कथित शास्त्रार्थ केर प्रवादक उन्मूलन, कन्दर्पीघाटमे मैथिल शौर्यक दिग्दर्शन आओर महाकवि कालिदासक मैथिलत्व केर निर्धारण आदि प्रमुख अछि। इतिहास-संस्कृति विषयक गहन अध्ययन, सुहृद व्यक्तित्व आ शोध केर वैज्ञानिक दृष्टि डॉ. दिवाकरजीकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। अवकाशप्राप्तिक बादो मिथिला-मैथिलीक लेल सदिखन समर्पित रहैत छथि। कन्दर्पीघाटमे मिथिला विजय स्तम्भक निर्माण हिनक अमर कृति थिक आ एहि कारणेँ अपर ग्रियर्सन रूपमे समादृत छथि। डॉ. दिवाकर किरण पुरस्कार, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' सम्मान, मिथिला गौरव, कर्णश्री, मिथिला विभूति, मिथिला रत्न सहित अनेक सम्मान/पुरस्कारसँ अलंकृत छथि।

— **दीप नारायण**

सम्पर्क :

फ्लैट सं. 102, अनन्त विकास अपार्टमेंट, वेदनगर, रुकनपुरा, नेहरू पथ, पटना- 800014

मोबाइल : +91 8709610336, इमेल : rangnath.chy@gmail.com

अनुप्रास प्रकाशन

मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211

+91 94305 83847

anuprasprakashan@gmail.com

आवरण : अनुप्रास डिजाइन

मिथिला मन्दार मञ्जरी

₹ 300/-

9 789391 371401

www.anuprasprakashan.com